Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

...हे शौनक आदि ऋषी-

अथ

एकादशीमाहात्म्यं भाषाटीकासमेतं

प्रारभ्यते ।

सर्वाधिकार श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रे[illegible] अधीन है. [illegible]

पाषत्रा १७ पुत्रदा १८

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्रीगणेशाय नमः ॥ अथैकादशामाहात्म्यस्य भाषाटीका प्रारभ्यते ॥ सूतजी कहैं हैं कि, हे शौनक आदि ऋषी-
श्वरो ! तुम सुनो कि, बारह मासनमें जो चौबीस एकादशी होय हैं और अधिकमासमें जो दो शुभ एकादशी
ऐसे गणनामें सब छब्बीस होती हैं उनके नाम मैं कहौं हौं तुम सब सावधान मन होके सुनो ॥ १ ॥ २ ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ सूत उवाच ॥ अथ द्वादशमासेषु एकादश्यो भवन्ति याः ॥ अधिके
मासि चाप्यन्ये ये च द्वे भवतः शुभे ॥ १ ॥ एवं षड्विंशसंख्याका एकादश्यो भवंति हि ॥
तासां नामान्यहं वच्मि शृणुध्वं सुसमाहिताः ॥ २ ॥ उत्पन्ना मोक्षदा चापि सफला पुत्रदा
तथा ॥ षट्तिलाख्या जयाख्या च विजयामलकीति च ॥ ३ ॥ पापमोचनिकाख्या च कामदा
च वरूथिनी ॥ मोहिनी चापराख्या च निर्जला योगिनी तथा ॥ ४ ॥ विष्णोर्देवस्य शयनी
पवित्रा पुत्रदा त्वजा ॥ परिवर्तिनीन्दिराख्या तथा पाशांकुशा रमा ॥ ५ ॥ देवोत्थानीति च
प्रोक्ताश्चतुर्विंशति नामभिः ॥ द्वे चाप्यधिकमासस्य पद्मिनी परमेति च ॥ ६ ॥

उत्पन्ना १ मोक्षदा २ सफला ३ पुत्रदा ४ षट्तिला ५ जया ६ विजया ७ आमलकी ८ पापमोचनी ९ कामदा
१० वरूथिनी ११ मोहिनी १२ अपरा १३ निर्जला १४ योगिनी १५ देवशयनी १६ पवित्रा १७ पुत्रदा १८

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मा. अजा १९ परिवर्तिनी २० इन्दिरा २१ पाशांकुशा २२ रमा २३ देवोत्थानी २४ ये चौबीसोंके नाम कहे और मा० ०।०
पद्मिनी १ तथा परमा २ नाम दो एकादशी अधिकमास अर्थात् मलमासमें होती हैं ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥
१ इन सबनके नाम अन्वर्थ कहिये जैसे नाम हैं वैसेही गुण हैं जैसे भगवान्के अंगसे उत्पन्न होनेसे उत्पन्ना कही मा० कृ०
गई और चंपकनगरके वैखानस नाम राजाके पुत्रको मोक्ष देनेसे मोक्षदा नाम भयो ऐसेही सबनके नाम जानिये

अन्वर्थानि च नामानि सर्वासां विद्धि निश्चितम् ॥ तद्धि सर्वं कथाभिस्तु स्फुटतां यास्यति ध्रुवम् ॥ ७ ॥ व्रतमुद्यापनं चासां यदि कर्तुं न शक्नुयात् ॥ तदा संकीर्त्तनान्नाम्नां सद्यस्तत्फलमाप्नुयात् ॥ ८ ॥ अथ कथा ॥ सूत उवाच ॥ एवं प्रीत्या पुरा विप्राः श्रीकृष्णेन परं व्रतम् ॥ कथितं तत्प्रयत्नेन यः कुर्याद्भुवि मानवः ॥ १ ॥

वह सब आगे उनकी कथानसों निश्चय विदित हो जायगा ॥ ७ ॥ और जो इन एकादशिनिके व्रत तथा उद्यापन
करनेको न समर्थ होय तो इनके नामनको कीर्त्तन करके शीघ्रही वा फलको प्राप्त होय ॥ ८ ॥ उत्पन्ना १
मार्गकृष्णे या भवत्येकादशी शुभा ॥ तन्माहात्म्यस्य भाषायां टीकां कुर्वे सुदीपिकाम् ॥ अथ कथा ॥ नैमिषारण्य
क्षेत्रमें सूतजी अठासी हजार शौनक आदि ऋषीश्वरनसों बोलत भये कि, हे ब्राह्मणो ! श्रीकृष्णमहाराजने बडी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रीतिसे जे श्रेष्ठव्रत युधिष्ठिर आदि पांडवनसे प्रथम कहे हैं तिनको पृथ्वीमें जो मनुष्य यत्नसे करेगा ॥ १ ॥ वह या लोकमें अनेक भोगनको भोगिके अंतसमय विष्णुके लोकमें प्राप्त होय है। अर्जुन बोले कि, हे जनार्दन ! या एकादशी व्रतको क्या पुण्य है और कौनसी विधिसों याको करे सो सब आप कृपा करिके मोसों कहिये ॥ २ ॥

भुक्त्वा भोगाननेकांस्तु विष्णुलोकं प्रयाति सः ॥ पार्थ उवाच ॥ उपवासस्य नक्तस्य तथैवायाचितस्य भोः ॥ किं पुण्यं किं विधानं हि ब्रूहि सर्वं जनार्दन ॥२॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ हेमंते चैव संप्राप्ते मासि मार्गशिरे शुभे ॥ शुक्लपक्षे तथा पार्थ एकादश्यामुपोष्य च ॥ ३ ॥ दशम्यां चैव यत् किंचित् यः कुर्यात्सुदृढं व्रतम् ॥ नक्तं च तद्दिने कृत्वा दशम्यां दंतधावनम् ॥ ४ ॥ दिवसस्याष्टमे भागे मंदीभूते दिवाकरे ॥ तत्र नक्तं विजानीयान्न नक्तं निशि भोजनम् ॥ ५ ॥ ततः प्रभातसमये संकल्प्य नियमांश्चरेत् ॥ मध्याह्ने च तथा पार्थ शुचिः स्नातः समाहितः ॥ ६ ॥

श्रीकृष्णजी बोले ॥ हेमन्तऋतुमें मार्गशिर महीनाके आनेपर कृष्णपक्ष तथा शुक्लपक्षमें एकादशीके दिन व्रत करके ॥ ३ ॥ दशमीके दिन कुछ दृढ व्रत करै और रात्रिके समय दतुनि करै ॥ ४ ॥ और दिनके आठवें भागमें जब सूर्यका तेज मन्द हो जाय वा समयसे रात्रि जानिये तो वा समयसें रात्रिमें भोजन न करै ॥ ५ ॥ ता पीछे प्रभात

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

समय संकल्प करके नियमोंको करै और हे अर्जुन ! मध्याह्न स्नानसमयमें शुद्ध और सावधानचित्त होके स्नान
करै ॥ ६ ॥ नदी तलाव अथवा बावडीमें क्रमसों उत्तम मध्यम और अधम जानिये और जो इन तीनोंमेंसे कोई न
होय तो कूपहीपर स्नान करना श्रेष्ठ है ॥ ७ ॥ हे अश्वक्रान्ते ! हे रथक्रान्ते ! हे विष्णुक्रान्ते ! हे वसुंधरे ! हे मृत्तिके !
मेरे पूर्वजन्ममें करे भये पापनकूं तू हरले ॥ ८ ॥ तेरे नाश करे भये पापनसे मैं परमगतिको जाऊंगा या मंत्रसे मनुष्य

नद्यां तडागे वाप्यां वा उत्तमं मध्यमं त्वधः ॥ क्रमाज्ज्ञेयं तथा कूपे तदभावे प्रशस्यते ॥ ७ ॥ अश्वक्रांते रथक्रांते विष्णुक्रांते वसुंधरे ॥ मृत्तिके हर मे पापं यन्मया पूर्वसंचितम् ॥ ८ ॥ त्वया हतेन पापेन गच्छामि परमां गतिम् ॥ अनेन मृत्तिकास्नानं विदधीत व्रती नरः ॥ ९ ॥ नालपेत् पतितैश्चौरैस्तथा पाखण्डिभिः सह ॥ मिथ्यापवादिनो देववेदब्राह्मणनिन्दकान् ॥ १० ॥ अन्यांश्चैव दुराचारानगम्यागामिनस्तथा ॥ परद्रव्यापहर्तॄंश्च देवद्रव्यापहारिणः ॥ ११ ॥

स्नानते प्रथम मृत्तिकास्नान करै ॥ ९ ॥ व्रतके दिन पतित चोर पाखंडी और झूंठा अपवाद लगानेवाले तथा देवता
और ब्राह्मणनकी निन्दा करनेवाले मनुष्यनसों वार्त्तालाप न करै ॥ १० ॥ और जे दुष्ट आचारवाले मनुष्य हैं तिनसे
और अगम्या जो माता भगिनी आदि हैं तिनसे गमन करनेहारे मनुष्यनसों और पराये द्रव्यके हरनेवाले तथा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

देवताको द्रव्य लेनेवाले मनुष्यनसों संभाषण न करै ॥ ११ ॥ जो कदाचित् इनमेंसे काहूको दर्शन हो जाय तो सूर्यको दर्शन करै ता पीछे नैवेद्य आदिसों आदरपूर्वक गोविंदको पूजन करै ॥ १२ ॥ और भक्तियुक्त चित्त होके घरमें दीपदान करै और हे अर्जुन! वा दिन व्रती मनुष्य पराई निन्दा और स्त्रीसंग न करै और गीत कहिये

न संभाषेत दृष्ट्वाऽपि भास्करं चावलोकयेत् ॥ ततो गोविंदमभ्यर्च्य नैवेद्यादिभिरादरात् ॥१२॥ दीपं दद्याद्गृहे चैव भक्तियुक्तेन चेतसा ॥ तद्दिने वर्जयेत् पार्थ निंदां मैथुनमेव च ॥ गीतशास्त्रविनोदेन दिवारात्रं नयेद्व्रती ॥१३॥ रात्रौ जागरणं कृत्वा भक्तियुक्तेन चेतसा ॥ विप्रेभ्यो दक्षिणां दत्त्वा प्रणिपत्य क्षमापयेत् ॥ १४ ॥ यथा शुक्ला तथा कृष्णा मान्या वै धर्मतत्परैः ॥ एकादश्योर्द्वयो राजन् विभेदं नैव कारयेत् ॥ १५ ॥

भजन आदिकी तथा शास्त्रके आनन्दसों दिन राति व्यतीत करै ॥ १३ ॥ भक्तियुक्त चित्त होके रात्रिके विषे जागरण करै और ब्राह्मणको दक्षिणा नमस्कार करके क्षमापन करावै ॥ १४ ॥ जैसे कृष्णपक्षकी वैसेही शुक्लपक्षकी एकादशी धर्म्मात्मा मनुष्यनको मानने योग्य हैं दोनों एकादशीनमें कुछ भेद न करै ॥ १५ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

या प्रकार जे मनुष्य व्रत करै हैं ताको जो फल होय है ताहि सुनो–मनुष्य शंखोद्धारनाम क्षेत्रमें स्नान करि गदाधर महाराजके दर्शन करिके जा फलको प्राप्त होय है ॥ १६ ॥ वह फल एकादशीके व्रतकी सोलहवीं कला अर्थात् सोलहें भागकेहू समान नहीं है. व्यतीपातनाम योगमें जो दान है ताको एक लक्ष फल

एवं हि कुरुते यस्तु शृणु तस्यापि यत्फलम् ॥ शंखोद्धारे नरः स्नात्वा दृष्ट्वा देवं गदाधरम् ॥ १६ ॥ एकादश्युपवासस्य कलां नार्हंति षोडशीम् ॥ व्यतीपाते च दानस्य लक्षमेकं फलं स्मृतम् ॥ १७ ॥ संक्रांतिषु चतुर्लक्षं यो ददाति धनंजय ॥ कुरुक्षेत्रे च यत्पुण्यं ग्रहणे चंद्रसूर्ययोः ॥ १८ ॥ तत्सर्वं लभते यस्तु एकादश्यामुपोषितः ॥ अश्वमेधस्य यज्ञस्य करणाद्यत्फलं लभेत् ॥ ततः शतगुणं पुण्यमेकादश्युपवासतः ॥ १९ ॥

कहा है ॥ १७ ॥ और हे अर्जुन ! संक्रांतिनविषे जो कोऊ दान करै है. ताको चार लक्ष फल होय है और चंद्र तथा सूर्यके ग्रहणमें जो कुरुक्षेत्र विषे फल होय है ॥ १८ ॥ वा सब फलको एकादशीको व्रत करनहारो मनुष्य प्राप्त होय है और अश्वमेध यज्ञके करनेसे जो फल प्राप्त होय है ताते सौगुणो एकादशीके व्रतको फल होय

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

है ॥ १९ ॥ जाके घरमें एक लाख तपस्वी नित्य भोजन पावें हैं साठ हजार वर्षमें वाको जितनो फल होय
है ॥ २० ॥ उतनो पुण्य मनुष्यको एकादशी व्रतसों प्राप्त होय है और अंगनसहित वेद पढनेवाले मनुष्यको
हजार गौ देनेसे जो पुण्य होय है ॥ २१ ॥ ता पुण्यसे दशगुणो अधिक एकादशीव्रत करनहारे मनुष्यको होय

तपस्विनो गृहे नित्यं लक्षं यस्य च भुंजते ॥ षष्टिवर्षसहस्राणि तस्य पुण्यं च यद्भवेत् ॥ २० ॥
एकादश्युपवासेन पुण्यं प्राप्नोति मानवः ॥ गोसहस्रे च यत्पुण्यं दत्ते वेदांगपारगे ॥२१॥ तस्मा-
त्पुण्यं दशगुणमेकादश्युपवासिनाम् ॥ नित्यं च भुञ्जते यस्य दश चैव द्विजोत्तमाः ॥ २२ ॥
भवेत्तद्वै दशगुणं भोजने ब्रह्मचारिणः ॥ एतत्सहस्रं भूदाने कन्यादाने ततः स्मृतम् ॥ २३ ॥
तस्माद्दशगुणं प्रोक्तं विद्यादाने तथैव च ॥ विद्यादशगुणं चान्नं यो ददाति बुभुक्षिते ॥ २४ ॥

है. जाके घरमें नित्य उत्तम दश ब्राह्मण भोजन करै हैं ॥ २२ ॥ वाते दशगुणो अधिक एक ब्रह्मचारीके भोज-
नको फल होय है ताते हजारगुणो अधिक भूमिके दानको फल होय है और ताते हजारगुणो अधिक कन्या-
दानको फल कहा है ॥ २३ ॥ तैसेही ताते दशगुणो विद्यादानको फल कहा है और जो भूखेको अन्न देय है

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ताको पुण्यते दशगुणो अधिक होय है ॥ २४ ॥ अन्नदानके समान कोऊ दान न भयो न होयगो वा अन्नदा-
नसों स्वर्गमें स्थित पितर और देवता तृप्तिको प्राप्त होय हैं ॥ २५ ॥ एकादशीके व्रतके पुण्यनकी संख्या नहीं
है वाते याके पुण्यनको प्रभाव देवतानकोहू दुर्लभ है ॥ २६ ॥ हे सत्तम ! अर्थात् हे वडे सज्जन अर्जुन ! रात्रिमें
भोजन करनहारेको और दिनमें एकवार भोजन करनहारेको आधा फल मिलै है. एक वार भोजन करना रात्रिमें

अन्नदानसमं दानं न भूतं न भविष्यति ॥ तृप्तिमायांति कौंतेय स्वर्गस्थाः पितृदेवताः ॥ २५ ॥
एकादशीव्रतस्यापि पुण्यसंख्या न विद्यते ॥ एतत्पुण्यप्रभावश्च यत्सुरैरपि दुर्लभः ॥ २६ ॥
नक्तस्यार्द्धं फलं तस्य एकभुक्तस्य सत्तम ॥ एकभुक्तं च नक्तं च उपवासस्तथैव च ॥ २७ ॥
एतेष्वन्यतमं वापि व्रतं कुर्याद्धरेर्दिने ॥ तावद्गर्जंति तीर्थानि दानानि नियमा यमाः ॥ २८ ॥
एकादशी न संप्राप्ता यावत्तावन्मखा अपि ॥ तस्मादेकादशी सर्वैरुपोष्या भवभीरुभिः ॥ २९ ॥

भोजन करना और उपवास करना ॥ २७ ॥ इन तीनि प्रकारके व्रतनमेंसे एकादशीके दिन कोई न कोई व्रत
करना योग्य है. तवहीं लौं तीर्थ दान नियम और यम गर्जे हैं ॥ २८ ॥ जवताईं एकादशी नहीं आवै है और
यज्ञहू तवही लौं गर्जे हैं ताते संसारसे डरेभये मनुष्यनको एकादशीको व्रत अवश्य करना उचित है ॥ २९ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे अर्जुन ! जो तुम हमसे पूछो हो तो मैं कहौं हौं कि, नखनसे जल न पीवै, मच्छियों तथा सुअरोंको न मारै और एकादशीको भोजन न करै ॥ ३० ॥ यह मैंने तुमसे सब व्रतनमें उत्तम व्रत कहा जो किये भये हजार यज्ञ वा एकादशीव्रतके समान नहीं हैं ॥ ३१ ॥ अर्जुन बोले कि, हे देव ! तुमने एकादशीको सब तिथिनमें पुण्यतिथि कैसे

न नखेन पिबेत्तोयं न हन्यान्मत्स्यसूकरान् ॥ एकादश्यां न भुञ्जीत यन्मां त्वं पृच्छसेऽर्जुन ॥ ३० ॥ एतत्ते कथितं सर्वं व्रतानामुत्तमं व्रतम् ॥ एकादशीसमं नास्ति कृत्वा यज्ञसहस्रकम् ॥ ३१ ॥ अर्जुन उवाच ॥ उक्ता त्वया कथं देव पुण्येयं सर्वतास्तिथिः ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ पुरा कृतयुगे पार्थ मुरनामा हि दानवः ॥ अत्यद्भुतो महारौद्रः सर्वदेवभयंकरः ॥ ३२ ॥ इन्द्रो विनिर्जितस्तेन ह्यत्युग्रेण च पांडव ॥ इंद्रेण कथितः सर्वो वृत्तांतः शंकराय वै ॥ ३३ ॥ सर्वलोकपरिभ्रष्टा विचरामो महीतले ॥ उपायं ब्रूहि मे देव त्रिदशानां तु का गतिः ॥ ३४ ॥

कही वाकी पुरानी कथा सुननेकी मेरी इच्छा है । श्रीकृष्ण बोले कि, हे अर्जुन ! पहले कृतयुगमें अतिअद्भुत और बहुतही भयानक देवतानको भय देनहारो मुर नाम दैत्य होतो भयो ॥ ३२ ॥ हे पांडव ! अति उग्र जो यह मुर नाम दैत्य हो ता करके इन्द्र जीते गये, तब इन्द्र यह सम्पूर्ण वृत्तांत महादेवसे कहत भये ॥ ३३ ॥ कि, हे महाराज!

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हम सब अपने लोकसे भ्रष्ट होके भूमिमें विचर रहें हैं. हे देव! उपाय बताओ देवतानकी कौनसी गति है हे ईश्वर! कहिये ॥ ३४ ॥ श्रीमहादेवजी बोले कि, हे देवराज! हे देवतानमें श्रेष्ठ! शरणागतकी रक्षा करनहारे सब जगत्के स्वामी और रक्षामें तत्पर श्रीभगवान् विष्णु जहां हैं ॥ ३५ ॥ वहांको हम सब चलैं हैं वे हमारो कार्य करेंगे. शिवजीको ऐसो वचन सुनिके बडो है मन जाको ऐसे इंद्र ॥ ३६ ॥ संपूर्ण गणनको और मरुद्गण

ईश्वर उवाच ॥ देवराज सुरश्रेष्ठ यत्रास्ति गरुडध्वजः ॥ शरण्यश्च जगन्नाथः परित्राणपरायणः ॥३५॥ तत्र गच्छामहे सर्वे स नः कार्यं विधास्यति ॥ ईशस्य वचनं श्रुत्वा देवराजो महामनाः ॥३६॥ पुरस्कृत्य महादेवं सगणं समरुद्गणम् ॥ यत्र देवो जगन्नाथः प्रसुप्तो हि जनार्दनः॥३७॥ जलमध्ये प्रसुप्तं तु दृष्ट्वा देवं जगत्पतिम् ॥ कृतांजलिपुटो भूत्वा रुद्रः स्तोत्रमुदीरयत् ॥ ३८ ॥ ॐ नमो देवदेवाय देवदेवैः सुवंदित ॥ दैत्यारे पुंडरीकाक्ष त्राहि नो मधुसूदन ॥ ३९ ॥

जो देवतानको समूह है ता समेत श्रीमहादेवजको आगे करके जहां जगत्के स्वामी श्रीभगवान् सोयरहे हैं वहां जात भये ॥ ३७ ॥ जगत्के स्वामी जो श्रीभगवान् हैं तिनको जलके मध्य सोवते भये देखि श्रीमहादेवजी हाथ जोरके स्तुति करने लगे ॥ ३८ ॥ देवतानके देवता और श्रेष्ठ देवतान करि नमस्कार किये गये तथा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दैत्यनके शत्रु हे पुण्डरीकाक्ष ! हे मधुसूदन ! हमारी रक्षा करो ॥ ३९ ॥ दैत्यनसूं डरे भये ये सब देवता मो समेत आपकी शरणमें आये हैं. हे महाराज ! आप शरण कहिये रक्षा करनहारे हो और सबके कर्ता और करावनहारे आपही हो ॥४०॥ तुमहीं सब लोकनके माता हो और तुमहीं संसारके पिता हो और उत्पन्न करनहारे तथा पालनहारे

दैत्यभीता इमे देवा मया सह समागताः ॥ शरणं त्वं जगन्नाथ त्वं कर्ता त्वं च कारकः ॥४०॥ त्वं माता सर्वलोकानां त्वमेव जगतः पिता ॥ त्वं स्थितिस्त्वं तथोत्पत्तिस्त्वं च संहारकारकः ॥ ४१ ॥ सहायस्त्वं च देवानां त्वं च शांतिकरः प्रभो ॥ त्वं धरा च त्वमाकाशः सर्वविश्वोपकारकः ॥ ४२ ॥ भवस्त्वं च स्वयं ब्रह्मा त्रैलोक्यप्रतिपालकः ॥ त्वं रविस्त्वं शशांकश्च त्वं च देवो हुताशनः ॥ ४३ ॥

और संहार करनहारे आपही हो ॥ ४१ ॥ हे प्रभो ! आप देवतानके सहायक हो और उनकी शांति करनहारे हो आपही पृथ्वी हो, आपही आकाश हो और सब संसारके उपकार करनहारे ॥४२॥ आपही शिव हो और आपही ब्रह्मा तथा तीनों लोकनके पालनहारे विष्णु आपही हो आपही सूर्य हो और चन्द्रमा हो तथा अग्निदेवता आपही

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हो ॥ ४३ ॥ हव्य जो साकल्य है सो आपंही हो और होम आपही हो. तथा होमी भई वस्तु, मन्त्र, तन्त्र, ऋत्विज, जप, यजमान, यज्ञ ये सब आपही हो फल भोगनहारे आपही ईश्वर हो ॥ ४४ ॥ तीनों लोकनमें चर और अचरमें तुम करके रहित कोई वस्तु नहीं है अर्थात् आप सर्वव्यापी हो हे भगवन् ! हे देवदेवेश ! हे शरणागतवत्सल ! अर्थात् जिनको शरणमें आये भये जीव प्यारे हैं ऐसे आप हो ॥ ४५ ॥ हे महायोगिन् ! हे महा-

हव्यं होमो हुतस्त्वं च मंत्रतंत्रर्त्विजो जपः ॥ यजमानश्च यज्ञस्त्वं फलभोक्ता त्वमीश्वरः ॥ ४४ ॥
न त्वया रहितं किंचित्त्रैलोक्ये सचराचरे ॥ भगवन् देवदेवेश शरणागतवत्सल ॥ ४५ ॥ त्राहि
त्राहि महायोगिन् भीतानां शरणं भव ॥ दानवैर्निर्जिता देवाः स्वर्गभ्रष्टाः कृता विभो ॥ ४६ ॥
स्थानभ्रष्टा जगन्नाथ विचरंति महीतले ॥ रुद्रस्य वचनं श्रुत्वा विष्णुर्वचनमब्रवीत् ॥ ४७ ॥

राज ! रक्षा करो और भीत कहिये डरे भये जो हम हैं तिनकी रक्षा करो. हे विभो ! कहिये हे समर्थ ! हे महाराज ! दानवनकरके जीतेगये देवता स्वर्गसे भ्रष्ट करिदियेगये हैं ॥ ४६ ॥ हे जगन्नाथ ! देवता स्थानसे भ्रष्ट होके पृथ्वीतलमें विचररहे हैं यह महादेवजीको वचन सुनिके विष्णु भगवान् बोलतभये ॥ ४७ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्रीभगवान् बोले कि, ऐसो कौनसो बडो मायावी दैत्य है जाने देवतानको जीतिलियो वाको कौनसो स्थान है और कहा नाम है और वाको कैसो वल है वाको आश्रय कहां है ॥ ४८ ॥ हे इन्द्र ! यह सब कहो और निर्भय हो. इन्द्र बोले कि, हे देवदेवेश ! हे भक्तनपर कृपा करनहारे ! महाराज ! ॥ ४९ ॥ पहले समयमें नाडीजंघ नाम

श्रीभगवानुवाच ॥ कोऽसौ दैत्यो महामायो देवा येन विनिर्जिताः ॥ किं स्थानं तस्य किं नाम किं बलं कस्तदाश्रयः ॥४८॥ एतत्सर्वं समाचक्ष्व मघवन्निर्भयो भव ॥ इन्द्र उवाच ॥ भगवन्देवदेवेश भक्तानुग्रहकारक ॥ ४९ ॥ दैत्यः पूर्वं महानासीन्नाडीजंघ इति स्मृतः ॥ ब्रह्मवंशसमुद्भूतो महोग्रः सुरसूदनः ॥ ५० ॥ तस्य पुत्रोऽतिविख्यातो मुरनामा महाऽसुरः ॥ तस्य चंद्रावती नाम नगरी च गरीयसी ॥ ५१ ॥ तस्यां वसन्स दुष्टात्मा विश्वं निर्जित्य वीर्यवान् ॥ सुरान् स वशमानिन्ये निराकृत्य त्रिविष्टपात् ॥ ५२ ॥

राक्षस होत भयो वह ब्रह्मवंशमें उत्पन्न हो और बडो उग्र देवतानको दुःखदायी हो ॥ ५० ॥ वाको पुत्र अतिविख्यात मुर नाम बडो असुर है और वाकी बहुत बडी चंद्रावती नाम नगरी है ॥ ५१ ॥ वा नगरीमें वसतो भयो वह बडो पराक्रमी दुष्टात्मा संसारको जीतिके देवतानको स्वर्गसे निकासिके अपने वशमें करत भयो ॥५२॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इंद्र, अग्नि, यम, वायु, ईश, निर्ऋति, वरुण इन सबके स्थाननमें आपही स्थित है और सूर्य होकर तपि रहो है ॥ ५३ ॥ हे देव ! वह आपही मेघ बनि बैठो है और सब देवताहू बनिगयो है हे विष्णु ! वा दैत्यको मारो और देवतानको विजयी करावो ॥ ५४ ॥ ऐसे उनके वचन सुनिके जनार्दन भगवान् कुपित होके इंद्रसे कहत भये कि, हे देवेन्द्र ! मैं वा बलवान् दैत्यको मारोंगो ॥ ५५ ॥ हे महाबली देवताओ ! तुम सब इकट्टे होके

इंद्राग्नियमवाय्वीशसोमनिर्ऋतिपाशिनाम् ॥ पदेषु स्वयमेवासीत् सूर्यो भूत्वा तपत्यपि ॥ ५३ ॥

पर्जन्यः स्वयमेवासीद्देव सर्वाश्च देवताः ॥ जहि तं दानवं विष्णो सुराणां जयमावह ॥ ५४ ॥

तस्य तद्वचनं श्रुत्वा कोपाविष्टो जनार्दनः ॥ उवाच शक्रं देवेन्द्र हनिष्ये तं महाबलम् ॥ ५५ ॥

प्रयांतु सहिता सर्वे चंद्रावत्यां महाबलाः ॥ इत्युक्ताः प्रययुः सर्वे पुरस्कृत्य हरिं सुराः ॥ ५६ ॥

दृष्टो देवैस्तु दैत्येंद्रो गर्जमानस्तु दानवैः ॥ असंख्यातसहस्रैस्तु दिव्यप्रहरणायुधैः ॥ ५७ ॥

चंद्रावती नाम सुरकी नगरीको जावो. विष्णुकर ऐसे कहे गये सब देवता विष्णु आगे करके चंद्रावती पुरीको चलत भये ॥ ५६ ॥ देवतानने गर्जतो भयो दानवको कैसो देखो कि, असंख्यात और नाना प्रकारके अस्त्र शस्त्र धारण करे भये दानवनकरके युक्त है ॥ ५७ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भुजानकर शोभित असुरन करि मारे गये सब देवता वा संग्रामको छोडके दशों दिशानको भागत भये ॥ ५८ ॥
ता पीछे हृषीकेश भगवान्‌को संग्राममें स्थित देखिके वे असुर नानाप्रकारके अस्त्र शस्त्र लेके उनके ऊपर दौरत
भये ॥ ५९ ॥ शंख, चक्र, गदाके धारण करनहारे भगवान् उन असुरनको आते देखि सबके शरीरनको सर्पनके

हन्यमानास्तदा देवा असुरैर्बाहुशालिभिः ॥ संग्रामं ते समुत्सृज्य पलायंत दिशो दश ॥ ५८ ॥
ततो दृष्ट्वा हृषीकेशं संग्रामे समुपस्थितम् ॥ अन्वधावन्नभिक्रुद्धा विविधायुधपाणयः ॥ ५९ ॥
अथ तान्प्रद्रुतान्दृष्ट्वा शंखचक्रगदाधरः ॥ विव्याध सर्वगात्रेषु शरैराशीविषोपमैः ॥ ६० ॥ तेना-
नाहतास्ते शतशो दानवा निधनं गताः ॥ एकांगो दानवः स्थित्वा युद्ध्यमानो मुहुर्मुहुः ॥ ६१ ॥
तस्योपरि हृषीकेशो यद्यदायुधमुत्सृजत् ॥ पुष्पवत्तं समभ्येति कुंठितं तस्य तेजसा ॥ ६२ ॥
शस्त्रास्त्रैर्विद्ध्यमानोऽपि यदा जेतुं न शक्यते ॥ युयोध च तथा क्रुद्धो बाहुभिः परिघोपमैः ॥ ६३ ॥

समान बाणनसों वेधि देतभये ॥ ६० ॥ उन विष्णुकरके मारे गये वे असुर सैकडन नाशको प्राप्त होत भये एकांग कहे
अकेलो वह दानव स्थित होके वारंवार युद्ध कर रहो है ॥ ६१ ॥ वाके ऊपर भगवान् जो जो अस्त्र शस्त्र छोरत भये वे वाके
तेजसों कुंठित होके फूलके समान वाके समीप जात भये ॥ ६२ ॥ शस्त्रन और अस्त्रनकर वेधोभी वह असुर जब जीतिवेको

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

न समर्थ भयो तब परिघके समान बडी भुजानसे युद्ध करने लगो ॥ ६३ ॥ वाने दिव्य दशहजार वर्षलों बाहुयुद्ध कीन्हो वाते थके भये भगवान् बदरिकाश्रमको जात भये ॥ ६४ ॥ वहां हैमवती नाम बहुत सुहावनी गुफा है वामें बडे योगी और

जगत्के स्वामी विष्णु भगवान् शयन करनेको प्रवेश करत भये ॥ ६५ ॥ हे अर्जुन ! वह गुफा १२ योजन अर्थात्

बाहुयुद्धं कृतं तेन दिव्यवर्षसहस्रकम् ॥ तेन श्रांतः स भगवान् गतो बदरिकाश्रमम् ॥ ६४ ॥
तत्र हैमवती नाम्नी गुहा परमशोभना ॥ तां प्रविश्य महायोगी शयनार्थं जगत्पतिः ॥ ६५ ॥
योजनद्वादशायामा एकद्वारा धनंजय ॥ अहं तत्र प्रसुप्तोऽस्मि भयभीतो न संशयः ॥ ६६ ॥
महायुद्धेन तेनैव श्रांतोऽहं पांडुनंदन ॥ दानवः पृष्ठतो लग्नः प्रविवेश स तां गुहाम् ॥ ६७ ॥
प्रसुप्तं मां तदा दृष्ट्वाऽचिन्तयद्दानवो हृदि ॥ हरिमेनं हनिष्येऽहं दानवानां क्षयावहम् ॥ ६८ ॥

४८ कोस चौडी है और वाको एकही द्वार है तामें मैं भयभीत होके सोयो यामें सन्देह नहीं है ॥ ६६ ॥ हे अर्जुन ! मैं वा महायुद्धसे थकि गयो हो और वह दानव हो सोऊ मेरे पीछे लगो भयो वा गुफामें प्रवेश करत भयो ॥ ६७ ॥ तब वह दानव मोहि सोवतो देखि अपने हृदयमें चितवन करत भयो कि, मैं दानवनके नाश करनवारे या हरिको

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मारूंगो ॥ ६८ ॥ वह दुष्टबुद्धि ऐसे उद्योगको निश्चय कर रहो ताही समय मेरे अंगनसों एक बडे तेजवारी कन्या उत्पन्न होत भई ॥ ६९ ॥ दिव्य अस्त्र शस्त्रनको धारण करनहारी वह देवी युद्ध करवेको उपस्थित होत भई, हे अर्जुन ! दानवेंद्र कर्रिके वह क्रोधसे अरुण वर्ण देखी गई ॥ ७० ॥ वहां वा दानवने या स्त्रिकिरके मांगो

एवं सुदुर्मतेस्तस्य व्यवसायं व्यवस्यतः ॥ समुद्भूता ममांगेभ्यः कन्यैका च महाप्रभा ॥ ६९ ॥
दिव्यप्रहरणा देवी युद्धाय समुपस्थिता ॥ ईक्षिता दानवेन्द्रेण अरुणा पांडुनंदन ॥ ७० ॥ युद्धं
समाहितं तेन स्त्रिया तत्र प्रयाचितम् ॥ तेनायुद्धयत सा नित्यं तां दृष्ट्वा विस्मयं गतः ॥७१॥
केनेयं निर्मिता रौद्रा अत्युग्राऽशनिपातिनी ॥ इत्युक्त्वा दानवेंद्रोऽसौ युयुधे कन्यया तया ॥७२॥
ततस्तया महादेव्या त्वरया दानवो बली ॥ छित्त्वा सर्वाणि शस्त्राणि क्षणेन विरथः कृतः॥७३॥
बाहुप्रहरणोपेतो धावमानो महाबलात् ॥ तलेनाहृत्य हृदये तथा देव्या निपातितः ॥ ७४ ॥

भयो युद्ध कियो वह वाके साथ नित्य युद्ध करती वाहि देखि वह दैत्य विस्मयको प्राप्त भयो ॥ ७१ ॥ भयावनी अति उग्र वज्रपात करनहारी कौनने यह बनाई है ऐसे कहके वह दानव वा कन्याके साथ युद्ध करत भयो ॥ ७२ ॥ ता पीछे वा महादेवीने आति शीघ्र वाके सब अस्त्र शस्त्र काटिके वाहि रथहीन कर दीन्हो ॥ ७३ ॥ तब वह बाहुयुद्ध

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

करवेको अति बलसों दौरत भयो वह असुर वा देवीकारि छातीमें थपेरा मारके गिरायो गयो ॥ ७४ ॥ वह उठिके
कन्याके मारनकी इच्छा करके फिर दौरतो भयो तब देवी वाहि आवतो देखि क्रोध करि वाको शिर काटि देत
भई ॥ ७५ ॥ क्षणमात्रहीमें देवी वा महाअसुरको भूमिमें पटक देती भई ता पीछे कटि गयो है शिर जाको
ऐसो वह दानव यमराजके लोकको जातो भयो ॥ ७६ ॥ बाकी रहे असुर शत्रु भयसे पीडित और दीन होके

पुनरुत्थाय सोऽधावत् कन्याहननकांक्षया ॥ दानवं पुनरायातं रोषेणाहृत्य तच्छिरः ॥ ७५ ॥
क्षणान्निपातयामास भूमौ तत्र महासुरम् ॥ दैत्यः कृत्तशिराः सोऽथ ययौ वैवस्वतालयम् ॥७६॥
शेषा भयार्दिता दीनाः पातालं विविशुर्द्विषः ॥ ततः समुत्थितो देवः पुरो दृष्ट्वाऽसुरं हतम् ॥७७॥
कन्यां पुरःस्थितां चापि कृतांजलिपुटां नताम् ॥ विस्मयोत्फुल्लवदनः प्रोवाच जगतां पतिः ॥७८॥
केनायं निहतः संख्ये दानवो दुष्टमानसः ॥ येन देवाः सगन्धर्वाः सेन्द्राश्च समरुद्गणाः ॥ ७९ ॥

पातालको चले जात भये ता पीछे भगवान् उठिके आगे मारे भये दैत्यको देखते भये ॥ ७७ ॥ और नम्रतासे
हाथ जोरिके ठाडी भई एक कन्याको देखत भये, तब जगत्के स्वामी भगवान् विष्णु बोलत भये ॥७८॥ या दुष्टचित्त
दानवको संग्राममें कौनने मारो है जाने देवता गंधर्व और इन्द्र और देवगण समेत सबको जीत लियो है ॥ ७९ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

और जाने नागनको और लोकपालनको लीलाहीसे जीति लियो और जा करके जीतो गयो मैं भयभीत होके या गुफामें सोयो हों ॥ ८० ॥ कन्या बोली कि, हे प्रभो ! तुम्हारे अंशसों उत्पन्न भई जो मैं हौं ता करके यह दैत्य मारो गयो है ॥ ८१ ॥ हे हरिमहाराज ! तुम्हैं सोवते देखि याते वह मारिवेको उद्यत भयो और त्रिलो-

सनागाः सहलोकेशा लीलयैव विनिर्जिताः ॥ येनाहं निर्जितो भूत्वा भीतः सुप्तो गुहामिमाम् ॥ ८० ॥ कन्योवाच ॥ मया विनिहतो दैत्यस्त्वदंशोद्भूतया प्रभो ॥ ८१ ॥ दृष्ट्वा सुप्तं हरे त्वां तु यतो हंतुं समुद्यतः ॥ त्रैलोक्यकंटकस्येत्थं व्यवसायं प्रबुद्ध्य च ॥ ८२ ॥ हतो मया दुरात्माऽसौ देवता निर्भयाः कृताः ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ निहते दानवेन्द्रेऽस्मिन्संतुष्टोऽहं त्वयाऽनघे ॥ ८३ ॥ हृष्टाः पुष्टाश्च वै देवा आनन्दः समजायत ॥ आनंदस्त्रिषु लोकेषु देवानां यस्त्वया कृतः ॥ ८४ ॥

कीको कंटक कहिये तीनों लोकनको दुःख देनहारो वाको यह उद्योग जानिके ॥ ८२ ॥ मो करके दुष्ट मारो गयो और देवता निर्भय किये गये । श्रीभगवान् बोले कि, हे अनघे ! या असुरके मारनेसे मैं तेरे ऊपर प्रसन्न हौं ॥ ८३ ॥ देवता हृष्ट पुष्ट भये और उनको आनन्द भयो देवतानको जो तैंने आनंदित कियो ताते तीनों लोकन-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

 विषे आनन्द भयो है ॥ ८४ ॥ हे अनघे ! मैं तोसों प्रसन्न हौं हे सुव्रते ! वर मांगले मैं तोको ऐसो वर देऊँगो जो
देवतानकोहू दुर्लभ है ॥ ८५ ॥ कन्या बोली कि हे देव ! जो आप मोपे प्रसन्न हो और जो मोको वर देनो है
 तो वा वरको देवो जाते मैं व्रत करनवारे मनुष्यनको महापापसे तारि देऊं ॥ ८६ ॥ उपवासको जो फल है ताते

प्रसन्नोऽस्म्यनघे [illegible]यं वरं वरय सुव्रते ॥ ददामि तं न संदेहो यत्सुरैरपि दुर्लभम् ॥ ८५ ॥ कन्योवाच ॥ यदि तुष्टोऽसि मे देव यदि देयो वरो मम ॥ तारयेऽहं महापापादुपवासपरं नरम् ॥ ८६ ॥ उपवासस्य यत्पुण्यं तस्यार्द्धं नक्तभोजने ॥ तदर्धं च भवेत्तस्य एकभुक्तं करोति यः ॥ ८७ ॥ यः करोति व्रत भक्त्या दिने मम जितेन्द्रियः ॥ स गत्वा वैष्णवं स्थानं कल्पकोटिशतानि च ॥ ८८ ॥ भुंजानो विविधान् भोगानुपवासी जितेंद्रियः ॥ भगवंस्त्वत्प्रसादेन भवत्वेष वरो मम ॥ ८९ ॥

आधो रात्रिमें भोजन करनवारेनको होय है और ताते आधो पुण्य एक वार भोजन करनवारेनको होय है ॥ ८७ ॥
जो पुरुष जितेंद्रिय होके भक्तिसों मेरे दिन व्रत करेगो वह वैष्णवधाम अर्थात् वैकुंठधाममें प्राप्त होके करोडों कल्पोंपर्यंत आनन्द करै है ॥ ॥ ८८ ॥ और जितेंद्रिय होके व्रत करै वह नाना भोगनको भोगै है हे भगवन् ! आपके

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रसादते मोको यह वर मिले ॥ ८९ ॥ और जो मेरे दिन उपवास वा रात्रिमें एक बार भोजन अथवा दिनमें एक वार भोजन करै हे जनार्दन ! ताको आप धर्म धन और मोक्षकूं देवो ॥ ९० ॥ श्रीभगवन् बोले, कि हे कल्याणि ! जो तू कहै है सो सब होयगो और जो लोक मेरे भक्त हैं वे मनुष्य तेरे भक्त हैं ॥ ९१ ॥ वे तीनों

उपवासं च नक्तं च एकभुक्तं करोति यः ॥ तस्य धर्मं च वित्तं च मोक्षं देहि जनार्दन ॥ ९० ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ यत्त्वं वदसि कल्याणि तत्सर्वं च भविष्यति ॥ मम भक्ताश्च ये लोकास्तव भक्ताश्च ते नराः ॥ ९१ ॥ त्रिषु लोकेषु विख्याताः प्राप्स्यंति मम सन्निधिम् ॥ एकादश्यां समुत्पन्ना मम भक्तिपरायणा ॥ ९२ ॥ अत एकादशीत्येवं तव नाम भविष्यति ॥ दग्ध्वा पापानि सर्वाणि दास्यामि पदमव्ययम् ॥ ९३ ॥ तृतीया चाष्टमी चैव नवमी च चतुर्दशी ॥ एकादशी विशेषेण तिथयो मे महाप्रियाः ॥ ९४ ॥

लोकनमें विख्यात हो मेरे निकट प्राप्त होयँगे मेरी भक्तिमें परायण तू जाते एकादशीके दिन उत्पन्न भई है ॥ ९२ ॥ ताते तेरो एकादशी यह नाम होयगो और व्रत करनवारे मनुष्यनके सम्पूर्ण पापनको जलायके अविनाशी पद देऊँगो ॥ ९३ ॥ तीज, अष्टमी, नवमी और चतुर्दशी ये तिथि मोको प्यारा ह, परंतु इन सबनमें एकादशी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तो मोको विशेष बहुत प्यारी है ॥ ९४ ॥ एकादशीको पुण्य सब तीर्थनके पुण्यसे अधिक है और याको फल सब दानन और व्रतनके फलसे अधिक है यह मैं तोसों सत्य सत्य कहौं हौं ॥ ९५॥ या प्रकार वाको वर देके श्रीभगवान् वहीं अंतर्धान हो जात भये ता समय एकादशी तिथि हृष्ट पुष्ट होत भई ॥ ९६ ॥ हे अर्जुन ! जे मनुष्य वा एकादशीके

सर्वतीर्थाधिकं पुण्यं सर्वदानाधिकं फलम् ॥ सर्वव्रताधिकं चैव सत्यं सत्यं वदामि ते ॥९५॥ एवं दत्त्वा वरं तस्यास्तत्रैवांतरधीयत ॥ हृष्टा तुष्टा तु सा जाता तदा एकादशी तिथिः ॥ ९६ ॥ इमामेकादशीं पार्थ करिष्यंति नरास्तु ये ॥ तेषां शत्रुं हनिष्यामि दास्यामि परमां गतिम् ॥९७॥ अन्येऽपि ये करिष्यंति एकादश्या महाव्रतम् ॥ हरामि तेषां विघ्नांश्च सर्वसिद्धिं ददामि च॥९८॥ एवमुक्ता समुत्पत्तिरेकादश्याः पृथासुताः ॥ इयमेकादशी नित्या सर्वपापक्षयंकरी ॥ ९९ ॥ एकैव च महापुण्या सर्वपापनिषूदनी ॥ उदिता सर्वलोकेषु सर्वसिद्धिकरी तिथिः ॥ १०० ॥

व्रतको करेंगे उनके शत्रुनको मैं नाश करोंगो और परमगति अर्थात् मोक्ष देऊँगो ॥ ९७ ॥ और जे लोग या एकादशीके महाव्रतको करेंगे तिनके विघ्नको मैं हरि लेऊँगो और सब सिद्धि देऊँगो ॥ ९८ ॥ हे कुंतीके पुत्रो ! एकादशीकी उत्पत्ति ऐसे कही यह एकादशी सदा सब पापनकी नाश करनहारी है ॥९९॥ बहुतही पवित्र सब पापनकी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नाश करनहारी और सब सिद्धिनकी देनवारी यह एकही एकादशी तिथि सब लोकनमें उदय भई है ॥ १०० ॥ शुक्लपक्षकी है अथवा कृष्णपक्षकी है या भेदको न करै हे अर्जुन ! दोनों करनी चाहिये तिनमें द्वादशीविद्धा सबनते उत्तम है ॥ १०१ ॥ सम्पूर्ण व्रत करनहारे मनुष्यको भेद न माननो चाहिये दोनों पक्षनमें सब तिथि एकही

शुक्ला वाप्यथवा कृष्णा इति भेदं न कारयेत् ॥ कर्त्तव्ये उभये पार्थ न तुल्या द्वादशी तिथिः ॥ १०१ ॥ अंतरं नैव कर्त्तव्यं समस्तैर्व्रतकारिभिः ॥ तिथिरेका भवेत्सर्वा पक्षयोरुभयोरपि ॥ १०२ ॥ उपवासं प्रकुर्वंति एकादश्यां नराश्च ये ॥ ते यांति परमं स्थान यत्रास्ते गरुडध्वजः ॥ १०३ ॥ धन्यास्ते मानवा लोके विष्णुभक्तिपरायणाः ॥ एकादश्यास्तु माहात्म्यं सर्वलोकेषु यः पठेत् ॥ १०४ ॥ अश्वमेधस्य यत्पुण्यं तदाप्नोति न संशयः ॥ एकादश्यां निराहारः स्थित्वाऽहं च परेऽहनि ॥ १०५ ॥

होय हैं ॥ १०२ ॥ जे मनुष्य एकादशीकि दिन व्रत करैं हैं वे वा परम धामको प्राप्त होय हैं जहां गरुडध्वज भगवान् विराजमान हैं ॥ १०३ ॥ जे मनुष्य विष्णुभक्तिमें परायण ह ते धन्य हैं और सब लोकनमें जो एकादशीमाहात्म्य पढैगो ॥ १०४ ॥ वह अश्वमेधको जो फल है ताको प्राप्त होय है यामें संदेह नहीं है एकादशीको निराहार

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रहिके मैं दूसरे दिन भोजन करूंगो ॥ १०५ ॥ हे पुंडरीकाक्ष ! अच्युत भगवान् मेरे रक्षक हो ऐसे उच्चारण करिके ता पीछे विद्वान् पुरुष पुष्पांजलिको अर्पण करै ॥ १०६ ॥ उपवासके फलको चाहनवारो मनुष्य फिर तीन बार जपे भये अष्टाक्षर मंत्रसो अभिमंत्रित करि पात्रमें स्थित जलकूं पीवै ॥ १०७ ॥ दिनको सोवनो, परायो अन्न, दूसरी बार भोजन, स्त्रीसंग, सहद, कांसेके पात्रमें भोजन करनो, मांस, तेल ये आठ वस्तु द्वादशीके दिन वार्जित

भोक्ष्यामि पुंडरीकाक्ष शरणं मे भवाच्युत ॥ इत्युच्चार्य ततो विद्वान् पुष्पांजलिमथार्पयेत् ॥१०६॥ अष्टाक्षरेण मंत्रेण त्रिर्जप्तेनाभिमंत्रितम् ॥ उपवासफलप्रेप्सुः पिबेत्पात्रगतं जलम् ॥१०७॥ दिवा निद्रां परान्नं च पुनर्भोजनमैथुने ॥ क्षौद्रं कांस्यामिषं तैलं द्वादश्यामष्ट वर्जयेत् ॥ १०८॥ असं-भाष्यं हि संभाष्य भक्षयेत्तुलसीदलम् ॥ आमलक्याः फलं वाऽपि पारणे प्राश्य शुद्ध्यति ॥१०९॥ आमध्याह्नाच्च राजेंद्र द्वादश्यामरुणोदये ॥ स्नानार्चनक्रियाः कार्या दानहोमादिसंयुताः॥११०॥

करै ॥ १०८ ॥ जे चांडाल आदि नहीं बोलने योग्य हैं तिनसों बात करिके शुद्धिके लिये तुलसीदलको भक्षण करै और आमलेके फलहू पारणमें भोजन करनेसे शुद्ध होय है ॥ १०९ ॥ हे राजेंद्र ! अर्थात् राजानमें श्रेष्ठ युधिष्ठिर ! एकादशीके मध्याह्नसों लगाके द्वादशीके अरुणोदय समयलों दान होम आदि समेत स्नान पूजन आदि क्रिया

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

करनी उचित है ॥ ११० ॥ जो कहो कि, कोऊ विषम संकष्टमें आजाय तो द्वादशीको पारण कैसे होय तो जलसे पारण कर ले अर्थात् जलपान कर ले तो यामें दूसरी बार भोजनको दोष नहीं लगै ॥१११॥ जो विष्णुपरायण नर विष्णुभक्तके मुखसों निकरी भई सुंदर मंगलरूप विष्णुकथाको राति दिन सुने हैं ॥ ११२ ॥ वह करोडों कल्पों-पर्यंत विष्णुलोकमें आनंद करै हैं जो एकादशीके माहात्म्यका एक पाद अर्थात् चौथाई जो कोई सुनै है ॥ ११३ ॥

संकष्टे विषमे प्राप्ते द्वादश्याः पारणं कथम् ॥ अद्भिस्तु पारणं कुर्यात्पुनर्भुक्तं न दोषकृत् ॥ १११ ॥
यः शृणोति दिवारात्रौ नरो विष्णुपरायणः ॥ तद्भक्तमुखनिष्पन्नां कथां विष्णोः सुमंगलाम् ॥ ११२ ॥
कल्पकोटिसमायुक्तो विष्णुलोके महीयते ॥ एकादश्याश्च माहात्म्यं पादमेकं शृणोति यः ॥ ११३ ॥
ब्रह्महत्यादिकं पापं नश्यते नात्र संशयः ॥ विष्णुधर्मसमं नास्ति व्रतं नाम सनातनम् ॥ ११४ ॥
इति श्रीभविष्योत्तरपुराणे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे मार्गशीर्षकृष्णैकादशीमाहात्म्यं संपूर्णम् ॥ १ ॥

ताके ब्रह्महत्या आदि सब पाप दूरि होजाय हैं यामें सन्देह नहीं वैष्णवधर्मके समान कोई सनातन व्रत नहीं है ॥ ११४ ॥
इति श्रीमत्पण्डितकेशवप्रसादशर्मद्विवेदिकृतायामेकादशीटीकायां दीपिकासमाख्यायां मार्गशीर्षकृष्णैकादशीमाहात्म्यं संपूर्णम् ॥ १ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ मार्गशीर्षशुक्लैकादशीमोक्षदाकथायाष्टीका ॥ मार्गस्याऽपरपक्षे या मोक्षदैकादशी स्मृता ॥ तन्माहात्म्यस्य भाषायां टीकां रम्यां करोम्यहम् ॥ १ ॥ युधिष्ठिर बोले कि, साक्षात् तीनों लोकनके सुख देनहारे विश्वके स्वामी और विश्वके कर्ता पुराण पुरुषोत्तम जे प्रभु विष्णु हैं तिनको मैं नमस्कार करो हौं ॥ १ ॥ हे देवदेवेश ! मोको वडो सन्देह है ताते मैं लोकनके हितके लिये और पापनके क्षयके निमित्त आपसे पूछौं हौं ॥ २ ॥ कि,

अथ मार्गशीर्षशुक्लैकादशीकथा ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ वन्दे विष्णुं प्रभुं साक्षाल्लोकत्रयसुखप्रदम् ॥ विश्वेशं विश्वकर्त्तारं पुराणं पुरुषोत्तमम् ॥ १ ॥ पृच्छामि देवदेवेश संशयोऽस्ति महान्मम ॥ लोकानां तु हितार्थाय पापानां च क्षयाय च ॥ २ ॥ मार्गशीर्षे सिते पक्षे किं नामैकादशी भवेत् ॥ कीदृशश्च विधिस्तस्याः को देवस्तत्र पूज्यते ॥ ३ ॥ एतदाचक्ष्व मे स्वामिन् विस्तरेण यथातथम् ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ सम्यक् पृष्टं त्वया राजन् साधु ते विपुलं यशः॥४॥

मार्गशिर महीनाके शुक्लपक्षकी एकादशीको कहा नाम है वाकी विधि कैसी है और वामें कौनसे देवताकी पूजा करी जाय है ॥ ३ ॥ हे स्वामिन् ! यह मोसों विस्तारपूर्वक आप यथार्थ वर्णन कीरये श्रीभगवान् बोले कि, हे राजन् ! तुमने अच्छे प्रश्न किये याहीते तुम्हारो यश संसारमें भली भांति विख्यात है ॥ ४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे राजाधिराज! मैं तुमसों उत्तम हरिवासर कहौंगो मार्गशिरके शुक्लपक्षमें उत्पन्ना नाम एकादशी मोको अति प्यारी है ॥५॥ हे राजन्! पहले मुर नाम असुरके वधके लिये मार्गशिर महीनेमें देहसों उत्पन्न है ताते मेरी प्यारी विख्यात है ॥ ६ ॥ हे राजनमें श्रेष्ठ! तुम्हारे आगे मैंने चराचर त्रैलोक्यके कल्याणके अर्थ पहले यह एकादशी कही ॥ ७ ॥

कथयिष्यामि राजेंद्र हरिवासरमुत्तमम् ॥ उत्पन्ना सा सिते पक्षे द्वादशी मम वल्लभा ॥ ५ ॥ मार्गशीर्षे समुत्पन्ना मम देहान्नराधिप ॥ मुरासुरवधार्थाय प्रख्याता मम वल्लभा ॥ ६ ॥ कथिता सा मया चैव त्वदग्रे राजसत्तम ॥ पूर्वमेकादशी राजँस्त्रैलोक्ये सचराचरे ॥ ७ ॥ मार्गशीर्षे सिते पक्षे चोत्पत्तिरिति नामतः ॥ अतः परं प्रवक्ष्यामि मार्गशीर्षसितां तथा ॥ ८ ॥ तस्याः श्रवणमात्रेण वाजपेयफलं भवेत् ॥ मोक्षा नाम्नीति विख्याता सर्वपापहरा परा ॥ ९ ॥ देवं दामोदरं तस्यां पूजयेच्च प्रयत्नतः ॥ तुलस्या मंजरीभिश्च धूपदीपैर्मनोरमैः ॥ १० ॥

हे राजन्! मार्गशिरके शुक्लपक्षमें याकी उत्पत्ति भई ताते याको नाम उत्पन्ना भयो याते परे अब मैं मार्गशिरके शुक्लपक्षकी एकादशी कहौंगो ॥८॥ जाके सुननेहीसों वाजपेय यज्ञको फल प्राप्त होय है मोक्षा नामसों विख्यात है और सब पापनकी हरनवारी है ॥९॥ वामें यत्नसों दामोदर देवको पूजन तुलसीकी मंजरी और सुंदर धूप दीपसों

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

करें ॥ १० ॥ हे राजाधिराज! सुनो मैं पुराणकी सुंदर कथा कहौंगो जे पिता माता और पुत्र आदि अधोगति
अर्थात् नरकमें प्राप्त हैं ॥ ११ ॥ वे या एकादशीके पुण्यप्रभावसों स्वर्गको जायँगे यामें संदेह नहीं है हे राजन्!

या कारणसों याकी वा महिमाको सुनो ॥ १२ ॥ वैष्णवों करिके शोभित चंपकनाम नगरमें पुत्रके समान

शृणु राजेंद्र वक्ष्यामि कथां पौराणिकीं शुभाम् ॥ अधोगतिं गता ये वै पितृमातृसुतादयः ॥ ११ ॥ अस्याः पुण्यप्रभावेण स्वर्गं यांति न संशयः ॥ एतस्मात्कारणाद्राजन्माहिमानं शृणुष्व तम् ॥ १२ ॥ चंपके नगरे रम्ये वैष्णवैः सुविभूषिते ॥ वैखानसेति राजर्षिः पुत्रवत्पालयन्प्रजाः ॥ १३ ॥ द्विजाश्च न्यवसंस्तत्र चतुर्वेदपरायणाः ॥ एवं स राज्यं कुर्वाणो रात्रौ तु स्वप्नमध्यतः ॥ १४ ॥ ददर्श जनकं स्वं तु अधोयोनिगतं नृपः ॥ एवं दृष्ट्वा तु तं तत्र विस्मयोत्फुल्ललोचनः ॥ १५ ॥

प्रजापालनमें तत्पर वैखानस नाम राजर्षि होत भयो ॥ १३ ॥ वा नगरमें चारों वेदनके जाननेवारे ब्राह्मण बसत हैं
या प्रकार राज्य करतो भयो वह राजा स्वप्नके मध्य ॥ १४ ॥ अपने पिताको नरकमें गयो देखत भयो ऐसे वाहि

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

देखिके विस्मय करके उत्फुल्ल हैं नेत्र जाके ऐसो होत भयो ॥ १९ ॥ और ब्राह्मणोंके आगे स्वप्नको वृत्तांत कहत भयो राजा बोलो कि, हे ब्राह्मणो ! मैंने अपनो पिता नरकमें परचो भयो देख्यो है और पिताने कही कि, हे पुत्र ! नरकमें परचो भयो जो मैं हौं ताको तारो ॥ १६ ॥ ऐसे कहते भये वे पिता मैंने आप देखे हैं हे ब्राह्मणो ! तबते लगाके

कथयामास वृत्तांतं द्विजाग्रे स्वप्नसंभवम् ॥ राजोवाच ॥ मया तु स्वपिता दृष्टो नरके पतितो द्विजाः ॥ तारयस्वेति मां तात अधोयोनिगतं सुत ॥ १६ ॥ इति ब्रुवाणः स तदा मया दृष्टः पिता स्वयम् ॥ तदाप्रभृति भो विप्रा नाहं शर्म लभाम्यहो ॥ १७ ॥ एतद्राज्यं मम महदसह्यमसुखं तदा ॥ अश्वा गजा रथाश्चैव न मां रोचंति सर्वथा ॥ १८ ॥ न कोशोऽपि सुखायेति न किंचित्सुखदं मम ॥ न दारा न सुता मह्यं रोचंते द्विजसत्तमाः ॥ १९ ॥ किं करोमि क्व गच्छामि शरीरं मे तु दह्यते ॥ दानं व्रतं तपो योगो येनैव मम पूर्वजाः ॥ २० ॥

मोको सुखकी प्राप्ति नहीं है ॥ १७ ॥ यह मेरो वडो राज्य मोको असह्य लगै है और सुख देनहारो नहीं है घोडे हाथी रथ ये सब मोको नहीं रुचै हैं ॥ १८ ॥ खजानो मोको सुखदायी नहीं है कोउ वस्तु मोको सुख देनहारी नहीं है हे ब्राह्मणो ! मोको स्त्री पुत्र कोऊ नहीं रुचैं हैं ॥ १९ ॥ कहा करौं कहां जाऊं यहां मेरो शरीर

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जरों जाय है कोई दान तप व्रत योग ऐसो वताओ जाते मेरे पितृनको मोक्ष हो ॥ २० ॥ हे ब्राह्मणो! जाते
उनको मोक्ष होय ऐसो उपाय मोको वताओ वलवान् वा पुत्रके जीवनेसों कौन फल है ॥ २१ ॥ जाको पिता

नरकमें परो है ताको जन्म निरर्थक है ब्राह्मण वोले कि, हे राजन्! यही पर्वतमुनिको आश्रम निकट है ॥ २२ ॥

मोक्षमायांति विप्रेंद्रास्तदेव कथयंतु मे ॥ किं तेन जीवता लोके सुपुत्रेण बलीयसा ॥ २१ ॥ पिता तु यस्य नरके तस्य जन्म निरर्थकम् ॥ ब्राह्मणा ऊचुः ॥ पर्वतस्य मुनेरत्र आश्रमो निकटे नृप ॥ २२ ॥ गम्यतां राजशार्दूल भूतं भव्य विजानतः ॥ तेषां श्रुत्वा ततो वाक्यं वैखानो राजसत्तमः ॥ २३ ॥ जगाम तत्र यत्राऽसौ आश्रमे पर्वतो मुनिः ॥ ब्राह्मणैर्वेष्टितः शांतैः प्रजाभिश्च समंततः ॥ २४ ॥ आश्रमो विपुलस्तस्य मुनिभिः सन्निषेवितः ॥ ऋग्वेदिभिर्यजुर्वेदैश्च सामाथर्वणकोविदैः ॥ २५ ॥

हे राजशार्दूल! वहीं जाओ वे भूत भविष्य सब जाने हैं उनको वह वचन वैखानस राजाने सुना ॥ २३ ॥ तब
वहां शांतस्वरूप ब्राह्मणों और प्रजाकरि वेष्टित राजा जातो भयो ॥ २४ ॥ वह उन मुनिको वडो आश्रम
ऋग्वेदी, यजुर्वेदी, सामवेदी और अथर्ववेदमें चतुर ब्राह्मणन करि सेवन कियो गयो है ॥ २५ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वहां मुनीश्वरों करिके वेष्टित पर्वतमुनि दूसरे ब्रह्माके समान बैठे हैं ऐसे पर्वतमुनिको वह वैखानस राजा वा समय देखत भयो ॥ २६ ॥ तब मस्तक नवा भूमिमें परिके दंडवत्प्रणाम करतो भयो और मुनिने वाके राज्यके सातों अंगनमें कुशल पूंछी ॥ २७ ॥ राज्यको निष्कंटक होनो और सुख होनो पूछो राजा बोले कि, भो विप्र !

वेष्टितो मुनिभिस्तत्र द्वितीय इव पद्मजः ॥ दृष्ट्वा तं मुनिशार्दूलं राजा वैखानसस्तदा ॥ २६ ॥
जगाम चावनिं मूर्ध्ना दंडवत्प्रणनाम च ॥ प्रपच्छ कुशलं तस्य सप्तस्वंगेष्वसौ मुनिः ॥ २७ ॥
राज्ये निष्कंटकत्वं च राज्यसौख्यसमन्वितम् ॥ राजोवाच ॥ तव प्रसादाद्भो विप्र कुशलं मेऽ-
ङ्गसप्तके ॥ २८ ॥ विभवेष्वनुकूलेषु कश्चिद्विघ्न उपस्थितः ॥ एतन्मे संशयं ब्रह्मन् प्रष्टुं त्वां च
समागतः ॥ २९ ॥ एवं श्रुत्वा नृपवचः पर्वतो मुनिसत्तमः ॥ ध्यानास्तिमितनेत्रोऽसौ भूतं भव्यं
व्यचिंतयत् ॥ ३० ॥

तुम्हारे प्रसादसों मेरे सातों अंगनमें कुशल है ॥२८॥ सबरे ऐश्वर्यनके अनुकूल होनेपैहू कोऊ विघ्न आय गयो है हे ब्रह्मन् ! मोकूं यह संदेह है ताते मैं आपसूं पूछवे आयो हौं ॥ २९ ॥ पर्वतमुनि ध्यानसूं नेत्रनको निश्चल करि

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जो होगयो है और जो होयगो ताको चिंतवन करत भये ॥ ३० ॥ फिरि एक मुहूर्त्तभरि ध्यान करिके राजासूं बोलत भये मुनि बोले कि, हे राजेन्द्र ! मैंने तुम्हारे कुकर्मी पिताके पापको जान लियो ॥३१॥ पूर्वजन्ममें तुम्हारे पिताने काममें आसक्त होके सौतिके द्वेषसों एक समय एक स्त्रीको ऋतुभंग कियो अर्थात् ऋतुसमयमें वाके समीप

मुहूर्त्तमेकं ध्यात्वा च प्रत्युवाच नृपोत्तमम् ॥ मुनिरुवाच ॥ जानेऽहं तव राजेंद्र पितुः पापं विकर्मणः ॥ ३१ ॥ पूर्वजन्मानि ते पित्रा सपत्नीकृतद्वेषतः ॥ कामासक्तेन चैकत्र ऋतुभंगः कृतः स्त्रियाः ॥ ३२ ॥ त्राहि देहीति जल्पंत्या ऋतुदानं नराधिप ॥ तेन वै तव पित्रा तु न दत्तो ऋतुराग्रहात् ॥३३॥ कर्मणा तेन सततं नरके पतितो ह्ययम् ॥ राजोवाच ॥ केन वै व्रतदानेन मोक्षस्तस्य भवेन्मुने ॥ ३४ ॥ निरयात्पापसंयुक्तात्तन्ममाचक्ष्व पृच्छतः ॥ मुनिरुवाच ॥ मार्गशीर्षे सिते पक्षे मोक्षा नाम्नी हरेस्तिथिः ॥ ३५ ॥

न गये ॥ ३२ ॥ हे नराधिप ! रक्षा करो ऋतुदान दो वह ऐसे कहती रही परंतु उस तुम्हारे पिताने आग्रहसों वाको ऋतुदान न कियो ॥ ३३ ॥ ताहि कर्म करिके तुम्हारो पिता सदा नरकमें परो है राजा बोले कि, हे मुनि ! कौनसे व्रत अथवा दानसों वाको मोक्ष होय ॥ ३४ ॥ पापयुक्त या नरकते कैसे बचै सो आपसो पूछतों जो मैं हूं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तासों कही मुनि बोले कि, मार्गशिर महीना शुक्लपक्षमें मोक्षा नाम हरिकी तिथि होय है ॥ ३५ ॥ तुम सब या एकादशीको व्रत करके पिताके अर्थ पुण्य दान करो वा पुण्यप्रभावसों तुम्हारे पिताको मोक्ष हो जायगो ॥ ३६ ॥ ता पीछे मुनिको वचन सुनिके राजा अपने घरको आयो हे भरतवंशमें श्रेष्ठ युधिष्ठिर ! वह बडे कष्टसों अगहनकी एकादशीको प्राप्त होतो भयो ॥ ३७ ॥ सब रनवासके सेवकन और पुत्र स्त्रीसमेत

सर्वैस्तु तद्व्रतं कृत्वा पित्रे पुण्यं प्रदीयताम् ॥ तस्याः पुण्यप्रभावेण मोक्षस्तस्य भविष्यति ॥ ३६ ॥
मुनेर्वाक्यं ततः श्रुत्वा नृपः स्वगृहमागतः ॥ आग्रहायणिकीं कृच्छ्रात्प्राप्तो भरतसत्तम ॥ ३७ ॥
अंतःपुरचरैः सर्वैः पुत्रदारैस्तथा नृपः ॥ व्रतं कृत्वा विधानेन पुण्यं दत्त्वा नृपाय तत् ॥ ३८ ॥
तस्मिन्दत्ते तदा पुण्ये पुष्पवृष्टिरभूद्दिवः ॥ वैखानसपिता तेन गतः स्वर्गं स्तुतो गणैः ॥ ३९ ॥
राजानमंतरिक्षाच्च शुद्धां गिरमभाषत ॥ स्वस्त्यस्तु ते पुत्र सदेत्युक्त्वा स त्रिदिवं गतः ॥ ४० ॥

राजाने विधिसों व्रत करके वाको पुण्य अपने पिताको दीनो ॥ ३८ ॥ तब वा पुण्यके देनेमें आकाशते फूलनकी वर्षा होत भई वा पुण्य करिके देवतान करि स्तुति कियो गयो वैखानसराजाको पिता स्वर्गको जात भयो ॥ ३९ ॥ और अकाशते राजासों शुद्ध वाणी बोलत भयो कि, हे पुत्र ! तुम्हारो सदा कल्याण होय

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ऐसे कहिके स्वर्गको जातो भयो ॥ ४० ॥ हे राजन् ! या प्रकार जो या मोक्षदा नाम एकादशी व्रत करै है वाको पाप क्षीण होय है और वह अन्तसमयमें मोक्षको प्राप्त होय है ॥ ४१ ॥ याते परे और कोई मोक्षकी देनहारी निर्मल तथा शुभ नहीं है और जिन करिके वाको व्रत कियो गयो है हे राजेंद्र ! उनके पुण्यकी संख्याको मैं नहीं जानूं हूं ॥ ४२ ॥ स्वर्ग और मोक्षकी देनहारी यह एकादशी चिंतामणिके समान है ॥ ४३ ॥ इति श्रीमत्पंडित-

एवं यः कुरुते राजन्मोक्षदैकादशीमिमाम् ॥ तस्य पापं क्षयं याति मृतो मोक्षमवाप्नुयात् ॥४१॥
नातः परतरा काचिन्मोक्षदा विमला शुभा ॥ पुण्यसंख्या तु राजेंद्र न जानेऽहं तु यैः कृता ॥४२॥
चिंतामणिसमा ह्येषा स्वर्गमोक्षप्रदायिनी ॥ ४३ ॥ इति श्रीब्रह्मांडपुराणे मार्गशीर्षशुक्लैकादश्या मोक्षानाम्न्या माहात्म्यं समाप्तम् ॥ २ ॥ अथ पौषकृष्णसफलैकादशीकथा ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥
पौषस्य कृष्णपक्षे तु कथमेकादशी भवेत् ॥ किं नाम को विधिस्तस्याः को देवस्तत्र पूज्यते ॥१॥

परमसुखतनयपण्डितकेशवप्रसादशर्म्मद्विवेदिकृतायामेकादशीमाहात्म्यटीकायां दीपिकासमाख्यायां मार्गशीर्ष- १७
शुक्लैकादशीभाषाव्याख्या समाप्ता ॥ २ ॥ पौषस्यासितपक्षे या सफलैकादशी स्मृता ॥ तन्माहात्म्यस्य भाषायां टीकां कुर्वे सुदीपिकाम् ॥ १ ॥ युधिष्ठिर बोले कि, हे कृष्ण महाराज ! पौषके कृष्णपक्षमें कौनसी एकादशी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

होय है वाको कहा नाम है और कहा विधि है और वामें कौनसे देवताको पूजन होय है ॥ १ ॥ हे स्वामी जनार्दन ! वह सब मोसों विस्तार करके कहो श्रीकृष्ण बोले कि, हे राजेंद्र ! मैं तुम्हारे स्नेहके कारण कहौंगो ॥ २ ॥ अधिक है दक्षिणा जिनमें ऐसे यज्ञनसों मैं वैसो प्रसन्न नहीं होऊं हौं जैसो मैं एकादशीके व्रतसों प्रसन्न

एतदाचक्ष्व मे स्वामिन् विस्तरेण जनार्दन ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ कथयिष्यामि राजेंद्र भवतः स्नेहकारणात् ॥ २ ॥ तथा तुष्टिर्न मे राजन् क्रतुभिश्चाप्तदक्षिणैः ॥ यथा तुष्टिर्भवेन्मह्यमेकादश्या व्रतेन वै ॥ ३ ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन कर्तव्यो हरिवासरः ॥ पौषस्य कृष्णपक्षे तु द्वादशी या भवेन्नृप ॥ ४ ॥ तस्याश्चैव च माहात्म्यं शृणुष्वैकाग्रमानसः ॥ गदिता याश्च वै राजन्नेकादश्यो भवंति हि ॥ ५ ॥ तासामपि हि सर्वासां विकल्पं नैव कारयेत् ॥ एकादश्यास्तथाप्यस्याः शृणु राजन् कथान्तरम् ॥ ६ ॥

होऊं हौं ॥ ३ ॥ तातें सम्पूर्ण यत्ननसों हरिवासरको व्रत करनो चाहिये. पौषके कृष्णपक्षमें जो द्वादशीसंयुक्त एकादशी होय है ॥ ४ ॥ ताको माहात्म्य तुम एकाग्र चित्त होके सुनो सम्पूर्ण महीनानमें जो एकादशी होय हैं ॥ ५ ॥ उन सबनमों विकल्प नहीं करनो चाहिये हे राजन् ! ताहूपै या एकादशीकी दूसरी कथा सुनो ॥ ६ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

या पीछे अब मैं तुमसों पौषकी एकादशी कहौं हौं और लोकनके हितके लिये विधिको तुमसों कहौंगो ॥ ७ ॥
पौषके कृष्णपक्षमें सफला नाम एकादशी होय है याके अधिदेवता नारायण हैं उनको यत्नसों पूजन करै ॥ ८ ॥

हे राजन्! यह विधिसों मनुष्यन करि एकादशी करनी चाहिये नागनमें जैसे शेष श्रेष्ठ हैं और पक्षिनमें जैसे गरुड

अतः परं प्रवक्ष्यामि पौषस्यैकादशीं तव ॥ लोकानां च हितार्थाय कथयिष्ये विधिं तव ॥ ७ ॥
पौषस्य कृष्णपक्षे या सफला नाम नामतः ॥ नारायणोऽधिदेवोऽस्याः पूजयेत्तं प्रयत्नतः ॥ ८ ॥
पूर्वेण विधिना राजन् कर्तव्यैकादशी जनैः ॥ नागानां च यथा शेषः पक्षिणां गरुडो यथा ॥९॥
यथाश्वमेधो यज्ञानां नदीनां जाह्नवी यथा ॥ व्रतानां च तथा राजन् प्रवरैकादशीतिथिः ॥१०॥
ते जना भरतश्रेष्ठ मम पूज्याश्च सर्वशः ॥ हरिवासरसंयुक्ता वर्तंते ये जना भृशम् ॥११॥ सफला
नाम या प्रोक्ता तस्याः पूजाविधिं शृणु ॥ फलैर्मां पूजयेत्तत्र कालदेशोद्भवैः शुभैः ॥ १२ ॥

श्रेष्ठ हैं ॥ ९ ॥ जैसे यज्ञमें अश्वमेध श्रेष्ठ है और नदीनमें जैसे गङ्गाजी श्रेष्ठ हैं हे राजन्! वैसेही सब व्रतनमें १८
एकादशी तिथि श्रेष्ठ है ॥ १० ॥ हे भरतवंशमें श्रेष्ठ युधिष्ठिर! वे जन मोको सर्वथा पूज्य हैं जे सदैव हरिवासर
करिके युक्त रहै हैं अर्थात् एकादशीको व्रत करै हैं ॥ ११ ॥ सफला नाम जो एकादशी कही है ताकी पूजाकी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विधि सुनो समयमें और देशमें उत्पन्न भये जे सुन्दर फल हैं तिनसों या एकादशीदिन मेरो पूजन करे ॥ १२ ॥
शुद्ध नारियरके फलनकरिके तैसेही विजौरनसों जंभीरिनसों और अनारनसों और सुपारिनसों मेरो पूजन करे
॥ १३ ॥ लौंगनकरिके तथा आम आदि और नाना प्रकारके फलन करिके और धूप दीपसों यथाक्रम देवदेवेश जो

नारिकेलफलैः शुद्धैस्तथा वै बीजपूरकैः ॥ जंबीरैर्दाडिमैश्चैव तथा पूगीफलैरपि ॥ १३ ॥ लवंगै-
र्विविधैश्चान्यैस्तथा चाम्रफलादिभिः ॥ पूजयेद्देवदेवेशं धूपैर्दीपैर्यथाक्रमम् ॥ १४ ॥ सफलायां
दीपदानं विशेषेण प्रकीर्तितम् ॥ रात्रौ जागरणं तत्र कर्तव्यं च प्रयत्नतः ॥ १५ ॥ यावदुन्मी-
लयेन्नेत्रं तावज्जागर्त्ति यो निशि ॥ एकाग्रमानसो भूत्वा तस्य पुण्यं शृणुष्व तत् ॥ १६ ॥ तत्स-
मो नास्ति वै यज्ञस्तीर्थं तत्सदृशं न हि ॥ तत्समं न व्रतं किंचिदिह लोके नराधिप ॥ १७ ॥
पंचवर्षसहस्राणि तपस्तप्त्वा च यत्फलम् ॥ तत्फलं समवाप्नोति सफलाया व्रतेन वै ॥ १८ ॥

भगवान् विष्णु हैं तिनको पूजन करे ॥१४॥ सफलामें विशेष करिके दीपदान कहो है और रात्रिमें यत्नसों जागरण
करनो योग्य है ॥१५॥ जबलों नेत्र खुले रहैं तबलों जो एकाग्र मन होके जागरण करै है वाके पुण्यको सुनिये ॥१६॥
वाके समान न यज्ञ हैं न तीर्थ हैं और हे राजन् ! वाके समान या लोकमें कोई व्रत नहीं है ॥ १७ ॥ पांच हजार वर्षलों

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तप करनेसों जो फल होय ह वा फलको सफलाका व्रत करनेसों प्राप्त होय है ॥ १८ ॥ हे राजशार्दूल ! सफलाकी कथा सुनिये माहिष्मत राजाकी चंपावती नाम पुरी विख्यात ही ॥१९॥ माहिष्मत नाम राजर्षिके चार पुत्र होत भये उनमें जो जेठो हो वह वडो पापी हो ॥ २० ॥ पराई स्त्रियनसों गमन करै हो और सदा वेश्यानके संगमें रत

श्रूयतां राजशार्दूल सफलायाः कथानकम् ॥ चंपावतीति विख्याता पुरी माहिष्मतस्य च ॥१९॥
माहिष्मतस्य राजर्षेश्चत्वारश्चाभवन्सुताः ॥ तेषां मध्ये तु यो ज्येष्ठः स महापापसंयुतः ॥ २० ॥
परदाराभिगामी च वेश्यासंगरतः सदा ॥ पितुर्द्रव्यं स पापिष्ठो गमयामास सर्वशः ॥ २१ ॥
असद्वृत्तिरतो नित्यं देवताद्विजनिन्दकः ॥ वैष्णवानां च देवानां नित्यं निंदारतः स वै ॥ २२ ॥
ईदृग्विधं तदा दृष्ट्वा पुत्रं माहिष्मतो नृपः ॥ नाम्ना स वै लुंपकं तु कृतवानत्यमर्षितः ॥ २३ ॥
राज्यान्निष्कासितस्तेन पित्रा चैवापि बंधुभिः ॥ परिवारजनैः सर्वैस्त्यक्तो राज्ञो भयादिति ॥२४॥

रहतो हो वह पापी पिताके द्रव्यको सब भांति बिगार देत भयो ॥ २१ ॥ वह सदा खोटी वृत्तिमें लगो रहतो और देवतानकी तथा ब्राह्मणकी निंदा करतो और वह निश्चय करके सदा वैष्णवनकी और देवतानकी निंदामें रत रहतो ॥२२॥ तब माहिष्मत राजा ऐसे पुत्रको देख बहुत क्रोधित होके वाको नाम लुम्पक धरत भये ॥२३॥ वा पिताकरिके

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

और बन्धुनकरिके वह राज्यते निकारो गयो और राजाके भयते सब कुटुम्बके मनुष्यनकारिके त्याग कियो गयो ॥ २४ ॥ तब सब भाई बन्धुनकरि त्याग कियो गयो वह लुम्पक अकेलो होके सोच करत भयो कि, पिता और बन्धुकरिके त्याग कियो मैं अब कहा करौं ॥ २५ ॥ या प्रकार चिंतामें तत्पर हो तब पापमें माति करत भयो और मनमें विचार कियो गयो कि, मैं अब पिताके पुरीको छोडके वनको जाऊं हौं ॥ २६ ॥

लुंपकोऽपि तदा त्यक्तश्चिन्तयामास ह्यकलः ॥ मयाऽत्र किं प्रकर्त्तव्यं त्यक्तः पित्रा च बांधवैः ॥ २५ ॥ इति चिंतापरो भूत्वा मतिं पापे तदाकरोत् ॥ मया तु गमनं कार्यं वनं त्यक्त्वा पुरीं पितुः ॥ २६ ॥ दिवा वने चरिष्यामि रात्रावपि पितुः पुरः ॥ तस्माद्धनादिपितुः सर्वं व्यपयिष्ये पुरं निशि ॥ २७ ॥ इत्येवं स मतिं कृत्वा लुंपको दैवपातितः ॥ निर्जगाम पुरात्तस्माद्गतोऽसौ गहनं वनम् ॥२८॥ जीवघातकरो नित्यं नित्यं स्तेयपरायणः॥ सर्वं वनचरं तेन मुषितं पापकर्मणा ॥२९॥

दिनभर वनमें विचरोंगो और रात्रिमें पिताके पुरमें आऊंगो और वा वनसूं आइके सब नगरमें चोरी आदिक उपद्रव रात्रिमें करोंगो ॥ २७ ॥ दैवकारि पतित कियो गयो वह लुम्पक अपने मनमें या प्रकार सोचिके वा पुरीते निकरि जात भयो और यह घने वनमें जात भयो ॥ २८ ॥ नित्यही जीवनको मारतो और सदा चोरी करतो और

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वा पापीने सबरे वनचर मूसि लिये ॥ २९ ॥ और जो पकरोभी जातो तो लोग वाहि माहिष्मत राजाके डरते
छोडि देते वह पापी जन्मांतरके पापसूं राज्यते भ्रष्ट भयो ॥ ३० ॥ नित्यही मांस खातो अथवा फल खातो
परन्तु वाको स्थान वासुदेव भगवान्‌को सम्मत हो ॥ ३१ ॥ वहां बहुत वर्षको पुरानो एक पीपरको वृक्ष हो
वा वनमें उस पीपरको वडो भारी देवतापन वन वर्त्तमान हो अर्थात् वाहि सब देवता करिके मानत हे ॥ ३२ ॥

गृहीतश्च परित्यक्तो राज्ञो माहिष्मतेर्भयात् ॥ जन्मांतरीयपापेन राज्यभ्रष्टः स पापकृत् ॥ ३० ॥
आमिषाभिरतो नित्यं नित्यं वै फलभक्षकः ॥ आश्रमस्तस्य दुष्टस्य वासुदेवस्य संमतः ॥३१॥
अश्वत्थो वर्तते तत्र जीर्णो बहुलवार्षिकः ॥ देवत्वं तस्य वृक्षस्य वर्तते तद्वने महत् ॥ ३२ ॥
तत्रैव निवसंश्चासौ लुंपकः पापबुद्धिमान् ॥ एवं कालक्रमेणैव वसतस्तस्य पापिनः ॥३३॥ दुष्कर्म-
निरतस्यास्य कुर्वतः कर्म निन्दितम् ॥ पौषस्य कृष्णपक्षे तु संप्राप्तं सफलादिनम् ॥ ३४ ॥

वहांई यह पापी लुम्पक निवास करतो हो ऐसो कालके क्रमसों वह पापी वहां बहुत वर्षोंतक वसतो भयो ॥ ३३ ॥
बुरे कर्मनमें लागो भयो और निन्दित काम करनहारो जो लुम्पक हो ताके उद्धार करिवेकूं पौषके कृष्णपक्षकी
सफला नाम एकादशीको दिन आवत भयो ॥ ३४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे राजा युधिष्ठिर ! दशमीके दिन रात्रिमें वस्त्रनके विना जाडेके मारे दुःखी वह लुम्पक वा समय चेष्टारहित अर्थात् जडसो हो जात भयो ॥ ३५ ॥ पीपरके सपीप जाडेसूं दुःखी वह लुम्पक नींदके सुखको न प्राप्त होत भयो और मरे भयेके समान हो जात भयो ॥ ३६ ॥ और दांतनसों दांत वजातो भयो वाने राति काटी

दशमीदिवसे राजन् निशायां शीतपीडितः ॥ लुम्पको वस्त्रहीनो वै निश्चेष्टो ह्यभवत्तदा ॥३५॥
पीड्यमानस्तु शीतेन अश्वत्थस्य समीपतः ॥ न निद्रा न सुखं तस्य गतप्राण इवाभवत् ॥३६॥
पीडयन्दशनैर्दन्तानेवं च गमिता निशा ॥ भानूदयेऽपि तस्याथ न संज्ञा समजायत ॥ ३७ ॥
लुम्पको गतसंज्ञस्तु सफलादिवसे तदा ॥ मध्याह्नसमये प्राप्ते संज्ञां लेभे स लुंपकः ॥ ३८ ॥
प्राप्तसंज्ञो मुहूर्तेन चोत्थितोऽसौ तदाऽऽसनात् ॥ प्रस्खलंश्च पदन्यासैः पंगुवच्चालितो मुहुः॥३९॥
वनमध्ये गतस्तत्र क्षुत्तृषापीडितोऽभवत् ॥ न शक्तिर्जीवघातस्य लुंपकस्य दुरात्मनः ॥ ४० ॥

और सूर्यनारायणक उदय होनेहूपै वह लुम्पक चैतन्य न होत भयो ॥ ३७ ॥ ऐसे संज्ञारहित वह लुम्पक सफला एकादशीके दिन मध्याह्नके समय संज्ञा जो चैतन्यता है ताहि प्राप्त होत भयो ॥ ३८ ॥ चैतन्य होके वह लुम्पक क्षणभरमेंही आसते २ उठत भयो और वारंवार गिरतो परतो पंगुवाकी भाँति पांव धरत भयो ॥ ३९ ॥ वनके मध्यमें

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गयो तहां भूख प्याससों पीडित होत भयो और वा दुष्ट लुम्पककों जीवनको मारिवेकी शक्ति नहीं रही ॥ ४० ॥
तब वह लुम्पक भूमिमें परे भये फलनको लावत भयो और जवताईं वह अपने स्थानमें आवै तवताईं सूर्य अस्त
होत भये ॥ ४१ ॥ हाय बाप कहा होयगो ऐसे कहि कहि अतिदुःखित हो वारंवार विलाप करत भयो और उन
सब फलनको वृक्षकी जरमें धारि देत भयो ॥ ४२ ॥ और यह कहत भयो कि, इन फलनसूं भगवान् विष्णु प्रसन्न

फलानि भूमौ पतितान्याजहार स लुंपकः ॥ यावत्स चागतस्तत्र तावदस्तमगाद्रविः ॥ ४१ ॥
किं भविष्यति ताताेति विललापातिदुखितः ॥ फलानि तानि सर्वाणि वृक्षमूले न्यवेदयत् ॥ ४२ ॥
प्रत्युवाच फलैरेभिः प्रीयतां भगवान्हरिः ॥ उपविष्टो लुंपकश्च निद्रां लेभे न वै निशि ॥ ४३ ॥
तेन जागरणं जातं भगवान्मधुसूदनः ॥ फलानां पूजनं मेने सफलायास्तथा व्रतम् ॥ ४४ ॥
कृतमेवं लुंपकेन ह्यकस्माद्व्रतमुत्तमम् ॥ तेन व्रतप्रभावेण प्राप्तं राज्यमकंटकम् ॥ ४५ ॥

होयँ ऐसे कहि वह लुम्पक वैठो रहो रात्रिमें वाको नींद नहीं आई ॥ ४३ ॥ वा जागनेसों वाको जागरण होगयो
और भगवान् मधुसूदनने फलको पूजन तथा सफलाको व्रत मान लियो ॥ ४४ ॥ ऐसे वा लुम्पक करि अकस्मात्
उत्तम व्रत कियो गयो वा व्रतके प्रभावसों वाने निष्कंटक राज्य पायो ॥ ४५ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे राजन्! पुण्यको अंकुर उदय होनेसूं जैसे वाने राज्य पायो सो सुनो कि, सूर्य उदयक समय एक दिव्य घोडा वहां आवत भयो ॥ ४६ ॥ और दिव्य वस्तुनसों शोभित वह घोडा लुम्पकके समीप आयके ठाढो होत भयो वा समय आकाशवाणी होत भई ॥४७॥ कि, हे राजाके पुत्र! वासुदेवके प्रसादसों और सफलाके प्रभावसों तुम

पुण्यांकुरोदयाद्राजन् यथा प्राप्तं तथा शृणु ॥ रवेरुदयवेलायां दिव्योऽश्वश्चाजगाम ह ॥ ४६ ॥
दिव्यवस्तुपरीवारो लुम्पकस्य समीपतः ॥ तस्थौ स तुरतो राजन्वाग्वुवाचाऽशरीरिणी ॥ ४७ ॥
प्राप्नुहि त्वं नृपसुत स्वं राज्यं हतकंटकम् ॥ वासुदेवप्रसादेन सफलायाः प्रभावतः ॥४८॥ पितुः
समीपं गच्छ त्वं भुक्ष्व राज्यमकंटकम् ॥ तथेत्युक्त्वा त्वसौ तत्र दिव्यरूपधरोऽभवत् ॥४९॥
कृष्णे मतिश्च तस्यासीत्परमा वैष्णवी तथा ॥ दिव्याभरणशोभाढ्यस्तातं नत्वा स्थितो गृहे ॥५०॥

अपने निष्कंटक राज्यको प्राप्त हो ॥४८॥ तुम पिताके समीप जाओ और निष्कंटक अपनो राज्य भोगो 'तथास्तु' ऐसे कहिके वह लुम्पक दिव्यरूपको धारण करत भयो ॥ ४९ ॥ और वाकी परम वैष्णवी मति श्रीकृष्णजीमें होत भई तब दिव्य आभरणनकी शोभाकारि युक्त वह लुम्पक पिताको प्रमाण करिके घरमें रहत भयो ॥ ५० ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तापीछे पिताने वा वैष्णवको निष्कंटक राज्य दियो और वाने बहुत वर्षलों राज्य कीनो ॥ ५१ ॥ वह हरिवासर जो एकादशी है तामें लीन और सदा विष्णुभक्तिमें रत होत भयो और कृष्णकी भक्तिके प्रसादसे वाके मनोहर चारि पुत्र और सुंदर स्त्री होत भई ॥ ५२ ॥ तापीछे वह वृद्ध अवस्था आनेके समय पुत्रको राज्यमें स्थापित कारि

वैष्णवाय ततो दत्तं पित्रा राज्यमकंटकम् ॥ कृत राज्यं तु तेनैव वर्षाणि सुबहून्यपि ॥ ५१ ॥
हरिवासरसंलीनो विष्णुभक्तिरतः सदा ॥ मनोज्ञास्तस्य पुत्राः स्युर्दाराः कृष्णप्रसादतः ॥ ५२ ॥
ततः स वार्धके राज्ये प्राप्ते पुत्रं निवेश्य च ॥ वनं गतः संयुतात्मा विष्णुभक्तिपरायणः ॥ ५३ ॥
साधयित्वा तथात्मानं विष्णुलोकं जगाम ह ॥ गतः कृष्णस्य सांनिध्ये यत्र गत्वा न शोचति
॥ ५४ ॥ एवं ये वै प्रकुर्वंति सफलैकादशीव्रतम् ॥ इह लोके यशः प्राप्य मोक्षं यास्यंत्य-
संशयम् ॥ ५५ ॥

जितेन्द्रिय और कृष्णभक्तिमें परायण होके वनको जात भयो ॥ ५३ ॥ और आत्माको साधन कारिके विष्णुलोकको जात भयो और वहां कृष्णके समीप गयो जहां जायके फिरि शोच नहीं रहै है ॥ ५४ ॥ या प्रकार जे सफला एकादशीको व्रत करे हैं वे या लोकमें सुख पाइके निःसंदेह मोक्षकूं प्राप्त होयँगे ॥ ५५ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वे मनुष्य संसारमें धन्य हैं जे सफलाको व्रत करैं हैं वे वाही जन्ममें मोक्षको प्राप्त होगये यामें संदेह नहीं है ॥ ९६ ॥
हे राजन् ! सफलाको माहात्म्य सुनिवेते मनुष्य राजसूय यज्ञको फल प्राप्त हो स्वर्गमें वास करै है ॥ ९७ ॥
इति श्रीमत्पण्डितपरमसुखतनयपण्डितकेशवप्रसादशर्मद्विवेदिकृतायामेकादशीमाहात्म्यटीकायां दीपिकासमाख्यायां

धन्यास्ते मानवा लोके सफलाव्रतकारिणः ॥ तस्मिञ्जन्मनि ते मोक्षं लभन्ते नात्र संशयः
॥ ९६ ॥ सफलायाश्च माहात्म्यश्रवणाद्धि विशांपते ॥ राजसूयफलं प्राप्य वसेत्स्वर्गे च मानवः
॥ ९७ ॥ इति श्रीपौषकृष्णैकादश्याः सफलानाम्न्या माहात्म्यं सम्पूर्णम् ॥ ३ ॥ अथ पौष-
शुक्लैकादशीकथा ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ कथिता वै त्वया कृष्ण सफलैकादशी शुभा ॥ कथ-
यस्व प्रसादेन शुक्ला पौषस्य या भवेत् ॥ १ ॥

पौषकृष्णैकादशी समाप्ता ॥ ३ ॥ अथ पौषशुक्लैकादशीमाहात्म्यम् ॥ अथ पौषस्य शुक्ले या पुत्रदैकादशी
स्मृता ॥ तन्माहात्म्यस्य भाषायां दीपिकां प्रतनोम्यहम् ॥ १ ॥ युधिष्ठिर बोले कि, हे महाराज कृष्ण ! तुमने शुभ
सफलानाम एकादशी कही अब प्रसन्नतासों पौषमासके शुक्लपक्षकी जो एकादशी होय है ताहि कहिये ॥ १ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वाको कहा नाम है और वाकी विधि कहा है और वामें कौनसे देवकी पूजा होय है और हृषीकेश पुरुषोत्तम आप कौनके ऊपर प्रसन्न भये सो सब कथा कहिये ॥ २ ॥ श्रीकृष्ण बोले कि, हे राजन्! सुनो पौषशुक्लपक्षकी जो एकादशी होय है ताहि मैं कहौंगो और हे महाराज! लोकनके हितके लिये वाकी विधिहू कहौंगो ॥ ३ ॥ हे राजन्!

किं नाम को विधिस्तस्याः को देवस्तत्र पूज्यते ॥ कस्मै तुष्टो हृषीकेशस्त्वमेव पुरुषोत्तमः ॥ २ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ शृणु राजन् प्रवक्ष्यामि शुक्ला पौषस्य या भवेत् ॥ तस्या विधिं महाराज लोकानां च हिताय वै ॥ ३ ॥ पूर्वेण विधिना राजन् कर्त्तव्यैषा प्रयत्नतः ॥ पुत्रदेति च नाम्नाऽसौ सर्वपापहरा परा ॥ नारायणोऽधिदेवोऽस्याः कामदः सिद्धिदायकः ॥ ४ ॥ नातः परतरा काचित्त्रैलोक्ये सचराचरे ॥ विद्यावंतं यशस्वंतं करोति च नरं हरिः ॥ ५ ॥ शृणु राजन्प्रवक्ष्यामि कथां पापहरां पराम् ॥ पुरी भद्रावती नाम्नी राजा तत्र सुकेतुमान् ॥ ६ ॥

पहले कही भई विधिसों याको व्रत यत्नसों करनो चाहिये पुत्रदा याको नाम और सब पापनकी दूर करनहारी है और कामनाके देनेहारे और सिद्धिनके करनहारे नारायण याके देवता हैं ॥ ४ ॥ और चराचर त्रिलोकीमें याते परे कोई नहीं है और याके व्रतके प्रभावते हरि मनुष्यको विद्यावान् तथा यशस्वी करि देते हैं ॥५॥ हे राजन्! पापकी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हरनवारी जो याकी कथा है ताहि मैं कहौं हौं तुम सुनो भद्रावती नाम एक पुरी है तामें सुकेतुमान् नाम राजा होत भयो ॥ ६ ॥ वा राजाकी शैब्या नाम रानी होत भई पुत्रन करि हीन वा राजाने मनोरथन करिके समय व्यतीत कियो ॥ ७ ॥ और वह राजा वंशके चलावनहारे पुत्रको न प्राप्त होत भयो तब वाहि राजाने बहुत काललों धर्मते

तस्य राज्ञोऽथ राज्ञी च शैब्या नाम्नीति विश्रुता ॥ पुत्रहीनेन राज्ञा च कालो नीतो मनोरथैः ॥ ७ ॥ नैवात्मजं नृपो लेभे वंशकर्त्तारमेव च ॥ तेनैव राज्ञा धर्मेण चिंतितं बहुकालतः ॥ ८ ॥ किं करोमि क्व गच्छामि सुतप्राप्तिः कथं भवेत् ॥ न राष्ट्रे न पुरे सौख्यं लेभे राजा सुकेतुमान् ॥ शैब्यया कांतया सार्द्धं प्रत्यहं दुःखितोऽभवत् ॥ ९ ॥ तावुभौ दंपती नित्यं चिंताशोकपरायणौ ॥ पितरस्तु जलं दत्तं कवोष्णमुपभुंजते ॥ १० ॥

चिंतवन कीन्हों ॥ ८ ॥ कहा करौं कहां जाऊं पुत्र कैसे प्राप्त होय ऐसे कहतो भयो वह राजा सुकेतुमान् देशमें और नगरमें कहूं सुखको न प्राप्त होत भयो और शैब्या नाम रानीसमेत प्रतिदिन दुःखित होत भयो ॥९॥ वे दोनों स्त्री पुरुष या चिंता और शोकमें नित्यही परायण रहते कि, पितर हमारे दियेभये जलको कुछ उष्ण पान करै हैं ॥१०॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कि, राजाके पीछे हम काहू नहीं देखे हैं जो हमारो तर्पण करै या प्रकार स्मरण करिके याके पितर दुःखी होत भये उनको यह दुःखको मूल जानि राजाहू संतापको प्राप्त होत भयो ॥ ११ ॥ वाको न भाई न मित्र न मंत्री न सुहृद् रुचते और न हाथी घोडे प्यादे रुचते ॥ १२ ॥ या प्रकार वा राजाको मन निराश होगयो कि, पुत्ररहित

राज्ञः पश्चान्न पश्यामो योऽस्मान्संतर्पयिष्यति ॥ इत्येवं संस्मरंतोऽस्य पितरो दुःखिनोऽभवन् ॥ तेषां तद्दुःखमूलं च ज्ञात्वा राजाप्यतप्यत ॥ ११ ॥ न बांधवा न मित्राणि नामात्याः सुहृदस्तथा ॥ रोचंते तस्य भूपस्य न गजाश्वपदातयः ॥ १२ ॥ नैराश्यं भूपतेस्तस्य मनस्येवमजायत ॥ नरस्य पुत्रहीनस्य नास्ति वै जन्मनः फलम् ॥१३॥ अपुत्रस्य गृहं शून्यं हृदयं दुःखितं सदा ॥ पितृदेवमनुष्याणां नानृणत्वं सुतं विना ॥ १४ ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन सुतमुत्पादयेन्नरः ॥ इह लोके यशस्तेषां परलोके शुभा गतिः ॥ १५ ॥

मनुष्यको जन्म निष्कल है ॥ १३ ॥ पुत्रहीन मनुष्यको घर सूनो रहै और वाको हृदय सदा दुःखी रहै है और पुत्रके विना पितृ देवता और मनुष्यनको ऋण नहीं दूर होय है ॥ १४ ॥ ताते मनुष्य सब प्रकारके यत्ननते पुत्रको उत्पन्न करै जिनके पुत्र है उन मनुष्यनको या लोकमें सुख और परलोकमें शुभगति प्राप्त होय है ॥ १५ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जिन शुभ कर्म करनवाले मनुष्यनके सैकरन जन्मनके पुण्य होय हैं उनके घरमें आयु आरोग्य और संपत्ति सदा रहै है ॥ १६ ॥ पुण्य कर्म करनवाले पुरुषनके पुत्र पौत्र और लोक ये सब होय हैं पुण्य विना और विष्णु-भक्ति विना इनकी प्राप्ति नहीं होय है ॥ १७ ॥ पुत्रनकी संपत्ति और विद्याकी संपत्ति पूर्व जन्मके पुण्य

येषां तु कर्मकर्तॄणां पुण्यं जन्मशतोद्भवम् ॥ आयुरारोग्यसंपच्च तेषां गेहे प्रवर्तते ॥ १६ ॥
पुत्रपौत्राश्च लोकाश्च भवेयुः पुण्यकर्मणाम् ॥ पुण्यं विना च न प्राप्तिर्विष्णुभक्तिं विना तथा
॥ १७ ॥ पुत्राणां संपदो वापि विद्यायाश्चेति मे मतिः ॥ एवं विचिंत्यमानोऽसौ राजा शर्म न
लब्धवान् ॥ १८ ॥ प्रत्यूषेऽचिंतयद्राजा निशीथेऽचिन्तयत्तथा ॥ ततश्चात्मविनाशं वै
विचार्याऽथ सुकेतुमान् ॥ १९ ॥ आत्मघाते दुर्गतिं च चिंतयित्वा तदा नृपः ॥ दृष्ट्वाऽऽत्मदेहं
प्रक्षीणमपुत्रत्वं तथैव च ॥ २० ॥

विना नहीं मिलती है या प्रकार चिंतवन करतो भयो वह राजा सुखको न प्राप्त होतो भयो ॥ १८ ॥ प्रातःकाल तथा अर्द्धरात्रिके समय वह राजा चिंता करत भयो ता पीछे वह सुकेतुमान् अपनो विनाश विचारत भयो ॥१९॥ फिर वा समयमें राजा आत्मघातमें दुर्गतिको विचारिकैं पुत्ररहित अपनी देहको क्षीण देखत भयो ॥ २० ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

 फिरि अपनी बुद्धिसों निज हितको कारण विचार घोडे पर चढि बडे घने वनको जात भयो ॥ २१ ॥ पुरोहित आदि
सब गये भये राजाको नहीं जानत भये हैं राजा मृग और पक्षिन करके सेवन करे गये गहरे वनमें गयो ॥ २२ ॥
 और वा समय वा वनमें वट, पीपर, वेल, खजूर, और कटहरके वृक्षनको देखतो भयो विचरन लगो ॥ २३ ॥ और

पुनर्विचार्यात्मबुद्ध्या ह्यात्मनो हितकारणम् ॥ अश्वारूढस्ततो राजा जगाम गहनं वनम् ॥२१॥
पुरोहितादयः सर्वे न जानंति गतं नृपम् ॥ गंभीरे विपिने राजा मृगपक्षिनिषेविते ॥ २२ ॥ विच-
चार तदा तस्मिन्वने वृक्षान्विलोकयन् ॥ वटानश्वत्थबिल्वांश्च खर्जूरान्पनसांस्तथा ॥ २३ ॥
बकुलान् सप्तपर्णांश्च तिंदुकांस्तिलकानपि ॥ शालांस्तालांस्तमालांश्च ददर्श सरलान्नृपः ॥२४॥
इंगुदीककुभांश्चैव श्लेष्मातकबिभीतकान् ॥ शल्लकीकरमर्दांश्च पाटलान् खदिरानपि ॥ २५ ॥
शाखांश्चैव पलाशांश्च शोभितान्ददृशे नृपः ॥ मृगव्याघ्रवराहांश्च सिंहाऋच्छाखामृगानपि ॥ २६ ॥

मौलसरी, सप्तपर्ण, तेंदू, तिलक, शाल, ताल, तमाल और सरल इन वृक्षनको देखत भयो ॥ २४ ॥ और हिंगोट,
अर्जुन, लभेरा, बहेरा, शल्लकी, करोंदा, पाढल, खैर और वेरी इन सब वृक्षनको देखत भयो ॥ २५ ॥ शाख और
ढाक इन सबको राजा शोभायमान देखत भयो और मृग बाघ सुअर सिंह तथा वानरनको देखत भयो ॥ २६ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

और बांबीसों निकरे भये साँपनको देखत भयो तैसेही अपने बच्चनके साथ मिले भये मत्त जंगली हाथिनको देखत भयो ॥ २७॥ नील गवय, काले मृग, गौ, स्यार, शशवन, बिलाव, शल्लक, सुरागौ इन सबनको देखत भयो ॥२८॥ चारि दांतनके यूथप हाथिनको हथिनियोंके समूहमें स्थित देखत भयो उनको देखके वह राजा अपने हाथिनको

ददर्श भुजगान् राजा वल्मीकादभिनिस्सृतान् ॥ तथा वनगजान्मत्तान्कलभैः सह संगतान् ॥ २७ ॥ गवयान्कृष्णसारान् गाः सृगालाञ्छशकानपि ॥ वनमार्जारकान् क्रूराञ्छल्लकांश्चमरानपि ॥ २८ ॥ यूथपांश्च चतुर्दंतान्कारिणीगणमध्यगान् ॥ तान्दृष्ट्वा चिंतयामास ह्यात्मनः स गजान्नृपः ॥ २९ ॥ तेषां स विचरन्मध्ये राजा शोकमवाप ह ॥ महदाश्चर्यसंयुक्तं ददर्श विपिनं नृपः ॥ ३० ॥ क्वचिच्छिवारुतं शृण्वन्नुलूकविरुतं तथा ॥ तांस्तान्पक्षिगणान्पश्यन्बभ्राम वनमध्यगः ॥ ३१ ॥

स्मरण करत भयो ॥ २९ ॥ उनके मध्यमें विचरतो भयो वह राजा शोकको प्राप्त होत भयो और राजा बडे आश्चर्य करके युक्त वनको देखत भयो ॥ ३० ॥ कहूं स्यारनको शब्द और उलूकनको शब्द सुनतो भयो और नाना प्रकारके पक्षिनके समूहको देखतो भयो वह राजा वनके मध्यमें जायके विचरत भयो ॥ ३१ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ऐसे राजाको वनमें फिरते २ दो पहर होगई तब भूख प्याससे व्याकुल राजा इधर उधर भ्रमण करत भयो ॥ ३२ ॥ सूखिगयो है गरो जाको ऐसो राजा अपने मनमें चिन्ता करत भयो कि, मैंने कहा कर्म कियो है जाते मोको ऐसो दुःख प्राप्त भयो ॥ ३३ ॥ मैं यज्ञनसों और पूजासूं देवतानकूं संतुष्ट कियो है तैसेही दक्षिणानसों और मीठे भोजननसों ब्राह्मण-

एवं ददर्श गहनं नृपो मध्यंगते रवौ ॥ क्षुत्तृड्भ्यां पीडितो राजा इतश्चेतश्च धावति ॥ ३२ ॥
चिंतयामास नृपतिः संशुष्कगलकन्धरः ॥ मया तु किं कृतं कर्म प्राप्तं दुःखं यदीदृशम् ॥ ३३ ॥
मया च तोषिता देवा यज्ञैः पूजाभिरेव च ॥ तथैव ब्राह्मणा दानैस्तोषिता मिष्टभोजनैः ॥ ३४ ॥
प्रजाश्चैव यथाकालं पुत्रवत्परिपालिताः ॥ कस्माद्दुःखं मया प्राप्तमीदृशं दारुणं महत् ॥ ३५ ॥
इति चिंतापरो राजा जगामाथाग्रतो वनम् ॥ सुकृतस्य प्रभावेण सरो दृष्टं मनोरमम् ॥ ३६ ॥
मानसं स्पर्धमानं च पद्मिनीपरिशोभितम् ॥ कारंडवैश्चक्रवाकै राजहंसैश्च नादितम् ॥ ३७ ॥

नको संतुष्ट कीनो है ॥ ३४ ॥ और मैंने यथाकाल पुत्रके समान प्रजानको पालन कीनो है नहीं जानों हौं कि, ऐसो वडो दारुण दुःख काहेते प्राप्त भयो ॥ ३५ ॥ ऐसे चिंता करतो भयो वह राजा आगेकूं वनमें जात भयो और वाने सुकृतके प्रभावते एक मनोहर सर देख्यो ॥ ३६ ॥ वह सर कैसो है कि, मानस सरोवरकी बराबरी कररह्यो है

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

और कमलनके फूलनसूं शोभित हो रह्यो है और जलकुक्कुट चक्रवाक तथा राजहंसन करिके शब्दायमान हो रह्यो है ॥ ३७ ॥ और बहुतसे मगर मच्छी तथा और जलके जीवनकरिके युक्त है और वा सरके समीप बहुतसे मुनीश्वरनके बहुतसे आश्रमनको देखत भयो ॥ ३८ ॥ शुभके कहनवारे निमत्तन करके राजाने वे मुनिनके आश्रम देखे और राजाको दाहिनो नेत्र तथा भुजा फरकनलगी ॥ ३९ ॥ उनके फरकनेके कारण राजाको शुभको लक्षण

मकरैर्बहुभिर्युक्तं मत्स्यैर्जलचरैर्युतम् ॥ समीपे सरसस्तत्र मुनीनामाश्रमान्बहून् ॥ ३८ ॥ ददर्श राजा लक्ष्मीवान्निमित्तैः शुभशंसिभिः ॥ सव्यात्परतरं चक्षुः प्रास्फुरच्च तथा करः ॥ ३९ ॥ स्फुरितैस्तस्य राज्ञश्च शंसितं शुभलक्षणम् ॥ तस्य तीरे मुनीन्दृष्ट्वा कुर्वाणान्नैगमं जपम् ॥४०॥ अवतीर्य हयात्तस्मान्मुनीनामग्रतः स्थितः ॥ पृथक् पृथक्ववंदे स मुनींस्ताञ्शंसितव्रतान्॥४१॥ कृतांजलिपुटो भूत्वा दंडवच्च प्रणम्य सः ॥ हर्षेण महताविष्टो बभूव नृपसत्तमः ॥ ४२ ॥

सूचित होतभयो और वा तलावके किनारे वैदिकमंत्रनको जपत भये मुनि देखे ॥ ४० ॥ तब वो घोडेते उतरिके राजा मुनीश्वरनके आगे स्थित होत भयो और उन व्रत करनहारे मुनीश्वरनको पृथक् २ नमस्कार करत भयो ॥ ४१ ॥ वह श्रेष्ठ राजा मुनीश्वरनको हाथ जोरिके दण्डवत् प्रणाम कारि अत्यंत हर्षयुक्त होत भयो ॥ ४२ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वे मुनीश्वर वा राजासे बोले कि, हम तुम्हारे ऊपर प्रसन्न हैं हे राजन् ! जो तुम्हारे मनमें वर्त्तमान है सो हमसे कहो ॥ ४३ ॥ राजा बोले कि तपस्विनमें मुख्य आप कौन हैं आप लोगनके नाम कहा है और यहां काहेके लिये आये हैं यह मोसे ठीक ठीक कहो ॥ ४४ ॥ मुनीश्वर बोले कि, हे राजन्! हम विश्वेदेवा हैं यहां स्नान कर-

तमूचुस्तेऽपि मुनयः प्रसन्ना स्मो वयं तव ॥ कथयस्वाद्य वै राजन् यत्ते मनसि वर्त्तते ॥ ४३ ॥ राजोवाच ॥ के यूयमग्रतपसः किमाख्या भवतामपि ॥ किमर्थमागता यूयं वदंतु मम तत्त्वतः ॥ ४४ ॥ मुनय ऊचुः ॥ विश्वेदेवा वयं राजन्स्नानार्थमिह चागताः ॥ माघो निकटमायात एतस्मात्पंचमेऽहनि ॥ ४५ ॥ अद्य ह्येकादशी राजन्पुत्रदा नाम नामतः ॥ पुत्रं ददात्यसौ शुक्ला पुत्रदा पुत्रमिच्छताम् ॥ ४६ ॥ राजोवाच ॥ एष वै संशयो मह्यं सुतस्योत्पादने महान् ॥ यदि तुष्टा भवंतो मे पुत्रो वै दीयतां तदा ॥ ४७ ॥

नेको आये हैं आजके दिनते पांचवें दिन माघको महीना निकट आय गयो है ॥ ४५ ॥ हे राजन् ! आज पुत्रदा नाम एकादशी है यह शुक्लपक्षकी पुत्रदा एकादशी पुत्रकी इच्छावाले मनुष्यनको पुत्र देय है ॥ ४६ ॥ राजा बोले कि, पुत्रके उत्पन्न करनेमें यह मोको बडो संदेह है जो आपलोग मोपै प्रसन्न होय तो मोकों पुत्र दीजिये ॥४७॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मुनि बोले कि, हे राजन् ! आजहीके दिन पुत्रदा नामसों विख्यात एकादशी है ताते याको उत्तम व्रत करिये ॥४८॥
हमारे आशीर्वादसे और केशव भगवान्के प्रसादते हे राजन् ! तुमको अवश्य पुत्रकी प्राप्ति होगी ॥ ४९ ॥ या
प्रकार उन मुनीश्वरनके वचनते राजाने उत्तम व्रत कीन्हो और द्वादशीके दिन राजा पारण करिके वारंवार मुनि-

मुनय ऊचुः॥ अस्मिन्नेव दिने राजन्पुत्रदा नाम वर्त्तते ॥ एकादशीति विख्याता क्रियतां व्रतमुत्तमम् ॥ ४८ ॥ आशीर्वादेन चास्माकं केशवस्य प्रसादतः ॥ अवश्यं तव राजेंद्र पुत्रप्राप्तिर्भविष्यति ॥४९॥ इत्येवं वचनात्तेषां कृतं राज्ञा व्रतं शुभम्॥ द्वादश्यां पारणं कृत्वा मुनीन्नत्वा पुनः पुनः ॥५०॥ आजगाम गृहं राजा राज्ञी गर्भं समादधौ ॥ मुनीनां वचनेनैव पुत्रदायाः प्रभावतः ॥५१॥ पुत्रो जातस्तथा काले तेजस्वी पुण्यकर्मकृत् ॥ पितरं तोषयामास प्रजापालो बभूव सः ॥५२॥ एतस्मात्कारणाद्राजन्कर्त्तव्यं पुत्रदाव्रतम् ॥ लोकानां च हितार्थाय तवाग्रे कथितं मया ॥५३॥

श्वरोंको नमस्कार करत भयो ॥ ५० ॥ और राजा घरको आवत भयो तब रानी मुनीश्वरनके वचनते और पुत्रदाके प्रभावते गर्भको धारण करतीभई ॥ ५१ ॥ और समयमें तेजस्वी तथा पुण्य कर्म करनहारो पुत्र उत्पन्न होत भयो वह पिताको संतुष्ट करत भयो और वह प्रजाके पालनमें तत्पर होत भयो ॥५२॥ हे राजन् ! या कारणते पुत्रदाको व्रत

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

करनो चाहिये लोकनके हितके लिये मैंने तुम्हारे आ. कह्यो ॥ ५३ ॥ जे मनुष्य पुत्रदा नाम यह व्रत करैं हैं उन मोक्षभागी मनुष्यनके अवश्य पुत्र होय है ॥ ५४ ॥ हे राजन् ! याके पढने और श्रवण करनेसों अश्वमेध ऽ तको फल प्राप्त होय है ॥ ५५ ॥ इति श्रीमत्पण्डितपरमसुखतनयपण्डितकेशवप्रसादशर्मद्विवेदिकृतायामेकादशीमाहात्म्यभाषाटीकायां दीपिकासमाख्यायां पौषशुक्लैकादशीव्याख्या समाप्ता ॥ ४ ॥ अथ माघकृष्णैकादशीकथा ॥ अथ माघस्य

एतद्व्रतं तु ये मर्त्याः कुर्वंति पुत्रदाभिधम् ॥ तेषां चैव भवेत्पुत्रो ह्यवश्यं मोक्षभागिनाम् ॥५४॥
पठनाच्छ्रवणाद्राजन्नश्वमेधफलं लभेत् ॥ ५५ ॥ इति श्रीभविष्योत्तरपुराणे पौषशुक्लैकादश्याः
पुत्रदानाम्न्या माहात्म्यं संपूर्णम् ॥ ४ ॥ अथ माघकृष्णैकादशीकथा ॥ दाल्भ्य उवाच ॥
मर्त्यलोके तु संप्राप्ताः पापं कुर्वंति जंतवः ॥ ब्रह्महत्यादिपापैश्च ह्यन्यैश्च विविधैर्युताः ॥ १ ॥
परद्रव्यापहाराश्च परव्यसनमोहिताः ॥ कथं न यांति नरकान् ब्रह्मंस्तद्ब्रूहि तत्त्वतः ॥ २ ॥

कृष्णे या षट्तिलैकादशी स्मृता ॥ तन्माहात्म्यस्य भाषायां विवृतिं संतनोम्यहम् ॥ १ ॥ दाल्भ्य ऋषि बोले कि, मर्त्यलोकमें प्राप्त जीव पापको करैं हैं ब्रह्महत्या आदि तथा नाना प्रकारके अन्य पापनकरिके युक्त होय हैं ॥ १ ॥ पराये धनके हरण करनहारे और पराये दुःखसों मोहित पुरुष कैसे नरकको नहींजायँ हैं हे ब्रह्मन् ! मोसों तत्त्वते

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कहो ॥ २ ॥ हे भगवन् ! अनायास करिके काहू छोटेसे दानसों जासों पाप शांत होय सो कहनेको योग्य हो ॥ ३ ॥ पुलस्त्य बोले कि, हे महाभाग ! साधु साधु अर्थात् बहुत अच्छी २ तुमने गुह्य बात कही जाको कभी ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र और देवताननें काहूसों नहीं कह्यो है ॥४॥ हे द्विजोत्तम ! तुम्हारे पूछनेसों वह गुप्त वस्तु मैं तुमसों कहौंगो

अनायासेन भगवन्दानेनाल्पेन केनचित् ॥ पापं प्रशममायाति येन तद्वक्तुमर्हसि ॥३॥ पुलस्त्य उवाच ॥ साधु साधु महाभाग गुह्यमेतदुदाहृतम् ॥ यन्न कस्यचिदाख्यातं ब्रह्मविष्णिवन्द्रदैवतैः ॥४॥ तदहं कथयिष्यामि त्वया पृष्टो द्विजोत्तम ॥ ततो माघे तु संप्राप्ते शुचिः स्नातो जितेंद्रियः ॥ ५ ॥ कामक्रोधाभिमानेर्ष्यालोभपैशुन्यवर्जितः ॥ देवदेवं च संस्मृत्य पादौ प्रक्षाल्य वारिणा ॥ ६ ॥ भूमावपतितं ग्राह्यं गोमयं तत्र मानवः ॥ तिलान् प्रक्षिप्य कार्पासं पिंडकांश्चैव कारयेत् ॥७॥ अष्टोत्तरशतं चैव नात्र कार्या विचारणा ॥ ततो माघे च संप्राप्ते ह्यादौ चैव भवेद्यदि ॥८॥

ता पीछे माघ महीनाके आवनेंपै शुद्ध हो स्नान करिके जितेंद्रिय रहै ॥५॥ काम, क्रोध, अभिमान, ईर्षा, लोभ और चुगलीते बचो रहै और निज पांयनको धोयके देवदेव जे विष्णु भगवान् हैं तिनको स्मरण करै ॥ ६ ॥ भूमिमें न गिरो होय ऐसो गोबर ले वामें तिल और कपास मिलाके पिंड बनावै ॥ ७ ॥ एक सौ आठ १०८ पिण्ड बनावै

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यामें कुछ विचार न करै ता पीछे माघमासके आनेपै आदिहीसों नियम करै ॥ ८ ॥ अथवा कृष्णपक्षके मूलमें ता पीछे पुत्रफलकी देनहारी एकादशीके नियमको ग्रहण करै ताको विधान मोते सुनो ॥९॥ स्नानकरि शुद्ध होके सावधान मनसों देवनके देव जे भगवान् हैं तिनको पूजन करै और छींक तथा जँभाई आवें तो सदा कृष्णके नामनको कीर्त्तन करै ॥ १० ॥ और रात्रिमें जागरण करै और रात्रिहीमें उन एकसौ आठ पिंडनसों होम करै और शंख, चक्र

मूले वा कृष्णपक्षस्यैकादश्यां नियमं ततः ॥ गृह्णीयात्पुत्रफलदं विधानं तत्र मे शृणु ॥ ९ ॥
देवदेवं समभ्यर्च्य सुस्नातः प्रयतः शुचिः ॥ कृष्णनामानि संकीर्त्य क्षुज्जृंभासु च सर्वदा ॥१०॥
रात्रौ जागरणं कुर्याद्रात्रौ होमं च कारयेत् ॥ अर्चयेद्देवदेवेशं शंखचक्रगदाधरम् ॥ ११ ॥ चंदनागरुकर्पूरैर्नैवेद्यैः शर्करादिभिः ॥ संस्मृत्य नाम्ना च ततः कृष्णाख्येन पुनः पुनः ॥ १२ ॥
कूष्मांडैर्नारिकेलैश्च ह्यथवा बीजपूरकैः ॥ सर्वाभावेऽपि विप्रेंद्र शस्तं पूगीफलं तदा ॥ १३ ॥

गदा, धारण करे भये जो देवदेवेश भगवान् हैं तिनको ध्यान करै ॥ ११ ॥ चंदन, अगर, कपूर तथा शर्करा आदि नैवेद्यन करिके वारंवार कृष्णनामको उच्चारण करि भगवान्को पूजन करै ॥ १२ ॥ कुम्हडों करिके अथवा नारियलों करिके वा बिजौरों करिके पूजन करै जो ये सब वस्तु न होयँ तो सुपारी सबते उत्तम है ॥ १३ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विधिसों अर्घ्य दे जनार्दनको पूजन करि ऐसे कहै कि, हे कृष्ण ! हे कृष्ण ! हे कृपालो ! हे गतिरहितनको गति देनहारे ! ॥ १४ ॥ संसाररूपी समुद्रमें डूबे भये मनुष्यनके ऊपर प्रसन्न होउ हे पुण्डरीकाक्ष ! हे विश्वभावन ! तुमको नमस्कार है ॥ १५ ॥ हे सुब्रह्मण्य ! हे महापुरुष ! हे पूर्वज ! हे जगत्पते ! मेरो दियो भयो अर्घ्य लक्ष्मी

अर्घ्यं दत्त्वा विधानेन पूजयित्वा जनार्दनम् ॥ कृष्ण कृष्ण कृपालो त्वमगतीनां गतिप्रद ॥ १४ ॥
संसारार्णवमग्नानां प्रसीद परमेश्वर ॥ नमस्ते पुंडरीकाक्ष नमस्ते विश्वभावन ॥ १५ ॥ सुब्रह्मण्य
नमस्तेऽस्तु महापुरुष पूर्वज ॥ गृहाणार्घ्यं मया दत्तं लक्ष्म्या सह जगत्पते ॥ १६ ॥ ततस्तु
पूजयेद्विप्रमुदकुंभं प्रदापयेत् ॥ छत्रोपाहनवस्त्रैश्च कृष्णो मे प्रीयतामिति ॥ १७ ॥ कृष्णा धेनुः
प्रदातव्या यथाशक्त्या द्विजोत्तम ॥ तिलपात्रं द्विजश्रेष्ठ दद्यात्तत्र विचक्षणः ॥१८॥ स्नानप्राश-
नयोः शस्ताः श्वेताः कृष्णास्तिला मुने ॥ तान् प्रदद्यात्प्रयत्नेन यथाशक्त्या द्विजोत्तम ॥ १९ ॥

करिके सहित ग्रहण करो ॥ १६ ॥ ता पीछे छत्र उपानह तथा वस्त्रनकारि ब्राह्मणका पूजन करै और कृष्ण मेरे ऊपर प्रसन्न होयँ ऐसे कहिके जलसों भरे भये घटको दान करै ॥ १७ ॥ और हे ब्राह्मण ! यथाशक्ति कृष्णा गौको दान करनो चाहिये हे द्विजश्रेष्ठ ! वा दिन चतुर मनुष्य तिल भरके पात्रको दान करै ॥ १८ ॥ हे मुने ! नहानेमें तथा खानेमें सफेद

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

और काले दोनों प्रकारके तिल श्रेष्ठ हैं अथवा स्नानमें श्वेत और भोजनमें काले तिल उत्तम कहे हैं हे द्विजोत्तम ! उन तिलनका दान यथाशक्ति यत्नसों करै ॥ १९ ॥ जितने तिलनको दान करै उतने हजार वर्षलों स्वर्गलोकमें आनंद करै तिल जलमें मिलाके स्नान करै १ तिलनको पीसिके उबटना लगावै २ तिलनको होम करै ३ और तिल मिलाके जल पीवें ४ तिलनको भोजन करै ५ तथा तिलनको दान करै ६ यह छः प्रकारके तिल पापनके नाश करनहारे हैं ॥

तावद्वर्षसहस्राणि स्वर्गलोके महीयते ॥ तिलस्नायी तिलोद्वर्ती तिलहोमी तिलोदकी ॥ २० ॥
तिलभुक् तिलदाता च षट्तिलाः पापनाशकाः ॥ नारद उवाच ॥ कृष्ण कृष्ण महाबाहो
नमस्ते भक्तभावन ॥ २१ ॥ षट्तिलैकादशीभूतं कीदृशं फलमश्नुते ॥ सोपाख्यानं मम ब्रूहि
यदि तुष्टोऽसि यादव ॥ २२ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ शृणु ब्रह्मन्यथावृत्तं दृष्टं तत्कथयामि ते ॥
मृत्युलोके पुरा ह्यासीद्ब्राह्मणी तत्र नारद ॥ २३ ॥

नारदमुनि बोले कि, हे कृष्ण ! हे कृष्ण ! हे महाबाहो ! हे भक्तभावन ! आपके अर्थ नमस्कार है ॥ २० ॥ २१ ॥ षट्तिला एकादशीतें उत्पन्न फल कैसो मिलै है हे यादव ! जो आप प्रसन्न हो तो याको उपाख्यान सहित मोसों कहो ॥ २२ ॥ श्रीकृष्ण बोले कि, हे ब्रह्मन् ! जैसे वृत्तांत मैंने देख्यो है सो मैं तुमसों कहौं हौं हे नारद !

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पहले समय मृत्युलोकमें एक ब्राह्मणी होती भई ॥ २३ ॥ वह सदा व्रतनके रहनेमें और देवपूजामें लगी रहती सदा मेरी भक्ता वह स्त्री महीने भरके व्रत करनेमें तत्पर होत भई ॥ २४ ॥ कृष्णके व्रत करिके युक्त वह मेरी पूजामें परायण होत भई हे द्विजोत्तम ! सदा व्रत करनेसों वाको शरीर क्लेशित होजात भयो ॥ २५ ॥ वह अति बुद्धिमती स्त्री दीन ब्राह्मणनको और कुमारीनको भक्तिपूर्वक घर आदिकनको दान सदा

व्रतचर्यरता नित्यं देवपूजारता सदा ॥ मासोपवासनिरता मम भक्ता च सर्वदा ॥ २४ ॥ कृष्णोपवाससंयुक्ता मम पूजापरायणा ॥ शरीरं क्लेशितं नित्यमुपवासैर्द्विजोत्तम ॥ २५ ॥ दीनानां ब्राह्मणानां च कुमारीणां च भक्तितः ॥ गृहादिकं प्रयच्छंती सर्वकालं महामतिः ॥ २६ ॥ अतिकृच्छ्ररता सा तु सर्वकालेषु वै द्विज ॥ शुद्धमस्याः शरीरं हि व्रतैः कृच्छ्रैर्न संशयः ॥ २७ ॥ अर्थिनं वैष्णवं लोकं कायक्लेशेन वै तया ॥ न दत्तमन्नदानं हि येन तृप्तिः परा भवेत् ॥ २८ ॥

देती ॥ २६ ॥ हे द्विज ! वह अतिकठिन व्रतनमें तत्पर होत भई व्रतन करिके और कृच्छ्रन करिके वाको शरीर शुद्ध हो गयो यामें संदेह नहीं है ॥ २७ ॥ और वाने कायाके क्लेशसों काहू मँगता ब्राह्मणको अन्नदान नहीं कीन्हों जासों मेरी परम तृप्ति होती ॥ २८ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

 हे ब्रह्मन् ! या बातके जानिवेकी इच्छा करिके मैं मृत्युलोकमें आयो और कपिलब्राह्मणको रूप धरिके मैंने वाते
केवल भिक्षा माँगी ॥ २९ ॥ ब्राह्मणी बोली कि, हे ब्रह्मन् ! तुम कहाँते आये हो जहांते आये हो ताहि बताओ परंतु
 मैंने फिर यही कही कि, हे सुंदरि ! भिक्षा दे ॥ ३० ॥ हे द्विज ! वाने बहुतसो क्रोध करिके एक माटीको पिंड हमारे

एतज्जिज्ञासया ब्रह्मन्मृत्युलोकमुपागतः ॥ कापिलं रूपमास्थाय भिक्षापात्रेण याचिता ॥ २९ ॥
ब्राह्मण्युवाच ॥ कस्मात्त्वमागतो ब्रह्मन्वद यस्मात्समागतः ॥ पुनरेव मया प्रोक्तं देहि भिक्षां च सुंदरि
॥३०॥ तया कोपेन महता मृत्पिंडस्ताम्रभाजने ॥ क्षिप्तो यावत्तया देव्या पुनः स्वर्गं गतो द्विज
॥३१॥ततः कालेन महता तापसी सुमहाव्रता ॥ कदाचित्स्वर्गमायाता व्रतचर्याप्रसादतः ॥३२॥
मृत्पिंडस्य प्रभावेण गृहं प्राप्तं मनोरमम् ॥ संजातं चैव विप्रर्षे धान्यकोशादिवर्जितम् ॥ ३३ ॥
गृहं यावन्निरीक्षेत न किंचित्तत्र पश्यति ॥ तावद्गृहाद्विनिष्क्रांता ममांते चागता द्विज ॥ ३४ ॥

ताम्रके पात्रमें डारि दीन्हों फिर हम स्वर्गको गये ॥ ३१ ॥ ता पीछे बहुत कालमें बडी व्रत करनहारी वह तापसी
व्रत करनेके प्रसादसों स्वर्गको आवती भई ॥ ३२ ॥ मिट्टीके पिंडके प्रभावते वाने सुंदर मनोहर घर पायो,
हे विप्रर्षे ! वह घर धान्यके भंडारसों रहित होत भयो ॥ ३३ ॥ जब घरको देख्यो तो वामें कुछ न देखत भई

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे ब्राह्मण ! तब वह घरते निकरिकै हमारे समीप आवत भई ॥ ३४ ॥ बडे क्रोधसों भरी भई वह यह वचन बोलत भई कि, मैंने अनेक व्रत और चांद्रायण कृच्छ्र करिके तथा उपवासन करिके अनेक बार ॥३५॥ सब लोकनके भावन जे देव विष्णु हैं तिनको आराधन कियो है हे जनार्दन ! मेरे घरमें किंचित् हू धन नहीं दीखै है ॥३६॥ तब मैंने वासों

क्रोधेन महताविष्टा त्विदं वचनमब्रवीत् ॥ मया व्रतैश्च कृच्छ्रैश्च उपवासैरनेकशः ॥ ३५ ॥
पूजयाऽऽराधितो देवः सर्वलोकस्य भावनः ॥ न धनं दृश्यते किंचिद्गृहे मम जनार्दन ॥ ३६ ॥
ततश्चोक्ता मया सा तु गृहं गच्छ यथागतम् ॥ आगमिष्यंति सुनरां कौतूहलसमन्विताः ॥३७॥
देवपत्न्यस्तु त्वां द्रष्टुं विस्मयेन समन्विताः ॥ द्वारं नोद्घाटनीयं हि षट्तिलापुण्यवाचनात् ॥३८॥
एवमुक्ता गता सा तु यदा वै मानुषी तदा ॥ अत्रांतरे समायाता देवपत्न्यश्च नारद ॥ ३९ ॥
ताभिश्च कथितं तत्र त्वां द्रष्टुं हि समागताः ॥ द्वारमुद्घाटय त्वं च पश्यामस्त्वां शुभानने ॥४०॥

कही कि, तू बहुत शीघ्र अपने घरको जा बडे कौतूहलसों देवतानकी स्त्री आवैंगी ॥३७॥ जब देवतानकी स्त्री विस्मय-युक्त हो तेरे देखिवेको आवें तब तू द्वार मत खोलियो षट्तिला एकादशीको पुण्य माँगियो ॥३८॥ भगवान् करि ऐसे कही गई वह मानुषी जब वहां अपने घरमें गई तब हे नारद ! वाहि अंतरमें देवपत्नी आईं ॥ ३९ ॥ उनके वहां ऐसे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कही कि, हम तुम्हारे देखिवेको आई हैं तुम द्वार खोलो हे सुंदरि ! हम तुमको देखेंगी ॥ ४० ॥ मानुषी बोली कि, जो तुम मोको देखा चाहो तो षट्तिलाका पुण्य मोहिं देउ तौ मैं द्वार खोलों ॥ ४१ ॥ षट्तिला व्रतके नाश हो जानेसों वहां एकभी न बोलत भई और एकने वहां कही कि, मानुषी हमें देखनी हैं याते हम षट्तिलाको

मानुष्युवाच ॥ यदि द्रष्टुं मया कार्यं सत्यं वाच्यं विशेषतः ॥ ददन्तु षट्तिलापुण्यं द्वारोद्घाटनकारणात् ॥ ४१ ॥ एकापि तत्र नावादीत्षट्तिलाव्रतनाशतः ॥ अन्यया कथितं तत्र द्रष्टव्या मानुषी मया ॥४२॥ ततो द्वारं समुद्घाट्य दृष्टा ताभिश्च मानुषी ॥ न देवी न च गंधर्वी नासुरी न च पन्नगी ॥ दृष्टा पूर्वं मया नारी ईदृशी सा द्विजर्षभ ॥ ४३ ॥ रूपकांतिसमायुक्ता क्षणेन समपद्यत ॥ धनं धान्यं च वस्त्रादिसुवर्णं रौप्यमेव च ॥ ४४ ॥ सर्वं गृहं सुसंपन्नं षट्तिलायाः प्रसादतः ॥ अतितृष्णा न कर्तव्या वित्तशाठ्यं विवर्जयेत् ॥ ४५ ॥

पुण्य देयँगे ॥ ४२ ॥ ता पीछे द्वार खोलिके उन्होंने मानुषी देखी देवी नहीं है गंधर्वी नहीं है न आसुरी है और न पन्नगी है हे द्विजश्रेष्ठ ! पहले मैंने वा नारीको ऐसी देखी ॥४३॥ फिरि वह क्षणमात्रहीमें रूप और कांति करके युक्त हो जात भई वाके घरमें धन धान्य वस्त्र सुवर्ण चांदी ये सब हो जात भये ॥ ४४ ॥ और षट्तिलाके प्रभा-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वते वाको घर सब वस्तुनसों सम्पन्न हो जातभयो अतितृष्णा न करनी चाहिये धनकी शठताको वर्जित करै ॥४५॥
अपने वित्तके अनुसार तिल और वस्त्र आदि दान करै ताते जन्ममें आरोग्यताको प्राप्त होय ॥ ४६ ॥ दरिद्रता
न होय न कष्ट होय और न दुर्भाग्य होय हे द्विजश्रेष्ठ! षट्तिलाको व्रत करनेसों ये कोई बातें नहीं होती हैं॥ ४७॥
हे राजन्! या प्रकार तिलनको दान करनेसे सब पातकनते छूटि जाय है वामें कुछ विचार न करनो चाहिये॥ ४८॥

आत्मवित्तानुसारेण तिलान्वस्त्रादि दापयेत् ॥ लभते चैवमारोग्यं ततो जन्मानि जन्मनि ॥४६॥
दारिद्र्यं न च कष्टं वै न च दौर्भाग्यमेव च ॥ न भवेद्वै द्विजश्रेष्ठ षट्तिलाया उपोषणात्
॥ ४७ ॥ अनेन विधिना राजंस्तिलदानान्न संशयः ॥ मुच्यते पातकैः सर्वैर्नात्र कार्या विचा-
रणा ॥ ४८ ॥ दानं च विधिना सम्यक् सर्वपापप्रणाशनम् ॥ नानर्थभूतो नायासः शरीरे मुनि-
सत्तम ॥ ४९ ॥ इति श्रीभविष्योत्तरपुराणे माघकृष्णैकादशीषट्तिलामाहात्म्यं समाप्तम् ॥ ९ ॥

जो अच्छी भांति विधिपूर्वक दान दियो जाय तो वह सब पापनको नाश करनहारो होय. हे मुनिश्रेष्ठ! न कोई
अनर्थ होय न शरीरमें खेद होय ॥ ४९ ॥ ॥ इति श्रीमत्पण्डितपरमसुखतनयपण्डितकेशवप्रसादशर्मद्विवेदिकृ-
तायामेकादशीमाहात्म्यभाषाटीकायां दीपिकासमाख्यायां माघकृष्णैकादशीषट्तिलामाहात्म्यं समाप्तम् ॥ ९ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ माघशुक्लैकादशीमाहात्म्यम् ॥ माघस्यापरपक्षे या जयाख्यैकादशी स्मृता ॥ तन्माहात्म्यस्य विवृतिं केशवाख्यस्तनोम्यहम् ॥ १ ॥ युधिष्ठिर बोले कि, हे आदिदेव ! हे जगत्पते ! हे कृष्ण ! अच्छो वर्णन कीन्हों स्वेदज, अंडज, जरायुज, उद्भिज्ज ये चार प्रकारकी सृष्टिके जीव हैं ॥१॥ उनके कर्ता विकर्ता पालन और क्षय करनहारे

अथ माघशुक्लैकादशीकथा ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ साधु कृष्ण त्वया प्रोक्ता आदिदेव जगत्पते ॥ स्वेदजा अंडजाश्चैव उद्भिज्जाश्च जरायुजाः ॥ १ ॥ तेषां कर्ता विकर्त्ता च पालकः क्षयकारकः ॥ माघस्य कृष्णपक्षे तु षट्तिला कथिता त्वया ॥ २ ॥ शुक्ले चैकादशी या च कथयस्व प्रसादतः ॥ किं नाम को विधिस्तस्याः को देवस्तत्र पूज्यते ॥ ३ ॥ कथयिष्यामि राजेंद्र शुक्ले माघस्य या भवेत् ॥ जयानाम्नीति विख्याता सर्वपापहरा परा ॥ ४ ॥

आपही हैं माघके कृष्णपक्षमें आपने षट्तिला एकादशी कही ॥२॥ और जो शुक्लपक्षमें एकादशी होय है ताहि प्रसन्नतासों कहो वाको कहा नाम है और वाकी विधि कहा है और वामें कौनसे देवकी पूजा कीनी जाय है ॥३॥ श्रीकृष्ण बोले कि, हे राजेंद्र ! माघ महीनाके शुक्लपक्षमें सब पापनकी हरनहारी जया नामसों विख्यात एकादशी होय है

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वाहि मैं कहौंगो ॥ ४ ॥ वह पवित्र और पापनकी दूर करनहारी और पिशाचयोनिकी छुडावनहारी है वाको व्रत करनेसों मनुष्य प्रेत नहीं होय हैं ॥ ५ ॥ याते परे और कोई पापनकी दूर करनहारी और मोक्ष देनवारी नहीं है हे राजन् ! या कारणते याको व्रत यत्नसों करनो चाहिये ॥ ६ ॥ हे राजशार्दूल ! पुराणसंबंधिनी जो कथा है

पवित्रा पापहंत्री च पिशाचत्वविनाशिनी ॥ नैव तस्या व्रते चीर्णे प्रेतत्वं जायते नृणाम् ॥ ५ ॥ नातः परतरा काचित्पापघ्नी मोक्षदायिनी ॥ एतस्मात्कारणाद्राजन्कर्तव्येयं प्रयत्नतः ॥ ६ ॥ श्रूयतां राजशार्दूल कथां पौराणिकीं शुभाम् ॥ पंकजे च पुराणेऽस्या महिमा कथितो मया ॥ ७ ॥ एकदा नागलोके वै इंद्रो राज्यं चकार ह ॥ देवाश्च तत्र सख्येन निवसंति मनोरमे ॥ ८ ॥ पीयूषपाननिरता ह्यप्सरोगणसेविताः ॥ नंदनं तु वनं तत्र पारिजातोपशोभितम् ॥ ९ ॥ रमयंति रमंत्यत्र ह्यप्सरोभिर्दिवौकसः ॥ एकदा रममाणोऽसौ देवेंद्रः स्वेच्छया नृप ॥ १० ॥

ताहि सुनिये याकी महिमा मैंने पद्मपुराणमें कही है ॥ ७ ॥ एकवार स्वर्गलोकमें इन्द्र राज्यको करत हो और वा मनोहर स्थानमें देवता सुखसों वास करत भये ॥ ८ ॥ अमृतपान करनेमें तत्पर हैं और अप्सरानको समूह उनका सेवन करत है और कल्पवृक्षसों शोभित वहां नन्दन वन हो ॥ ९ ॥ वहां देवता अप्सरानके साथ विहार करत हैं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे राजन्! एक बार इन्द्र अपनी इच्छासों विहार करि रह्यो हो ॥ १० ॥ वह एक बार बडे आनंदसों पचास करोड नायिकनको नचावत भयो और पुष्पदंतसमेत सब गंधर्व वहां गाय रहे हैं ॥ ११ ॥ वहां चित्रसेन हो और वाके पुत्र हैं और मालिनी नाम चित्रसेनकी स्त्रीहू ही ॥१२॥ और मालिनीते उत्पन्न पुष्पवान् नाम चित्रसेनको पुत्र हो और

नर्तयामास हर्षात्स पंचाशत्कोटिनायिकाः ॥ गंधर्वास्तत्र गायंति गंधर्वः पुष्पदंतकः ॥ ११ ॥
चित्रसेनश्च तत्रैव चित्रसेनसुता तथा ॥ मालिनीति च नाम्ना तु चित्रसेनस्य कामिनी ॥ १२ ॥
मालिन्यां तु समुत्पन्नः पुष्पवानिति नामतः ॥ पुष्पदंतस्य पुत्रो वै माल्यवान्नाम नामतः ॥१३॥
गंधर्वी पुष्पवत्याख्या माल्यवत्यातिमोहिता ॥ कामस्य च शरैस्तीक्ष्णैर्विद्धांगी सा बभूव ह ॥१४॥
तया भावैः कटाक्षैश्च माल्यवांश्च वशीकृतः ॥ लावण्यरूपसंपन्ना तस्या रूपं नृप शृणु ॥ १५ ॥

माल्यवान् नाम पुष्पदंतको पुत्र होत भयो ॥१३॥ पुष्पवान् नाम गंधर्वकी कन्या पुष्पवती जाको नाम है वह माल्यवान्में अत्यंत मोहित हो जातभई और वह कामके तेज बाणनसों विंधो है अंग जाको ऐसी होजातभई ॥ १४ ॥ वाने हाव भाव दिखाके कटाक्षनसों माल्यवान् वश करि लीन्हो वह सुंदरता और रूपसों संपन्न ही.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे राजन् ! वाको रूप सुनो ॥ १५ ॥ वाकी बाहें ऐसी हैं मानों कि, कामने गलेमें डारनके लिये फांसी बनाई हैं और चंद्रमाके समान वाको मुख है और वाके नेत्र कानानलों विस्तृत हैं ॥ १६ ॥ हे नृपोत्तम ! वाके कान कुंडलनसों शोभित हैं और दिव्य गहननसों भूषित शंखके समान वाको गलो है ॥ १७ ॥ पुष्ट और ऊँचे वाके कुच हैं और

बाहू तस्यास्तु कामेन कंठपाशौ कृताविव ॥ चंद्रवद्वदनं तस्या नयने श्रवणायते ॥१६॥ कर्णौ तु शोभितौ तस्याः कुंडलाभ्यां नृपोत्तम ॥ कंबुग्रीवायुता चैव दिव्याभरणभूषिता ॥ १७ ॥ पीनोन्नतौ कुचौ तस्या मुष्टिमात्रं च मध्यमम् ॥ नितंबौ विपुलौ तस्या विस्तीर्णं जघनस्थलम् ॥ १८ ॥ चरणौ शोभमानौ तौ रक्तोत्पलसमद्युती ॥ ईदृश्या पुष्पवत्या च माल्यवानतिमोहितः ॥१९॥ शक्रस्य परितोषाय नृत्यार्थं तौ समागतौ ॥ गायमानौ च तौ तत्र ह्यप्सरोगणसंगतौ ॥२०॥

मुठ्ठीमें आ जाय ऐसी वाकी कमर ही और बडे भारी वाके नितंब हे आर जघनस्थल विस्तीर्ण हो ॥ १८ ॥ लाल कमलके समान है शोभा जिनकी ऐसे वाके चरण शोभायमान हे ऐसी पुष्पवती करिके माल्यवान् अत्यंत मोहित कियो गयो ॥ १९ ॥ इन्द्रकी प्रसन्नताके लिये वे दोनों नाचवेको आवत भये

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

 और अप्सरानके समूहमें मिले भये वे दोनों गान करत भये ॥ २० ॥ उनको चित भ्रममें हो याते उनको
गावनो शुद्ध न होत भयो और कामके बाणनके वशमें होके वे दोनों परस्पर दृष्टि मिलाय रहे हैं ॥२१॥ इन्द्र वहां उन
 दोनोंके मनको परस्पर उत्कंठित जानिके ताल काल और क्रियमानके लोपसों गीतको बिगडनो जानत भयो ॥२२॥

न शुद्धगानं गायेतां चित्तभ्रमसमन्वितौ ॥ बद्धहर्ष्टी तथाऽन्योऽन्यं कामबाणवशं गतौ ॥ २१ ॥
ज्ञात्वा लेखर्षभस्तत्र संगतं मानसं तयोः ॥ तालकालक्रियमानलोपाद्गीतविभंजनात् ॥ २२ ॥
चिंतयित्वा तु मघवा ह्यवज्ञानं तथाऽऽत्मनः ॥ कुपितश्च तयोरित्थ शाप दास्यन्निदं जगौ ॥ २३ ॥
धिग्वां पापरतौ मूढावाज्ञाभंगकरौ मम ॥ युवां पिशाचौ भवतां दंपती रूपधारिणौ ॥ २४ ॥
मृत्युलोकमनुप्राप्तौ भुंजानौ कर्मणः फलम् ॥ एवं मघवता शप्तावुभौ दुःखितमानसौ ॥ २५ ॥

इन्द्र अपनो तिरस्कार जानिके उन दोनोंके ऊपर क्रोधित हो शाप देनेको उद्यत हो यह कहत भयो
॥ २३ ॥ मेरी आज्ञाभंग करनहारे जे तुम दोनों पापी और मूर्ख हो तुमको धिक्कार है । स्त्री पुरुषका रूप
धरिके तुम दोनों पिशाच हो जाउ ॥ २४ ॥ और मृत्युलोकमें जायके अपने कर्मको फल भोगो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

या प्रकार इन्द्रकरि शाप दिये गये वे दोनों मनमें दुःखी होत भये ॥ २५ ॥ इन्द्रके शापसों मोहित वे दोना हिमालय पर्वतमें जात भये और दोनों पिशाच होके दारुण दुःखको प्राप्त होत भये ॥ २६ ॥ दुःखी हैं मन जिनके ऐसे वे दोनों बडे कष्टको प्राप्त होत भये और विमोहित होगये कि, जिनको गंध रस स्पर्श इत्यादिको ज्ञान न रहो ॥ २७ ॥ देहपात करनहारे दाहकरि पीडित वे दोनों वा कर्म करि पीडित हो नींदके

हिमवंतमनुप्राप्ताविंद्रशापविमोहितौ ॥ उभौ पिशाचतां प्राप्तौ दारुणं दुःखमेव च ॥ २६ ॥
संतप्तमानसौ तत्र महाकृच्छ्रगतावुभौ ॥ गंधं रसं च स्पर्शं च न जानंतौ विमोहितौ ॥ २७ ॥
पिड्यमानौ तु दाहेन देहपातकरेण च ॥ तौ न निद्रासुखं प्राप्तौ कर्मणा तेन पीडितौ ॥ २८ ॥
परस्परं वादमानौ चेरतुर्गिरिगह्वरम् ॥ पीड्यमानौ तु शीतेन तुषारप्रभवेण तौ ॥ २९ ॥ दंतघर्षं
प्रकुर्वाणौ रोमांचितवपुर्धरौ ॥ ऊचे पिशाचः शीतार्त्तः स्वपत्नीं तां पिशाचिकाम् ॥ ३० ॥

सुखको न प्राप्त होत भये ॥ २८ ॥ परस्पर वाद करते भये वे दोनों घने वनमें विचरत भये और पालासों उत्पन्न जो शीत है ता करिके पीडित होत भये ॥ २९ ॥ शीतके मारे दांतनको वजाते भये जे वे दोनों हैं तिनके शरीरके रोम ठाढे हो गये तब शीतसों पीडित पिशाच अपनी स्त्री पिशाचिनीसों बोलत भयो ॥ ३० ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अत्यंत दुःख देनेवालो कौनसो पाप हम दोनोंने कियो है जो अपने बुरे कर्मसों हमको पिशाचयोनि प्राप्त हुई ॥ ३१ ॥ निंदित पिशाचयोनिको घोर मानिके सब जतननसों पाप न करैं ॥ ३२ ॥ दुःखसों दुर्बल वे दोनों ऐसे चितामें तत्पर होत भये दैवयोगसे उनको माघ महीनेके शुक्लपक्षकी एकादशी प्राप्त भई ॥ ३३ ॥ जया नामसों

किमावाभ्यां कृतं पापमत्यंतं दुःखदायकम् ॥ येन प्राप्तं पिशाचत्वं स्वेन दुष्कृतकर्मणा ॥ ३१ ॥
नरकं दारुणं गत्वा पिशाचत्वं च गर्हितम् ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन पापं नैव समाचरेत् ॥ ३२ ॥
इति चिंतापरौ तत्र ह्यास्तां दुःखेन कर्शितौ ॥ दैवयोगात्तयोः प्राप्ता माघस्यैकादशी सिता ॥ ३३ ॥
जया नाम्नीति विख्याता तिथीनामुत्तमा तिथिः ॥ तस्मिन्दिने तु संप्राप्ते तावाहारविवर्जितौ ॥ ३४ ॥ आसाते तत्र नृपते जलपानविवर्जितौ ॥ न कृतो जीवघातश्च न पत्रफलभक्षणम् ॥ ३५ ॥
अश्वत्थस्य समीपे तु पतितौ दुःखसंयुतौ ॥ रविरस्तं गतो राजंस्तथैव स्थितयोस्तयोः ॥ ३६ ॥

विख्यात वह सबरी तिथिनमें उत्तम तिथि है उस दिन प्राप्त होनेपै वे दोनों विना आहार रहे ॥ ३४ ॥ हे राजन् ! और वे जलपानसों वर्जित रहे उनने न तो जीव मारे और न पत्र फल खाये ॥ ३५ ॥ दुःखयुक्त हो वे दोनों पीपरके नीचे पडेरहे हे राजन् ! वैसेही पडेभये उन दोनोंको सूर्य अस्त होगये ॥ ३६ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दारुण और शीत करनहारी घोर रात्रि प्राप्त होत भई वहां काँपते भये वे दोनों पालाकारिके जड करि दिये गये ॥ ३७ ॥ जाडेके मारे आपसमें देहसों देह भुजनसों भुजा मिलाके परेभये वे दोनोंको न तो नींद आई न रति प्राप्त भई और न वे दोनों सुखको प्राप्त होत भये ॥ ३८ ॥ हे राजशार्दूल ! या प्रकार वे इन्द्रके शापसों पीडित

प्राप्ता चैव निशा घोरा दारुणा शीतकारिणी ॥ वेपमानौ तु तौ तत्र हिमेन च जडीकृतौ ॥३७॥
परस्परेण संलग्नौ गात्रयोर्भुजयोरपि ॥ न निद्रां न रतिं तत्र न तौ सौख्यमविंदताम् ॥ ३८ ॥
एवं तौ राजशार्दूल शापेनेंद्रस्य पीडितौ ॥ इत्थं तयोर्दुःखितयोर्निर्जगाम तदा निशा ॥ ३९ ॥
जयायास्तु व्रते चीर्णे रात्रौ जागरणे कृते ॥ तयोर्व्रतप्रभावेण यथा ह्यासीत्तथा शृणु ॥ ४० ॥
द्वादशीदिवसे प्राप्ते ताभ्यां चीर्णे जयाव्रते ॥ विष्णोः प्रभावान्नृपते पिशाचत्वं तयोर्गतम् ॥४१॥
पुष्पवती माल्यवांश्च पूर्वरूपौ बभूवतुः ॥ पुरातनस्नेहयुतौ पूर्वालंकारसंयुतौ ॥ ४२ ॥

होतभये या प्रकार इन दोनों दुखियनकी रात्रि व्यतीत होती भई ॥ ३९ ॥ जयाको व्रतके प्रभावसों जैसो भयो सो सुनो ॥ ४० ॥ जब वे जयाको व्रत करचुके तब हे राजन्! विष्णुके प्रतापसों द्वादशीके दिन उनकी पिशाच-योनि छूटि गई ॥ ४१ ॥ पुष्पवतीको और माल्यवान्को पहलोही रूप होजात भयो और पुरानी प्रीतियुक्त वे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दोनों पहलेही अलंकारनकरिके युक्त हो जात भये ॥ ४२ ॥ विमानमें चढेभये और अप्सरानके समूहसों शोभित वे दोनों तुंबुरु आदिक गंधर्वन करिके स्तुति किये गये ॥ ४३ ॥ और हाव भाव करिके युक्त वे दोनों मनोहर स्वर्गको जातभये और इंद्रके आगे जायके आनंदसों प्रणाम करतभये ॥ ४४ ॥ या प्रकारके उन दोनोंको देखि इंद्र विस्मित

विमानमधिरूढौ तावप्सरोगणसेवितौ ॥ स्तूयमानौ तु गंधर्वैस्तुंबुरुप्रमुखैस्तथा ॥ ४३ ॥ हावभावसमायुक्तौ गतौ नाके मनोरमे ॥ देवेंद्रस्याग्रतो गत्वा प्रणामं चक्रतुर्मुदा ॥ ४४ ॥ तथाविधौ तु तौ दृष्ट्वा मघवा विस्मितोऽब्रवीत् ॥ इंद्र उवाच ॥ वदतं केन पुण्येन पिशाचत्वं विनिर्गतम् ॥ ४५ ॥ मम शापवशं प्राप्तौ केन देवेन मोचितौ ॥ माल्यवानुवाच ॥ वासुदेवप्रसादेन जयायाः सुव्रतेन च ॥ ४६ ॥ पिशाचत्वं गतं स्वामिन् सत्यं भक्तिप्रसादतः ॥ इति श्रुत्वा वचस्तस्य प्रत्युवाच सुरेश्वरः ॥ ४७ ॥

होके बोलत भयो इंद्र बोलो कि, तुम दोनों कहो कौनसे पुण्यसों तुम्हारी पिशाचयोनि दूरि हुई ॥४५॥ मेरे शापके वशमें आये भये जे तुम दोनों हो तिनको कौनसे देवने छुडायो माल्यवान् बोले कि, वासुदेवके प्रसादसों और जयाके व्रत करिके ॥ ४६ ॥ हे स्वामिन् ! भक्तिके प्रसादसों हमारो पिशाचत्व दूरि भयो यह सत्य है वाको यह वचन

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सुनिके इंद्र फिरि बोलतभये ॥ ४७॥ इंद्र बोले कि, हरिवासरके करनहारे विष्णुभक्तिमें परायण आप पवित्र और दूसरेको पवित्र करनहारे तुम दोनों मेरेहू नमस्कार करने योग्य भये ॥ ४८ ॥ जे मनुष्य हरिभक्तिमें रत हैं और शिवभक्तिमें रत हैं वे मनुष्य हमकोहू पूज्य और नमस्कार करने योग्य हैं यामें संदेह नहीं है ॥ ४९ ॥ आनंदसों

इन्द्र उवाच ॥ पवित्रौ पावनौ जातौ वंदनीयौ ममापि च ॥ हरिवासरकर्त्तारौ विष्णुभक्तिपरायणौ ॥ ४८ ॥ हरिभक्तिरता ये च शिवभक्तिरतास्तथा ॥ अस्माकमपि ते मर्त्याः पूज्या वंद्या न संशयः ॥ ४९ ॥ विहरस्व यथासौख्यं पुष्पवत्या सुरालये ॥ एतस्मात्कारणाद्राजन्कर्तव्यो हरिवासरः ॥ ५० ॥ जयाव्रतं तु राजेंद्र ब्रह्महत्यापहारकम् ॥ सर्वदानानि दत्तानि यज्ञास्तेन कृता नृप ॥ ५१ ॥ सर्वतीर्थेषु सुस्नातः कृतं येन जयाव्रतम् ॥ यः करोति नरो भक्त्या श्रद्धा-युक्तो जयाव्रतम् ॥ ५२ ॥

पुष्पवतीके साथ स्वर्गमें विहार करो हे राजन् ! या कारणसों हरिवासर करनो योग्य है ॥ ५० ॥ हे राजेंद्र ! जयाको व्रत ब्रह्महत्याको हरिलेनवारो है हे राजन् ! वाने सब दान दिये और सब यज्ञ किये ॥ ५१ ॥ और वह सब तीर्थनमें भली भाँति न्हायो जाने जयाको व्रत कीन्हों जो मनुष्य श्रद्धायुक्त हो भक्तिसों जयाको व्रत करै है ॥५२॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वह निश्चय करिके सौ करोड कल्पपर्यन्त वैकुंठमें आनंद करै है हे राजन् ! या माहात्म्यके पढने और सुननेते अग्निष्टोम यज्ञके फलको प्राप्त होय है ॥ ५३ ॥ इति श्रीमत्पण्डितपरमसुखतनयपण्डितकेशवप्रसादशर्मद्विवेदिकृतायामेकादशीमाहात्म्यभाषाटीकायां दीपिकासमाख्यायां माघशुक्लैकादशी कथा समाप्ता ॥ ६ ॥ अथ फाल्गुनकृष्णैकादशीकथा ॥ अथ फाल्गुनकृष्णे या विजयैकादशी स्मृता ॥ तन्माहात्म्यस्य भाषायां टीकां कुर्वे प्रदी-

कल्पकोटिशतं यावद्वैकुंठे मोदते ध्रुवम् ॥ पठनाच्छ्रवणाद्राजन्नग्निष्टोमफलं लभेत् ॥ ५३ ॥ इति श्रीभविष्योत्तरपुराणे माघशुक्लैकादशीजयामाहात्म्यं समाप्तम् ॥ ६ ॥ अथ फाल्गुनकृष्णैकादशीकथा ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ फाल्गुनस्यासिते पक्षे किं नामैकादशी भवेत् ॥ वासुदेवप्रसादेन कथयस्व ममाग्रतः ॥ १ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ कथयिष्यामि राजेंद्र कृष्णे या फाल्गुने भवेत् ॥ विजयेति च सा प्रोक्ता कर्तॄणां जयदा सदा ॥ २ ॥

पिकाम् ॥ १ ॥ युधिष्ठिर बोले कि, फाल्गुनके कृष्णपक्षमें जो एकादशी होय ताको कहा नाम है हे वासुदेव ! सो मोसों प्रसन्न होके कहो ॥ १ ॥ श्रीकृष्ण बोले कि, हे राजेंद्र ! फाल्गुनके कृष्णपक्षमें जो एकादशी होय है वाको नाम विजया है और व्रत करनेवाले मनुष्यनको सदा जयको देनेहारी है वाकी कथा मैं कहौंगो ॥ २ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वाके व्रतको माहात्म्य सब पापनको हरनवारो है एक समय नारद मुनि कमलासन ब्रह्मासों पूँछत भये ॥ ३ ॥
कि, फाल्गुनके कृष्णपक्षमें विजया नाम जो एकादशी तिथि होय है हे सुरश्रेष्ठ ! ताको व्रत आप प्रसन्न होके
मोसों कहो ॥ ४ ॥ या प्रकार नारदमुनिकरि पूछे गये पितामह बोलत भये । ब्रह्मा बोले कि, हे नारद ! सुनो

तस्याश्च व्रतमाहात्म्यं सर्वपापहरं परम् ॥ नारदः परिपप्रच्छ ब्रह्माणं कमलासनम् ॥ ३ ॥
फाल्गुनस्यासिते पक्षे विजया नाम या तिथिः ॥ तस्या व्रतं सुरश्रेष्ठ कथयस्व प्रसादतः ॥ ४ ॥
इति पृष्टो नारदेन प्रत्युवाच पितामहः ॥ ब्रह्मोवाच ॥ शृणु नारद वक्ष्यामि कथां पापहरां
पराम् ॥ ५ ॥ पुरातनं व्रतं ह्येतत्पवित्रं पापनाशनम् ॥ यन्न कस्यचिदाख्यातं मयैतद्विजयाव्र-
तम् ॥ ६ ॥ जयं ददाति विजया नृणां चैव न संशयः ॥ रामस्तपोवनं यातो वर्षाण्येव चतुर्दश
॥७॥ न्यवसत्पञ्चवट्यां तु ससीतश्च सलक्ष्मणः ॥ तत्रैव वसतस्तस्य राघवस्य महात्मनः ॥ ८ ॥

उत्कृष्ट पापकी हरनहारी वह मैं तुमसों कहौंगो ॥ ५ ॥ यह व्रत पुरानो है, पवित्र है और पापको नाश करन-
हारो है जो यह विजयाको व्रत मैंने काहूसों नहीं कह्यो है ॥ ६ ॥ यह विजया मनुष्यनको जय देय है यामें कुछ
सन्देह नहीं है चौदह वर्षनके लिये रामचंद्र तपोवनको जात भये ॥ ७ ॥ और सीता तथा लक्ष्मण समेत पंचवटीमें

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वास करत भये, वहां वसते भये, उन महात्मा रामकी ॥ ८ ॥ सीता नाम तपस्विनी स्त्री रावणने हरिलीन्हीं वा
दुःखसों वा समय राम मोहको प्राप्त होत भये ॥९॥ और वहां भ्रमण करते हुए वे मरे भयेसे जटायुको देखत भये
 फिरि पीछे वनमें भ्रमते भये उन्होंने कबंध नाम राक्षसको मारो ॥ १० ॥ राजासों वह सब काहि कहिके मृत्युको

रावणेन हृता भार्या सीतानाम्नी तपस्विनी ॥ तेन दुःखेन रामोऽसौ मोहमभ्यागतस्तदा ॥ ९ ॥
भ्रमञ्जटायुषं तत्र ददर्श विगतायुषम् ॥ कबंधो निहतः पश्चाद्भ्रमतारण्यमध्यतः ॥ १० ॥ राज्ञे
विज्ञाप्य तत्सर्वं सोऽपि मृत्युवशं गतः ॥ सुग्रीवेण समं सख्यं रामस्य समजायत ॥ ११ ॥ वान-
राणामनीकानि रामार्थं संगतानि वै ॥ ततो हनुमता दृष्टा लंकोद्याने तु जानकी ॥ १२ ॥ राम-
संज्ञापनं तस्यै दत्तं कर्म महत्कृतम् ॥ समेत्य रामेण पुनः सर्वं तत्र निवेदितम् ॥ १३ ॥ अथ
श्रुत्वा रामचंद्रो वाक्यं चैव हनूमतः ॥ सुग्रीवानुमतेनैव प्रस्थानं समरोचयत् ॥ १४ ॥

प्राप्त होत भयो और सुग्रीवके साथ रामचंद्रकी मित्रता होत भई ॥११॥ और रामचंद्रके लिये वानरकी सेना इकट्ठी
भई ता पछि लंकाके वगीचेमें हनुमान्जी जानकीको देखत भये ॥१२॥ रामचंद्रका चिह्न (अँगूठी) सीताजीको
दई और वडा भारी काम कीन्हा फिर रामचंद्रसों मिलिके वहांको सव वृत्तांत कहत भये ॥ १३ ॥ या पीछे रामचंद्र

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हनुमान्‌को वचन सुनिके सुग्रीवकी सम्मतिसों यात्रा करत भये ॥ १४ ॥ वानर जिनको प्यारे हैं ऐसे रामचंद्र वानरोंसमेत समुद्रके तीरमें जायके वाको दुःखसों उतरिवे योग्य देखि विस्मित होत भये ॥ १५ ॥ फिरि उत्फुल्ल-नेत्र होके लक्ष्मणसों वचन बोलत भये कि, हे सौमित्रे ! अर्थात् सुमित्रापुत्र लक्ष्मण ! कौनसे पुण्यकरिके यह समुद्र

स गत्वा वानरैः सार्धं तीरं नदनदीपतेः ॥ दृष्ट्वाब्धिं दुस्तरं रामो विस्मितोऽभूत्कपिप्रियः ॥१५॥
प्रोत्फुल्ललोचनो भूत्वा लक्ष्मणं वाक्यमब्रवीत् ॥ सौमित्रे केन पुण्येन तीर्यते वरुणालयः ॥ १६॥
अगाधसलिलैः पूर्णो नक्रैर्मीनैः समाकुलः ॥ उपायं नैव पश्यामि येनायं सुतरो भवेत् ॥ १७ ॥
लक्ष्मण उवाच ॥ आदिदेवस्त्वमेवासि पुराणपुरुषोत्तमः ॥ बकदाल्भ्यो मुनिश्चात्र वर्तते द्वीप-मध्यतः ॥ १८ ॥ अस्मात्स्थानाद्योजनार्धमाश्रमस्तस्य राघव ॥ अनेन दृष्टा बहवो ब्रह्माणो रघुनंदन ॥ १९ ॥

उतरो जाय ॥ १६ ॥ अगाध जलसों पूर्ण है और भयानक मगरों करिके भरो है कोई उपाय नहीं देखा हों जाते यह सुखसों उतरिवे योग्य होय ॥ १७ ॥ लक्ष्मण बोले कि, हे महाराज ! आदिदेव और पुराणपुरुषोत्तम आपही हो यहां द्वीपके मध्यमें बकदाल्भ्य नाम मुनि निवास करैं हैं ॥१८॥ हे राघव ! या स्थानसों दो कोशपर उनको आश्रम है

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे रघुनन्दन ! इस मुनिकरके वहुतसे ब्रह्मा देखे गये हैं ॥ १९ ॥ हे राजेन्द्र ! वहां जायके उन श्रेष्ठ मुनिसे पूंछिये. ता पीछे लक्ष्मणको यह अतिसुन्दर वचन सुनिके ॥२०॥ रामचंद्र बकदाल्भ्य मुनिके दर्शनको जात भये और दूसरे विष्णुके समान बैठे भये मुनिको प्रणाम करत भये ॥२१॥ ता पीछे मुनि रामको पुराणपुरुषोत्तम जानिके बोलत

तं पृच्छ गत्वा राजेन्द्र पुराणमृषिपुंगवम् ॥ इति वाक्यं ततः श्रुत्वा लक्ष्मणस्यातिशोभनम् ॥ २० ॥ जगाम राघवो द्रष्टुं बकदाल्भ्यं महामुनिम् ॥ प्रणनाम मुनिं मूर्ध्ना रामो विष्णुमिवामराः ॥ २१ ॥ मुनिर्ज्ञात्वा ततो रामं पुराणपुरुषोत्तमम् ॥ उवाच स ऋषिस्तत्र कुतो रामस्तवागमः ॥ २२ ॥ राम उवाच ॥ त्वत्प्रसादादहो विप्र वरुणालयसन्निधिम् ॥ आगतोऽस्मि ससैन्योऽत्र लंकां जेतुं सराक्षसाम् ॥ २३ ॥ भवतश्चानुकूल्येन तीर्य्यतेऽब्धिर्यथा मया ॥ तमुपायं वद मुने प्रसादं कुरु सुव्रत ॥ २४ ॥

भये कि, हे राम ! तुम्हारो आगमन कैसे भयो ॥ २२ ॥ रामचंद्र बोले कि, हे विप्र ! आपके प्रसादसों मैं राक्षसन समेत लंकाके जीतिवेको सेनासहित समुद्रके तटमें आयो हौं ॥ २३ ॥ आपकी अनुकूलतासों जा प्रकार मोकारिके समुद्र उतरो जाय हे मुने ! सो उपाय मोको बताओ हे सुव्रत ! प्रसन्न होउ ॥ २४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मुनि बोले कि, हे रामचंद्र ! मैं सब व्रतनमें उत्तम व्रत कहौंगो जाके करनेसों शीघ्रही तुम्हारो विजय होयगो ॥ २५ ॥ और राक्षस समेत लंकाको जीतिके तुम बडी कीर्तिको प्राप्त होउगे एकाग्र मन हेके या व्रतको करो ॥ २६ ॥ फाल्गुनके कृष्णपक्षमें विजया नाम एकादशी होय है हे राम ! वाको व्रत करनेसों तुम्हारो विजय होगो

मुनिरुवाच॥कथयिष्याम्यहं राम व्रतानां व्रतमुत्तमम्॥कृतेन येन सहसा विजयस्ते भविष्यति२५
लंकां जित्वा राक्षसांश्च दीर्घां कीर्तिमवाप्स्यसि ॥ एकाग्रमानसो भूत्वा व्रतमेतत्समाचर ॥२६॥
फाल्गुनस्यासिते पक्षे विजयैकादशी भवेत् ॥ तस्या व्रते कृते राम विजयस्ते भविष्यति॥२७॥
निस्संशयं समुद्रं च तरिष्यसि सवानरः ॥ विधिश्च श्रूयतां राम व्रतस्यास्य फलप्रदः ॥ २८ ॥
दशमीदिवसे प्राप्ते कुंभमेकं च कारयेत् ॥ हैमं वा राजतं वापि ताम्रं वाप्यथ मृण्मयम् ॥२९॥
स्थापयेच्छोभितं कुम्भं जलपूर्णं सपल्लवम् ॥ तस्योपरि न्यसेद्देवं हैमं नारायणं प्रभुम् ॥ ३० ॥

॥ २७ ॥ और निस्संदेह वानरनसमेत समुद्रको उतरोगे और फलनके देनेहारे या व्रतकी विधि सुनो ॥२८॥ दशमीको दिन आवै तब सोनेको वा चांदीको वा तांबेको अथवा मट्टीको एक घट बनवावै ॥२९॥ जलसों भरे भये पत्तों समेत शोभायमान वा कलशको स्थापन करै ताके ऊपर सोनेकी बनीभई प्रभु नारायणकी मूर्ति स्थापित करै ॥३०॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

और एकादशीके दिन प्रातःकाल स्नान करै फिर चंदन माला आदि चढाकै वा कुंभको निश्चल स्थापित करै ॥ ३१ ॥
अनार तथा नारियलसों विशेष करि वाको पूजन करै और वाके नीचे सतनजा बिछावै और ऊपर सरवामें जौ भरिके
धरै ॥ ३२ ॥ हे राम ! गंध, धूप, दीप और नानाप्रकारके नैवेद्यनसों कुम्भके ऊपर जो स्थापित नारायणकी मूर्ति है

एकादशीदिने प्राप्ते प्रातः स्नानं समाचरेत् ॥ निश्चले स्थापिते कुंभे गंधमाल्यानुलेपिते ॥ ३१ ॥
दाडिमैर्नारिकेलैश्च पूजयेच्च विशेषतः ॥ सप्तधान्यान्यधस्तस्य यवानुपरि विन्यसेत् ॥ ३२ ॥
गंधैर्धूपैस्तथा दीपैर्नैवेद्यैर्विविधैरपि ॥ कुम्भाग्रे तद्दिने राम नीयते भक्तिभावतः ॥ ३३ ॥ रात्रौ
जागरणं चैव तस्याग्रे कारयेद्बुधः ॥ द्वादशीदिवसे प्राप्ते मार्तण्डस्योदये सति ॥ ३४ ॥ नीत्वा
कुंभं जलोद्देशे नद्यां प्रस्रवणे तथा ॥ तडागे स्थापयित्वा वा पूजयित्वा यथाविधि ॥ ३५ ॥
दद्यात्सदैवतं कुम्भं ब्राह्मणे वेदपारगे ॥ कुम्भेन सह राजेन्द्र महादानानि दापयेत् ॥ ३६ ॥

ताको भक्तिसों पूजन करै ॥ ३३ ॥ और वहां मूर्तिके आगे रात्रिमें जागरण करै और फिर द्वादशीको
सूर्यका उदय होनेपै ॥ ३४ ॥ कुंभको लेके नदीमें वा झरनेमें अथवा तालावके जलमें स्थापित करके यथाविधि पूजा
करै ॥ ३५ ॥ फिर वा कुंभको देवताकी प्रतिमासमेत वेदपाठी ब्राह्मणको दान कर दे और हे महाराजेन्द्र ! कुंभके

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

साथ महादान ॥ ३६ ॥ हे राम ! या विधिसों अपने यूथप अर्थात् सेनाके अधिकारिनसमेत यत्नसों व्रत करो तुम्हारो विजय होयगो ॥ ३७ ॥ या वचनको सुनके वा समय मुनिके कहनेके अनुसार जया एकादशीको व्रत करतभये और व्रत करनेपै वे रघुनन्दन विजयी होत भये ॥ ३८ ॥ हे राजन् ! जे मनुष्य या विधिसों व्रतको करेंगे तिनको या लोक तथा परलोकमें जय होयगो ॥ ३९ ॥ ब्रह्मा नारदमुनिसों कहैं कि, हे पुत्र ! या कारणसों

अनेन विधिना राम यूथपैस्सह संगतः ॥ कुरु व्रतं प्रयत्नेन विजयस्ते भविष्यति ॥ ३७ ॥ इति श्रुत्वा वचो रामो यथोक्तमकरोद्व्रतम् ॥ कृते व्रते स विजयी बभूव रघुनन्दनः ॥ ३८ ॥ अनेन विधिना राजन् ये कुर्वन्ति नरा व्रतम् ॥ इह लोके जयस्तेषां परलोके सदा जयः ॥ ३९ ॥ एतस्मात्कारणात्पुत्र कर्त्तव्यं विजयाव्रतम् ॥ पठनाच्छ्रवणात्तस्य वाजपेयफलं लभेत् ॥ ४० ॥

इति श्रीस्कंदपुराणे फाल्गुनकृष्णैकादश्या विजयानाम्न्या माहात्म्यं समाप्तम् ॥ ७ ॥

विजयाको व्रत करनो चाहिये वाके पढने अथवा श्रवण करनेसों वाजपेय यज्ञको फल प्राप्त होय है ॥ ४० ॥ इति श्रीमत्पण्डितपरमसुखतनयपण्डितकेशवप्रसादशर्मद्विवेदिविरचितायामेकादशीमाहात्म्यटीकायां दीपिकासमाख्यायां फाल्गुनकृष्णैकादशीकथा समाप्ता ॥ ७ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ फाल्गुनशुक्लैकादशीकथा ॥ फाल्गुनस्य सिते पक्षे प्रसिद्धाऽऽमलकीति या ॥ तन्माहात्म्यस्य भाषायां व्याख्यां कुर्वे सुदीपिकाम् ॥ १ ॥ मांधाता बोले कि, हे ब्रह्मयोने! अर्थात् ब्रह्माके पुत्र हे महाभाग! जो हमारे ऊपर आपकी कृपा है तो ऐसो व्रत कहो जाते हमारो कल्याण होय ॥ १ ॥ वसिष्ठमुनि बोले कि, रहस्य और इतिहास समेत सब

अथ फाल्गुनशुक्लैकादशीकथा ॥ मांधातोवाच ॥ वद ब्रह्मन्महाभाग येन श्रेयो भवेन्मम ॥ ईदृग्व्रतं ब्रह्मयोने तेऽनुकंपाऽस्ति चेन्मयि ॥ १ ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ सरहस्यं सेतिहासं व्रतानां व्रतमुत्तमम् ॥ कथयाम्यधुना तुभ्यं सर्वभूतफलप्रदम् ॥ २ ॥ आमलक्या व्रतं राजन् महापातकनाशनम् ॥ मोक्षदं सर्वलोकानां गोसहस्रफलप्रदम् ॥ ३ ॥ अत्रैवोदाहरन्तीममितिहासं पुरातनम् ॥ यथा मुक्तिमनुप्राप्तो व्याधो हिंसासमन्वितः ॥ ४ ॥ वैदिशं नाम नगरं हृष्टपुष्टजनाकुलम् ॥ ब्राह्मणैः क्षत्रियैर्वैश्यैः शूद्रैश्च समलंकृतम् ॥ ५ ॥

फलके देनेहारे सब व्रतनते उत्तम व्रतको मैं कहौं हौं ॥ २ ॥ हे राजन्! आमलकी नाम एकादशीको व्रत महापातकको नाश करनहारो है सब लोकनको मोक्ष देनहारो और सहस्र गोदानके फलको देनहारो है ॥ ३ ॥ यहां या पुराने इतिहासको उदाहरण करे है जैसे हिंसामें लग्यो भयो व्याध मोक्षको प्राप्त होत भयो ॥ ४ ॥ हृष्ट पुष्ट मनुष्यनसों

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भरोभयो और ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इनकरिके शोभित वैदिश नाम नगर है ॥ ५ ॥ हे नृपशार्दूल ! अर्थात् राजनमें श्रेष्ठ वह नगर बहुत सुंदर और वेदध्वनिकरिके शब्दायमान हो और वा पुरमें नास्तिक तथा कुचाली कोई मनुष्य नहीं हो ॥ ६ ॥ वा पुरमें चंद्रवंशी शशविन्दु नाम विख्यात राजा होतभयो ताके वंशमें सत्यप्रतिज्ञावारो चैत्ररथ नाम राजा उत्पन्न भयो ॥ ७ ॥ श्रीमान् वा राजामें दशहजार हाथिनको बल हो और शास्त्रविद्याको

रुचिरं नृपशार्दूल ब्रह्मघोषनिनादितम् ॥ न नास्तिको न दुर्वृत्तस्तस्मिन् पुरवरे सदा ॥ ६ ॥
तत्र सोमान्वये राजा विख्यातश्शशबिन्दुकः ॥ राजा चैत्ररथो नाम धर्मात्मा सत्यसंगरः ॥ ७ ॥
नागायुतबलः श्रीमाञ्छस्त्रशास्त्रार्थपारगः॥ तस्मिञ्छासति धर्मज्ञे धर्मात्मनि धरां प्रभो ॥ ८ ॥
कृपणो नैव कुत्रापि दृश्यते नैव निर्धनः ॥ सुकालः क्षेममारोग्यं तस्मिन् राज्यं प्रशासति ॥९॥
विष्णुभक्तिरता लोकास्तस्मिन् पुरवरे सदा ॥ हरपूजारताश्चैव राजा चापि विशेषतः ॥ १० ॥

पारगामी हो । हे प्रभो ! वाके पृथ्वीमें राज्य करनेके समय ॥ ८ ॥ कृपण और कुचाली मनुष्य कोई नहीं दिखाई देतो और वाके राज्यमें सदा सुकाल क्षेम और आरोग्य रहते ॥ ९ ॥ वाके राज्यमें सब लोक विष्णुभक्तिमें तथा शिवकी पूजामें रत रहते और वह राजा विशेषकरि पूजा करतो ॥ १० ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शुक्लपक्षकी द्वादशीयुक्त एकादशीके दिन कोई भोजन नहीं करते और सब धर्मनको छोडिके हरिकी भक्तिमें तत्पर रहते ॥११॥ हे राजसत्तम ! या प्रकार बहुतसे वर्ष व्यतीत भये सब मनुष्य वहांके सुखयुक्त हरिभक्तिमें रत भये ॥ १२ ॥ या पीछे कुछ कालमें फाल्गुनके शुक्लपक्षकी द्वादशीके पुण्ययुक्त आमलकी नाम एकादशी प्राप्त भई

न कृष्णायां न शुक्लायां द्वादश्यां भुंजते जनाः ॥ सर्वधर्मान्परित्यज्य हरिभक्तिपरायणाः ॥११॥
एवं संवत्सरा जग्मुर्बहवो राजसत्तम ॥ जनस्य सौख्ययुक्तस्य हरिभक्तिरतस्य च ॥ १२ ॥ अथ
कालेन संप्राप्ता द्वादशी पुण्यसंयुता ॥ फाल्गुनस्य सिते पक्षे नाम्ना ह्यामलकी स्मृता ॥ १३ ॥
तामवाप्य जनाः सर्वे बालकास्स्थविरा नृप ॥ नियमं चोपवासं च सर्वे चक्रुर्नरा विभो ॥१४॥
महाफलं व्रतं ज्ञात्वा स्नानं कृत्वा नदीजले ॥ तत्र देवालये राजा लोकयुक्तो महाप्रभुः ॥ १५ ॥
पूर्णकुंभमवस्थाप्य छत्रोपानहसंयुतम् ॥ पंचरत्नसमायुक्तं दिव्यगंधादिवासितम् ॥ १६ ॥

॥१३॥ हे राजन् ! वाको प्राप्त होके हे विभो ! बालक बूढे सबलोग नियमसों व्रतको करत भये ॥१४॥ महाफलयुक्त व्रतको जानिके नदीके जलमें स्नान करिके वहां देवालयमें वह महाराजा सब लोगनसमेत स्थित होतभयो ॥ १५ ॥ छत्र और उपानहयुक्त तथा पंचरत्ननकरि युक्त तथा दिव्य गंधसों सुगंधित घटको स्थापित करतभयो ॥ १६ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे ब्रह्मासों उत्पन्न धात्री कहिये आमलेके वृक्ष ! हे सब पापोंकी नाश करनहारी आमलकी ! तुमको नमस्कार हैं मेरो अर्घको जल ग्रहण करो ॥ १७ ॥ हे धात्री ! तुम ब्रह्मस्वरूप हो और तुम रामचंद्र करिके पुजागइ हो प्रदक्षिणोंके करनेसों तुम मेरे सर्व पापनको दूरि करो ॥ १८ ॥ वहां सर्व मनुष्य भक्तिसों जागरण करतभये वाही

धात्रि धातृसमुद्भूते सर्वपातकनाशिनि ॥ आमलकि नमस्तुभ्यं गृहाणार्घोदकं मम ॥ १७ ॥
धात्रि ब्रह्मस्वरूपासि त्वं तु रामेण पूजिता ॥ प्रदक्षिणविधानेन सर्वपापहरा भव ॥ १८ ॥ तत्र
जागरणं चक्रुर्जनाः सर्वे स्वभक्तितः ॥ एतस्मिन्नेव काले तु व्याधस्तत्र समागतः ॥ १९ ॥
क्षुधाश्रमपरिव्याप्तो महाभारेण पीडितः ॥ कुटुंबार्थं जीवघाती सर्वधर्मबहिष्कृतः ॥ २० ॥
जागरं तत्र सोऽपश्यदामलक्यां क्षुधान्वितः ॥ दीपमालाकुलं दृष्ट्वा तत्रैव निषसाद सः ॥ २१ ॥
किमेतदिति संचिन्त्य प्राप्तो विस्मयतां भृशम् ॥ ददर्श कुंभं तत्रस्थं देवं दामोदरं तथा ॥ २२ ॥

समय एक बहेलिया वहां आवत भयो ॥ १९ ॥ वह भूख और श्रमसों व्याप्त हो रहो तथा भारी बोझसों पीडित हो और कुटुंबके लिये जीवको मारनहारो वह सब धर्मनते बाहर हो ॥ २० ॥ क्षुधाकरिके युक्त वह वहां आमलकीको जागरण और वहां धरे दीपनते भरो भयो वह स्थान देख वहां जाय बैठ्यो ॥ २१ ॥ यह कहा है ऐसे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सोचिकै अत्यंत विस्मयको प्राप्त होतभयो और वहां कुंभ देख्यो ताके ऊपर दामोदर देवको देखत भयो ॥ २२ ॥
और आमलेको वृक्ष देख्यो और वहां धरे दीपकनको देखत भयो और कहते भये मनुष्यनते विष्णुकी कथा सुनत
 भयो ॥२३॥ और भूखे होतेहूं एकादशीको माहात्म्य सुनतभयो वा विस्मित मनवालेकी रात्री जागतही बीती॥२४॥

ददर्शामलकीवृक्षं तत्रस्थांश्चैव दीपकान् ॥ वैष्णवं च तथाऽऽख्यानं शुश्राव पठतां नृणाम् ॥२३॥
एकादश्याश्च माहात्म्यं शुश्राव क्षुधितोऽपि सन् ॥ जाग्रतस्तस्य सा रात्रिर्गता विस्मितचेतसः
॥ २४ ॥ ततः प्रभातसमये विविशुर्नगरं जनाः ॥ व्याधोऽपि गृहमागत्य बुभुजे प्रीतमानसः
॥ २५ ॥ ततः कालेन महता व्याधः पंचत्वमागतः ॥ एकादश्याः प्रभावेण रात्रौ जागरणेन च
॥ २६ ॥ राज्यं प्रपेदे सुमहच्चतुरंगबलान्वितम् ॥ जयंती नाम नगरी तत्र राजा विदूरथः ॥२७॥

तापीछे प्रभातके समयमें सर्वलोक नगरको जात भये और व्याधहूं घरमें आयके प्रसन्न मनसों भोजन करत भयो
॥ २५ ॥ तापीछे वहुत कालमें मृत्युको प्राप्त होत भयो एकादशीके प्रभावसों और रात्रिके जागरणसों ॥२६॥ वह
व्याध चतुरंगसेना करिके युक्त राज्यको प्राप्त होतभयो जयंती नाम नगरी ताको राजा विदूरथ नाम होतभयो॥२७॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ता राजाको चतुरंग सेना करिके युक्त बलवान् धनधान्ययुक्त वसुरथ नाम पुत्र होत भयो ॥ २८ ॥ वह निर्भय दशहजार ग्रामनको भोग करत भयो वह तेजकरि सूर्यके समान और कांतिकरि चन्द्रमाके समान हो ॥ २९ ॥ और पराक्रमसे विष्णुके समान तथा क्षमा करिके पृथ्वीके समान हो और धर्मात्मा सत्यवक्ता तथा विष्णुभक्तिमें

तस्मात्स तनयो जज्ञे नाम्ना वसुरथो बली ॥ चतुरंगबलोपेतो धनधान्यसमन्वितः ॥ २८ ॥
दशायुतानि ग्रामाणां बुभुजे भयवर्जितः ॥ तेजसाऽऽदित्यसदृशः कांत्या चंद्रसमप्रभः ॥ २९ ॥
पराक्रमे विष्णुसमः क्षमया पृथिवीसमः ॥ धार्मिकः सत्यवादी च विष्णुभक्तिपरायणः ॥ ३० ॥
ब्रह्मज्ञः कर्मशीलश्च प्रजापालनतत्परः ॥ यजते विविधान्यज्ञान्स राजा परदर्पहा ॥ ३१ ॥
दानानि विविधान्येव प्रददाति च सर्वदा ॥ एकदा मृगयां यातो दैवान्मार्गपरिच्युतः ॥ ३२ ॥

परायण होत भयो ॥ ३० ब्रह्मज्ञान और कर्म करनहारो वह प्रजापालनमें तत्पर होत भयो और शत्रुके गर्वको दूरि करनहारो वह राजा नानाप्रकारके राजसूय आदि यज्ञ करत भयो ॥ ३१ ॥ वह सदा नानाप्रकारके दान देतो एकबार शिकारको गयो भयो वह राजा दैवयोगसों राह भूल जात भयो ॥ ३२ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

 वहां राजाको दिशा विदिशाको ज्ञान नहीं रह्यो तब अपनी बाँह सिरहाने देके परि रहत भयो ॥ ३३ ॥ अत्यंत
थको भयो वह राजा भूखोही सोय रहत भयो या बीचमें पर्वतनको निवासी म्लेच्छनको समूह ॥ ३४ ॥ वहां
 आवत भयो जहां शत्रुके बलको नाश करनहारो वह राजा परोहो राजा करिके वैर किये वे सदा दुःखी हैं ॥३५॥

न दिशो नैव विदिशो वेत्ति तत्र महीपतिः ॥ उपधाय च दोर्मूलमेकाकी गहने वने ॥ ३३ ॥
श्रांतश्च क्षुधितोऽत्यन्तं संविवेश महीपतिः ॥ अत्रांतरे म्लेच्छगणः पर्वतांतरवासभाक् ॥ ३४ ॥
आययौ तत्र यत्रास्ते राजा परबलार्दनः ॥ कृतवैरास्तु ते राज्ञा सर्वदैवोपतापिताः ॥३५॥ परि-
वार्य ततस्तस्थू राजानं भूरिदक्षिणम् ॥ हन्यतां हन्यतां चायं पूर्ववैरविरुद्धधीः ॥ ३६ ॥ अनेन
निहताः पूर्वं पितरो भ्रातरः सुताः ॥ पौत्राश्च भागिनेयाश्च मातुलाश्च निपातिताः ॥३७॥ निष्का-
सिताश्च स्वस्थानाद्विक्षिप्ताश्च दिशो दश ॥ एतावदुक्त्वा ते सर्वे तत्रैनं हंतुमुद्यताः ॥ ३८ ॥

ता पीछे वे सब भूरिदाक्षिण राजाको घेरि ठाढे होत भये और पहिले वैरसों विद्ध है बुद्धि जाकी ऐसे या राजाको
मारो मारो ऐसे कहत भये ॥ ३६ ॥ पहिले याने हमारे पिता भाई और पुत्र मारे हैं और पौत्र भानजे तथा
मामाहू मारे हैं ॥ ३७ ॥ और अपने स्थानते निकारे गये हम दशों दिशानमें फैल गये इतना कहिके वे वहां वा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

राजाके मारिवेको उद्यत होत भये ॥ ३८ ॥ पाश, पट्टिश, खड्ग और धनुषमें चढाये भये बाणनसों वे शत्रुनके समूह राजाके मारिवेको उद्यत होत भयो ॥ ३९ ॥ सब शस्त्र दौरते परंतु वा राजाके शरीरमें नहीं प्रवेश करते तब नष्ट हो गये हैं शस्त्रनके समूह जिनके ऐसे म्लेच्छनके देह गतजीव अर्थात् मरेसे हो जात भये ॥ ४० ॥

पाशैश्च पट्टिशैः खड्गैर्बाणैर्धनुषि संस्थितैः ॥ सर्वतोऽरिगणास्ते च राजानं हन्तुमुद्यताः ॥ ३९॥ सर्वाणि शस्त्राणि समाद्रवांति न वै शरीरे प्रविशांति तस्य ॥ ते चापि सर्वे हतशस्त्रसंघा म्लेच्छा बभूवुर्गतदेहजीवाः ॥ ॥ ४० ॥ पदापि चलितुं तत्र न शेकुस्तेऽरयो भृशम् ॥ शस्त्राणि कुंठतां जग्मुः सर्वेषां हतचेतसाम् ॥४१॥ दीना बभूवुस्ते सर्वे ये तं हंतुं समागताः ॥ एतस्मिन्नेव काले तु तस्य राज्ञः शरीरतः ॥ ४२ ॥ निःसृता प्रमदा ह्येका सर्वावयवशोभना ॥ दिव्यगंधसमायुक्ता दिव्याभरणभूषिता ॥ ४३ ॥

वहां वे शत्रु एक पगभरिहू आगे चलनेको न समर्थ होत भये और नष्ट हैं चित्त जिनके ऐसे उन सब म्लेच्छनके शस्त्रहू भोथरे हो जात भये ॥ ४१ ॥ जे राजाके मारनेको आये हैं वे सब दीन हो जात भये याहि समयमें वा राजाके शरीरते ॥ ४२ ॥ सम्पूर्ण अंगनसों शोभायमान एक स्त्री निकसत भई

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वहाँ दिव्यगंधकारिके शोभित और दिव्य ही और आभरणनसों भूषित ही ॥ ४३ ॥ और दिव्य माला तथा दिव्य ही वस्त्रनको धारण करे ही और क्रोधके मारे वाकी भौंहैं टेढी होरही हैं और नेत्रनकारि चिनगारियों समेत बहुतसी आगिको उगलती ही ॥ ४४ ॥ दूसरी कालरात्रिके समान वह क्रोधित हो हाथमें चक्र लेके अतिदुःखित

दिव्यमाल्यांबरधरा भ्रुकुटीकुटिलानना ॥ सस्फुलिंगं च नेत्राभ्यां वमंतं पावकं बहु ॥ ४४ ॥
चक्रोद्यतकरा चैव कालरात्रिरिवापरा ॥ अभ्यधावत संक्रुद्धा म्लेच्छानत्यन्तदुःखितान् ॥ ४५ ॥
निहताश्च यदा म्लेच्छास्ते विकर्मरतास्तया ॥ ततो राजा विबुद्धः सन् ददर्श महदद्भुतम् ॥ ४६ ॥
हतान् म्लेच्छगणान्दृष्ट्वा राजा हर्षमवाप सः ॥ इह केन हता म्लेच्छा अत्यंतं वैरिणो मम ॥ ४७ ॥
केन चेदं महत्कर्म कृतमस्मद्धितार्थिना ॥ एतस्मिन्नेव काले तु वागुवाचाऽशरीरिणी ॥ ४८ ॥

म्लेच्छनपर दौरत भई ॥ ४५ ॥ जब निषिद्धकर्ममें लगे भये वे म्लेच्छ वा स्त्री करके मारेगये तब राजा जागो और अद्भुत काम देखत भयो ॥ ४६ ॥ राजा म्लेच्छनको मारे भये देखि आनन्दको प्राप्त होत भयो और कहत भयो कि, मेरे बडे वैरी म्लेच्छ यहां किसने मारे ॥ ४७ ॥ हमारे हितको चाहनवारो कौन है जाने यह

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बडो भारी कर्म कियो वाहि समय आकाशवाणी होत भई ॥ ४८ ॥ विस्मययुक्त बैठे भये वा राजाको देखि आकाशवाणीने कह्यो कि, केशव भगवान्से दूसरो कोई और शरण अर्थात् रक्षक नहीं है ॥ ४९ ॥ वा वनते कुशलसों आयो भयो वह धर्मात्मा राजा पृथ्वीमें इन्द्रके समान राज्य करब भयो ॥ ५० ॥ वसिष्ठ मुनि बोले

तं स्थितं नृपतिं दृष्ट्वा निष्कामं विस्मयान्वितम् ॥ शरणं केशवादन्यो नास्ति कोऽपि द्वितीयकः ॥ ४९ ॥ वनात्तस्मात्स कुशली समायातोऽपि भूमिभुक् ॥ राज्यं चकार धर्मात्मा धरायां देवतेशवत् ॥ ५० ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ तस्मादामलकीं राजन् ये कुर्वंति नरोत्तमाः ॥ ते यांति वैष्णवं लोकं नात्र कार्या विचारणा ॥ ५१ ॥ इति श्रीब्रह्मांडपुराणे फाल्गुनशुक्लैकादश्यामामलकीमाहात्म्यं समाप्तम् ॥ ८ ॥

कि, हे राजन् ! ताते जे उत्तम मनुष्य आमलकीको व्रत करै हैं वे विष्णुलोकको जायँ हैं यामें विचार नहीं करनो चाहिये ॥ ५१ ॥ इति श्रीमत्पण्डितपरमसुखतनयपण्डितकेशवप्रसादशर्मद्विवेदिकृतायामेकादशीमाहात्म्यभाषाटीकायां दीपिकासमाख्यायां फाल्गुनशुक्लैकादशीकथा समाप्ता ॥ ८ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ चैत्रकृष्णैकादशीकथा ॥ मधुमास्यसिते पक्षे पापमोचनिकेति या ॥ एकादशी भवेत्तस्या माहात्म्यं विवृणोम्य-हम् ॥१॥ युधिष्ठिर बोले कि, फाल्गुनके शुक्लपक्षकी आमलकी नाम एकादशीको माहात्म्य मैंने सुनो चैत्र महीनेके कृष्णपक्षकी एकादशीको कहा नाम है सो कहो ॥ १ ॥ श्रीकृष्ण बोले कि, हे राजेंद्र ! अनजाने भये पापकी नाश

अथ चैत्रकृष्णैकादशी ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ फाल्गुनस्य सिते पक्षे श्रुता साऽऽमलकी मया ॥
चैत्रस्य कृष्णपक्षे तु किं नामैकादशी भवेत् ॥ १ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ शृणु राजेंद्र वक्ष्यामि
पापमोचनिकाव्रतम् ॥ यल्लोमशोऽब्रवीत्पृष्टो मांधात्रा चक्रवर्तिना ॥ २ ॥ मान्धातोवाच ॥
भगवञ्छ्रोतुमिच्छामि लोकानां हितकाम्यया ॥ चैत्रमासासिते पक्षे किंनामैकादशी भवेत् ॥ ३ ॥
को विधिः किं फलं तस्याः कथयस्व प्रसादतः ॥ लोमश उवाच ॥ श्रूयतां राजशार्दूल कामदां
सिद्धिदां तथा ॥ कथां विचित्रां शुभदां पापहां धर्मदायिनीम् ॥ ४ ॥

करनहारी यह एकादशी है जो चक्रवर्ती मान्धाता राजाके पूँछनेसों लोमश ऋषिने कही वाहि मैं तुमसों कहौं हौं ॥२॥ मान्धाता बोले कि, हे भगवन् ! लोकनकी हितकामनासों चैत्रके कृष्णपक्षमें जो एकादशी होय है ताको कहा नाम है सो मैं सुना चाहौं हौं ॥३॥ वाकी विधि कहा है और फल कहा है सो आप प्रसन्नतासों कहो ॥ लोमश ऋषि

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बोले कि, हे राजन् ! कामनाकी देनहारी सिद्धिकी देनहारी कल्याणकी देनहारी पापनको नाश करनहारी और धर्मको देनहारी जो विचित्र कथा है ताहि मैं तुमसों कहौं हौं ॥ ४ ॥ पहले वसंतऋतुके आनेपै पुष्प जामें खिले भये हैं ऐसे चैत्ररथ नाम कुबेरके वनमें अप्सरानके समूह विहार करि रहे हैं ॥५॥ गंधर्वनकी कन्या वामें किन्नरनके

पुरा चैत्ररथोद्देशे ह्यप्सरोगणसेविते ॥ वसन्तसमये प्राप्ते पुष्पैराकुलिते वने ॥ ५ ॥ गधर्वकन्या-स्तत्रैव रमंति सह किन्नरैः ॥ पाकशासनमुख्याश्च क्रीडंते च दिवौकसः ॥ ६ ॥ नापरं सुंदरं किंचिद्वनाच्चैत्ररथाद्वनम् ॥ तस्मिन्वने तु मुनयस्तपंति बहुलं तपः ॥ ७ ॥ सह देवैस्तु मघवा रमते मधुमाधवे ॥ एको मुनिवरस्तत्र मेधावी नामनामतः ॥ ८ ॥ अप्सरास्तं मुनिवरं मोहना-योपचक्रमे ॥ मंजुघोषेति विख्याता भावं तस्य विचिन्वति ॥ ९ ॥

साथ विहार करती हीं और इन्द्र आदि देवता वामें क्रीडा करतेहैं ॥६॥ वा चैत्ररथवनसे सुंदर कोई वन नहीं है तामें मुनीश्वर बहुतसे तप कर रहे हैं ॥ ७॥ और देवतानकरिके सहित इन्द्र चैत्र वैशाखमें वहां विहार करता और मेधावी नाम एक मुनि वहां रहतो हो ॥ ८ ॥ अप्सरा वा मुनिवरके मोहित करिवेको उपाय करतभई तिनमें मंजुघोषा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नामसों विख्यात अप्सरा वा मुनिको अभिप्राय जानिवेको इच्छा करतभई ॥ ९ ॥ उनके भयसों आश्रमके समीप कोशभरपै ठहरतभई और मीठे स्वरसों अच्छो गान करती भई वीणाको बजाने लगी ॥ १० ॥ यापीछे फूल और चन्दनसों लिपटी भई वा अप्सराको गावतभई देखि कामहू शिवको भक्त जो मुनीश्वर हैं ताके जीतिवेकी इच्छा करतभयो ॥ ११ ॥ कामदेव शिवसों जो वैर भयो हो ताको स्मरण करिके वा शिवभक्त मुनिके शरीरमें संसर्ग करि-

क्रोशमात्रं स्थिता तस्य भयादाश्रमसन्निधौ ॥ गायंती मधुरं साधु पीडयंती विपंचिकाम् ॥ १० ॥
गायंतीं तामथालोक्य पुष्पचंदनवेष्टिताम् ॥ कामोऽपि विजयाकांक्षी शिवभक्तं मुनीश्वरम् ॥ ११ ॥
तस्याः शरीरसंसर्गं शिववैरमनुस्मरन् ॥ कृत्वा भ्रुवोर्धनुःकोटीगुणं कृत्वा कटाक्षकम् ॥ १२ ॥
मार्गणौ नयने कृत्वा पक्षयुक्तौ यथाक्रमम् ॥ कुचौ कृत्वा पटकुटीं विजयायोपसंस्थितः ॥ १३ ॥
मंजुघोषाऽभवत्तत्र कामस्यैव वरूथिनी ॥ मेधाविनं मुनिं दृष्ट्वा सापि कामेन पीडिता ॥ १४ ॥

वेकी इच्छासों वा अप्सराकी भौंहनको धनुष बनाके वामें कटाक्षनको प्रत्यंचा चढावत भयो ॥१२॥ और या क्रमसों नेत्रनको पक्षयुक्त बाणकरि वाके कुचनको पटकुटी बनाके विजयके लिये उपस्थित होतभयो ॥ १३ ॥ वहाँ मंजुघोषाही कामकी सेनाके समान होतभई और मेधावी मुनिको देखि वह अप्सराहू कामकरिके पीडित होतभई ॥१४॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जवानीसों भरी है देह जाकी ऐसो वह मेधावी मुनि अत्यंत शोभित होत भयो और सपेद जनेऊ पहिरे भये वे दंडी मुनि दूसरे कामके समान शोभित वे दंडी मेधावी मुनि च्यवनऋषिको जो सुन्दर आश्रम है तामें वास करतभये ॥ १५ ॥ मंजुघोषा वा मुनिश्रेष्ठको देखिके वहां ठहरत भई ॥ १६ ॥ बजाती भई चूरिन करिके

यौवनोद्भिन्नदेहोऽसौ मेधाव्यातिविराजते ॥ सितोपवीतसंवीतो दंडी स्मर इवापरः ॥ मेधावी वसति स्मासौ च्यवनस्याश्रमे शुभे ॥ १५ ॥ मंजुघोषा स्थिता तत्र दृष्ट्वा तं मुनिपुङ्गवम् ॥ १६ ॥ मदनस्य वशं प्राप्ता मंदं मंदमगायत ॥ रणद्वलयसंयुक्ता शिंजन्नूपुरमेखला ॥ १७ ॥ गायंतीं भावसंयुक्तां विलोक्य मुनिपुंगवः ॥ मदनेन ससैन्येन नीतो मोहवशं बलात् ॥१८॥ मंजुघोषा समागम्य मुनिं दृष्ट्वा तथाविधम् ॥ हास्यभावकटाक्षैस्तु मोहयामास चांगना ॥ १९ ॥

युक्त और शब्दायमान हैं नूपुर तथा क्षुद्रघंटिका जाकी ऐसी वह जो मंजुघोषा अप्सरा कामके वशमें हौले हौले चलती भई ॥ १७ ॥ भावसमेत गावती भई वा अप्सराको देखि वह श्रेष्ठ मुनि सेनायुक्त जो कामदेव है ता करिके बलसों वशमें कियो गयो ॥ १८ ॥ मंजुघोषा आके मुनिको कामके वशमें देखि वह स्त्री हाव भाव कटाक्षनसों वाहि मोहित करिलेत भई ॥ १९ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वह वीणाको नीचे धरिके वा मुनीश्वरको ऐसे आलिंगन करत भई जैसे पवन करि कँपाई भई व्याकुल लता वृक्षसों लिपट जाती है ॥ २० ॥ वह मेधावी मुनिहू वाहि वनमें वाकी देहको उत्तम देखि वाके साथ विहार करत भयो ॥ २१ ॥ वह मुनि कामतत्त्वके वशमें हो गयो वाको शिवतत्त्व जातो रह्यो वह कामी विहार करते भये राति

अधः संस्थाप्य वीणां सा सष्वजे तं मुनीश्वरम् ॥ वल्लीवाकुलिता वृक्षं वातवेगेन वेपिता ॥२०॥
सोऽपि रेमे तया सार्द्धं मेधावी मुनिपुंगवः ॥ तस्मिन्नेव वनोद्देशे दृष्ट्वा तद्देहमुत्तमम् ॥ २१ ॥
शिवतत्त्वं गतं तस्य कामतत्त्ववशं गतः ॥ न निशां न दिनं सोऽपि रमञ्जानाति कामुकः ॥२२॥
बहुलश्च गतः कालो मुनेराचारलोपकः ॥ मंजुघोषा देवलोकं गमनायोपचक्रमे ॥२३॥ गच्छन्ती प्रत्युवाचाथ रमंतं मुनिपुंगवम् ॥ आदेशो दीयतां मह्यं स्वधामगमनाय मे ॥२४॥ मेधाव्युवाच ॥
अद्यैव त्वं समायाता प्रदोषादौ वरानने ॥ यावत्प्रभातसंध्या स्यात्तावत्तिष्ठ ममांतिके ॥ २५ ॥

दिनको न जानत भयो ॥ २२ ॥ मुनिके आचारको लोप करनहारो वहुतसो काल व्यतीत होत भयो और मंजुघोषा स्वर्गलोकमें जानेको उद्यत होत भई ॥ २३ ॥ रमण करते भये वा मुनिसों बोलत भई कि, हे मुने ! मोहि अपने स्थानमें जानेकी आज्ञा दीजिये ॥ २४ ॥ तव मेधावी बोले कि, हे वरानने ! तू अबही तो संध्यासमय आई है याते

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जबताईं प्रभातसंध्या होय तब ताईं मेरे समीप ठहर ॥ २५ ॥ या प्रकार वा मुनिको वचन सुनि वह भयभीत होत भई और ऋषिनमें श्रेष्ठ जो वह मुनि है ताहि रमावत भई ॥ २६ ॥ मुनिके शापके भयसों डरी भई वह अप्सरा बहुतसे वर्षोंताईं अर्थात् पचपन वर्ष नौ महीने और तीन दिन पर्यंत ॥ २७ ॥ वह मुनिके साथ विहार करत भई यह

इति श्रुत्वा मुनेर्वाक्यं भयभीता बभूव सा ॥ पुनर्वै रमयामास तं मुनिं ऋषिसत्तमम् ॥ २६ ॥ मुनेः शापभयाद्भीता बहुलान्परिवत्सरान् ॥ वर्षाणां पंचपंचाशन्नवमासान् दिनत्रयम् ॥ २७ ॥ सा रेमे मुनिना तेन निशार्द्धमिव चाभवत् ॥ सा च तं प्रत्युवाचाथ तस्मिन्काले गते मुनिम् ॥ आदेशो दीयतां ब्रह्मन् गन्तव्यं स्वगृहं मया ॥ २८ ॥ मेधाव्युवाच ॥ प्रातःकालोऽधुनैवास्ते श्रूयतां वचनं मम ॥ कुर्वे संध्यामहं यावत्तावत्त्वं वै स्थिरा भव ॥ २९ ॥ इति वाक्यं मुनेः श्रुत्वा भयेन च समाकुला ॥ स्मितं कृत्वा तु सा किंचित् प्रत्युवाच सुविस्मिता ॥ ३० ॥

समय मुनिको आधि रात्रिके समान व्यतीत होत भयो वा कालके बीति जानेपै वह मुनिसों फिरि बोलत भई कि, आज्ञा दीजिये मोको अपने घर जाना है ॥ २८ ॥ मेधावी बोले कि, मेरे वचन सुनिये प्रातःकाल तो अभी है जबताईं मैं संध्या करौं तबताईं तू ठहर ॥ २९ ॥ मुनिको यह वचन सुनि वह भयसों व्याकुल होत भई

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

 फिरि सुंदर मंद है हँसनो जाको ऐसी वह कुछ मुसकुरायके फिर बोलत भई ॥ ३० ॥ अप्सरा बोली कि, हे मुने !
तुम्हारी संध्याको कितनो प्रमाण है अभी गई कि, नहीं, मेरे ऊपर कृपा करिके बीतो भयो काल विचारिये ॥ ३१ ॥
 वाको ऐसो वचन सुनिके विस्मयसों उत्फुल्ल हैं नेत्र जाके ऐसो वह मुनि अपने हृदयमें ध्यान करिके वा समय

अप्सरा उवाच ॥ कियत्प्रमाणो विप्रेन्द्र तव संध्या गता न वा ॥ मयि प्रसादं कृत्वा तु गतः कालो विचार्यताम् ॥ ३१ ॥ इति तस्या वचः श्रुत्वा विस्मयोत्फुल्ललोचनः ॥ स ध्यात्वा हृदि विप्रेंद्रः प्रमाणमकरोत्तदा ॥ ३२ ॥ समाश्च सप्तपंचाशद्गता मम तया सह ॥ नेत्राभ्यां विस्फुलिंगान्स मुंचमानोऽतिकोपनः ॥ ३३ ॥ कालरूपां च तां दृष्ट्वा तपसः क्षयकारिणीम् ॥ दुःखार्जितं मम तपो नीतं तदनया क्षयम् ॥ ३४ ॥ सकंपोष्ठो मुनिस्तत्र प्रत्युवाचाकुलेंद्रियः ॥ स तां शशाप मेधावी त्वं पिशाची भवेति च ॥ ३५ ॥

प्रमाण करत भयो ॥ ३२ ॥ कि, वाके साथ मेरे सत्तावन वर्ष व्यतीत भये आँखिनते चिनगारीनको छोडतो
भयो वह मुनि अति क्रोधित होत भयो ॥ ३३ ॥ तपका क्षय करनेवाली जो वह अप्सरा है ताहि कालरूप देखत भयो कि, बडे दुःखसों इकट्टो कियो भयो मेरो तप याने नाशको प्राप्त कीन्हो ॥ ३४ ॥ कांपतो है होठ जाको

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

और व्याकुल हैं इन्द्रिय जाकी ऐसो मेधावी मुनि वाहि यह शाप देत भयो कि, तू पिशाची होजा ॥ ३९ ॥
अरी पापिनी ! अरी दुराचारिणी ! तोको धिक्कार है अरी कुलटा पाप करनहारी ! तोको धिक्कार है वाके शापसों
दग्ध भई वह विनयसों नम्र होके स्थित होतभई ॥ ३६ ॥ मुनिसों प्रसाद चाहती भई वह सुन्दर भौंहवाली बचन

धिक्त्वां पापे दुराचारे कुलटे पातकप्रिये ॥ तस्य शापेन सा दग्धा विनयावनता स्थिता ॥ ३६ ॥
उवाच वचनं सुभ्रूः प्रसादं वांछती मुनिम् ॥ प्रसादं कुरु विप्रेन्द्र शापस्यानुग्रहं कुरु ॥ सतां संगो
हि फलति वचोभिः सप्तमे पदे ॥ ३७ ॥ त्वया सह मम ब्रह्मन् गता सुबहवः समाः ॥ एतस्मा-
त्कारणात्स्वामिन्प्रसादं कुरु सुव्रत ॥ ३८ ॥ मुनिरुवाच ॥ शृणु मद्वचनं भद्रे शापानुग्रहकार-
कम् ॥ किं करोमि त्वया पापे क्षयं नीतं महत्तपः ॥ ३९ ॥

बोलत भई कि, हे विप्रेन्द्र ! प्रसन्न होउ और शापको अनुग्रह करो सज्जनोंकी संगति वचनों करिके सातवें पदमें
फल देनेहारी होय है ॥ ३७ ॥ हे ब्रह्मन् ! तुम्हारे साथ मेरे तो बहुतसे वर्ष बीते हैं ताते हे स्वामिन् ! मोपैं
प्रसन्न होउ ॥ ३८ ॥ मुनि बोले कि, हे भद्रे ! शापको अनुग्रह करनवालो मेरो वचन सुन मैं कहा करौं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अरे पापिनी ! तैंने मेरो बडो तप नाश करादियो ॥ ३९ ॥ चैत्रके कृष्णपक्षमें जो शुभ एकादशी होय है वाको पापमोचनी नाम है वह सब पापनको दूरि कारि देय है ॥ ४० ॥ हे सुभ्रु ! वाको करनेसे तेरी पिशाचयोनि छूटि जायगी ऐसे कहिके वह मेधावी पिताके आश्रमको जात भयो ॥ ४१ ॥ वा मेधावीको आयो भयो देखि च्यवन-

चैत्रस्य कृष्णपक्षे या भवत्येकादशी शुभा ॥ पापमोचनिका नाम सर्वपापक्षयंकरी ॥ ४० ॥ तस्या व्रते कृते सुभ्रु पिशाचत्वं प्रयास्यति ॥ इत्युक्त्वा तां स मेधावी जगाम पितुराश्रमम् ॥ ४१ ॥ तमागतं समालोक्य च्यवनः प्रत्युवाच ह ॥ किमेतद्विहितं पुत्र त्वया पुण्यक्षयः कृतः ॥ ४२ ॥ मेधाव्युवाच ॥ पापं कृतं महत्तात रमिता चाप्सरा मया ॥ प्रायश्चित्तं ब्रूहि तात येन पापक्षयो भवेत् ॥ ४३ ॥ च्यवन उवाच ॥ चैत्रस्य चासिते पक्षे नाम्ना वै पापमोचनी ॥ अस्या व्रते कृते पुत्र पापराशिः क्षयं व्रजेत् ॥ ४४ ॥

ऋषि बोलत भये कि, हे पुत्र ! तुमने यह कहा कियो जो पुण्यको क्षय कर दीन्हो ॥ ४२ ॥ मेधावी बोले कि, हे पिता ! मैंने बडो पाप कीन्हों जो मैंने अप्सराके साथ विहार कीन्हों, हे तात ! प्रायश्चित्त बताइये जाते पापको क्षय होय ॥ ४३ ॥ च्यवनऋषि बोले कि, चैत्रके कृष्णपक्षमें पापमोचनी नाम एकादशी होय है

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे पुत्र ! ताके व्रत करनेसों पापनको समूह नाशको प्राप्त होयगो ॥ ४४ ॥ पिताको यह वचन सुनिके वाने उत्तम व्रत कीन्हों ताते वाको पाप दूरि होगयो और वह पुण्य कारिके युक्त हो जात भयो ॥ ४५ ॥ वह मंजुघोषा वाहू याहि प्रकार या उत्तम व्रतको करिके पापमोचनीके व्रतसों पिशाचयोनिते छूटि जात भई ॥ ४६ ॥ वह श्रेष्ठ

इति श्रुत्वा पितुर्वाक्यं कृतं तेन व्रतोत्तमम् ॥ गतं पापं क्षयं तस्य पुण्ययुक्तो बभूव सः ॥४५॥
साप्येवं मंजुघोषा च कृत्वा तद्व्रतमुत्तमम् ॥ पिशाचत्वविनिर्मुक्ता पापमोचनिकाव्रतात् ॥४६॥
दिव्यरूपधरा सापि गता नाकं वराऽप्सराः ॥ लोमश उवाच ॥ इत्थं भूतप्रभावं हि पापमोचनिकाव्रतम् ॥ ४७ ॥ पापमोचनिकां राजन्ये कुर्वंति च मानवाः ॥ तेषां पापं च यत्किंचित्तत्सर्वं क्षयतां व्रजेत् ॥ ४८ ॥ पठनाच्छ्रवणाद्राजन् गोसहस्रफलप्रदा ॥ ब्रह्महा भ्रूणहा चैव सुरापो गुरुतल्पगः ॥ ४९ ॥

अप्सरा दिव्यरूप धारण कारिके स्वर्गलोकको जात भई लोमश बोले कि, पापमोचनी एकादशीके व्रतको ऐसो प्रभाव है ॥ ४७ ॥ हे राजन् ! जो मनुष्य या पापमोचनीके व्रतको करै हैं उनको जो कुछ पाप होय है वह सब नाशको प्राप्त होय है ॥४८॥ पढने और सुननेसों हजार गौओंके फलकी देनहारी है ब्रह्महत्यारा भ्रूणहा सुरापी और

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गुरुतल्पगामी ॥ ४९ ॥ या व्रतके करनेसों ये सब पापसो छूटि जायँ हैं यह उत्तम व्रत करनेसों बहुतसे पुण्यको देय है ॥ ५० ॥ इति श्रीमत्पण्डितपरमसुखतनयपण्डितकेशवप्रसादशर्मद्विवेदिकृतायामेकादशीमाहात्म्यभाषाटीकायां दीपिकासमाख्यायां चैत्रकृष्णैकादशीपापमोचनीकथा समाप्ता ॥ ९ ॥ अथ चैत्रशुक्लैकादशीकथा ॥ मधुमासस्य शुक्ले या कामदैकादशी भवेत् ॥ तन्माहात्म्यस्य भाषायां टीकां रम्यां करोम्यहम् ॥ १ ॥ सूतजी

व्रतस्य चास्य करणात्पापमुक्ता भवंति ते ॥ बहुपुण्यप्रदं ह्येतत्करणाद्व्रतमुत्तमम् ॥ ५० ॥ इति श्रीभविष्योत्तरपुराणे चैत्रकृष्णे पापमोचनिकानामैकादशीमाहात्म्यं समाप्तम् ॥ ९ ॥ अथ चैत्रशुक्लैकादशीकथा ॥ सूत उवाच ॥ देवकीनंदनं कृष्णं वसुदेवात्मजं हरिम् ॥ नमस्कृत्य प्रवक्ष्यामि महापातकनाशनम् ॥ १ ॥ युधिष्ठिराय कृष्णेन कथितानि महात्मना ॥ एकादशीमाहात्म्यानि नानापापहराणि च ॥ २ ॥

बोले कि, देवकीनंदन वसुदेवके पुत्र जे कृष्ण हरि हैं तिनको नमस्कार करिके मैं महापातकनको नाश करनवालो व्रत कहौं हौं ॥ १ ॥ महात्मा जे श्रीकृष्ण हैं तिनकरिके नाना प्रकारके पापनके हरनवाले एकादशीके माहात्म्य युधिष्ठिरके अर्थ कहे गये हैं ॥ २ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

उन अठारह महापुराणोंमेंसे छांटके नाना प्रकारकी कथान कारिके युक्त चौबीस माहात्म्य कहे हैं ॥३॥ उनको मैं कहौं हौं. हे ब्राह्मणो ! सावधान होके सुनो, युधिष्ठिर बोले कि, हे वासुदेव ! तुमको नमस्कार है मेरे आगे कहौ ॥ ४ ॥ चैत्रके शुक्ल पक्षमें कौनसे नामकी एकादशी होय है ? श्रीकृष्ण बोले कि, हे राजन् ! या पुरानी

अष्टादशपुराणेभ्यो विविच्य सुमहात्मना ॥ चतुर्विंशतिसंख्यानि नानाख्यानैर्युतानि च ॥ ३ ॥ तानि वक्ष्यामि भो विप्राः शृणुध्वं सुसमाहिताः ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ वासुदेव नमस्तुभ्यं कथयस्व ममाग्रतः ॥४॥ चैत्रस्य शुक्लपक्षे तु किंनामैकादशी भवेत् ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ शृणुष्वैकमना राजन् कथामेतां पुरातनीम् ॥ ५ ॥ वसिष्ठो यामकथयत्प्राग्दिलीपाय पृच्छते ॥ दिलीप उवाच ॥ भगवञ्छ्रोतुमिच्छामि कथयस्व प्रसादतः ॥ ६ ॥ चैत्रमासि सिते पक्षे किंनामैकादशी भवेत् ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ साधु पृष्टं नृपश्रेष्ठ कथयामि तवाग्रतः ॥ ७ ॥

कथाको तुम एकाग्रमन होके सुनो ॥ ५ ॥ वसिष्ठ मुनिने जाहि पूँछनेसों दिलीपके अर्थ सो कही है। दिलीप बोले कि, हे भगवन् ! मैं सुना चाहौं हौं आप प्रसन्न होके कहिये ॥ ६ ॥ कि, चैत्रके शुक्लपक्षमें कौनसे नामकी एकादशी होय है ? वसिष्ठ मुनि बोले कि, हे नृपश्रेष्ठ ! आपने अच्छो प्रश्न कीन्हो मैं तुम्हारे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आगे कहौं हौं ॥ ७ ॥ एकादशी अति पवित्र है और पापरूपी ईंधनके लिये दावानल है । हे राजन् ! पापकी नाश करनहारी और पुत्रकी देनहारी या कथाको तुम सुनो ॥ ८ ॥ पहले मनोहर सुवर्ण और रत्नोंकरि के भूषित रत्नपुरनाम नगरमें मदसों उद्यत पुंडरीकनाम नाग है मुखिया जिनमें ऐसे नाग वास करत भये ॥ ९ ॥

एकादशी पुण्यतमा पापेन्धनदवानलः ॥ शृणु राजन् कथामेतां पापघ्नीं पुत्रदायिनीम् ॥ ८ ॥
पुरा रत्नपुरे रम्ये हेमरत्नविभूषिते ॥ पुंडरीकमुखा नागा निवसंति मदोत्कटाः ॥ ९ ॥ तस्मिन्पुरे
पुंडरीको राजा राज्यं करोति च ॥ गन्धर्वैः किन्नरैश्चैव ह्यप्सरोभिः सुसेव्यते ॥ १० ॥ वराऽप्सरा
तु ललिता गंधर्वो ललितस्तथा ॥ उभौ रागेण संयुक्तौ दम्पती कामपीडितौ ॥ ११ ॥ रेमाते
स्वगृहे रम्ये धनधान्ययुते सदा ॥ ललितायास्तु हृदये पतिर्वसति सर्वदा ॥ १२ ॥

वा पुरमें पुंडरीक नाम राजा राज्यको करत भयो और वह नगर गन्धर्व किन्नर तथा अप्सरान करिके सेवित हो ॥ १० ॥ ललिता नाम एक श्रेष्ठ अप्सरा ही और ललित नाम एक गंधर्व हो ये दोनों स्त्री पुरुष प्रीतियुक्त होके काम करिके पीडित होत भये ॥ ११ ॥ और धनधान्यसों युक्त जो अपनो घर है तामें सदा विहार करत भये, ललिताके हृदयमें

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पति सदा वसत हो ॥ १२ ॥ और ललितके मनमें सदा ललिता स्त्री बसती ही एकबार पुंडरीक आदि गंधर्व सभामें स्थित होके क्रीडा करि रहे हैं ॥ १३ ॥ और वह ललित स्त्रीके विना वा समय गान करतो हो सो ललि-ताके विना वाकी जीभ ललिताके स्मरणसों पदबंधमें स्खलित हो जात भई ॥ १४ ॥ नागनमें श्रेष्ठ कर्कोटक याके

हृदये तस्य ललिता नित्यं वसति भामिनी ॥ एकदा पुंडरीकाद्याः क्रीडंति सदसि स्थिताः ॥ १३ ॥
गीतगानं प्रकुरुते ललितो दयितां विना ॥ पदबंधे स्खलज्जिह्वो बभूव ललितां स्मरन् ॥ १४ ॥
मनोभावं विदित्वाऽस्य कर्कोटो नागसत्तमः ॥ पदबंधच्युतिं तस्य पुंडरीके न्यवेदयत् ॥ १५ ॥
शशाप ललितं तत्र मदनातुरचेतसम् ॥ राक्षसो भव दुर्बुद्धे क्रव्यादः पुरुषादकः ॥ १६ ॥ यतः
पत्नीवशो जातो गायमानो ममाग्रतः ॥ वचनात्तस्य राजेन्द्र रक्षोरूपो बभूव ह ॥ १७ ॥

मनको भाव जानिके वाके पदबंधके बिगडनेको पुंडरीकसों कहि देतभयो ॥ १५ ॥ वहां काम करि व्याकुल है चित्त जाको ऐसे ललितको पुंडरीक शाप देत भयो कि, हे दुर्बुद्धे ! तू कच्चे मांसको और पुरुषनको खानेवालो राक्षस होजा ॥ १६ ॥ जाते मेरे आगे गातो भयो तू स्त्रीकि वश भयो हे राजेन्द्र ! वाके वचनसों वह राक्षसरूप हो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जात भयो ॥ १७ ॥ वाको मुख भयानक होगयो नेत्र विगड गये जाके देखनेहीसें भय उपजै और जाकी बाहें चार कोसकी लंबी होगईं और जाको मुख कंदराके समान हो जात भयो ॥ १८ ॥ सूर्यचंद्रमाके समान नेत्र होगये और ग्रीवा पर्वतके समान होगई और नाकके छेद गुफाके समान होगये और होठ वाके दो कोशके हो जात भये ॥ १९ ॥ हे राजन् ! वाको शरीर आठ योजन अर्थात् वत्तीस कोशको ऊँचो होगयो अपने कर्मके

रौद्राननो विरूपाक्षो दृष्टमात्रो भयंकरः ॥ बाहू योजनविस्तीर्णौ मुखं कंदरसन्निभम् ॥ १८ ॥
चंद्रसूर्यनिभे नेत्रे ग्रीवा पर्वतसन्निभा ॥ नासारंध्रे तु विवरे अधरौ योजनार्थकौ ॥ १९ ॥ शरीरं
तस्य राजेन्द्र उच्छ्रितं योजनाष्टकम् ॥ ईदृशो राक्षसः सोऽभूद्भुंजानः कर्मणः फलम् ॥ २० ॥
ललिता तमथालोक्य स्वपतिं विकृताकृतिम् ॥ चिंतयामास मनसा दुःखेन महतार्दिता ॥ २१ ॥
किं करोमि क्व गच्छामि पतिः पापेन पीडितः ॥ इति संस्मृत्य मनसा न शर्म लभते तु सा ॥ २२ ॥

फलको भोगतो भयो वह ऐसो राक्षस हो जात भयो ॥ २० ॥ या पीछे ललिता अपने पतिको विकृतस्वरूप देखिके बडे दुःखसों पीडित हो मनमें चिन्ता करत भई ॥ २१ ॥ कहा करौं और कहाँ जाऊं मेरो पति पापसों पीडित भयो ऐसी मनमें चिन्ता करिके वह सुखको न प्राप्त होत भई ॥ २२ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

और वह ललिता पतिके साथ घने वनमें विचरत भई और कामरूप वह राक्षस घने वनमें भ्रमण करतभयो ॥ २३ ॥ निर्दयी पापनमें रत बुरे रूपको और मनुष्यनको खानेवालो दुःखी वह राक्षस राति दिन सुखको न प्राप्त होत भयो ॥ २४ ॥ या प्रकार कारि पतिको देखके बहुतही दुःखित ललिता रोती भई वाके साथ घने वनमें

चचार पतिना सार्द्धं ललिता गहने वने ॥ बभ्राम विपिने दुर्गे कामरूपः स राक्षसः ॥ २३ ॥ निर्घृणः पापनिरतो विरूपः पुरुषादकः ॥ न सुखं लभते रात्रौ न दिवा पापपीडितः ॥ २४ ॥ ललिता दुःखिताऽतीव पतिं दृष्ट्वा तथाविधम् ॥ भ्रमंती तेन सार्धं सा रुदती गहने वने ॥ २५ ॥ कदाचिदगमद्विंध्याशिखरे बहुकौतुके ॥ ऋष्यशृंगमुनेस्तत्र दृष्ट्वाऽऽश्रमपदं शुभम् ॥ २६ ॥ शीघ्रं जगाम ललिता विनयावनता स्थिता ॥ प्रत्युवाच मुनिर्दृष्ट्वा का त्वं कस्य सुता शुभे ॥ २७ ॥

भ्रमती फिरती ॥ २५ ॥ कभी अनेक कौतुकोंकारि युक्त विंध्याचलके शिखरपर जात भई वहां ऋष्यशृंग मुनिको शुभ आश्रम देखत भई ॥ २६ ॥ ललिता वहां शीघ्रही गई और विनयसों नम्र होके स्थित होत भई वाहि देखके मुनि बोले कि, हे शुभे ! तू कौन है और कौनकी बेटी है ॥ २७ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यहां काहेको आई है मेरे आगे सत्य कह । तब ललिता बोली कि, हे महाराज ! वीरधन्वा नाम गंधर्व है वा महात्माकी मैं बेटी हौं ॥ २८ ॥ ललिता मेरो नाम है मैं यहाँ पतिके लिये आई हौं, हे महामुने ! मेरो पति शापके दोषते राक्षस होगयो है ॥ २९ ॥ वह भयानकरूप दुराचारी है वाको देखिके मोको सुख नहीं है,

किमर्थं हि समायाता सत्यं वद ममाग्रतः ॥ ललितोवाच ॥ वीरधन्वेति गन्धर्वः सुता तस्य महात्मनः ॥ २८ ॥ ललितां नाम मां विद्धि पत्यर्थमिह चागताम् ॥ भर्त्ता मे शापदोषेण राक्षसोभून्महामुने ॥ २९ ॥ रौद्ररूपो दुराचारस्तं दृष्ट्वा नास्ति मे सुखम् ॥ सांप्रतं शाधि मां ब्रह्मन् प्रायश्चित्तं वद प्रभो ॥३०॥ येन पुण्येन विप्रेन्द्र राक्षसत्वाद्विमुच्यते ॥ ऋषिरुवाच ॥ चैत्रमासस्य रंभोरु शुक्लपक्षस्य सांप्रतम् ॥ ३१ ॥ कामदैकादशी नाम्नी या कृता कामदा नृणाम् ॥ कुरुष्व तद्व्रतं भद्रे विधिपूर्वं मयोदितम् ॥ ३२ ॥

हे प्रभो ! या समय मोको शिक्षा देउ और प्रायश्चित्त बताओ ॥ ३० ॥ हे विप्रेंद्र ! जा पुण्यसों राक्षसयोनिते छूटे । ऋषि बोले कि, हे रंभोरु ! चैत्रके शुक्लपक्षकी एकादशी या समय आई है ॥ ३१ ॥ याको नाम कामदा है जाके व्रतके करनेते मनुष्यनकी कामना पूरी होय है हे भद्रे ! ताको व्रत कर मैं विधिपूर्वक कहौं हौं ॥ ३२ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वाके व्रतको जो पुण्य है ताहि तू अपने पतिको दे वा पुण्यके देनेसे क्षणमात्रहीमें वाको शापदोष शांत हो जायगो ॥ ३३ ॥ मुनिके या वचनको सुनिकै ललिता हर्षित होत भई हे राजन् ! एकादशीको व्रत करिके द्वादशीके दिन ॥ ३४ ॥ ब्राह्मणके आगे स्थित होके वासुदेवके आगे अपने पतिके तारनेके लिये ललिता वचन बोलत भई ॥ ३५ ॥

तस्य व्रतस्य यत्पुण्यं तत्स्वभर्त्रे प्रदीयताम् ॥ दत्ते पुण्ये क्षणात्तस्य शापदोषः प्रशाम्यति ॥३३॥
इति श्रुत्वा मुनेर्वाक्यं ललिता हर्षिताऽभवत् ॥ उपोष्यैकादशीं राजन् द्वादशीदिवसे तदा ॥३४॥
विप्रस्यैव समीपे तु वासुदेवाग्रतः स्थिता ॥ वाक्यमूचे तु ललिता स्वपत्युस्तारणाय वै ॥३५॥
मया तु यद्व्रतं चीर्णं कामदाया उपोषणम् ॥ तस्य पुण्यप्रभावेण गच्छत्वस्य पिशाचता ॥३६॥
ललितावचनादेव वर्तमानोऽपि तत्क्षणे ॥ गतपापः स ललितो दिव्यदेहो बभूव ह ॥ ३७ ॥
राक्षसत्वं गतं तस्य प्राप्तो गंधर्वतां पुनः ॥ हेमरत्नसमाकीर्णो रेमे ललितया सह ॥ ३८ ॥

कि, मैंने जो कामदा एकादशीको व्रत कीन्हों ताके पुण्यके प्रभावसों या मेरे पतिकी पिशाचयोनि दूरि होय ॥३६॥ वा समय राक्षसदेहमें वर्त्तमानहू वह ललित ललिताके वचनहीते पापरहित होके दिव्य होजात भयो ॥३७॥ वाको राक्षसपनो जातो रह्यो और फिर गंधर्व हो जात भयो और सुवर्ण तथा रत्ननके आभूषण धारण करि फिरि

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ललिताके साथ विहार करत भयो ॥ ३८ ॥ वे दोनों स्त्री पुरुष कामदाके प्रभावसों पहिले रूपते अधिक रूपवान्
हो विमानमें बैठे भये शोभाको प्राप्त होत भये ॥ ३९ ॥ हे नृपश्रेष्ठ ! यह जानिके याको व्रत प्रयत्नसों करनो
चाहिये लोकनके हितके लिये मैं तुम्हारे आगे कही ॥४०॥ यह ब्रह्महत्या आदि पापनकी और पिशाचयोनिकी

तौ विमानसमारूढौ पूर्वरूपाधिकावुभौ ॥ दंपती चापि शोभेतां कामदायाः प्रभावतः ॥३९॥
इति ज्ञात्वा नृपश्रेष्ठ कर्तव्यैषा प्रयत्नतः ॥ लोकानां च हितार्थाय तवाग्रे कथिता मया ॥४०॥
ब्रह्महत्यादिपापघ्नी पिशाचत्वविनाशिनी ॥ नातः परतरा काचित्त्रैलोक्ये सचराचरे ॥ पठनाच्छ्रव-
णाद्वापि वाजपेयफलं लभेत् ॥ ४१ ॥ इति श्रीवराहपुराणे चैत्रशुक्लकामदानामैकादशीमाहात्म्यं
समाप्तम् ॥ १० ॥ अथ वैशाखकृष्णैकादशीकथा ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ वैशाखस्यासिते पक्षे
किंनामैकादशी भवेत् ॥ महिमानं कथय मे वासुदेव नमोऽस्तु ते ॥ १ ॥

नाश करनवाली है चराचर त्रिलोकीमें याते परे और कोई नहीं है पढने और सुननेते वाजपेय यज्ञको फल मिलै
है ॥ ४१ ॥ इति श्रीमत्पंडितपरमसुखतनयपंडितकेशवप्रसादशर्म्मद्विवेदिकृतायामेकादशीमाहात्म्यभाषाटीकायां
दीपिकासमाख्यायां चैत्रशुक्लैकादशीकथा समाप्ता ॥ १० ॥ अथ वैशाखकृष्णैकादशीकथा ॥ माधवस्याऽसिते

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पक्षे या च नाम्ना वरूथिनी ॥ तन्माहात्म्यस्य भाषायां टीकां संरचयाम्यहम् ॥१॥ युधिष्ठिर बोले कि, हे वासुदेव ! वैशाखके कृष्णपक्षमें जो एकादशी होय है ताको कहा नाम है वाकी महिमा मोसों कहो आपको नमस्कार है ॥ १ ॥ श्रीकृष्ण बोले कि हे राजन् ! या लोकमें तथा परलोकमें सौभाग्यकी देनहारी जो वैशाखकी एकादशी है ताको नाम वरूथिनी है ॥ २ ॥ वरूथिनीके व्रतको जे करैं हैं उनको सदैव सुख रहै है पापनकी हानि और सौभा-

श्रीकृष्ण उवाच ॥ सौभाग्यदायिनी राजन्निह लोके परत्र च ॥ वैशाखकृष्णपक्षे तु नाम्ना चैव वरूथिनी ॥ २ ॥ वरूथिन्या व्रतेनैव सौख्यं भवति सर्वदा ॥ पापहानिश्च भवति सौभाग्यप्राप्ति-रेव च ॥ ३ ॥ दुर्भगाऽपि करोत्येनां स्त्री सौभाग्यमवाप्नुयात् ॥ लोकानां चैव सर्वेषां भुक्तिमुक्ति-प्रदायिनी ॥४॥ सर्वपापहरा नृणां गर्भवासनिकृंतनी ॥ वरूथिन्या व्रतेनैव मांधाता स्वर्गतिं गतः ॥५॥ धुंधुमारादयश्चान्ये राजानो बहवस्तथा ॥ ब्रह्मकपालनिर्मुक्तो बभूव भगवान् भवः ॥६॥

ग्यकी प्राप्ति होय है ॥ ३ ॥ दुर्भगा स्त्रीभी जो या व्रतको करै तो वह सौभाग्यको प्राप्त होय यह सब लोकनको भुक्ति मुक्तिकी देनहारी है ॥ ४ ॥ और मनुष्यनके सब पापनको दूरि करै है या वरूथिनीके व्रत करनेहीसों मांधाता स्वर्गकी गतिको प्राप्त होत भयो ॥ ५ ॥ तैसेही और भी धुंधुमार आदि बहुतसे राजा पापनसे तथा भगवान्

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शिव ब्रह्मकपालसे मुक्त होत भये ॥ ६ ॥ दशहजार वर्षलों जो मनुष्य तप करै ताके फलके समान फल वरूथिनी एकादशीके व्रत करिके मिलै है ॥ ७ ॥ जो श्रद्धावान् मनुष्य वरूथिनीके व्रतको करै है वह पुरुष या लोक और परलोकमें वांछित फलको प्राप्त होय है ॥ ८ ॥ पवित्र और दूसरेको पावन करनहारी यह वरूथिनी महापातक-

दशवर्षसहस्राणि तपस्तप्यति यो नरः ॥ तत्तुल्यं फलमाप्नोति वरूथिन्या व्रतादपि ॥७॥ श्रद्धावान्यस्तु कुरुते वरूथिन्या व्रतं नरः ॥ वांछितं लभते सोऽपि इह लोके परत्र च ॥ ८ ॥ पवित्रा पावनी ह्येषा महापातकनाशिनी ॥ भुक्तिमुक्तिप्रदा ह्येषा कर्तॄणां नृपसत्तम ॥ ९ ॥ अश्वदानान्नृपश्रेष्ठ गजदानं विशिष्यते ॥ गजदानाद्भूमिदानं तिलदानं ततोऽधिकम् ॥ १० ॥ ततः सुवर्णदानं तु ह्यन्नदानं ततोऽधिकम् ॥ अन्नदानात्परं दानं न भूतं न भविष्यति ॥ ११ ॥ पितृदेवमनुष्याणां तृप्तिरन्नेन जायते ॥ तत्समं कविभिः प्रोक्तं कन्यादानं नृपोत्तम ॥ १२ ॥

नको नाश करै है हे नृपसत्तम ! व्रत करनहारे मनुष्यनको भुक्ति मुक्ति देती है ॥ ९ ॥ हे नृपश्रेष्ठ ! घोडेके दानते हाथीको दान विशेष है और गजके दानते भूमिको दान अधिक है तिलनको दान वाहूते अधिक है ॥ १० ॥ ताते सुवर्णदान अधिक है और अन्नदान वाहूते अधिक है अन्नदानते परे कोई दान न भयो न होइगो ॥११॥ पितृ देवता

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

और मनुष्यनकी तृप्ति अन्नहीसों होय है हे नृपोत्तम! कवीश्वरनने कन्यादान अन्नदानके समान कह्यो है ॥१२॥ और यह भगवान्ने आप भी कह्यो हैं कि, गौको दान वाकी बराबर है और कहे भये सब दाननते विद्यादान अधिक है ॥ १३ ॥ वरूथिनीको व्रत कारिके मनुष्य वाहि फलको प्राप्त होय है, जे मनुष्य

धेनुदानं च तत्तुल्यमित्याह भगवान्स्वयम् ॥ प्रोक्तेभ्यः सर्वदानेभ्यो विद्यादानं विशिष्यते ॥ १३ ॥ तत्फलं समवाप्नोति नरः कृत्वा वरूथिनीम् ॥ कन्यावित्तेन जीवंति ये नराः पापमोहिताः ॥ १४ ॥ ते नरा नरके यांति यावदाभूतसंप्लवम् ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन न ग्राह्यं कन्यकाधनम् ॥ १५ ॥ यश्च गृह्णाति लोभेन कन्यां क्रीत्वा च तद्धनम् ॥ सोऽन्यजन्मनि राजेन्द्र ओतुर्भवति निश्चितम् ॥ १६ ॥ कन्यां वित्तेन यो दद्याद्यथाशक्ति स्वलंकृताम् ॥ तत्पुण्यसंख्यां कर्तुं हि चित्रगुप्तो भवत्यलम् ॥ १७ ॥

पापसों मोहित होके कन्याके धनसों जीवैं हैं ॥ १४ ॥ ते मनुष्य महाप्रलयताईं नरकमें वास करैं हैं ताते सर्व प्रयत्नसों कन्याको धन नहीं लेनो चाहिये ॥ १५ ॥ जो लोभसों कन्याको बेचिके धनको लेत हैं सो निश्चय कारिके दूसरे जन्ममें बिलाव होय है यामें सन्देह नहीं ॥ १६ ॥ जो यथाशक्ति धनयुक्त कन्याको

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अलंकृत करिके दान करै है ताके पुण्यकी संख्या करनेको चित्रगुप्तहू समर्थ नहीं है ॥ १७ ॥ वा फलको मनुष्य वरूथिनी एकादशीके व्रत करनेसों प्राप्त होय है काँसेके पात्रमें न खाय १ मांस २ मसूरकी दाल ३ चना ४ कोदों ५ ॥ १८ ॥ शाक ६ शहद ७ परायो अन्न ८ ये सबन और दूसरी बार भोजन ९ स्त्रीसंग १० व्रत करनहारो वैष्णव दशमीके दिन ये ऊपर कही भई दश वस्तुनको त्याग करै ॥ १९ ॥ जुआ खेलना १

तत्फलं समवाप्नोति नरः कृत्वा वरूथिनीम् ॥ कांस्यं मांसं मसूरान्नं चणकान्कोद्रवांस्तथा ॥ १८ ॥
शाकं मधु परान्नं च पुनर्भोजनमैथुने ॥ वैष्णवो व्रतकर्त्ता च दशम्यां दश वर्जयेत् ॥ १९ ॥
द्यूतं क्रीडां च निद्रां च तांबूलं दंतधावनम् ॥ परापवादं पैशुन्यं पतितैः सह भाषणम् ॥ २० ॥
क्रोधं चैवानृतं वाक्यमेकादश्यां विवर्जयेत् ॥ कांस्यं मांसं मसूरांश्च क्षौद्रं वितथभाषणम् ॥ २१ ॥
व्यायामं च प्रयासं च पुनर्भोजनमैथुने ॥ क्षारं तैलं परान्नं च द्वादश्यां परिवर्जयेत् ॥ २२ ॥

सोवना २ पान ३ दतून ४ पराई निन्दा ५ चुगली ६ पतितोंके साथ बात करना ७ ॥ २० ॥ क्रोध ८ और झूँठी बात कहना ९ इन नव बातनको एकादशीके दिन न करै कांसेके पात्रमें भोजन १ मांस २ मसूर ३ शहद ४ झूँठ बोलना ५ ॥ २१ ॥ व्यायाम ६ श्रम ७ दूसरी बार भोजन ८ स्त्रीसंग ९ क्षार कहिये नोन आदि १० तेल ११

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पराये अन्न १२ इन बारह वस्तुको द्वादशीके दिन वर्जित करै ॥ २२ ॥ हे राजन् ! या विधिसों जिन करिके वरूथिनीको व्रत कियो गयो तिनके सब पापनको क्षय करिके यह वरूथिनी अंतर्मे अक्षय गतिको देय है ॥ २३ ॥ ताते सब जतनसों पापनते डरे भये और क्षपारि जे सूर्य हैं तिनके तनय जो यमराज हैं ताते डरे भये मनुष्यन करिके हे राजन् ! वह वरूथिनी एकादशी करनी योग्य है ॥ २४ ॥ हे राजन् ! याके

अनेन विधिना राजन्विहिता यैर्वरूथिनी ॥ सर्वपापक्षयं कृत्वा दद्याच्चान्तेऽक्षयां गतिम् ॥ २३ ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन कर्त्तव्या पापभीरुभिः ॥ क्षपारितनयाद्भीतैर्नरदेव वरूथिनी ॥ २४ ॥ पठनाच्छ्रवणाद्राजन् गोसहस्रफलं लभेत् ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तो विष्णुलोके महीयते ॥ २५ ॥ इति श्रीभवि० वैशाखकृष्णवरूथिन्येकादशीमाहात्म्यं समाप्तम् ॥ ११ ॥

पढने और सुननेसों हजार गौको फल प्राप्त होय है और सब पापनते मुक्त होके विष्णुलोकमें आनन्द करै है ॥ २५ ॥ इति श्रीमत्पण्डितपरमसुखतनयपण्डितकेशवप्रसादशर्म्मद्विवेदिकृतायामेकादशीमाहात्म्यभाषाटीकायां दीपिकासमाख्यायां वैशाखकृष्णपक्षस्य वरूथिन्येकादशीकथा समाप्ता ॥ ११ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ वैशाखशुक्लैकादशीकथा ॥ अथ माधवशुक्ले या मोहिन्येकादशी स्मृता ॥ तन्माहात्म्यस्य भाषायां टीकां सम्यक् तनोम्यहम् ॥१॥ युधिष्ठिर बोले कि, वैशाखके शुक्लपक्षमें जो एकादशी होय है ताको कहा नाम है वाको फल कहा है और विधि कैसी है हे जनार्दन ! सो तुम मोते कहो ॥ १ ॥ श्रीकृष्ण बोले कि, हे धर्मपुत्र ! मैं या कथाको

अथ वैशाखशुक्लैकादशीकथा ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ वैशाखशुक्लपक्षे तु किंनामैकादशी भवेत् ॥ किं फलं को विधिस्तस्याः कथयस्व जनार्दन ॥ १ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ कथयामि कथामेतां शृणु त्वं धर्मनंदन ॥ वसिष्ठो यामकथयत्पुरा रामाय पृच्छते ॥२॥ राम उवाच ॥ भगवञ्छ्रोतुमिच्छामि व्रतानामुत्तमं व्रतम् ॥ सर्वपापक्षयकरं सर्वदुःखनिकृंतनम् ॥ ३ ॥ मया दुःखानि भुक्तानि सीताविरहजानि वै ॥ ततोऽहं भयभीतोऽस्मि पृच्छामि त्वां महामुने ॥ ४ ॥

कहौं हौं तुम मन लगाके सुनो पहले जा कथाके पूंछनेपै वसिष्ठमुनिने रामचन्द्रसों कही ॥ २ ॥ रामचंद्र बोले कि, हे भगवन् ! सब पापनको क्षय करनहारो और दुःखनाशक सब व्रतनमें जो उत्तम व्रत है ताहि मैं सुना चाहौं हौं॥३॥ मैंने निश्चय करिके सीताके विरहसों उत्पन्न दुःख भोगे हैं ताते मैं भयभीत हौं और हे महामुने ! तुमसों पूँछौं हौं ॥४॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वसिष्ठ बोले कि, हे राम! तुमने भलो प्रश्न कीन्हो और तुम्हारी यह नैष्ठिकी मति है तुम्हारे नामके ग्रहणमात्रसों मनुष्य पवित्र हो जाय है ॥ ५ ॥ ताहूपै मनुष्यनके हितकी कामनासों मैं कहौंगो पावन जे ब्रह्मादिक हैं तिनहूंको पवित्र करनहारो सब व्रतनमें उत्तम व्रत कहौंगो ॥ ६ ॥ हे राम! वैशाखके शुक्लपक्षमें द्वादशीयुक्त जो एकादशी

वसिष्ठ उवाच ॥ साधु पृष्टं त्वया राम तवैषा नैष्ठिकी मतिः॥ त्वन्नामग्रहणेनैव पूतो भवति मानवः
॥ ५ ॥ तथापि कथयिष्यामि लोकानां हितकाम्यया ॥ पवित्रं पावनानां च व्रतानामुत्तमं व्रतम्
॥ ६ ॥ वैशाखस्य सिते पक्षे द्वादशी राम या भवेत् ॥ मोहिनी नाम सा प्रोक्ता सर्वपापहरा परा
॥ ७ ॥ मोहजालात्प्रमुच्येत पातकानां समूहतः ॥ अस्या व्रतप्रभावेण सत्यं सत्यं वदाम्यहम्
॥८॥ अतस्तु कारणाद्राम कर्तव्यैषा भवादृशैः॥ पातकानां क्षयकरी महादुःखविनाशिनी ॥९॥
शृणुष्वैकमना राम कथां पुण्यप्रदां शुभाम् ॥ अस्याः श्रवणमात्रेण महापापं प्रणश्यति ॥१०॥

होय है वह मोहिनी नामसों विख्यात सम्पूर्ण पापनकी नाश करनहारी है ॥ ७ ॥ याके व्रतके प्रभावसों मनुष्य मोहजालते और पापनके समूहते छूटि जाय है यह मैं सत्य कहौं हौं ॥८॥ हे राम! याते यह तुम सरीखे मनुष्यनकरिके करनी योग्य है यह कैसी है कि, पापनको तो क्षय करै है और महादुःखकी नाश करनहारी है ॥९॥ हे राम ! पुण्यकी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

देनहारी या शुभ कथाको एकाग्रमन होके सुनो याके श्रवणमात्रहीसों महापाप नाशकों प्राप्त होय है ॥ १० ॥ सरस्वती नदीके तटमें एक शुभ भद्रावती नाम पुरी है वामें धृतिमान् नाम राजा राज्य करै है ॥ ११ ॥ हे राम ! चन्द्रवंशमें उत्पन्न वह धृतिमान् राजा सत्यप्रतिज्ञावालो हो वहां धनधान्यकी समृद्धिसों भरो पूरो एक वैश्य निवास करै हो ॥१२॥ धनपाल वाको नाम हो और वह धर्मके कर्मनको प्रवृत्त करनहारो हो और प्याऊ और यज्ञशाला

सरस्वत्यास्तटे रम्ये पुरी भद्रावती शुभा ॥ द्युतिमान्नाम नृपतिस्तत्र राज्यं करोति वै ॥ ११ ॥
सोमवंशोद्भवो राम धृतिमान्सत्यसंगरः ॥ तत्र वैश्यो निवसति धनधान्यसमृद्धिमान् ॥ १२ ॥
धनपालइति ख्यातः पुण्यकर्मप्रवर्त्तकः ॥ प्रपासत्राद्यायतनतडागारामकारकः ॥ १३ ॥ विष्णु-
भक्तिपरः शांतस्तस्यासन्पंच पुत्रकाः ॥ सुमना द्युतिमांश्चैव मेधावी सुकृती तथा ॥ १४ ॥
पंचमो धृष्टबुद्धिश्च महापापरतः सदा ॥ वारस्त्रीसंगनिरतो विटगोष्ठीविशारदः ॥ १५ ॥

आदिको तथा तालाब बगीचा आदिको बनवानेवालो हो ॥ १३ ॥ विष्णुभक्तिमें रत शांतस्वरूप हो वाके पाँच पुत्र होत भये सुमना १ द्युतिमान् २ मेधावी ३ तथा सुकृती ४ ॥ १४ ॥ और पांचवों महापापमें सदा रत धृष्टबुद्धि ५ नाम होत भयो वह वेश्यानके संगमें रत रहतो और लुच्चनकी गोष्ठीमें चतुर हो ॥ १५ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जुआ आदि व्यसननमें आसक्त हो और पराई स्त्रीनके भोगमें लंपट हो और देवता अतिथि वृद्ध पितर तथा ब्राह्मणनको नहीं मानतो हो ॥ १६ ॥ अन्यायको करनहारो वह दुष्टात्मा पिताके द्रव्यको क्षय करतो हो अभक्ष्य वस्तुनको भक्षण करै और सदा मद्यपान करतो ॥ १७ ॥ वेश्यानके गलेमें गलबाहीं डारिके चौराहेमें भ्रमण करतो भयो देख्यो गयो तब पिताकरि घरते निकारयो गयो और भाई बंधुनहूने छोडि दीन्हों ॥ १८ ॥ फिरि

द्यूतादिव्यसनासक्तः परस्त्रीरतिलालसः ॥ न देवान्नातिथीन्वृद्धान् पितॄंश्चैव द्विजानपि ॥ १६ ॥
अन्यायकर्त्ता दुष्टात्मा पितुर्द्रव्यक्षयंकरः ॥ अभक्ष्यभक्षकः पापः सुरापानरतः सदा ॥ १७ ॥
वेश्याकंठक्षिप्तबाहुर्भ्रमन् भ्रष्टश्चतुष्पथे ॥ पित्रा निष्कासितो गेहात्परित्यक्तश्च बांधवैः ॥ १८ ॥
स्वदेहभूषणान्येव क्षयं नीतानि तेन वै ॥ गणिकाभिः परित्यक्तो निंदितश्च धनक्षयात् ॥ १९ ॥
ततश्चिंतापरो जातो वस्त्रहीनः क्षुधार्दितः ॥ किं करोमि क्व गच्छामि केनोपायेन जीव्यते ॥२०॥

वह अपने शरीरके आभूषणनको बेचि बेचि खर्च करतो भयो और सब बाकी निन्दा करनलगे ॥ १९ ॥ तब जाके पास वस्त्र नहीं और भूखसों दुःखी वह अपने मनमें सोचत भयो कि, कहा करौं और कहां जाऊं और कौनसे उपायसों जीवौं ॥ २० ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

फिर वाहि नगरमें चोरी करने लगो तब राजाके सिपाहिनने वाहि पकरिलीन्हों ता पीछे राजाके गौरवते छोडि दीन्हों ॥ २१ ॥ फिरि वह बांधो गयो और छोडो गयो तब हारिके राजाने वा धृष्टबुद्धि दुराचारीको कारागारमें पुष्ट बेरी डारिके बँधुआ करिदीन्हों ॥ २२ ॥ कोडनसों मार्‍यो और बारंबार पीडा दीन्ही और वासों कही

तस्करत्वं समारब्धं तत्रैव नगरे पुनः ॥ गृहीतो राजपुरुषैर्मुक्तश्च पितृगौरवात् ॥ २१ ॥ पुनर्बद्धः पुनर्मुक्तः पुनर्मुक्तः ससंभ्रमैः ॥ धृष्टबुद्धिर्दुराचारो निबद्धो निगडैर्दृढैः ॥ २२॥ कशाघातैस्ताडितश्च पीडितश्च पुनः पुनः ॥ न स्थातव्यं हि मंदात्मंस्त्वया मद्देशगोचरे ॥ २३ ॥ एवमुक्त्वा ततो राज्ञा मोचितो दृढबंधनात् ॥ निर्जगाम भयात्तस्य गतोऽसौ गहनं वनम् ॥ २४ ॥ क्षुत्तृषापीडितश्चायामितश्चेतश्च धावति ॥ सिंहवन्निजघानाऽसौ मृगसूकराचित्तलान् ॥ २५ ॥

कि, अरे दुष्ट दुराचारी! तू हमारे देशभरमें मत रहै ॥ २३ ॥ फिरि ऐसे कहिके राजाने वाहि दृढबंधनते छोडि दीन्हो वाके भयसों वह वहांते निकरिगयो और बडे घने वनमें चलो जातभयो ॥ २४ ॥ भूख प्याससों दुःखी वह वा वनमें इधर उधर भ्रमण करतभयो फिरि सिंहके समान मृगनको शूकरनको और चीतनको मारतभयो ॥२५॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सदा मांस खायके वनमें वास करै और हाथमें धनुष बाण ले पीठिमें तर्कस बांधे भये वहां भ्रमतो रहै ॥ २६ ॥
और वनके फिरनेवाले पक्षिनको तथा चौपायनको मारो करै और चकोर मोर कंक तीतर मूसे इनको मारतो रहै
॥ २७ ॥ वह धृष्टबुद्धि क्रूरस्वभाव इन कहेभये जीवनको तथा औरनको नित्य मारै पूर्वजन्मके करे भये पापक-

आमिषाहारनिरतो वने तिष्ठति सर्वदा ॥ करे शरासनं कृत्वा निषंगं पृष्ठसंगतम् ॥२६॥ अरण्य-
चारिणो हंति पक्षिणश्च चतुष्पदान् ॥ चकोरांश्च मयूरांश्च कंकांस्तित्तिरिमूषकान् ॥ २७ ॥
एतानन्यान्हंति नित्यं धृष्टधीर्निर्गतघृणः ॥ पूर्वजन्मकृतैः पापैर्निमग्नः पापकर्दमे ॥२८॥ दुःख-
शोकसमाविष्टश्चिंतयत्सोऽप्यहर्निशम् ॥ कौंडिन्यस्याश्रमपदं प्राप्तः पुण्यवशात्कचित् ॥ २९ ॥
माधवे मासि जाह्नव्यां कृतस्नानं तपोधनम् ॥ आससाद धृष्टबुद्धिः शोकभारेण पीडितः ॥३०॥
तद्वस्त्रबिंदुस्पर्शेन गतपाप्मा हताशुभः ॥ कौंडिन्यस्याग्रतः स्थित्वा प्रत्युवाच कृतांजलिः ॥३१॥

रिके पापरूप कीचमें फँसि गयो है ॥ २८ ॥ दुःख और शोकसे युक्त वह रातिदिन चिन्तामें रहत भयो फिरि
वह कबहूं पुण्यके वशसों कौंडिन्यऋषिके आश्रममें प्राप्त होत भयो ॥ २९ ॥ वैशाखके महीनेमें कियो है गंगाको
स्नान जिनने ऐसे ऋषिके समीप शोकके भारसों पीडित वह धृष्टबुद्धि जातभयो ॥३०॥ उनके वस्त्रते गिरो भयो जो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जलको बूंद है ताके स्पर्शसों गये हैं पाप जाके ऐसो वह कौंडिन्यके आगे ठाढो हो हाथ जोरिके बोलत भयो ॥ ३१ ॥ धृष्टबुद्धि बोलो कि, हे ब्रह्मन्! ऐसो प्रायश्चित्त बताओ जो यत्नके विनाही होजाय काहेते कि, या समय जन्मसों जो मैंने पाप किये हैं उनके प्रायश्चित्तके योग्य मेरे समीप धन नहीं है ॥ ३२ ॥ ऋषि बोले कि, जाते तेरे पापको क्षय होय सो तू एकाग्रमन होके सुन कि, वैशाखके शुक्लपक्षकी मोहिनीनाम एकादशी होय है ॥ ३३ ॥

धृष्टबुद्धिरुवाच ॥ प्रायश्चित्तं वद ब्रह्मन् विना यत्नेन यद्भवेत् ॥ आजन्मकृतपापस्य नास्ति वित्तं ममाधुना ॥ ३२ ॥ ऋषिरुवाच ॥ शृणुष्वैकमना भूत्वा येन पापक्षयस्तव ॥ वैशाखस्य सिते पक्षे मोहिनी नाम नामतः ॥ ३३ ॥ एकादशीव्रतं तस्मात्कुरु मद्वाक्यनोदितः ॥ मेरुतुल्यानि पापानि क्षयं नयति देहिनाम् ॥ ३४ ॥ बहुजन्मार्जितान्येषा मोहिनी समुपोषिता ॥ इति वाक्यं मुनेः श्रुत्वा धृष्टबुद्धिर्हसन् हृदि ॥ ३५ ॥

सो तू मेरे वचनकी प्रेरणासों या एकादशीको व्रत कर वह एकादशी सुमेरुपर्वतके समानभी मनुष्यनके पापनको नाश करिदेय है ॥ ३४ ॥ यह मोहिनी व्रत करनेसों अनेक जन्मके पाप क्षीण करदेती है मुनिको यह वचन सुनिके वह धृष्टबुद्धि अपने मनमें प्रसन्न होत भयो ॥ ३५ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

और कौंडिन्यके उपदेशते विधिवत् व्रत करत भयो हे नृपश्रेष्ठ ! व्रतके करनेसों वह हतपाप होजात भयो ॥ ३६ ॥ तापीछे दिव्यदेह होंके गरुडपर चढि सब उपद्रवन करिके रहित जो विष्णुको लोक है तामें जातभयो ॥ ३७ ॥ हे रामचंद्र ! तम और मोहको दूरि करनहारो यह ऐसो व्रत है और चराचर त्रैलोक्यमें याते अधिक और कुछ

व्रतं चकार विधिवत्कौंडिन्यस्योपदेशतः ॥ कृते व्रते नृपश्रेष्ठ हतपापो बभूव सः ॥ ३६ ॥
दिव्यदेहस्ततो भूत्वा गरुडोपरि संस्थितः ॥ जगाम वैष्णवं लोकं सर्वोपद्रववर्जितम् ॥ ३७ ॥
इतीदृशं रामचंद्र तमोमोहनिकृंतनम् ॥ नातः परतरं किंचित्त्रैलोक्ये सचराचरे ॥३८॥ यज्ञादि-
तीर्थदानानि कलां नार्हन्ति षोडशीम् ॥ पठनाच्छ्रवणाद्राजन् गोसहस्रफलं लभेत् ॥ ३९ ॥
इति श्रीकूर्मपुराणे वैशाखशुक्लमोहिन्येकादशीमाहात्म्यं समाप्तम् ॥ १२ ॥

नहीं है ॥ ३८ ॥ यज्ञादिक तीर्थ दान याकी सोलहवीं कलाके योग्य नहीं हैं हे राजन् ! पढने और सुननेते हजार गोदानको फल प्राप्त होय है ॥ ३९ ॥ इति श्रीमत्पंडितपरमसुखतनयपंडितकेशवप्रसादशर्म्मद्विवेदिकृताया-मेकादशीमाहात्म्यभाषाटीकायां दीपिकासमाख्यायां वैशाखशुक्लैकादशीकथा सम्पूर्णा ॥ १२ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ ज्येष्ठकृष्णैकादशीकथा ॥ ज्येष्ठस्य कृष्णपक्षे याऽपराख्यैकादशी स्मृता ॥ तन्माहात्म्यस्य भाषायां दीपिकां संतनोम्यहम् ॥ १ ॥ युधिष्ठिर बोले कि, ज्येष्ठके कृष्णपक्षकी एकादशीको कहा नाम है वाको माहात्म्य मैं सुनो चाहौं हौं हे जनार्दन ! सो कहिये ॥ १ ॥ श्रीकृष्णजी बोले कि, हे राजन् ! तुमने लोकनके हितकी कामनाके लिये

अथ ज्येष्ठकृष्णैकादशीकथा ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ ज्येष्ठस्य कृष्णपक्षे तु किंनामैकादशी भवेत् ॥ श्रोतुमिच्छामि माहात्म्यं तद्वदस्व जनार्दन ॥ १ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ साधु पृष्टं त्वया राजन् लोकानां हितकाम्यया ॥ बहुपुण्यप्रदा ह्येषा महापातकनाशिनी ॥ २ ॥ अपरा नाम राजेंद्र अपारफलदायिनी ॥ लोके प्रसिद्धतां याति अपरां यस्तु सेवते ॥ ३ ॥ ब्रह्महत्याभिभूतोऽपि गोत्रहा भ्रूणहा तथा ॥ परापवादवादी च परस्त्रीरसिकोऽपि च ॥ ४ ॥

अच्छो प्रश्न कीन्हो यह एकादशी बहुतसे पुण्यनकी देनहारी और महापातककी नाश करनहारी है ॥ २ ॥ अपरा याको नाम है हे राजेंद्र! यह अपरा फलकी देनहारी है जो अपराको सेवन करै है वह लोकमें प्रसिद्ध हो जाय है ॥३॥ ब्रह्महत्यारो गोत्रहत्यारो भ्रूणहत्यारो और पराई निंदा करनहारो तथा पराई स्त्रीनसों प्रीति करनहारो ॥ ४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे राजन्! ये सब अपराके सेवन करनेसों निश्चय करिके पापरहित होजायँ हैं जे झूँठी गवाही देय हैं और जे झूँठे प्रमाण देय हैं तथा जे कमती तोलैं हैं ॥ ५ ॥ और जे ब्राह्मण झूँठे वेदको पाठ करैं हैं और जे झूँठी शास्त्र बनावैं हैं जे ज्योतिषी झूँठी बातैं करैं हैं और झूंठोही वैद्यक करनवालो वैद्य ॥६॥ ये सब झूँठी गवाही देनेवालेके समान हैं और

अपरासेवनाद्राजन् विपाप्मा भवति ध्रुवम् ॥ कूटसाक्ष्यं मानकूटं तुलाकूटं करोति यः ॥५॥ कूटवेदं पठेद्विप्रः कूटशास्त्रं करोति च ॥ ज्योतिषी कूटगणकः कूटायुर्वेदको भिषक् ॥६॥ कूटसाक्षिसमा ह्येते विज्ञेया नरकौकसः ॥ अपरासेवनाद्राजन् पापमुक्ता भवंति ते ॥७॥ क्षात्रियः क्षात्रधर्मं यस्त्यक्त्वा युद्धात्पलायते ॥ स याति नरकं घोरं स्वीयधर्मबहिष्कृतः ॥ ८ ॥ अपरासेवनाद्राजन्पापं त्यक्त्वा दिवं व्रजेत् ॥ विद्यामधीत्य यः शिष्यो गुरुनिंदां करोति वै ॥ ९ ॥ महापातकयुक्तोऽपि निरयं याति दारुणम् ॥ अपरासेवनात्सोऽपि सद्गतिं प्राप्नुयान्नरः ॥ १० ॥

नरकके निवासी हैं हे राजन् ! ये सब अपराके सेवनसों पापनते छूटि जायँ हैं ॥ ७ ॥ जो क्षत्रिय अपने क्षात्रधर्मको छोडिके संग्रामते भागिजाय है अपने धर्मते बाहर कियो गयो वह घोर नरकको जाय है ॥ ८ ॥ वहभी अपराके सेवन करनेसों पापनको दूरि करिके स्वर्गको जाय है जो शिष्य विद्या पढिके गुरुकी निंदा करै है ॥९॥ वह महापातकसों

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

युक्त होके दारुण नरकको जाय है वह मनुष्य भी अपराके सेवनसों उत्तम गतिको प्राप्त होय है ॥ १० ॥ हे राजन् ! अपराकी महिमा सुनो मैं कहौं हौं तीनों पुष्करोंमें कार्त्तिकीके दिन स्नान करिके जा फलको प्राप्त होय है ॥ ११ ॥ और गंगामें पिंडदान करिके पितरनको तृप्ति देनहारी जैसे सिंहराशिकी बृहस्पतिमें गौतमी नदीमें स्नान करनहारे मनुष्य ॥ १२ ॥ जा फलको प्राप्त होय हैं और कुंभकी संक्रांतिमें केदारनाथके दर्शनसों जो फल

अपरामहिमानं तु शृणु राजन्वदाम्यहम् ॥ पुष्करत्रितये स्नात्वा कार्तिक्यां यत्फलं लभेत् ॥११॥ गंगायां पिंडदानेन पितॄणां तृप्तिदो यथा ॥ सिंहस्थिते देवगुरौ गौतमीस्नानतो नरः ॥१२॥ यत्फलं समवाप्नोति कुंभे केदारदर्शनात् ॥ बदर्याश्रमयात्रायां तत्तीर्थसेवनादपि ॥१३॥ यत्फलं समवाप्नोति कुरुक्षेत्रे रविग्रहे ॥ गजाश्वहेमदानानि यज्ञे कृत्स्नसुवर्णदः ॥१४॥ यत्फलं समवाप्नोति ह्यपराया व्रतान्नरः ॥ अर्धप्रसूतां गां दत्त्वा सुवर्णं वसुधां तथा ॥ १५ ॥

मिलै है और बदरिकाश्रमके दर्शनसों तथा वाहि तीर्थके सेवनसों ॥ १३ ॥ और सूर्यग्रहणमें कुरुक्षेत्रके स्नानसों जो फल प्राप्त होय है और हाथी घोडोंके दान करनेसे यज्ञमें सम्पूर्ण सुवर्णके देनेसों ॥ १४ ॥ और अपराके व्रत करनेसों मनुष्य जा फलको प्राप्त होयहै तैसेही आधी ब्याई भई गौके दानसों तथा सुवर्ण और पृथिवीके

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दानसों जो फल मिलैहै॥१५॥ मनुष्य अपरा एकादशीके व्रत करनेसों वाहि फलको प्राप्त होयहै यह व्रत पापरूपी वृक्षके काटनेको कुल्हारीरूपहै और पापरूपी इंधनके लिये दावानल है॥१६॥ और पापरूपी अंधकारको सूर्य है और पापरूपी मृगके लिये सिंह है पानीमें बुलबुलोंके समान और जीवोंमें भुनगोंके समान॥१७॥ वे एकादशीव्रतके विना मरनेहीको उत्पन्न होय हैं अपराको व्रत करिके और त्रिविक्रम भगवान्को पूजन करिके॥१८॥ सब पापनसों

नरस्तत्फलमाप्नोति अपराव्रतसेवनात् ॥ पापद्रुमकुठारोऽयं पापेंधनदवानलः ॥ १६ ॥ पापांधकारसूर्योऽयं पापसारंगकेसरी ॥ बुद्बुदा इव तोयेषु पुत्तिका इव जंतुषु ॥ १७ ॥ जायंते मरणायैव एकादश्या व्रतं विना ॥ अपरां समुपोष्यैव पूजयित्वा त्रिविक्रमम् ॥ १८ ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तो विष्णुलोकं व्रजेन्नरः॥ लोकानां च हितार्थाय तवाग्रे कथितं मया॥१९॥ पठनाच्छ्रवणाद्राजन्सर्वपापैः प्रमुच्यते॥२०॥ इति श्रीब्रह्माण्डपुराणे ज्येष्ठकृष्णैकादश्यपरामाहात्म्यं समाप्तम्॥१२॥

छूटिके मनुष्य विष्णुलोकको जाय है लोकनके हितके लिये मैंने तुमसे यह कथा कही ॥ १९ ॥ याके पाठ करनेसों और श्रवण करनेसों मनुष्य सब पापनते छूटिजाय है ॥ २० ॥ इति श्रीमत्पण्डितपरमसुखतनयपण्डितकेशवप्रसादशर्मद्विवेदिकृतायामेकादशीमाहात्म्यभाषाटीकायां दीपिकासमाख्यायां ज्येष्ठकृष्णापरैकादशीकथा समाप्ता ॥१३॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ ज्येष्ठशुक्लैकादशीकथा ॥ शुक्लस्य सितपक्षे या निर्जलैकादशी स्मृता ॥ तन्माहात्म्यस्य भाषायां व्याख्यां रम्यां तनोम्यहम् ॥१॥ भीमसेन बोले कि, हे महाबुद्धि पितामह! मेरो परम वचन सुनिये कि, युधिष्ठर, कुंती और द्रौपदी ॥१॥ अर्जुन, नकुल, सहदेव, हे सुव्रत! ये सब एकादशीको कभी भोजन नहीं करैं हैं ॥ २ ॥ वे मोसों सदा कहैं हैं

अथ ज्येष्ठशुक्लैकादशीकथा ॥ भीमसेन उवाच ॥ पितामह महाबुद्धे शृणु मे परमं वचः ॥ युधिष्ठिरश्च कुंती च तथा द्रुपदनंदिनी ॥ १ ॥ अर्जुनो नकुलश्चैव सहदेवस्तथैव च ॥ एकादश्यां न भुंजंति कदाचिदपि सुव्रत ॥ २ ॥ ते मां ब्रुवंति वै नित्यं मा त्वं भुंक्ष्व वृकोदर ॥ अहं तानब्रुवंस्तात बुभुक्षा दुःसहा मम ॥ ३ ॥ दानं दास्यामि विधिवत्पूजयिष्यामि केशवम् ॥ विनोपवासं लभ्येत कथमेकादशीव्रतम् ॥४॥ भीमसेनवचः श्रुत्वा व्यासो वचनमब्रवीत् ॥ व्यास उवाच ॥ यदि स्वर्गोऽस्त्यभीष्टस्ते नरको दुष्ट एव च ॥ ५ ॥

कि, हे वृकोदर! तू भोजन मत कर हे तात! म उनसों कहौं हौं कि, मेरी भूख दुःसह है अर्थात् मोपै भूख नहीं रुकै है ॥ ३ ॥ मैं नाना प्रकारके दान विधिपूर्वक करौंगो और केशव भगवान्को पूजन करौंगो व्रत करनेके विनाही मोको कैसे उपवासको फल मिलै ॥ ४ ॥ भीमसेनको यह वचन सुनिके व्यासजी बोले कि,

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जो तुमको स्वर्ग अतिप्यारो है और नरक बुरो लगै है ॥ ५ ॥ तो दोनों पक्षोंमें एकादशीको भोजन न करनो चाहिये भीमसेन बोले कि, हे महाबुद्धि पितामह ! मैं तुम्हारे आगे कहौं हौं ॥६॥ कि, हे मुने ! एकबारके भोजनसोंभी मोसे नहीं रह्यो जाय है तो उपवास कैसे होय वृकनाम जो अग्नि है वह सदा मेरे पेटमें रहे है ॥७॥

एकादश्यां न भोक्तव्यं पक्षयोरुभयोरपि ॥ भीमसेन उवाच ॥ पितामह महाबुद्धे कथयामि तवाग्रतः ॥ ६ ॥ एकभुक्ते न शक्तोऽहमुपवासः कथं मुने ॥ वृकनामापि यो वह्निः स सदा जठरे मम ॥ ७ ॥ अतीवान्नं यदाश्नामि तदा समुपशाम्यति ॥ एकं शक्तोऽस्म्यहं कर्तुं चोपवासं महामुने ॥ ८ ॥ येनैव प्राप्यते स्वर्गस्तत्करोमि यथातथम् ॥ तदेकं वद निश्चित्य येन श्रेयोऽहमाप्नुयाम् ॥ ९ ॥ व्यास उवाच ॥ श्रुता मे मानवा धर्मा वैदिकाश्च श्रुतास्त्वया ॥ कलौ युगे न शक्यंते ते वै कर्तुं नराधिप ॥ १० ॥

जब मैं बहुतही अन्न खाऊं हौं तब वह शांत होय है हे महामुने ! मैं एक व्रत करनेको समर्थ हौं ॥ ८ ॥ जासो स्वर्ग प्राप्त होय ताहि मैं यथार्थ विधिसों करौंगो सो आप वह एक निश्चय करिके बताइये जासों मैं कल्याणको प्राप्त होऊं ॥९॥ व्यासजी बोले कि, हे नराधिप ! तुमने मोते मनुष्यके और वेदके कहे भये धर्म सुने परंतु कलियुगमें उन-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

को करनो कठिन है ॥ १० ॥ सहज जाको उपाय है और जामें धनहू थोरो लगै है औरक्लेशके विनाही बहुतसो फल मिलै है और जो सब पुराणनको सारभूत है सो मैं तुमसों कहौं हौं ॥ ११ ॥ दोनों पक्षोंमें एकादशीके दिन भोजन नहीं करै है वह नरकको नहीं जाय है ॥१२॥ व्यासको वचन सुनिके भीमसेन पीपरके पत्तेके समान कांपि उठे फिर

सुखोपायं चाल्पधनमल्पक्लेशं महाफलम् ॥ पुराणानां च सर्वेषां सारभूतं वदामि ते ॥ ११ ॥
एकादश्यां न भुंजीत पक्षयोरुभयोरपि ॥ एकादश्यां न भुक्ते यो न याति नरकं तु सः ॥ १२ ॥
व्यासस्य वचनं श्रुत्वा कंपितोऽश्वत्थपत्रवत् ॥ भीमसेनो महाबाहुर्भीतो वाक्यमभाषत ॥ १३ ॥
भीमसेन उवाच ॥ पितामह न शक्तोऽहमुपवासे करोमि किम् ॥ ततो बहुफलं ब्रूहि व्रतमेकं मम प्रभो ॥ १४ ॥ व्यास उवाच ॥ वृषस्थे मिथुनस्थे वा शुक्ला ह्येकादशी भवेत् ॥ ज्येष्ठमासे प्रयत्नेन सोपोष्या जलवर्जिता ॥ १५ ॥

वह महाबाहु भीमसेन भयभीत होके वचन बोले ॥१३॥ भीमसेन बोले कि, हे पितामह ! मैं कहा करौं व्रत करनेको समर्थ नहीं हौं ताते हे प्रभो ! बहुत फल देनहारो एक व्रत मोसे कहिये ॥ १४ ॥ व्यासजी बोले कि, वृषके वा मिथुनके सूर्यमें ज्येष्ठके शुक्लपक्षकी एकादशी होय है सो जतनसों वाको निर्जल व्रत करनो चाहिये ॥ १५ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्नानमें और आचमनमें जल वर्जित नहीं है आचमनके जलको प्रमाण कहै हैं कि, मासेभर जल ले अर्थात जामें मासेभरकी सुवर्ण डूबि जाय ॥ १६ ॥ यह शरीर शुद्ध करनहारो पवित्र आचमन कह्यो है गौके कानके समान किये भये हाथ करिके एक मासेके प्रमाण जल पीवै ॥१७॥ वाते न्यून वा अधिक होय तौ मद्यपानके समान है

स्नाने चाचमने चैव वर्जयित्वोदकं बुधः ॥ माषमात्रसुवर्णस्य यत्र मज्जति वै मणिः ॥१६॥ एतदाचमनं प्रोक्तं पवित्रं कायशोधनम् ॥ गोकर्णकृतहस्तेन माषमात्रं जलं पिबेत् ॥१७॥ तन्न्यूनमधिकं पीत्वा सुरापानसमं भवेत् ॥ उपभुञ्जीत नैवान्नं व्रतभंगोऽन्यथा भवेत् ॥१८॥ उदयादुदयं यावद्वर्जयित्वा तथोदकम् ॥ अप्रयत्नादवाप्नोति द्वादशद्वादशीफलम् ॥ १९ ॥ प्रभाते विमले जाते द्वादश्यां स्नानमाचरेत् ॥ जलं सुवर्णं दत्त्वा च द्विजातिभ्यो यथाविधि ॥ २० ॥

अन्नको भोजन न करै अन्यथा व्रतको भंग होय है ॥ १८ ॥ एकादशी सूर्योदयते द्वादशीके सूर्योदयताईं न तो भोजन करै और न जल पीवै तो विनाही यत्न किये बारहों एकादशीनको फल प्राप्त होय ॥ १९ ॥ द्वादशीको निर्मल प्रभात होनेपै स्नान करै फिरि विधिपूर्वक ब्राह्मणके लिये जल तथा सुवर्णको दान करै ॥ २० ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वह वशी पुरुष कृतकृत्य होके ब्राह्मणके साथ भोजन करै या प्रकार करनेसों जो पुण्य होय है हे भीमसेन ! ताहि तुम सुनो ॥ २१ ॥ संवत्सरके मध्यमें जे एकादशी होय हैं उन सबनको फल या एकादशीमें प्राप्त होय है यामें संदेह नहीं है ॥ २२ ॥ शंख चक्र और गदाके धारण करनहारे भगवान्‌ने मोसों यह कही है कि, सब धर्मनको

भुंजीत कृतकृत्यस्तु ब्राह्मणैः सहितो वशी ॥ एवं कृते तु यत्पुण्यं भीमसेन शृणुष्व तत् ॥२१॥
संवत्सरस्य या मध्ये ह्येकादश्यो भवंति वै ॥ तासां फलमवाप्नोति अत्र मे नास्ति संशयः ॥२२॥
इति मां केशवः प्राह शंखचक्रगदाधरः ॥ सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ॥२३॥ एकाद-
श्यां निराहारान्नरः पापात्प्रमुच्यते ॥ द्रव्यशुद्धिः कलौ नास्ति संस्कारः स्मार्त एव च ॥ २४ ॥
वैदिकश्च कुतश्चास्ते प्राप्ते दुष्टे कलौ युगे ॥ किंतु ते बहुनोक्तेन वायुपुत्र पुनः पुनः ॥ २५ ॥
एकादश्यां न भुंजीत पक्षयोरुभयोरपि ॥ एकादश्यां सिते पक्षे ज्येष्ठस्योदकवर्जितम् ॥ २६ ॥

छोडकर एक मेरे शरण आओ ॥२३॥ एकादशीके दिन निराहार व्रत करनेसों मनुष्य पापनते छूटि जाय है कलि-युगमें द्रव्यकी शुद्धि नहीं है और स्मार्त्त संस्कारहू नहीं है ॥२४॥ और दुष्ट कलियुगके प्राप्त होनेपै वैदिक तो कहां है हे वायुपुत्र ! तुमसों बहुत कहनेसों कहा है ॥ २५ ॥ दोनों पक्षनमें एकादशीके दिन भोजन न करै और ज्येष्ठके

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शुक्लपक्षकी एकादशीको निर्ज्जल व्रत करै ॥ २६ ॥ या व्रतको करिके जा फलको प्राप्त होय है हे वृकोदर ! सो तुम सुनो सब तीर्थनमें जो पुण्य होय है और सब दाननमें जो फल होय ॥२७॥ हे वृकोदर ! याको व्रत करिके उन सबनको फल प्राप्त होय है जे वर्षभरमें शुक्लपक्ष और कृष्णपक्षकी एकादशी होय हैं ॥ २८ ॥ या एक एकादशी व्रत करनेसों धन धान्य बल आयुकी देनहारी और पुत्र तथा आरोग्यरूपी फलकी देनहारी जे वे सब

उपोष्य फलमाप्नोति तच्छृणुष्व वृकोदर ॥ सर्वतीर्थेषु यत्पुण्यं सर्वदानेषु यत्फलम् ॥२७॥ तत्फलं समवाप्नोति इमां कृत्वा वृकोदर ॥ संवत्सरेण या च स्युः शुक्ला कृष्णा वृकोदर ॥ २८ ॥ उपोषितास्ताः सर्वाः स्युरेकादश्यो न संशयः ॥ धनधान्यबलायुर्दाः पुत्रारोग्यधनप्रदाः ॥२९॥ उपोषिता नरव्याघ्र इति सत्यं वदामि ते ॥ यमदूता महाकायाः करालाः कृष्णपिंगलाः ॥ ३० ॥ दंडपाशधरा रौद्रा नोपसर्पंति तं नरम् ॥ पीतांबरधराः सौम्याश्चक्रहस्ता मनोजवाः ॥ ३१ ॥

एकादशी हैं तिनको फल प्राप्त होय है ॥ २९ ॥ हे नरव्याघ्र ! यह मैं तुमसों सत्य सत्य कहौं हौं और बडे शरीरके भयंकर काले पीले यमके दूत ॥ ३० ॥ भयानक दंड तथा फांसीको लिये भये वाके समीप नहीं आवै हैं पीतांबर धारण किये भये सौम्यस्वरूप चक्र हाथमें लिये भये जिनको वेग मनके समान है ॥ ३१ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ऐसे विष्णुके दूत अंतकालमें याके व्रत करनेहारे मनुष्यको विष्णुपुरीमें ले जाय हैं ताते सब जतननसों यह निर्ज्जल उपवास करनो योग्य है ॥३२॥ ता पीछे जलधेनुको दान करिके मनुष्य सब पापनते छूटि जाय है हे जनमेजय ! यह सुनिके ता पछि पांडव वा व्रतको करतभये ॥ ३३ ॥ हे राजन् ! ताते तुमहूं सब पापनकी शांतिके लिये

अंतकाले नयंत्येनं मानवं वैष्णवीं पुरीम् ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन सोपोष्योदकवर्जिता ॥३२॥ जल-धेनुं ततो दत्त्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ इति श्रुत्वा तदा चक्रुः पांडवा जनमेजय ॥ ३३ ॥ तथा त्वमपि भूपाल सोपवासार्चनं हरेः ॥ कुरु त्वं च प्रयत्नेन सर्वप्रापप्रशांतये ॥ ३४ ॥ करिष्याम्यद्य देवेश जलवर्जमुपोषणम् ॥ भोक्ष्ये परेऽह्नि देवेश ह्यनंत तव वासरात् ॥ ३५ ॥ इत्युच्चार्य ततो मंत्रमुपवासपरो भवेत् ॥ सर्वपापविनाशाय श्रद्धादमसमान्वितः ॥ ३६ ॥

जतनसों उपवाससहित हरिको पूजन करो ॥ ३४ ॥ हे देवदेवेश ! आज मैं जलवर्जित व्रत करौंगो हे अनंत ! हे देवेश ! तुम्हारे वासरते दूसरे दिन भोजन करौंगो ॥ ३५ ॥ ता पीछे या मंत्रको उच्चारण करिके उपवासमें तत्पर होत भयो सब पापनके नाशके लिये श्रद्धा और दम जो इन्द्रियोंका वश करना है ता करिके व्रत करै ॥ ३६ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सुमेरु और मंदराचलके समान स्त्रीको वा पुरुषको पाप एकादशीके प्रभावसों भस्म हो जाय है ॥ ३७ ॥ वस्त्रमें लपेटिके सुवर्णसमेत घटको दान करनो चाहिये और जो या निर्ज्जला एकादशीमें जलको नियम करै है वही पुण्यको भागी है ॥ ३८ ॥ जो मनुष्य या एकादशीके दिन पहर पहरमें स्नान, दान, जप, होम करै है वह करोड पल सुवर्ण-

मेरुमंदरमानं तु स्त्रियोऽथ पुरुषस्य वा ॥ सर्वं तद्भस्मतां याति एकादश्याः प्रभावतः ॥ ३७ ॥
सकांचनः प्रदातव्यो घटो वस्त्रेण संवृतः ॥ तोयस्य नियमं तस्यां कुरुते वै स पुण्यभाक् ॥३८॥
पलकोटिसुवर्णस्य यामे यामेऽश्नुते फलम् ॥ स्नानं दानं जपं होमं यदस्यां कुरुते नरः ॥ ३९ ॥
तत्सर्वं चाक्षयं प्रोक्तमेतत्कृष्णस्य भाषितम् ॥ किंवा परेण धर्मेण निर्जलैकादशी नृप ॥ ४० ॥
उपोषिता च विधिवद्वैष्णवं पदमाप्नुयात् ॥ सुवर्णमन्नं वासांसि यदस्यां संप्रदीयते ॥४१॥ तस्यैव
च कुरुश्रेष्ठ सर्वं चाप्यक्षयं भवेत् ॥ एकादशीदिने योऽन्नं भुंक्ते पापं भुनक्ति सः ॥ ४२ ॥

दानके फलको प्राप्त होय है ॥ ३९ ॥ वह सब अक्षय कहोगयो है यह कृष्णको वचन है हे नृप ! जो निर्जला एकादशीको व्रत कियो तो और धर्म करनेको कहा प्रयोजन है ॥ ४० ॥ विधिवत् उपवास करनहारो मनुष्य विष्णुधामको प्राप्त होय है और याके दिन जो सुवर्ण, अन्न, वस्त्र दियो जाय है ॥ ४१ ॥ हे कुरुवंशमें श्रेष्ठ ! वह सब देने-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वालेको अक्षय होय है और जो एकादशीको अन्न भोजन करै है वह पापको भोजन करै है ॥ ४२ ॥ या लोकमें वह चांडाल होय और मृत्यु होकरिके परलोकमें दुर्गतिको प्राप्त होय है और जे द्वादशीयुक्त एकादशीको व्रत करिके दान करैंगे ॥ ४३ ॥ ज्येष्ठमासके शुक्लपक्षमें वे परमपद अर्थात् मोक्षको प्राप्त होयँगे ब्रह्महत्यारो, मद्यप, चोर, गुरुसों द्वेष करनहारो, सदा झूँठ बोलनहारो ॥ ४४ ॥ इन सबनमें जे एकादशीको व्रत करैं हैं वे सब

इह लोके स चांडालो मृतः प्राप्नोति दुर्गतिम् ॥ ये प्रदास्यंति दानानि द्वादशीं समुपोष्य च ॥४३॥ ज्येष्ठमासि सिते पक्षे प्राप्स्यंति परमं पदम् ॥ ब्रह्महा मद्यपः स्तेनो गुरुद्वेष्टा सदानृती ॥४४॥ मुच्यंते पातकैः सर्वैर्द्वादशी यैरुपोषिता ॥ विशेषं शृणु कौंतेय निर्जलैकादशीदिने ॥ ४५ ॥ यत्कर्तव्यं नरैः स्त्रीभिः श्रद्धादमसमन्वितैः ॥ जलशायी तु संपूज्यो देया धेनुश्च तन्मयी ॥ ४६ ॥ प्रत्यक्षं वा नृपश्रेष्ठ घृतधेनुरथापि वा ॥ दक्षिणाभिश्च श्रेष्ठाभिर्मिष्टान्नैश्च पृथग्विधैः ॥ ४७ ॥

पापनते छूटिजाय हैं हे कुंतीके पुत्र ! निर्जला एकादशीके दिन जो विशेष है ताहि सुनो ॥ ४५ ॥ श्रद्धा तथा दम करिके युक्त होय स्त्री पुरुषनको यह करनो चाहिये कि, जलशायी भगवान्‌को पूजन करैं और जलमयी धेनुका दान करैं ॥ ४६ ॥ हे नृपश्रेष्ठ ! अथवा प्रत्यक्ष गौको दान करैं अथवा घृतकी धेनुको दान करैं ६९

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

और वाके साथमें नाना प्रकारके मिष्टान्न देके दक्षिणानसों ब्राह्मणको संतुष्ट करैं ॥ ४७ ॥ हे धर्मधारिनमें श्रेष्ठ ! यत्नसों ब्राह्मण संतुष्ट करने चाहिये उनके संतुष्ट होनेसों मोक्षके देनहारे हरि संतुष्ट होय हैं ॥ ४८ ॥ जिन करिके या एकादशीको व्रत नहीं कियोगयो उन करिके अपने आत्मासों द्रोह कियो गयो ये पापात्मा और दुराचार हैं यामें संदेह नहीं है ॥ ४९ ॥ जा मनुष्यने या एकादशीको व्रत कियो वाने सदा अनाचार करनहारे

तोषणीयाः प्रयत्नेन द्विजा धर्मभृतां वर ॥ तुष्टो भवति वै क्षिप्रं तैस्तुष्टैर्मोक्षदो हरिः ॥ ४८ ॥ आत्मद्रोहः कृतस्तैस्तु यैर्नैषा समुपोषिता ॥ पापात्मानो दुराचारा दुष्टास्ते नात्र संशयः॥४९॥ कुलानां च शतं साग्रमनाचाररतं सदा ॥ आत्मना सह संनीतं वासुदेवस्य मन्दिरम् ॥५०॥ शांतैर्दानपरैश्चैव अर्चद्भिश्च तथा हरिम् ॥ कुर्वद्भिर्जागरं रात्रौ यैर्नरैः समुपोषिता ॥ ५१ ॥ अन्नं पानं तथा गावो वस्त्रं शय्यासनं शुभम् ॥ कमंडलुस्तथा छत्रं दातव्यं निर्जलादिने ॥ ५२ ॥

अपने कुलके एकसौ एक पुरुष पीछेके और सौ आगेके आप समेत वासुदेव भगवान्के मंदिरमें पहुँचाय दीन्हें ॥ ५० ॥ और जिन सदा शांत और दानमें पर होके रात्रिमें जागरण कियो और हरिको पूजन करिके एकादशीको व्रत कियो उनके पिछले सौ पुरुष तथा आगेके सौ वा समेत विष्णुलोकको जायँ हैं ॥५१॥ अन्न, जल, गौ,

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वस्त्र, शय्या और सुंदर आसन कमंडलु और छत्र ये सब निर्जला एकादशीके दिन देने चाहिये ॥ ५२ ॥ और जो उत्तम पात्र ब्राह्मणको उपानह अर्थात् जूतनको दान करै है वह सुवर्णके विमानमें चाढि निश्चय करिके विष्णुलोकको जाय है ॥ ५३ ॥ जो मनुष्य भक्तिसों या कथाको सुनै हैं और जो कहैं हैं वे दोनों स्वर्गको जायँहैं यामें विचार नहीं करनो चाहिये ॥ ५४ ॥ सिनीवाली अमावास्यामें सूर्य-

उपानहौ च यो दद्यात्पात्रभूते द्विजोत्तमे ॥ स सौवर्णेन यानेन स्वर्गलोके व्रजेद्ध्रुवम् ॥५३॥ यश्चेमां शृणुयाद्भक्त्या यश्चापि परिकीर्त्तयेत् ॥ उभौ तौ स्वर्गतौ स्यातां नात्र कार्या विचारणा ॥५४॥ यत्फलं तु सिनीवाल्यां राहुग्रस्ते दिवाकरे ॥ कृत्वा श्राद्धं लभेन्मर्त्यस्तदस्याः श्रवणादपि ॥५५॥ नियमं च प्रकुर्वीत दंतधावनपूर्वकम् ॥ एकादश्यां निराहारो वर्जयिष्यामि वै जलम् ॥ ५६ ॥ केशवप्रीणनार्थाय अन्यदाचमनादृते ॥ द्वादश्यां देवदेवेशः पूजनीयस्त्रिविक्रमः ॥ ५७ ॥

ग्रहणके समय श्राद्ध करनेसों मनुष्य जा फलको पावै है सो याकी कथा सुननेसों प्राप्त होय है ॥ ५५ ॥ दँतून करिके नियम करे कि, आज एकादशीको निराहार व्रत करौंगो और जलहू नहीं पीवौंगो ॥ ५६ ॥ केशव भगवान्‌की प्रसन्नताके लिये आचमनको छोडि और जल न पीवै और द्वादशीके दिन त्रिविक्रमको पूजन करै॥५७॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गंध पुष्प तथा दीपसों और जल कारिके हरिको प्रसन्न करै और विधानसों पूजन कारि या मंत्रको उच्चारण करै ॥ ५८ ॥ कि, हे देवदेव ! हे हृषीकेश ! हे संसारसमुद्रसे तारणवाले ! या जलकुंभके दान कारिके मोको परमगतिको पहुँचाओ ॥ ५९ ॥ ता पीछे हे भीम ! यथाशक्ति ब्राह्मणनके लिये अन्न, वस्त्र, छत्र, उपा-

गंधपुष्पैस्तथा दीपैर्वारिभिः प्रीणयेद्धरिम् ॥ पूजयित्वा विधानेन मंत्रमेतमुदीरयेत् ॥५८॥ देव-देव हृषीकेश संसारार्णवतारक ॥ उदकुंभप्रदानेन नय मां परमां गतिम् ॥ ५९ ॥ ततः कुंभाः प्रदातव्या ब्राह्मणेभ्यः स्वशक्तितः ॥ सान्ना वस्त्रयुता भीम छत्रोपानत्फलान्विताः ॥६०॥ दाना-न्यन्यानि देयानि जलधेनुर्विशेषतः ॥ भोजयित्वा ततो विप्रान् स्वयं भुंजीत वाग्यतः ॥ ६१ ॥ एवं यः कुरुते पूर्णां द्वादशीं पापनाशिनीम् ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तः पदं गच्छत्यनामयम् ॥ ६२ ॥

नह और फलन कारिके युक्त घटनको दान करै ॥ ६० ॥ और हू दान देने चाहिये जलधेनु तो विशेष कारि देनी योग्य है ता पीछे ब्राह्मणनको भोजन कराके आपहू मौन होके भोजन करै ॥ ६१ ॥ ऐसी जो पापनकी नाश करनहारी द्वादशीको पूर्ण करै है वह सब पापनते मुक्त होके निर्दोष पदको प्राप्त होय है ॥ ६२ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तबते लगाके भीम करि यह शुभ एकादशी कीगई और पांडवद्वादशी नामसों लोकमें प्रसिद्ध होती भई ॥ ६३ ॥ इति श्रीमत्पण्डितपरमसुखतनयपण्डितकेशवप्रसादशर्मद्विवेदिकृतायामेकादशीमाहात्म्यभाषाटीकायां दीपिकासमाख्यायां ज्येष्ठशुक्लैकादशीनिर्जलामाहात्म्यं समाप्तम् ॥ १४ ॥ अथाषाढकृष्णैकादशीकथा ॥ आषाढस्यासिते पक्षे

ततः प्रभृति भीमेन कृता ह्येकादशी शुभा ॥ पांडवद्वादशी नाम्ना लोके ख्याता बभूव ह ॥ ६३ ॥
इति श्रीब्रह्म० पु० ज्ये० शु० निर्जलै० माहात्म्यं स० ॥ १४ ॥ अथाषाढकृष्णैकादशीकथा ॥
युधिष्ठिर उवाच ॥ ज्येष्ठशुक्ले निर्जलाया माहात्म्यं वै श्रुतं मया ॥ आषाढकृष्णपक्षे तु किंनामैकादशी भवेत् ॥ १ ॥ कथयस्व प्रसादेन ममाग्रे मधुसूदन ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ व्रतानामुत्तमं राजन्कथयामि तवाग्रतः ॥ २ ॥

योगिन्येकादशी तु या ॥ तन्माहात्म्यस्य भाषायां टीकां कुर्वे सुदीपिकाम् ॥ १ ॥ युधिष्ठिर बोले कि, हे महाराज ! ज्येष्ठके शुक्लपक्षकी निर्जला एकादशीको माहात्म्य मैंने सुनो अब आषाढकृष्णपक्षकी एकादशीको कहा नाम है ॥ १ ॥ हे मधुसूदन ! प्रसन्नतासों मेरे आगे कहो श्रीकृष्ण बोले कि, हे राजन् ! तुम्हारे आगे मैं सब व्रतनमें

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

उत्तम व्रत कहौं हौं ॥२॥ सम्पूर्ण पापनकी नाश करनहारी और भुक्ति मुक्तिकी देनहारी है आषाढके कृष्णपक्षमें योगिनी नाम एकादशी होय है ॥ ३ ॥ हे नृपश्रेष्ठ ! यह एकादशी महापातकनकी नाश करनहारी है और संसार-समुद्रमें डूबे भये मनुष्यको पार करनहारी सनातन है ॥ ४ ॥ हे नराधिप ! तीनों लोकनमें यह योगिनी सारभूत

सर्वपापक्षयकरं भुक्तिमुक्तिप्रदायकम् ॥ आषाढस्यासिते पक्षे योगिनी नाम नामतः ॥३॥ एकादशी नृपश्रेष्ठ महापातकनाशिनी ॥ संसारार्णवमग्नानां पाररूपा सनातनी ॥ ४ ॥ जगत्त्रये सारभूता योगिनीति नराधिप ॥ कथयामि कथां तस्याः पौराणीं पापहारिणीम् ॥ ५ ॥ अलकाधिपतिर्नाम्ना कुबेरः शिवपूजकः ॥ तस्यासीत्पुष्पबटुको हेममालीति नामतः ॥ ६ ॥ तस्य पत्नी सुरूपा च विशालाक्षीति नामतः ॥ स तस्यां स्नेहसंयुक्तः कामपाशवशं गतः ॥ ७ ॥ मानसात्पुष्पनिचयमानीय स्वगृहे स्थितः ॥ पत्नीप्रेमसमायुक्तो न कुबेरालयं गतः ॥ ८ ॥

है याकी पुराणनमें जो पापनकी हरनेवाली कथा है ताहि मैं कहौं हौं ॥ ५ ॥ अलकापुरीको स्वामी कुबेर नाम शिवको पूजक है उनके पूजनके लिये फूलनको लावनहारो हेममाली नाम एक यक्ष हो ॥ ६ ॥ वाकी स्वरूपवती स्त्रीको विशालाक्षी नाम हो वासों वह प्रीतियुक्त होके कामके वशीभूत होत भयो ॥७॥ मानससरोवरते फूलनको

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ढेर लायके अपने घरमें ठहर जात भयो पत्नीकी प्रीतिके मारे कुबेरके स्थानमें नहीं जात भयो ॥ ८ ॥ कुबेर शिवालयमें शिवको पूजन कर रहे हे राजन् ! मध्याह्नके समयमें फूलोंकी राह देखि रहे हैं ॥ ९ ॥ और हेममाली तो अपने घरमें विशालाक्षीके साथ विहार करि रह्यो हो देरी हो जानेके कारण कुबेर क्रोधित होके

कुबेरो देवसदने करोति शिवपूजनम् ॥ मध्याह्नसमये राजन् पुष्पाणि न समीक्षते ॥ ९ ॥ हेम-
माली स्वभवने रमते हि तया सह ॥ यक्षराट् प्रत्युवाचाथ कालातिक्रमकोपितः ॥१०॥ कस्मा-
न्नायाति भो यक्षा हेममाली दुरात्मवान् ॥ निश्चयः क्रियतामस्य प्रत्युवाच पुनः पुनः ॥ ११ ॥
यक्षा ऊचुः ॥ वनिताकामुको गेहे रमते स्वेच्छया नृप ॥ तेषां वाक्यं समाकर्ण्य कुबेरः कोपपू-
रितः ॥ १२ ॥ आह्वयामास तं तूर्णं बटुकं हेममालिनम् ॥ ज्ञात्वा कालात्ययं सोऽपि भयव्या-
कुललोचनः ॥ १३ ॥

बोले ॥ १० ॥ अरे यक्षो ! यह दुष्ट हेममाली काहेसों नहीं आयो है या वार्ताको निश्चय करनो चाहिये यह बारंबार कहत भयो ॥ ११ ॥ बोले कि, हे राजन् ! वह स्त्रीकी प्रीतिके मारे अपने घरमें ईच्छापूर्वक विहार करै है उन यक्षनके वचन सुनिके कुबेर बहुतही क्रोधित भये ॥ १२ ॥ और वा फूल लावनहारे हेममालीको शीघ्रही

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बुलावत भये वह बीतो समय जानिके भयसों व्याकुलनेत्र होत भयो ॥ १३ ॥ आयो और भयसों व्याकुल होके नमस्कार करि कुबेरके आगे ठाढो होत भयो वाहि देखि कुबेर क्रोधित भये और क्रोधसे आंखें लाल हो गईं ॥ १४ ॥ क्रोधसे भरे भये और कोपसों कंपायमान हैं होठ जिनके ऐसे कुबेर बोलत भये अरे पापी दुष्ट दुरा-

आजगाम नमस्कृत्य कुबेरस्याग्रतः स्थितः ॥ तं दृष्ट्वा धनदः क्रुद्धः कोपसंरक्तलोचनः ॥ १४ ॥ प्रत्युवाच रुषाविष्टः कोपाद्विस्फुरिताधरः ॥ धनद उवाच ॥ रे पाप दुष्ट दुर्वृत्त कृतवान्देवहेलनम् ॥ १५ ॥ अतो भव श्वित्रयुक्तो वियुक्तः कांतया सदा ॥ अस्मात् स्थानादपध्वस्तो गच्छ स्थानमथाधमम् ॥ १६ ॥ इत्युक्ते वचने तेन तस्मात् स्थानात्पपात सः ॥ महादुःखाभिभूतश्च कुष्ठपीडितविग्रहः ॥ १७ ॥ न वै तोयं न भक्ष्यं च वने रौद्रे लभत्यसौ ॥ न सुखं दिवसे तस्य न निद्रां लभते निशि ॥ १८ ॥

चारी ! तैंने देवताकी अवज्ञा कीन्ही ॥१५॥ याते तू श्वित्र नाम सफेद कुष्ठ करिके युक्त और स्त्रीसे सदा वियुक्त होजा और या स्थानते गिरिके अधमस्थानको जा ॥ १६ ॥ जब कुबेरने ऐसे वचन कहे तब वह वहांते गिरत भयो तब वह महादुःखी और श्वित्र कोढसों पीडित होत भयो ॥ १७ ॥ वह वा भयानक वनमें न तो अन्न

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

और न जल पावत भयो न तो वाको दिनमें सुख होत भयो और न रात्रिमें नींद आई ॥ १८ ॥ छायामें जातो तब तो वाके शरीरमें पीडा होती और घाममें दाह होन लगतो परन्तु शिवकी पूजाके प्रतापते वाकी स्मृति गई ही नहीं ॥ १९ ॥ पापन करि दबाय लियो गयो है ताहूपै वाको पहले कर्मको स्मरण रह्यो ता पीछे भ्रमतो २ सब पर्वतनमें उत्तम जो हिमालय है ताको जात भयो ॥ २० ॥ तहां मुनिनमें श्रेष्ठ जे तपोनिधि मार्कण्डेय ऋषि

छायायां पीडिततनुर्निदाघेऽत्यंतपीडितः ॥ शिवपूजाप्रभावेण स्मृतिस्तस्य न लुप्यते ॥१९॥
पातकेनाभिभूतोऽपि कर्म पूर्वमनुस्मरन् ॥ भ्रममाणस्ततोऽगच्छद्धिमाद्रिं पर्वतोत्तमम् ॥ २० ॥
तत्रापश्यन्मुनिवरं मार्कंडेयं तपोनिधिम् ॥ तस्यायुर्विद्यते राजन्ब्रह्मणो दिनसप्तकम् ॥ २१ ॥
आश्रमं स गतस्तस्य ऋषेर्ब्रह्मसदःसमम् ॥ ववंदे चरणौ तस्य दूरतः पापकर्मकृत् ॥२२॥ मार्कं-
डेयो मुनिवरो दृष्ट्वा तं कुष्ठिनं तदा ॥ परोपकरणार्थाय समाहूयेदमब्रवीत् ॥ २३ ॥

हैं तिनको देखत भयो उनकी आयु ब्रह्माके सात दिनकी ही ॥ २१ ॥ ब्रह्माकी सभाके समान जो ऋषिको आश्रम हो तामें जात भयो वह पापकर्म करनहारो दूरिते उनके चरणनको नमस्कार करत भयो ॥ २२ ॥ तब मार्कण्डेय मुनिवर वा कोढीको देखिके परायो उपकार करनेके लिये वाहि बुलायके यह कहतभये ॥ २३ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मार्कण्डेय बोले कि, तेरे कुष्ठ काहेते भयो है और तू काहेते निन्दित होगयो है उन बुद्धिमान् मार्कण्डेय करि ऐसे कहो गयो वह यक्ष बोलत भयो ॥ २४ ॥ हेममाली बोल्यो कि, हे मुनि महाराज! मैं कुबेरको सेवक हौं हेममाली मेरो नाम है म प्रतिदिन मानससरोवरते पुष्पनको समूह लायके ॥ २५ ॥ शिवपूजनके समय कुबेरको

मार्कंडेय उवाच ॥ कस्मात्कुष्ठाभिभूतस्त्वं कुतो निंद्यतरो ह्यसि ॥ इत्युक्तः प्रत्युवाचाथ मार्कंण्डेयेन धीमता ॥२४॥ हेममाल्युवाच ॥ यक्षराजस्यानुचरो हेममालीति नामतः ॥ मानसात्पुष्पनिचयमानीय प्रत्यहं मुने ॥२५॥ शिवपूजनवेलायां कुबेराय समर्पये ॥ एकस्मिन्दिवसे काललोपश्च विहितो मया ॥ २६ ॥ पत्नीसौख्यप्रसक्तेन कामव्याकुलचेतसा ॥ ततः क्रुद्धेन शप्तोऽहं राजराजेन वै मुने ॥ २७ ॥ कुष्ठाभिभूतः संजातो विभक्तः कांतया सह ॥ अधुना तव सान्निध्यं प्राप्तोऽस्मि शुभकर्मणा ॥ २८ ॥

देतो हो सो एक दिन मैंने काललोप कियो अर्थात् देर लगाई ॥ २६ ॥ स्त्रीके सुखमें लग्यो भयो मैं कामसों व्याकुलचित्त हो हे मुने! तामें क्रोधित कुबेर करि शाप दियो गयो ॥ २७ ॥ मैं कोढी होगयो और स्त्रीते जुदो होगयो अब मेरो कोई ऐसो शुभ कर्म उदय भयो है जाते मैं आपके समीप आयो हौं ॥ २८ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सज्जननको चित्त स्वभावहीसों पराये उपकारमें समर्थ होय है हे मुनिश्रेष्ठ ! यह जानिके पाप करनहारो जो मैं हौं ताहि शिक्षा देउ ॥ २९ ॥ मार्कण्डेय बोले कि, जाते तैंने यहां सत्य कही झूंठ नहीं कही याते मैं तोको कल्याण देनहारे व्रतको उपदेश करौंगो ॥ ३० ॥ तू आषाढके कृष्णपक्षमें योगिनी नाम एकादशीको

सतां स्वभावतश्चित्तं परोपकरणक्षमम् ॥ इति ज्ञात्वा मुनिश्रेष्ठ शाधि मां च कृतैनसम् ॥२९॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ त्वया सत्यमिह प्रोक्तं नासत्यं भाषितं यतः ॥ अतो व्रतोपदेशं ते करिष्यामि शुभप्रदम् ॥ ३० ॥ आषाढे कृष्णपक्षे त्वं योगिनीव्रतमाचर ॥ अस्य व्रतस्य पुण्येन कुष्ठात्त्वं मुच्यसे ध्रुवम् ॥ ३१ ॥ इति वाक्यं मुनेः श्रुत्वा दंडवत्पतितो भुवि ॥ उत्थापितश्च मुनिना बभूवातीव हर्षितः ॥ ३२ ॥ मार्कण्डेयोपदेशेन कृतं तेन व्रतोत्तमम् ॥ तद्व्रतस्य प्रभावेण देवरूपो बभूव सः ॥ ३३ ॥

व्रत कर या व्रतके पुण्यप्रभावसों तू निश्चय कुष्ठते छूटि जायगो ॥ ३१ ॥ मुनिको यह वचन सुनिके पृथिवीमें दंडवत् प्रणाम करत भयो और मुनि करि उठायो गयो तब वह बहुतही प्रसन्न होत भयो ॥ ३२ ॥ मार्कंडेयमुनिके उपदेशसों वाने उत्तम व्रत कियो वा व्रतके प्रभावसों वह देवरूप हो जातभयो ॥ ३३ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्त्रीसों संयोगको प्राप्त भयो और उत्तम सुख भोगन लगो हे नृपश्रेष्ठ ! ऐसो योगिनीको व्रत मैंने कह्यो ॥३४॥
जो अट्ठासी हजार ब्राह्मणनको भोजन करावै है ताके फलको व्रत करनहारो मनुष्य प्राप्त होय है ॥ ३९ ॥
महापापनकी शान्त करनहारी और बडे पुण्यफलकी देनहारी आषाढकृष्णपक्षकी एकादशी मैंने तुमसो कही

संयोगं कांतया लेभे बुभुजे सौख्यमुत्तमम् ॥ ईदृग्विधं नृपश्रेष्ठ कथितं योगिनीव्रतम् ॥ ३४ ॥
अष्टाशीतिसहस्राणि द्विजान् भोजयते तु यः ॥ तत्फलं समवाप्नोति योगिनीव्रतकृन्नरः ॥ ३५ ॥
महापापप्रशमनी महापुण्यफलप्रदा ॥ शुचौ कृष्णैकादशी ते कथिता योगिनी नृप ॥ ३६ ॥
इति श्रीब्रह्मवैवर्ते आषाढकृष्णैकादशीयोगिनीमाहात्म्यं समाप्तम् ॥ १५॥ अथाषाढशुक्लैकादशी-
कथा ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ आषाढस्य सिते पक्षे किंनामैकादशी भवेत् ॥ को देवः को विधि-
स्तस्या एतदाख्याहि केशव ॥ १ ॥

॥ ३६ ॥ इति श्रीमत्पण्डितकेशवप्रसादशर्म्मद्विवेदिकृतायामेकादशीमाहात्म्यभाषाटीकायां दीपिकासमाख्याया-
माषाढकृष्णैकादशीयोगिनीकथा समाप्ता ॥ १५ ॥ अथाषाढशुक्लैकादशीदेवशयनीकथा ॥ शुचेः शुक्ले तु या
देवशयनीति प्रकीर्तिता ॥ तन्माहात्म्यस्य भाषायां टीकां सम्यक्करोम्यहम् ॥१॥ युधिष्ठिर बोले कि, आषाढके शुक्ल-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पक्षकी एकादशीको कहा नाम है वाको देवता कौन है और वाकी विधि कैसी है हे केशव! यह मोसों कहो ॥१॥
श्रीकृष्ण बोले कि, हे महाराज ! जाको ब्रह्माने महात्मा नारदके अर्थ कही वा आश्चर्य करावनहारी कथाको
मैं तुमसों कहौं हौं ॥ २ ॥ नारद बोले कि, हे महाराज! विष्णुके आराधनके लिये मोसों प्रसन्नतासे कहिये कि,

श्रीकृष्ण उवाच ॥ कथयामि महीपाल कथामाश्चर्यकारिणीम् ॥ कथयामास यां ब्रह्मा नारदाय महात्मने ॥ २ ॥ नारद उवाच ॥ कथयस्व प्रसादेन विष्णोराराधनाय मे ॥ आषाढशुक्लपक्षे तु किंनामैकादशी भवेत् ॥ ३ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ वैष्णवोऽस्मि मुनिश्रेष्ठ साधु पृष्टं कलिप्रिय ॥ नातः परतरं लोके पवित्रं हरिवासरात् ॥ ४ ॥ कर्तव्यं तु प्रयत्नेन सर्वपापापनुत्तये ॥ तस्मात्तेऽहं प्रवक्ष्यामि शुक्ल एकादशीव्रतम् ॥ ५ ॥ एकादश्या व्रतं पुण्यं पापघ्नं सर्वकामदम् ॥ न कृतं यैर्नरैर्लोके ते नरा निरयैषिणः ॥ ६ ॥

आषाढके शुक्लपक्षमें कौनसे नामकी एकादशी होय है ॥ ३ ॥ ब्रह्मा बोले कि, हे मुनिश्रेष्ठ ! तुम वैष्णव हो हे कलिप्रिय ! तुमने भलो प्रश्न कियो लोकमें हरिवासरते परे और कोई पवित्र नहीं है ॥४॥ सम्पूर्ण पाप दूर करनेके लिये यह यत्नसों कर्त्तव्य है ताते मैं तुमसों शुक्लपक्षकी एकादशीको व्रत कहौंगो ॥५॥ एकादशीको व्रत पवित्र है

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पापनको नाश करै है और सब कामना देय है जिन मनुष्यनने याको व्रत लोकमें नहीं कीन्हों वे नरकगामी हैं ॥ ६ ॥ आषाढके महीनेमें शुक्लपक्षकी पद्मा नाम एकादशी विख्यात है हृषीकेश भगवान्‌की प्रीतिके लिये याको उत्तम व्रत करनो योग्य है ॥ ७ ॥ मैं तुम्हारे आगे उत्तम पुराणकी कथा कहौंहा जा कथाके सुनने मात्रहीसों महापाप नाशको प्राप्त होय हैं ॥ ८ ॥ सूर्य्यवंशमें उत्पन्न मान्धाता नाम राजानमें ऋषि होत भयो

पद्मानामेति विख्याता शुचौ ह्येकादशी सिता ॥ हृषीकेशप्रीतये तु कर्तव्यं व्रतमुत्तमम् ॥ ७ ॥
कथयामि तवाग्रेऽहं कथां पौराणिकीं शुभाम् ॥ यस्या श्रवणमात्रेण महापापं प्रणश्यति ॥ ८ ॥
मान्धाता नाम राजर्षिर्विवस्वद्वंशसंभवः ॥ बभूव चक्रवर्त्ती स सत्यसंधः प्रतापवान् ॥९॥ धर्मतः
पालयामास प्रजाः पुत्रानिवौरसान् ॥ न तस्य राज्ये दुर्भिक्षं नाधयो व्याधयस्तथा ॥ १० ॥
निरातंकाः प्रजास्तस्य धनधान्यसमन्विताः ॥ नान्यायोपार्जितं द्रव्यं कोशे तस्य महीपतेः॥ ११ ॥

सत्यप्रतिज्ञावालो वह प्रतापवान् चक्रवर्त्ती होतभयो ॥ ९ ॥ वह अपने निजपुत्रनके समान प्रजाको धर्मसों पालन करत भयो वाके राज्यमें दुर्भिक्ष मानसीव्यथा तथा रोगआदि कोई उपद्रव नहीं होत भयो ॥ १० ॥ वाकी प्रजा निरातंक धनधान्यसों भरीपूरी होतभई और वा राजाके भंडारमें अन्यायसों इकट्ठो कियो भयो धन नहीं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

होतभयो ॥ ११ ॥ वाको या प्रकार राज्य करते बहुतसे वर्ष व्यतीत होतभये या पीछे कबहूं पापकर्मके परिणामसों
॥ १२ ॥ वाके देशमें तीन वर्षताई मेघ नहीं वर्षत भयो वाते क्षुधासों पीडित वाकी प्रजा उद्विग्न हो जात भई ॥१३॥

अन्नके न उत्पन्न होनेसों पीडित वाके देश स्वाहा, स्वधा, वषट्कार और वेदके अध्ययन कारि वर्जित होजात भये

तस्यैवं कुर्वतो राज्यं बहुवर्षगणो गतः ॥ अथो कदाचित्संप्राप्ते विपाके पापकर्मणः ॥ १२ ॥
वर्षत्रयं तद्विषये न ववर्ष बलाहकः ॥ तेनोद्विग्नाः प्रजास्तत्र बभूवुः क्षुधयार्दिताः ॥१३॥ स्वाहा-
स्वधावषट्कारवेदाध्ययनवर्जिताः ॥ बभूवुर्विषयास्तस्य सस्याभावेन पीडिताः ॥ १४ ॥ अथ
प्रजाः समागत्य राजानमिदमब्रुवन् ॥ श्रूयतां वचनं राजन् प्रजानां हितकारकम् ॥१५॥ आपो
नारा इति प्रोक्ताः पुराणेषु मनीषिभिः ॥ अयनं ता भगवतस्तेन नारायणः स्मृतः ॥१६॥ पर्ज्य-
न्यरूपी भगवान् विष्णुः सर्वगतः सदा ॥ स एव कुरुते वृष्टिं वृष्टेरन्नं ततः प्रजाः ॥ १७ ॥

॥ १४ ॥ या पछि प्रजानके समूह आयके राजासों यह कहत भये हे राजन् ! प्रजानको हित करनवालो वचन
सुनिये ॥ १५ ॥ पुराणमें पंडितनने जलको नाम नारा कह्यो है वे जल भगवान्के अयन कहिये स्थान हैं ताते
नारायण कहेगये हैं ॥ १६ ॥ वे मेघरूप भगवान् विष्णु सदा सर्वव्यापी है वेई वृष्टिको करै हैं ताते अन्न होयहै और वा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अन्नते प्रजा होयहै ॥१७॥ हे राजन् ! वा अन्नके अभावसों प्रजा क्षयको प्राप्त होय है हे नृपश्रेष्ठ ! ऐसो करो जाते आपके देशमें कुशल होय ॥ १८ ॥ राजा बोले कि, तुमने सत्य कही कुछ मिथ्या नहीं है अन्न ब्रह्ममय कह्यो गयो है अन्नहीमें सब स्थित हैं ॥ १९ ॥ अन्नते जीव होय हैं जगत् अन्नहीसों वर्तमान है यह ऐसो लोकमें सुनो

तदभावेन नृपते क्षयं गच्छंति वै प्रजाः ॥ तथा कुरु नृपश्रेष्ठ योगक्षेमो यथा भवेत् ॥ १८ ॥
राजोवाच ॥ सत्यमुक्तं च भवता न मिथ्याभिहितं वचः ॥ अन्नं ब्रह्ममयं प्रोक्तमन्ने सर्वं प्रतिष्ठितम् ॥ १९ ॥ अन्नाद्भवंति भूतानि जगदन्नेन वर्त्तते ॥ इत्येवं श्रूयते लोके पुराणे बहुविस्तरे ॥ २० ॥
नृपाणामपचारेण प्रजानां पीडनं भवेत् ॥ नाहं पश्याम्यात्मकृतं दोषं बुद्ध्या विचारयन् ॥२१॥
तथापि प्रयतिष्यामि प्रजानां हितकाम्यया ॥ इति कृत्वा मतिं राजापरिमेयबलान्वितः ॥२२॥

जाय है और बहुत विस्तारयुक्त पुराणनमें हू कह्यो है ॥ २० ॥ राजानके अपराधसों प्रजानको पीडा होय है मैंने बुद्धिसों विचारिके देख्यो तो अपनो कियो दोष नहीं देख्यो है ॥ २१ ॥ ताहूपै प्रजानकी हितकी कामनासों यत्न करौंगो वह राजा ऐसी मति करिके बहुतसी सेनाकरिके युक्त ॥ २२ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विधाताको नमस्कार करिके घने वनको जात भयो और मुख्य २ मुनिनके तप करि बढे भये आश्रमनमें विचरत भयो ॥ २३ ॥ या पीछे वह राजा ब्रह्माके पुत्र जे आंगिरस ऋषि हैं तिनको देखत भयो तेजसों प्रकाशमान कीन्ही हैं दिशा जिनने ऐसे वे मुनि दूसरे ब्रह्माके समान स्थित है ॥ २४ ॥ उनको देखिके प्रसन्न

नमस्कृत्य विधातारं जगाम गहनं वनम् ॥ चचार मुनिमुख्यानामाश्रमांस्तपसैधिनाम् ॥ २३ ॥
ददर्शाथ ब्रह्मसुतमृषिमांगिरसं नृपः ॥ तेजसा द्योतितादिशं द्वितीयमिव पद्मजम् ॥ २४ ॥ तं
दृष्ट्वा हर्षितो राजा ह्यवतीर्य च वाहनात् ॥ नमश्चक्रेऽस्य चरणौ कृतांजलिपुटो वशी ॥ २५ ॥
मुनिस्तमभिनंद्याथ स्वास्तिवाचनपूर्वकम् ॥ पप्रच्छ कुशलं राज्ये सप्तस्वंगेषु भूपतेः ॥ २६ ॥
निवेदयित्वा कुशलं पप्रच्छानामयं नृपः ॥ ततश्च मुनिना राजा पृष्टागमनकारणः ॥ २७ ॥

वह वशी राजा वाहनते उतरिके उनके चरणनको नमस्कार करि हाथ जोरिके स्थित होत भयो ॥ २५ ॥ ७७
मुनि स्वस्तिवाचनपूर्वक वाको आशीर्वाद देके राज्यमें और राज्यके सातों अंगनमें कुशल पूंछत भयो ॥ २६ ॥
तब राजा अपनी कुशल कहिके मुनिसों कुशल पूंछत भयो ता पीछे मुनिने राजासों आवनेको कारण पूछो ॥२७ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तब राजा उन मुनिश्रेष्ठसों अपने आगमनको कारण कहत भयो राजा बोले कि, हे भगवन् ! धर्मकी विधिसों मेरे राज्य करतेहू अनावृष्टि भई है अर्थात् सुखा परो है मैं याको कारण नहीं जानौं हौं ॥ २८ ॥ या सन्देहको दूरि करिवेको आपके समीप आयो हौं योगक्षेमके विधानसों प्रजानको सुख कीजिये ॥ २९ ॥ ऋषि बोले कि हे राजन् !

अब्रवीन्मुनिशार्दूलं स्वस्यागमनकारणम् ॥ राजोवाच ॥ भगवन्धर्मविधिना मम पालयतो महीम् ॥ अनावृष्टिः संप्रवृत्ता नाहं वेद्म्यत्र कारणम् ॥ २८ ॥ संशयच्छेदनार्थाय ह्यागतोऽहं तवांतिकम् ॥ योगक्षेमविधानेन प्रजानां निर्वृतिं कुरु ॥ २९ ॥ ऋषिरुवाच ॥ एतत् कृतयुगं राजन्युगानामुत्तमं स्मृतम् ॥ अत्र ब्रह्मोत्तरालोका धर्मश्चात्र चतुष्पदः ॥ ३० ॥ तस्मिन्युगे तपोयुक्ता ब्राह्मणा नेतरे जनाः ॥ विषये तव राजेन्द्र वृषलो यत्तपस्यति ॥ ३१ ॥ अकार्य-करणात्तस्य न वर्षति बलाहकः ॥ कुरु तस्य वधे यत्नं येन दोषः प्रशाम्याति ॥ ३२ ॥

यह सत्ययुग सब युगनमें उत्तम है यामें लोग वेद बहुत पढे हैं और यामें धर्महूके चारों चरण हैं ॥ ३० ॥ या युगमें ब्राह्मण तप करिके युक्त हैं और जाति नहीं हे राजेंद्र ! तुम्हारे देशमें जो शूद्र तपस्या करै है ॥ ३१ ॥ ताके अयोग्य

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

करनेसों मेघ नहीं बरसै है ताते वाके मारनेको यत्न करो जाते दोष शांत होय ॥ ३२ ॥ राजा बोले कि, मैं तप करते भये या निरपराधीको नहीं मारौंगो ऐसो धर्मको उपदेश कीजिये जाते उपद्रवको नाश होय ॥ ३३ ॥ ऋषि बोले कि, हे राजन्! जो ऐसोही है तो आषाढके शुक्लपक्षमें पद्मा नाम जो एकादशी प्रसिद्ध है ताको व्रत करो ॥ ३४ ॥

राजोवाच ॥ नाहमेनं वधिष्यामि तपस्यंतमनागसम् ॥ धर्मोपदेशं कथय उपसर्गविनाशनम् ॥ ३३ ॥ ऋषिरुवाच ॥ यद्येवं तर्हि नृपते कुरुष्वैकादशीव्रतम् ॥ शुचिमासे शुक्लपक्षे पद्मा नामेति विश्रुता ॥ ३४ ॥ तस्या व्रतप्रभावेण सुवृष्टिर्भविता ध्रुवम् ॥ सर्वसिद्धिप्रदा ह्येषा सर्वोपद्रवनाशिनी ॥ ३५ ॥ अस्या व्रतं कुरु नृप सप्रजः सपरिच्छदः ॥ इति वाक्यं मुनेः श्रुत्वा राजा स्वगृहमागतः ॥ ३६ ॥ आषाढमासे संप्राप्ते पद्माव्रतमथाकरोत् ॥ प्रजाभिः सह सर्वाभिश्चातुर्वर्ण्यसमन्वितः ॥ ३७ ॥

वाके व्रतके प्रभावसों निश्चय वर्षा होयगी यह एकादशी सब सिद्धि देनहारी और उपद्रवनकी नाश करनेहारी है ॥ ३५ ॥ हे राजन्! कुटुंब और प्रजासमेत याको व्रत करो मुनिको यह वचन सुनिके राजा अपने घरको आवत भयो ॥ ३६ ॥ ता पीछे आषाढ महीनेके आनेपै सबरी प्रजासमेत चारों वर्णन करिके युक्त पद्माको व्रत

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

करत भयो ॥ ३७ ॥ हे राजन् ! या प्रकार व्रत करनेपै मेघ वर्षत भयो और जलसों प्लावित पृथिवी सब प्रकारके धान्यनकी माला करिके युक्त होत भई ॥ ३८ ॥ और हृषिकेश भगवान्के प्रसादसों सब जन सुखको प्राप्त होत भये या कारणसों यह उत्तम व्रत करनो योग्य है ॥ ३९ ॥ भुक्ति मुक्तिको देनेहारो और लोकनको

एवं कृते व्रते राजन्प्रववर्ष बलाहकः ॥ जलेन प्लाविता भूमिरभवत्सस्यमालिनी ॥ ३८ ॥ हृषीकेशप्रसादेन जनाः सौख्यं प्रपेदिरे ॥ एतस्मात्कारणादेव कर्त्तव्यं व्रतमुत्तमम् ॥ ३९ ॥ भुक्तिमुक्तिप्रदं चैव लोकानां सुखदायकम् ॥ पठनाच्छ्रवणादस्याः सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ ४० ॥ इयमेकादशी राजञ्छयनीत्यभिधीयते ॥ विष्णोः प्रसादसिद्ध्यर्थमस्यां च शयनव्रतम् ॥४१॥ कर्त्तव्यं राजशार्दूल जनैर्मोक्षेच्छुभिः सदा ॥ चातुर्मास्यव्रतारंभोऽप्यस्यामेव विधीयते ॥ ४२ ॥

सुखदायक है याके पढने और सुननेसों मनुष्य सब पापनते छूटिजाय हैं ॥४०॥ हे राजन् ! यह एकादशी शयनी कही जाती है विष्णुकी प्रसन्नताकी सिद्धिके लिये यामें शयनव्रत कह्यो है ॥ ४१ ॥ हे राजशार्दूल ! मोक्षकी इच्छा करनेहारे मनुष्यन करि याको व्रत सदा करना योग्य है और चातुर्मास्यव्रतहूको आरंभ याहि एकादशीते

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

 होय है ॥ ४२ ॥ युधिष्ठिर बोले कि, हे कृष्ण ! विष्णुको शयनव्रत कैसे करनो चाहिये हे देव ! सो और
चातुर्मास्यके व्रत मोसों कृपा करिके कहो ॥ ४३ ॥ श्रीकृष्ण बोले कि, हे कौन्तेय ! सुनो मैं गोविन्दके शय-
 नको व्रत कहौंगो और चार्तुमास्यमें जे व्रत कहेगये हैं उनहूंको कहौंगो ॥ ४४ ॥ कर्कराशिमें सूर्यके जानेपै

युधिष्ठिर उवाच ॥ कथं कृष्ण प्रकर्त्तव्यं श्रीविष्णोः शयनव्रतम् ॥ तद्ब्रूहि कृपया देव चातुर्मा-
स्यव्रतानि च ॥ ४३ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ शृणु पार्थ प्रवक्ष्यामि गोविन्दशयनव्रतम् ॥ चातु-
र्मास्ये च यान्युक्तान्यासंस्तानि व्रतानि च ॥ ४४ ॥ कर्कराशिगते सूर्ये शुचौ शुक्ले तु पक्षके ॥
एकादश्यां जगन्नाथं स्वापये मधुसूदनम् ॥ ४५ ॥ तुलाराशिस्थिते तस्मिन्पुनरुत्थापयेद्धरिम् ॥
आधिमासेऽपि पतित एष एव विधिः क्रमात् ॥ ४६ ॥ नान्यदा स्वापयेद्देवं तथैवोत्थापयेद्ध-
रिम् ॥ आषाढस्य सिते पक्षे एकादश्यामुपोषितः ॥ ४७ ॥

आषाढके शुक्लपक्षमें एकादशीके दिन जगत्के स्वामी जे मधुसूदन हैं तिनको शयन करावे ॥ ४५ ॥ फिरि
सूर्यको तुलराशिमें जानेपै हरिको जगावे अधिकमासके आजानेपैहू यही विधि क्रमसों कही है ॥ ४६ ॥ या
विधिते अन्य देवनको न सुवावै और न उठावै आषाढमहीनेके शुक्लपक्षमें एकादशीके दिन व्रत करिके ॥ ४७ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे युधिष्ठिर ! या प्रकार विष्णुकी प्रतिमाको स्थापन करिके चातुर्मास्यव्रतनको परिकल्पन करै ॥ ४८ ॥ शंख, चक्र, गदा धारण करनहारी विष्णुकी प्रतिमाको स्नान करावे फिर पीतांबर धारण कराके वा सौम्य मूर्तिको सपेद वस्त्र जापै बिछे हैं और तकिया जापै लगे हैं ऐसी शय्यापै सपेदही वस्त्र उढाके शयन करावै ॥ ४९ ॥

चातुर्मास्यव्रतानां तु कुर्वीत परिकल्पनम् ॥ एवं च प्रतिमां विष्णोः स्थापयित्वा युधिष्ठिर ॥४८॥ स्नापयेत्प्रतिमां विष्णोः शंखचक्रगदाधराम् ॥ पीतांबरधरां सौम्यां पर्यंके वै सिते शुभे ॥ सितवस्त्र-समाच्छन्ने सोपधाने युधिष्ठिर ॥ ४९ ॥ इतिहासपुराणज्ञो ब्राह्मणो वेदपारगः ॥ स्नापयित्वा दधि-क्षीरघृतक्षौद्रसितादिभिः ॥५०॥ समालेप्य शुभैर्गंधैर्धूपैर्दीपैश्च भूरिशः ॥ पूजयेत्कुसुमैः शस्तै-र्मंत्रेणानेन पांडव ॥ ५१ ॥ शायितस्त्वं हृषीकेश पूजयित्वा श्रिया सह ॥ प्रसादं कुरु देवेश लक्ष्म्या सह जनार्दन ॥ ५२ ॥

इतिहास और पुराणनको जाननहारो वेदनको पारगामी ब्राह्मण दही, दूध, घी, शहद, शर्करा आदि मिलाके पंचामृतसों स्नान करावै ॥ ५० ॥ और उत्तम गंधनसों लेपन करिके बहुतसे धूप दीपनसों और सुन्दर सुगंधित फूलनसों पूजन करिके हे पाण्डव ! या मंत्रको पढै ॥५१॥ हे हृषीकेश ! मैंने पूजन करिके तुमको लक्ष्मीसमेत शयन

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

करायो हे देवेश ! हे जनार्दन ! आप लक्ष्मीसमेत मेरे ऊपर प्रसन्न होउ ॥ ९२ ॥ हे जगन्नाथ ! तुम्हारे सोव-
नेपै चराचर जगत् सोय गयो हे युधिष्ठिर ! वा पहली कही भई विष्णुकी प्रतिमाको स्थापित करके ॥ ९३ ॥
वाहि मूर्तिके आगे स्थित होके मनुष्य चातुर्मास्यके व्रतनको नियम करै जो वर्षाके चारि मासनमें देवोत्थानी एका-

सुप्ते त्वयि जगन्नाथ जगत् सुप्तं चराचरम् ॥ एवं तां प्रतिमां विष्णोः स्थापयित्वा युधिष्ठिर ॥९३॥
तस्या एवाग्रतः स्थित्वा गृह्णीयान्नियमान्नरः ॥ चतुरो वार्षिकान्मासान्देवस्योत्थापनावधि ॥९४॥
प्रातःसंध्यादिकं सर्वं नित्यं कर्म समाप्य च ॥ ग्रहीष्ये नियमाञ्छुद्धान्निर्विघ्नान्कुरु मे प्रभो ॥९५॥
इति संप्रार्थ्य देवेशं प्रह्वः संशुद्धमानसः ॥ स्त्री वा नरो वा मद्भक्तो धर्मार्थं च धृतव्रतः ॥ ९६ ॥
गृह्णीयान्नियमानेतान्दंतधावनपूर्वकम् ॥ व्रतप्रारंभकालास्तु प्रोक्ताः पंचैव विष्णुना ॥ ९७ ॥

दशीलों होय है ॥ ९४ ॥ प्रातःसंध्या और नित्य कर्मनको समाप्त करके शुद्ध जो नियम हैं तिनको मैं ग्रहण करौं
हौं हे प्रभो ! मेरे उन कर्मनको निर्विघ्न पूरे करो ॥ ९५ ॥ ऐसे देवेश जो विष्णु हैं तिनकी प्रार्थना करिके नम्र
और शुद्ध मन होक स्त्री होय चाहे पुरुष हो मेरो भक्त धर्मके अर्थ व्रतको धारण करै ॥ ९६ ॥ और दंतधावन करिके

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इन नियमनको ग्रहण करै और व्रत आरंभ करनेके विष्णुने पांचही काल कहे हैं ॥ ५७ ॥ मनुष्य आषाढके महीनेमें चातुर्मास्य व्रतनको आरंभ करनो एकादशीते वा द्वादशीते वा पूनोंते अथवा अष्टमीते कह्यो है ॥ ५८॥ और पांचवीं कर्ककी संक्रांति इनमें विधिपूर्वक चारि प्रकारते ग्रहण करिके चातुर्मास्य व्रतको आरंभ करै

उपक्रमं चतुर्मासव्रतानां च नरः शुचौ ॥ एकादशी द्वादशी च पूर्णिमा च तथाष्टमी ॥ ५८ ॥
कर्कटा चैव संक्रांतिस्तासु कुर्याद्यथाविधि ॥ चतुर्धा गृह्य वै चीर्णं चातुर्मास्यव्रतं नरः ॥ ५९ ॥
कार्तिके शुक्लपक्षे तु द्वादश्यां तत्समापयेत् ॥ तेषां फलानि वक्ष्यामि कर्तॄणां ते पृथक् पृथक् ॥ ६० ॥
आषाढे शुक्लपक्षे तु एकादश्यामुपोषितः ॥ चातुर्मास्यव्रतं कुर्याद्यत्किंचिद्वनीपते ॥ ६१ ॥ नान्यथा चाब्दिकं पापं विनिहंति प्रयत्नतः ॥ न शैशवं च मौढ्यं च शुक्रगुर्वोर्निं वार्धकम् ॥ ६२ ॥

॥ ५९ ॥ फिरि कार्तिकके शुक्लपक्षमें द्वादशीको समास करै उनके फल कहौंगो जे करनहारे मनुष्यनको पृथक् २ मिलैं हैं ॥ ६० ॥ आषाढके शुक्लपक्षमें एकादशीको व्रत करि हे राजन् ! यत्किञ्चित् चातुर्मास्य व्रत करै ॥ ६१ ॥ अन्यथा काहू यत्नसों वर्षभरको पाप नहीं नाश होय है शुक्र और बृहस्पतिको शिशुपन और मूढता

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अर्थात् अस्त या व्रतके आरंभमें बाधक नहीं है ॥ ६२ ॥ मनुष्य पहिले चातुर्मास्य व्रत करनेमें खंडत्वका विचार करि ले कि खंड अंगमें व्यापी सूर्य होय और तिथि अखंड होय तो आरंभ करै अशुचि होय वा शुचि होय स्त्री होय वा पुरुष होय ॥ ६३ ॥ मनुष्य एक व्रत करिके सब पापनसों छूटि जाय है देवकर्म और

खंडत्वे चिंतयेदादौ चातुर्मास्यविधौ नरः ॥ खंडांगव्यापिमार्त्तंडो यद्यखंडा भवेत्तिथिः ॥ अशु-
चिर्वा शुचिर्वापि यदि स्त्री यदि वा पुमान् ॥ ६३ ॥ व्रतमेकं नरः कृत्वा मुच्यते सर्वपातकैः ॥
असंक्रांतं तथा मासं दैवे पित्र्ये च कर्मणि ॥ ६४ ॥ मलरूपमशौचं च वर्जयेन्मतिमान्नरः ॥
प्रतिवर्षं तु यः कुर्याद्व्रतं वै संस्मरन् हरिम् ॥ ६५ ॥ देहांतेऽतिप्रदीप्तेन विमानेनार्कतेजसा ॥
मोदते विष्णुलोकेऽसौ यावदाभूतसंप्लवम् ॥ ६६ ॥

पितृकर्ममें संक्रांतिरहित मास वर्जित है ॥ ६४ ॥ और बुद्धिमान् मनुष्य मलरूप जो अशौच है ताको वर्जित करै प्रतिवर्ष जो मनुष्य हरिको स्मरण करतो भयो या व्रतको करै है ॥ ६५ ॥ वह देहके अंतसमय अतिप्रकाश-मान और सूर्यके समान है तेज जाको ऐसे विमानमें चढि विष्णुलोकमें जायके महाप्रलयपर्यंत आनंद करै है ॥६६॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

देवतानके मंदिरको नित्य झारनो और जलको छिडकाव करनो और गोबरसों लीपनो तथा रंगसों वल्ली आदि करनो ॥ ६७ ॥ हे नरश्रेष्ठ ! चातुर्मास्यमें जो इन ऊपरके श्लोकमें कही भई बातनको आलस्य छोडिके करै है और व्रतकी समाप्तिमें ब्राह्मण भोजन करावै है ॥ ६८ ॥ हे विप्रेन्द्र ! वह सात जन्मताईं सत्य

देवतायतने नित्यं मार्जनं जलसेचनम् ॥ प्रलेपनं गोमयेन रंगवल्ल्यादिकं तथा ॥ ६७ ॥ यः करोति नरश्रेष्ठ चातुर्मास्यमतंद्रितः ॥ समाप्तौ च यथाशक्त्या कृत्वा ब्राह्मणभोजनम् ॥ ६८ ॥ सप्तजन्मसु विप्रेन्द्र सत्यधर्मपरो भवेत् ॥ दध्ना क्षीरेण चाज्येन क्षौद्रेण सितया तथा ॥ ६९ ॥ स्नापयेद्विधिना देवं चातुर्मास्ये जनाधिप ॥ स याति विष्णुसारूप्यं सुखमक्षय्यमश्नुते ॥ ७० ॥ नृपेण भूमिर्दातव्या यथाशक्त्या च कांचनम् ॥ विप्राय देवमुद्दिश्य सफलं च प्रदक्षिणम् ॥७१॥

धर्ममें तत्पर होय है दहीसों दूधसों घीसों शहदसों तथा शर्करासों ॥ ६९ ॥ हे जनाधिप ! इन पांचों वस्तुनसों जो चातुर्मास्यमें देवको विधिकरिके स्नान करावै है वह विष्णुकी सरूपताको प्राप्त होय है और अक्षय सुखको भोगै है ॥ ७० ॥ राजा करिके देवताको उद्देश करिके ब्राह्मणके अर्थ नारियल और दक्षिणा समेत यथाशक्ति

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भूमि और सुवर्ण देनो चाहिये ॥ ७१ ॥ वह स्वर्गमें दूसरे इंद्रके समान अक्षय लोकनको प्राप्त होय है और विष्णुलोकको प्राप्त होय है यामें सन्देह नहीं है ॥ ७२ ॥ देव जे भगवान् हैं तिनके अर्थ नैवेद्य युक्त सुवर्णको कमल दान करै और जो गंध, पुष्प, अक्षत आदि करिके देवकी और ब्राह्मणकी पूजा करै है ॥ ७३ ॥ चातुर्मास्यमें जो

अक्षयाँल्लभते भोगान्स्वर्गे इंद्र इवापरः ॥ लोकं च समवाप्नोति विष्णोरत्र न संशयः ॥७२॥ देवाय हैमं पद्मं तु दद्यान्नैवेद्यसंयुतम् ॥ गंधपुष्पाक्षताद्यैर्यो देवब्राह्मणयोरपि ॥ ७३ ॥ पूजां यः कुरुते नित्यं चातुर्मास्ये व्रती नरः ॥ अक्षयं सुखमाप्नोति पुरन्दरपुरं व्रजेत् ॥ ७४ ॥ यस्तु वै चतुरो मासांस्तुलस्या हरिमर्चयेत् ॥ तुलसीं कांचनीं कृत्वा ब्राह्मणाय निवेदयेत् ॥ ७५ ॥ कांचनेन विमानेन वैष्णवीं लभते गतिम् ॥ देवाय गुग्गुलुं यो वै दीपं चार्पयते नरः ॥ ७६ ॥

व्रती नर नित्य पूजन करै है वह अक्षय सुखको प्राप्त होय है और इन्द्रके पुरको जाय है ॥ ॥ ७४ ॥ जो चार महीने तुलसीसों हरिको पूजन करै है और सुवर्णकी तुलसी बनवा ब्राह्मणके अर्थ दान करै है ॥ ७५ ॥ वह सोनेके विमानमें चढिके वैष्णवी गतिको प्राप्त होय है और जो देवके अर्थ गूगलकी धूप और दीपको अर्पण करै है॥७६॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वह भोगी और श्रीमान् तथा सौभाग्यवान् होय है और समाप्तिमें धूपिकादान करै और विशेष करिके दीपदान करै ॥ ७७ ॥ जो पीपरकी अथवा विष्णुकी प्रदक्षिणा विशेषकारि करै है ताको अवधि कार्तिकी है ॥ ७८ ॥ पादको पादान्तरमें राखि और हाथनको जोरिके वाणीसो स्तुति करै और हृदयमें ज्ञान राख यह चतुरंगा

स भोगी जायते श्रीमांस्तथा सौभाग्यवानपि ॥ समाप्तौ धूपिकां दद्याद्दीपिकां च विशेषतः ॥७७॥ प्रदक्षिणां तु यः कुर्यान्नमस्कारं विशेषतः ॥ अश्वत्थस्याथ वा विष्णोः कार्तिक्यामवधिर्भवेत् ॥ ७८ ॥ पादं पादांतरे न्यस्य करौ कृत्वा तु संयतौ ॥ स्तुतिं वाचि हृदि ज्ञानं चतुरंगा प्रदक्षिणा ॥ ७९ ॥ संध्यादीपप्रदो यस्तु प्रांगणे द्विजदेवयोः ॥ समाप्तौ दीपिकां दद्याद्वस्त्रं तैलं सकांचनम् ॥ ८० ॥ वायुमालभते यस्तु तेजस्वी स भवेदिह ॥ वैमानिको भवेद्देवो गंधर्वाप्सरसेवितः ॥ ८१ ॥

प्रदक्षिणा है ॥ ७९ ॥ जो संध्याके समय द्विज और देवके आंगनमें दीपदान करै है वह समाप्त होनेपै दीपिका वस्त्र तैल और सुवर्णको दान करै ॥ ८० ॥ जो पवन करै है वह तेजस्वी होय है और विमानको

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चढनहारो गंधर्व तथा अप्सरान करिके सेवित देवता होय है ॥ ८१ ॥ और जो विष्णुको चरणोदक पीवै है वह कष्टते छूटिजाय है और वह नर विष्णुलोकको प्राप्त होय है यहां संसारमें फिरि नहीं उत्पन्न होय है ॥ ८२ ॥ और त्रिकाल जो विष्णुके मन्दिरमें अष्टोत्तरशत गायत्रीको जप करै है वह पापसों नहीं लिप्त होय है ॥ ८३ ॥

विष्णुपादोदकं यस्तु पिबेत्कृच्छ्रात्स मुच्यते ॥ विष्णोर्लोकमवाप्नोति न चास्मिञ्जायते नरः ॥ ८२ ॥ शतमष्टोत्तरं यस्तु गायत्रीजपमाचरेत् ॥ त्रिकालं वैष्णवे हर्म्ये न स पापेन लिप्यते ॥८३॥ अक्षसूत्रं पुस्तकं च धत्ते पद्मं कमंडलुम् ॥ चतुर्वक्त्रा तु गायत्री श्रोत्रियाणां गृहे स्थिता ॥ ८४ ॥ सर्वलोकमयी देवी गायत्री या त्रयीमयी ॥ नित्या शास्त्रसमाख्याता लोकान् या तु प्रबोधयेत् ॥ ८५ ॥ व्यासस्तुष्याति तस्याशु विष्णुलोकं स गच्छति ॥ अत्र चोद्यापनं शास्त्र-पुस्तकं दानमेव च ॥ ८६ ॥

जपमाला, पुस्तक, पद्म और कमंडलुको धारण किये हैं और चारि जाके मुख हैं ऐसी गायत्री श्रोत्रिय पुरुषोंके सुखमें स्थित रहै है ॥ ८४ ॥ सर्वलोकमयी और वेदत्रयीमयी शास्त्रनमें कही भई और नित्या जो गायत्री है वह लोककी रक्षा करै और प्रबोधयुक्त करै ॥ ८५ ॥ जो गायत्रीको ध्यान और जप करैहै वाते

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

व्यास प्रसन्न होय हैं और वह विष्णुलोकको जाय है यामें उद्यापन शास्त्रकी पुस्तकहूको दान कह्यो है ॥ ८६ ॥ सब विद्यानके समान शांति करनहारो और मनोहर हैं अक्षर जामें ऐसे पुस्तकको मैं दान करौं हौं भारती मोपै प्रसन्न होय ॥ ८७ ॥ नित्य पुराण वा धर्मशास्त्र सुनै वह पुण्यवान्, भोगी और सत्य तथा शौचमें परायण होय है ॥ ८८ ॥ ज्ञानवान् लोकमें विख्यात बहुत जाके शिष्य हैं और अच्छा धर्मात्मा हो तुमको मैं

सर्वविद्यासमं शांतिकरणं ललिताक्षरम् ॥ पुस्तकं संप्रयच्छामि प्रीता भवतु भारती ॥८७॥ पुराणं शृणुयान्नित्यं धर्मशास्त्रमथापि वा ॥ पुण्यवान्धनवान् भोगी सत्यशौचपरायणः ॥८८॥ ज्ञानावाँ-ल्लोकविख्यातो बहुशिष्यः सुधार्मिकः ॥ कांचनेन युतं वस्त्रं पुस्तकं च निवेदयेत् ॥८९॥ नाम-मंत्रव्रतपरः शंभोर्वा केशवस्य च ॥ समाप्तौ प्रतिमां दद्यात्तस्य देवस्य कांचनीम् ॥९०॥ पञ्चवक्रो वृषारूढः प्रतिवक्रं त्रिलोचनः ॥ कापालशूलखट्वांगी चंद्रमौलिः सदाशिवः ॥ ९१ ॥

सुवर्ण करिके युक्त वस्त्र और पुस्तक दान करौं हौं ॥ ८९ ॥ विष्णुके वा शिवके नाममंत्र और व्रतमें तत्पर होके व्रतकी समाप्तिमें उन देवकी सुवर्णमयी प्रतिमाको दान करै ॥ ९० ॥ पंचमुख वृषपर चढे भये और प्रत्येक मुखमें त्रिलोचन कपाल शूल खट्वांगको धारण किये भये चन्द्र जिनके मस्तकमें है ऐसी सदाशिवकी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मूर्ति बनवाके दान करै ॥ ९१ ॥ हे ईश ! जाते तुमने देवतानको अमृत छोडके हालाहल विषको संहार कियो तैसेही लोकके हितके लिये एक बाणसों असुरनको त्रिपुर जरायो ॥ ९२ ॥ तुम्हारे रूपको दाता और बहुत पुण्यवान् मैं दोषनकरिके मुक्त हो गुणनको घर होगयो हौं ऐसो करो जामें तुम्हारे

त्वया सुराणाममृतं विहाय हालाहलं संहृतमेव यस्मात् ॥ तथाऽसुराणां त्रिपुरं च दग्धमेकेषुणा लोकहितार्थमीश ॥ ९२ ॥ त्वद्रूपदाता बहुपुण्यवांश्च दोषैर्विमुक्तश्च गुणालयोऽहम् ॥ तथा कुरु त्वां शरणं प्रपद्ये मम प्रभो देववर प्रसीद ॥९३॥ कृतनित्यक्रियो भूत्वा सूर्यायार्घ्यं निवेदयेत् ॥ सूर्यमण्डलमध्यस्तं देवं ध्यात्वा जनार्दनम् ॥९४॥ समाप्तौ कांचनं दद्याद्रक्तवस्त्रं च गां तथा ॥ आरोग्यं पूर्णमायुश्च कीर्तिर्लक्ष्मीर्बलं भवेत् ॥ ९५ ॥

शरणमें आऊं हे देववर ! मेरे ऊपर प्रसन्न होउ ॥ ९३ ॥ नित्य क्रिया करि सूर्यमंडलके मध्यमें स्थित जनार्दनदेवको ध्यान करिके सूर्यके लिये अर्घ्यदान करै ॥ ९४ ॥ समाप्तिमें सुवर्णको दान करै लाल वस्त्रको तथा गौको दान करै तो आरोग्य, पूर्णआयु, कीर्ति, लक्ष्मी और बल होवै ॥ ९५ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जो चातुर्मास्यमें दिन दिन तिलनको होम भक्तिपूर्वक व्याहृतियुक्त मंत्रनसों अथवा गायत्रीसों व्रतयुक्त होके करैहै ॥ ९६ ॥ अष्टोत्तरशत वा अट्ठाईस तिलके पात्र समाप्तिमें बुद्धिमान् ब्राह्मणके अर्थ दान करै ॥ ९७ ॥ तो वाणी मन काय करिके संचित करे भये पापनते छूटि जाय और वाको रोग न होय वह उत्तम संततिको

तिलहोमं तु यः कुर्याच्चातुर्मास्ये दिने दिने ॥ भक्त्या व्याहृतिभिर्मंत्रैर्गायत्र्या वा व्रतान्वितः ॥ ९६ ॥ अष्टोत्तरशतं चाथ अष्टाविंशतिरेव वा ॥ तिलपात्रं समाप्तौ तु दद्याद्विप्राय धीमते ॥ ९७ ॥ वाङ्मनःकायजनितैः पापैर्मुच्येत संचितैः ॥ न रोगैरभिभूयेत लभेत्संततिमुत्तमाम् ॥९८॥ देवदेव जगन्नाथ वांछितार्थफलप्रद ॥ तिलपात्रं प्रदास्यामि तेन पापं व्यपोहतु ॥ ९९ ॥ अन्नहोमं तु यः कुर्याच्चातुर्मास्यमतंद्रितः ॥ समाप्तौ घृतकुंभं तु वस्त्रकांचनसंयुतम् ॥ १०० ॥ आरोग्यं कांतिमतुलां पुत्रसौभाग्यसंपदः ॥ शत्रुक्षयं च लभते ब्रह्मणः प्रतिमो भवेत् ॥ १ ॥

पावै ॥ ९८ ॥ हे देवदेव ! हे जगन्नाथ ! वांछित अर्थके फल देनहारे तिलपात्रको मैं दान करौं हौं ता करिके मेरे पाप दूरि होयँ ॥ ९९ ॥ जो आलस्यरहित हो चातुर्मास्यमें अन्नको होम करै है और समाप्तिमें वस्त्र तथा सुवर्णयुक्त घृतकुंभको दान करै है ॥ १०० ॥ वह आरोग्य और अतुल कांतिको पुत्र तथा सौभाग्यकी

१५

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

संपत्तिनको प्राप्त होय है और वाके शत्रुनको क्षय होय है और वह ब्रह्माके समान हो जाय है ॥ १ ॥ और जो पीपरकी सेवा करैहै वह सब पापनते छूटिजाय है पीछे विष्णुको भक्त होय है और अंतमें पीछे वस्त्रनको दान करै ॥ २ ॥ और सुवर्णसमेत जो ब्राह्मणके लिये दान करै है वह रोगनको नहीं प्राप्त होय है और जो विष्णुकी प्रीति करनहारो शुभ तुलसीको धारण करै है ॥ ३ ॥ वह विष्णुलोकको प्राप्त होय है और सब

अश्वत्थसेवां यः कुर्यात्सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ विष्णुभक्तो भवेत्पश्चादंते वस्त्रं प्रदापयेत् ॥ २ ॥
सकांचनं ब्राह्मणाय नैव रोगान्स विंदते ॥ तुलसीं धारयेद्यस्तु विष्णुप्रीतिकरां शुभाम् ॥ ३ ॥
विष्णुलोकमवाप्नोति सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ ब्राह्मणान् भोजयेत्पश्चाद्विष्णुमुद्दिश्य पांडव ॥ ४ ॥
यस्तु सुप्ते हृषीकेशे दूर्वाममृतसंभवाम् ॥ सदा प्रातर्वहेन्मूर्ध्नि शुद्धात्मा च ऋतुद्वये ॥ ५ ॥
मंत्रेणानेन राजेंद्र लक्ष्मीनाथस्य तुष्टये ॥ त्वं दूर्वेऽमृतजन्मासि वंदिताऽसि सुरासुरैः ॥ ६ ॥

पापनते छूटिजाय है हे पांडव ! पीछे विष्णुके निमित्त ब्राह्मणनको भोजन करावै ॥ ४ ॥ और जो शुद्धात्मा पुरुष दोनों ऋतुओंमें हृषीकेश भगवान्‌के सोनेपै अमृतते उत्पन्न दूर्वाको प्रातःकाल सदा मस्तकपै धारण करै है ॥ ५ ॥ हे राजेंद्र ! या मंत्रसों लक्ष्मीनाथकी प्रसन्नताके अर्थ वह मंत्र यह है कि, हे दूर्वे ! तू अमृतसों उत्पन्न है

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

और सुर असुरन करिके वंदना की गई है ॥ ६ ॥ सौभाग्य और संततिको देके शीघ्रही कार्य करनहारी हो हे कुरुश्रेष्ठ ! व्रतके अंतमें सुवर्णकी बनी हुई दूर्वाका ॥ ७ ॥ अग्र और सब पत्तोंकरिके युक्त दूर्वाको हे सुव्रत ! वस्त्रसमेत दक्षिणायुक्त या मंत्रसों श्रेष्ठ ब्राह्मणके अर्थ दान करे ॥ ८ ॥ जैसे तू शक्ति करिके शाखा प्रशाखा-

सौभाग्यं संततिं दत्त्वा सद्यः कार्यकरी भव ॥ व्रतांते च कुरुश्रेष्ठ दूर्वां स्वर्णविनिर्मिताम् ॥ ७ ॥
साग्रां सर्वदलोपेतां सवस्त्रां द्विजपुंगवे ॥ दद्याद्दक्षिणया सार्द्धं मंत्रेणानेन सुव्रत ॥ ८ ॥ यथा
शाखा प्रशाखाभिर्विस्तृतासि महीतले ॥ तथा ममापि संतानं देहि त्वमजरामरम् ॥ ९ ॥
एवं व्रतं यः कुरुते चातुर्मास्यमतंद्रितः ॥ न च दुःखभयं तस्य न च रोगभयं भवेत् ॥ ११० ॥
नाशुभं प्राप्नुयाज्जातु पापेभ्यः प्रविमुच्यते ॥ भुक्त्वा तु सकलान् भोगान्स्वर्गलोके महीयते ॥ ११ ॥

नसों पृथ्वीतलमें फैली है तैसेही तू मोको अजर अमर संतान दे ॥ ९ ॥ ऐसे जो निरालस्य होके चातुर्मास्य व्रत करै है ताको दुःखको भय नहीं होय है और न रोगको भय होय है ॥ ११० ॥ और न कभी अशुभको प्राप्त होय और पापनते छूटिजाय सब भोगनको भोगिके अंतसमय स्वर्गलोकमें आनंद करै है ॥ ११ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

देवदेव जे केशव भगवान् हैं तिनको अथवा शिवजीको गीत नित्य गावै है वह मनुष्य जागरणके फलको प्राप्त होय है ॥ १२ ॥ व्रती मनुष्य व्रतके अंतमें अच्छे बजनेवाले घंटाको देवके निमित्त दान करै गुरुकी अवज्ञासों और अनध्यायमें पढनेसों जो मैंने पाप कियो है ॥ १३ ॥ हे सरस्वति ! हे जगत्की स्वामिनी ! और हे जग-

गीतं तु देवदेवस्य केशवस्य शिवस्य वा ॥ करोति नित्यमाप्नोति नरो जागरणे फलम् ॥ १२ ॥
व्रतांते च व्रती दद्याद्घंटां देवाय सुस्वराम् ॥ गुरोरवज्ञया यच्चानध्यायेऽध्ययनं कृतम् ॥ १३ ॥
सरस्वति जगन्नाथे जगज्जाड्यापहारिणि ॥ साक्षाद्ब्रह्मकलत्रं च विष्णुरुद्रादिभिः स्तुते ॥१४॥ त-
न्ममाध्ययनोत्पन्नं जाड्यं हर वरानने ॥ घंटानादेन तुष्टा त्वं ब्रह्माणी लोकपावनी ॥ १५ ॥ विप्र-
पादविनिर्मुक्तं तोयं यः प्रत्यहं पिबेत् ॥ चातुर्मास्ये नरो भक्त्या मद्रूपं ब्राह्मणं स्मरन् ॥ १६ ॥

त्की जडता दूरि करनहारी ! हे साक्षात् ब्रह्माकी स्त्री ! और हे विष्णु रुद्र आदि देवतान करिके स्तुति कीगई ॥१४॥ हे वरानने ! वह मेरी अध्ययनसों उत्पन्न भई जडताको दूरि करो और ब्रह्माणी तथा लोककी पवित्र करन-हारी तुम घंटाके नादसों प्रसन्न होउ ॥ १५ ॥ जो मनुष्य चातुर्मास्यमें ब्राह्मणके चरणनका धोवन प्रतिदिन

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भक्तिसों पीवै है और ब्राह्मणको मेरोही रूप जानै है ॥ १६ ॥ वह मानसिक वाचिक और कायिक पापनते छूटिजाय है और वाको रोग कबहूं नहीं होय है वाकी लक्ष्मी और आयु बढै है ॥ १७ ॥ व्रत समाप्त होनेपै दो गौअनको दान करै अथवा दुधारी एकही देय जो वामेंभी शक्ति न होय तो व्रती नर वस्त्रतके जोडाको दान करै ॥ १८ ॥ सर्वदेवमय

मनोवाक्कायजनितैर्मुक्तो भवति किल्बिषैः ॥ व्याधिभिर्नाभिभूयेत श्रीरायुस्तस्य वर्द्धते ॥१७॥
समाप्तौ गोयुगं दद्यादथवैकां वा पयस्विनीम् ॥ तत्राप्यशक्तौ राजेंद्र दद्याद्वासोयुगं व्रती ॥ १८ ॥
ब्राह्मणं वंदते यस्तु सर्वदेवमयं स्मृतम् ॥ कृतकृत्यो भवेत्सद्यः सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ १९ ॥
अक्षय्यं सुखमाप्नोति पितृभक्तिपरो नरः ॥ समाप्तौ भोजयेद्विप्रानायुर्वित्तं च विंदति ॥ १२० ॥
संध्यां प्रातर्नरः कृत्वा समाप्तौ घृतकुंभदः ॥ वस्त्रयुग्मं तिलान् घंटां ब्राह्मणाय निवेदयेत् ॥२१॥

ब्राह्मणके अर्थ जो नित्य नमस्कार करै है वह शीघ्रही कृतकृत्य होय जाय है और सब पापनते छूटि जाय है ॥ १९ ॥ पितरनकी भक्तिमें तत्पर मनुष्य अक्षय सुखको प्राप्त होय है और जो व्रतकी समाप्तिमें ब्राह्मणनको भोजन करावै है वह आयु और धनको प्राप्त होय है ॥ १२० ॥ जो मनुष्य प्रातःकाल संध्यावंदनके अंतमें घृतकुंभको दान

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

करै हैं वस्त्रनको जोडा तिल तथा घंटा ब्राह्मणके अर्थ निवेदन करै ॥ २१ ॥ वह सरस्वतीके तत्त्वको प्राप्त होय है और विद्यावान् होय है और जो कापिला गौको दान करै है वह सदा धनी होय है ॥ २२ ॥ वाहि कापिलाको अलंकृत करके दान करै अथवा सब भूमिको दान करै, वह दीर्घायु और प्रतापी सार्वभौम राजा होय है ॥ २३ ॥

सारस्वतं याति तत्त्वं विद्यावांस्तु भवेदिति ॥ संस्पृशेत्कापिलां यो वै नित्यं स च भवेद्धनी ॥ २२ ॥ तामेवालंकृतां दद्यात्सर्वां भूमिमथापि वा ॥ सार्वभौमो भवेद्राजा दीर्घायुश्च प्रतापवान् ॥ २३ ॥ दानशीलः सदारंभः सर्वसंकटवर्जितः ॥ रूपवान् भाग्यसम्पन्नो लभते सुखमक्षयम् ॥ २४ ॥ स वसेदिंद्रवत्स्वर्गे वत्सरान् रोमसंमितान् ॥ नमस्करोति यः सूर्यं गणेशं वापि नित्यशः ॥ २५ ॥ आयुरारोग्यमैश्वर्यं लभते कान्तिमुत्तमाम् ॥ विघ्नराजप्रसादेन प्राप्नुयादीप्सितं फलम् ॥ २६ ॥

दानशील और सदा आरंभ करनहारो मनुष्य सब संकटनसों वर्जित हो और रूपवान् तथा भाग्यसम्पन्न हो अक्षय सुखको प्राप्त होय है ॥ २४ ॥ वह देहरोमोंके प्रमाण वर्षोंलों स्वर्गमें इन्द्रके समान वास करै है और जो गणेशको वा सूर्यको नित्य नमस्कार करे है ॥ २५ ॥ वह विघ्नराज जो गणेशजी हैं तिनके प्रसादसों आयु आरोग्य ऐश्वर्य

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तथा उत्तम कांतिको आर वांछित फलको प्राप्त होय है ॥ २६ ॥ और सर्वत्र विजयको प्राप्त होय है यामें कुछ विचार नहीं है लाल सिंदुरके समान सुवर्णके सूर्य बनवाके ॥ २७ ॥ सब कामोंके अर्थ सिद्धिके लिये ब्राह्मणको दान करै छाती करिके शिर करिके दृष्टि करिके मन करिके तथा वचन करिके ॥ २८ ॥ चरणों करिके हाथों करिके घुटनों करिके जो प्रणाम है ताको अष्टांग प्रणाम कहै हैं या अष्टांग करिके भूमिमें नमस्कारसों पूजन करै

सर्वत्र विजयं चैव नात्र कार्या विचारणा ॥ रविः कार्यः सुवर्णस्य सिंदूरारुणसन्निभः ॥ २७ ॥
निवेदयेद्ब्राह्मणाय सर्वकामार्थसिद्धये ॥ उरसा शिरसा दृष्ट्या मनसा वचसा तथा ॥ २८ ॥
पद्भ्यां कराभ्यां जानुभ्यां प्रणामोऽष्टांग उच्यते ॥ अष्टांगसहितं भूमौ नमस्कारेण योऽर्चयेत्॥२९॥
स यां गतिमवाप्नोति न तां क्रतुशतैरपि ॥ यस्तु रौप्यं शिवप्रीत्यै दद्याद्वर्षाऋतुत्रये ॥ १३० ॥
ताम्रं वा प्रत्यहं दद्यात्स्वशक्त्या शिवतुष्टये ॥ सुरूपाँल्लभते पुत्रान् रुद्रभक्तिपरायणान् ॥ ३१ ॥

है ॥ २९ ॥ वह जो गतिको प्राप्त होय है ताहि सौ यज्ञनसोंहू नहीं प्राप्त होय है और जो तीनि वर्षा-ऋतुमें शिवजीकी प्रसन्नताके लिये रूपेको दान करै है ॥ १३० ॥ अथवा शिवजीकी प्रसन्नताके लिये प्रतिदिन अपनी शक्तिसों जो तांबेको दान करै वह शिवभक्तिमें परायण स्वरूपवान् पुत्रोंको प्राप्त होय है ॥ ३१ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

व्रतकी समाप्तिमें शहदसों पूर्ण चांदीको पात्र उत्तम है ताको दान करै और तांबेके दानमें तांबेको पात्र गुडसों भरिके दान करै ॥३२॥ तांबो पुष्टि करनहारो और सब देवतानको प्यारो शुभ और सदा सब रक्षाको करनेहारो है याते तू मोको शांति दे ॥३३॥ जो हृषीकेश भगवान्के सोनेपै अपनी शक्तिसों सोनेके दान वस्त्रनके जोडे और

समाप्तौ मधुपूर्णं तु पात्रं राजतमुत्तमम् ॥ प्रदद्यात्ताम्रदानेन ताम्रपात्रं गुडान्वितम् ॥ ३२ ॥ ताम्रं पुष्टिकरं सर्वदेवप्रियकरं शुभम् ॥ सर्वरक्षाकरं नित्यमतः शांतिं प्रयच्छ मे ॥ ३३ ॥ यस्तु सुप्ते हृषीकेशे स्वर्णदानं स्वशक्तितः ॥ वस्त्रयुग्मं तिलैः सार्द्धं दत्त्वा दोषैः प्रमुच्यते ॥ ३४ ॥ इह भुक्त्वा महाभोगानंते शिवपुरं व्रजेत् ॥ सुवर्णं रजतं ताम्रं नित्यदानं च धान्यकम् ॥३५॥ नित्यश्राद्धं देवपूजा सर्वमेतत्सदक्षिणम् ॥ वस्त्रदानं तु यः कुर्याच्चातुर्मास्ये द्विजातये ॥३६॥ अभ्यर्च्य गंधपुष्पाद्यैः स विष्णुः प्रीयतामिति ॥ शय्यां दद्यात्समाप्तौ तु वासः कांचनपाट्टिकाम् ॥३७॥

तिलनसमेत दान करै है वह सब पापनते छूटिजाय है ॥ ३४ ॥ और या लोकमें वडे भोगनको भोगिके अंतमें शिवपुरको जाय है सोना चांदी और तांबा और धान्य इनको नित्य दान है ॥ ३५ ॥ नित्यश्राद्ध देवपूजा ये सब दक्षिणासमेत करने योग्य हैं जो चातुर्मास्यमें ब्राह्मणके अर्थ वस्त्रनको दान करै है ॥ ३६ ॥ गंधपुष्पआदिसों पूजन

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

करिके ऐसे कहै कि, वे विष्णु मेरे ऊपर प्रसन्न होंय और व्रतके समाप्त होनेपै शय्या दान करै वस्त्र दे और सोनेकी पट्टी दे ॥ ३७ ॥ वह अक्षय सुखको और कुबेरके समान धनको प्राप्त होय है जो मनुष्य वर्षाऋतुमें नित्य गोपीचंदनको दान करै है ॥ ३८ ॥ श्रीपति संतुष्ट होके वाको भुक्ति मुक्ति देय हैं देवताके अंगमें लगो भयो जो कुंकुम आदि विलेपन है ॥ ३९ ॥ और जलकी क्रीडानमें गोपीनके अंगसों गिरो भयो चन्दन आदि

अक्षय्यं सुखमाप्नोति धनं च धनदोपमम् ॥ यो गोपीचंदनं दद्यान्नित्यं वर्षासु मानवः ॥ ३८ ॥
श्रीपतिस्तस्य संतुष्टो मुक्तिं भुक्तिं ददाति च ॥ यद्वै देवांगसंलग्नं कुंकुमादिविलेपनम् ॥ ३९ ॥
जलक्रीडासु गोपीनां द्वारवत्या मृदान्वितम् ॥ गोपीचंदनमित्युक्तं मुनींद्रैः कलिषपापहम् ॥१४०॥
तस्माद्देयं प्रयत्नेन विष्णुर्दिशति वांछितम् ॥ समाप्तावपि तद्दद्यात्तुलापरिमितं शुभम् ॥ ४१ ॥
तदर्धं वा तदर्धं वा सवस्त्रं च सदक्षिणम् ॥ यस्तु सुप्ते हृषीकेशे प्रत्यहं तु व्रतान्वितः ॥ ४२ ॥

द्वारावतीकी मृत्तिका करिके युक्त पापको नाश करनहारो वह मुनीश्वरनकरिके गोपीचंदन कहो गयो है ॥१४०॥ तातें वह यत्नसों देनो चाहिये वाके देनेसों विष्णु वांछित फलको देय हैं और व्रतकी समाप्तिहूमें एक तुला प्रमाण सुन्दर गोपीचंदनको दान करै ॥ ४१ ॥ वाको आधो फिरि वाको आधो वस्त्र और दक्षिणासमेत जो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

व्रती पुरुष हृषीकेश भगवान्‌के सोनेपै प्रतिदिन देता है ॥ ४२ ॥ और दक्षिणासमेत शर्करा अथवा गुडको दान करै ईखके सारते उत्पन्न शर्करा अमृतकी कला कहीगई है ॥ ४३ ॥ ताके दानसों संतुष्ट सूर्य वांछित फल देते हैं या प्रकार व्रतके पूर्ण होनेपै पंडित नर उद्यापन करै ॥ ४४ ॥ आठ आठ पलके तौलमें होयँ ऐसे तांबेके पात्र

दद्याद्दक्षिणया सार्द्धं शर्करामपि वा गुडम् ॥ अमृतस्य कला प्रोक्ता इक्षुसारजशर्करा ॥ ४३ ॥
तस्या दानेन संतुष्टो भानुर्दिशति वांछितम् ॥ एवं व्रतं तु सम्पूर्णे कुर्यादुद्यापनं बुधः ॥ ४४ ॥
कारयेत्ताम्रपात्राणि प्रत्येकं तु पलाष्टकम् ॥ वित्तशाठ्यमकुर्वाणो यद्वा पलचतुष्टयम् ॥ ४५ ॥
अष्टौ चत्वार्यथैकैकं प्रत्येकं च सशर्करम् ॥ दक्षिणाफलवस्त्रेण प्रत्येकं वेष्टितानि च ॥ ४६ ॥
सहधान्यानि विप्रेभ्यः श्रद्धया प्रतिपादयेत् ॥ ताम्रपात्रं सवस्त्रं च शर्कराहेमसंयुतम् ॥ ४७ ॥

बनवावे धनको लोभ न करै जो ऐसी शक्ति न होय तो चारि चारि पलके बनवावै ॥ ४५ ॥ शक्तिके अनुसार आठ चारि वा एक बनवावै और प्रत्येकमें शर्करा भरै फिरि उनमें दाक्षिणा और नारियल धरिके वस्त्रसों पृथक् २ बांधे ॥ ४६ ॥ और धान्यके साथ ब्राह्मणकों श्रद्धाकरिके दान करै वह शर्करा और सुवर्णकरिके युक्त तांबेके पात्र

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ ४७ ॥ जाते सूर्यकी प्रीतिको करनहारो है पुष्टि तथा कीर्तिको देनहारो है और मनुष्यनकी संतति करनहारो है ॥ ४८ ॥ सब कामनाओंको और स्वर्गको देनहारो तथा उत्तम आयुको बढावनहारो है ताते याके दानसों मेरी सदा कीर्ति होय ॥ ४९ ॥ या प्रकार जो व्रत करै है ताके पुण्यको फल सुनो कि, गंधर्वविद्यासों सम्पन्न

सूर्यप्रीतिकरं यस्माद्रोगघ्नं पापनाशनम् ॥ पुष्टिदं कीर्तिदं नृणां नित्यं संतानकारकम् ॥ ४८ ॥ सर्वकामप्रदं स्वर्ग्यमायुर्वर्द्धनमुत्तमम् ॥ तस्मादस्य प्रदानेन कीर्तिरस्तु सदा मम ॥४९॥ एवं व्रतं तु यः कुर्यात्तस्य पुण्यफलं शृणु ॥ गंधर्वविद्यासम्पन्नः सर्वयोषित्प्रियो भवेत् ॥१५०॥ राजापि लभते राज्यं पुत्रार्थी लभते सुतान् ॥ अर्थार्थी प्राप्नुयादर्थं निष्कामो मोक्षमाप्नुयात्॥५१॥ यस्तु वै चतुरो मासाञ्छाकमूलफलादिकम् ॥ नित्यं ददाति विप्रेभ्यः शक्त्या यत्संभवेद्द्विजः ॥५२ ॥ व्रतांते वस्त्रयुग्मं च शक्त्या दद्यात्सदक्षिणम् ॥ सुखी भूत्वा चिरं कालं राजयोगी भवेन्नरः ॥५३॥

वह मनुष्य सब स्त्रीनको प्यारो होय ॥ १५० ॥ राजा राज्यको पावै और पुत्रार्थी पुत्रनको पावै धनकी इच्छा-वालो धनको पावै और जो कामनारहित है वह मोक्षको प्राप्त होय ॥ ५१ ॥ जो चारिमहीने शाक मूल फल आदि नित्य ब्राह्मणको दान करैहै जो शक्तिसों होसकै है ॥ ५२ ॥ व्रतकें अंतमें शक्तिके अनुसार दक्षिणासमेत

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वस्त्रनके जोडाको दान करै तो वह नर वहुत कालपर्यंत सुखी होके राजयोगी होजाय है ॥ ९३ ॥ जो मनुष्य-
नको तृप्ति देनेहारो शाक सब देवतानको प्यारो है और मूल पत्र पुष्पसमेत कंद देवर्षिनको प्रिय है ॥९४॥ सो
मैं तुमको देऊँ हौं ता करिके देवता आदि सदा मंगलको करो जो हृषीकेशके सोवनेपै दो ऋतुनमें प्रतिदिन ॥ ९९ ॥

सर्वदेवप्रियं यस्माच्छाकं तृप्तिकरं नृणाम् ॥ देवर्षिप्रीतिदं कंदमूलपत्रसपुष्पकम् ॥ ९४ ॥
ददामि तेन देवाद्याः सदा कुर्वन्तु मङ्गलम् ॥ यस्तु सुप्ते हृषीकेशे प्रत्यहं तु ऋतुद्वये ॥ ९५ ॥
दद्यात्कटुत्रयं मर्त्यो गृहपर्याप्तमादरात् ॥ ब्राह्मणाय सुशीलाय दिनेशप्रीतयेऽनघ ॥९६॥ दक्षि-
णासहितं विप्रे मंत्रेणानेन सुव्रत ॥ कटुत्रयमिदं यस्माद्रोगघ्नं सर्वदेहिनाम् ॥ ९७ ॥ तस्मादस्य
प्रदानेन प्रीतो भवतु भास्करः ॥ एवं कृत्वा व्रतं सम्यक् कुर्यादुद्यापनं बुधः ॥ ९८ ॥

हे अनघ ! कटुत्रय अर्थात् सोंठि मिरच पीपरिको आदरसों सूर्यकी प्रीतिके लिये दान करै है ॥ ९६ ॥ हे सुव्रत !
दक्षिणासहित ब्राह्मणके अर्थ या मंत्रसों कि, जाते यह त्रिकटु सब देहिनके रोगको नाश करनहारो है ॥ ९७ ॥
ताते याके दान करिके सूर्य प्रसन्न होयँ या प्रकार भलीभांति व्रतको करिके बुध नर उद्यापनको करै ॥ ९८ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सुवर्णकी सोंठ, मिर्च, पीपरि बनवायके वस्त्रयुक्त दक्षिणासमेत बुद्धिमान् ब्राह्मणके अर्थ दान करै ॥ ५९ ॥ या प्रकार जो व्रतको करैहै वह सौ वर्षलों जीवैहै और वाञ्छित अर्थनको प्राप्त होके अंतमें स्वर्गको जाय है ॥ १६० ॥ जो उत्तम मतिवालो मनुष्य नित्य ब्राह्मणके अर्थ मोतिनको दान करै है हे राजन् ! वह अन्नवान् कीर्तिवान्

कृत्वा स्वर्णमयीं शुंठीं मरिचं मागधीमपि ॥ सवस्त्रां दक्षिणायुक्तां दद्याद्विप्राय धीमते ॥५९॥ एवं व्रतं यः कुरुते स जीवेच्छरदां शतम् ॥ प्राप्नुयादीप्सितानर्थानंते स्वर्गं व्रजेदिति ॥१६०॥ मुक्ताफलानि यो दद्यान्नित्यं विप्राय सन्मतिः ॥ अन्नवान्कीर्तिमाञ्छ्रीमाञ्जायते वसुधाधिप ॥ ६१ ॥ चातुर्मास्ये प्रत्यहं तु क्षीरकुंभं प्रदापयेत् ॥ वेष्टयित्वा सुवस्त्रेण फलैर्दक्षिणया सह ॥६२॥ सुवासिनीं श्रियं मत्त्वा गंधपुष्पैरथार्चयेत् ॥ तांबूलं फलमेकं वा दद्याच्छ्रीपतये नमः ॥६३॥ समाप्तौ योषितं विप्रं सूक्ष्मवस्त्रविभूषणैः ॥ मिथुनं पूजयित्वा तु जातिपुष्पैः सुशोभनैः ॥ ६४ ॥

और श्रीमान् होय है ॥ ६१ ॥ जो चातुर्मास्यमें प्रतिदिन दूधके घटको उत्तम वस्त्रमें लपेटिके दक्षिणासमेत दान करै है ॥ ६२ ॥ और सुवासिनीको लक्ष्मी मानिके गंधपुष्पनसों पूजन करै और तांबूलको वा एक फलको "श्रीपतये नमः" ऐसे कहके दानको करै ॥ ६३ ॥ और व्रतकी समाप्तिमें स्त्रीसहित ब्राह्मणको सुन्दर

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शोभायमान चमेलीके फूलन करिके पूजन करै ॥ ६४ ॥ तो पुरुष स्त्रीको प्राप्त होय और स्त्री पुरुषको प्राप्त होय और पुरुष श्रीको ऐसे प्राप्त होय है जैसे कलासमेत लक्ष्मीको माधव प्राप्त भये ॥ ६५ ॥ जो जितेंद्रिय पुरुष तांबूलको दान करै है अथवा उनको छोडि देय है तथा लाल वस्त्रनको जोडा और दक्षिणा समेत कमंडलुको दान करै है ॥ ६६ ॥ वह अत्यंत सुन्दरताईको प्राप्त होय है और सब रोगन करि वर्जित रहै है और बुद्धिमान्

पुमांस्तु स्त्रियमाप्नोति नारी भर्तारमाप्नुयात् ॥ पुमांस्तु श्रियमाप्नोति सकलामिव माधवः ॥६५॥ तांबूलदानं यः कुर्याद्वर्जयेद्वा जितेंद्रियः ॥ रक्तवस्त्रद्वयं दद्यात्करकं च सदक्षिणम् ॥६६॥ महालावण्यमाप्नोति सर्वरोगविवर्जितः ॥ मेधावी सुभगः प्राज्ञो रक्तकंठश्च जायते ॥ ६७ ॥ गंधर्वत्वमवाप्नोति स्वर्गलोकं च गच्छति ॥ तांबूलं श्रीकरं भद्रं ब्रह्मविष्णुशिवात्मकम् ॥ ६८ ॥ अस्य प्रदानाद्ब्रह्माद्याः श्रियं ददतु पुष्कलाम् ॥ पूगे ब्रह्मा हरिः पत्रे चूर्णे साक्षान्महेश्वरः ॥६९॥

सुन्दर पण्डित तथा मधुरकंठ हो जाय है ॥६७॥ गंधर्वत्वको प्राप्त होय है और स्वर्गलोकको जाय है। तांबूल पान लक्ष्मीको करनहारो और कल्याणको देनहारो है तथा ब्रह्मा विष्णु और शिवरूप है ॥ ६८ ॥ याके दान करनेसों ब्रह्माआदि देवता बहुतसी लक्ष्मीको देय हैं। सुपारीमें ब्रह्मा हैं और पत्तेमें हरि हैं और चूनेमें साक्षात् महादेव हैं॥६९॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इन सबनके दानसों मेरी भाग्यसम्पत्ति अधिक बढै सुपारीके चूर्ण करि पूरित और नागवेलिके पत्तों करिके युक्त ॥ १७० ॥ चूना खैर जावित्री और जायफल करिके युक्त इलायची और लौंगों करिके मिलाहुआ तांबूल गंधर्व और अप्सरानको प्रिय है ॥ ७१ ॥ तू प्रसन्नतासे मोको सुवर्णयुक्त तथा आतंकरहित कर और चातु-

एतेषां संप्रदानेन संतु मे भाग्यसंपदः ॥ पूरितं पूगचूर्णेन नागवल्लीदलान्वितम् ॥ १७० ॥ सचूर्णं खादिरं चैव पत्रीफलसमन्वितम् ॥ एलालवंगसंमिश्रं गंधर्वाप्सरसां प्रियम् ॥ ७१ ॥ कनकाढ्यं निरातंकं त्वं प्रसादात्कुरुष्व माम् ॥ चातुर्मास्यव्रतोपेतः सुवासिन्यै द्विजाय च ॥ ७२ ॥ नारी वा पुरुषो वापि हरिद्रां संप्रयच्छति ॥ लक्ष्मीमुद्दिश्य गौरीं वा तत्पात्रे दक्षिणान्वितम् ॥ ७३ ॥ प्रदद्याद्भक्तिसंयुक्तं देवी मे प्रीयतामिति ॥ भर्त्रा सह सुखं भुंक्ते नारी नार्या तथा पुमान् ॥ ७४ ॥

र्मास्य व्रत करिके युक्त पुरुष सुवासिनीके और ब्राह्मणके अर्थ ॥ ७२ ॥ नारी वा पुरुष हरिद्राको लक्ष्मी वा गौरीके निमित्त वा पात्रमें दक्षिणा करिके युक्त हरिद्राको दान करै है ॥ ७३ ॥ देवी मोपै प्रसन्न होय ऐसे कहिके जो भक्तिसों दान करै है वह नारी पतिके साथ तथा पुरुष स्त्रीके साथ सुख भोग करै है ॥ ७४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

और वह सौभाग्य अक्षय धान्य धन पुत्रवृद्धि और रूप तथा लावण्यको प्राप्त होके स्वर्गलोकमें आनन्द करै है ॥ ७५ ॥ जो उमा और महेशका उद्देश करिके चातुर्मास्यमें दिन दिन ब्राह्मणके मिथुन अर्थात् स्त्री पुरुषको पूजिके वा विप्रके अर्थ यथाशक्ति ॥ ७६ ॥ उमेश प्रसन्न होंय ऐसे कहिके दक्षिणा समेत सुवर्णको दान करे और

सौभाग्यमक्षयं धान्यं धनपुत्रसमुन्नातिम् ॥ संप्राप्य रूपलावण्ये देवीलोके महीयते ॥ ७५ ॥ उमामहेशमुद्दिश्य चातुर्मास्ये दिने दिने ॥ संपूज्य विप्रमिथुनं तस्मै विप्राय शक्तितः ॥ ७६ ॥ दद्यात्सदक्षिणं हैममुमेशः प्रीयतामिति ॥ उमेशप्रतिमां हैमीं दद्यादुद्यापने बुधः ॥ ७७ ॥ पंचोपचारैः संपूज्य धेनुं सवृषभां नरः ॥ भोजयेदपि मिष्टान्नं तस्य पुण्यफलं शृणु ॥ ७८ ॥ सौभाग्यं पूर्णमायुष्यं संपत्तिश्चानपायिनी ॥ संततिश्चाक्षया कीर्तिर्जायते व्रतवैभवात् ॥ ७९ ॥ इह भुक्त्वाऽखिलान्कामानंते शिवपुरं व्रजेत् ॥ तत्र स्थित्वा चिरं कालमुपभुज्य सुखं महत् ॥ १८० ॥

बुध नर उद्यापनमें सुवर्णकी बनी भई उमेशकी प्रतिमाको दान करै ॥ ७७ ॥ मनुष्य वृषसमेत गौको पंचोपचारनसों पूजन करिके उनको मिष्टान्न भोजन करावै ताको फल सुनो ॥ ७८ ॥ सौभाग्य पूरि आयु जाको कबहू नाश न होय ऐसी संतति संपत्ति और अक्षय कीर्ति ये सब व्रतके प्रभावसों होय हैं ॥ ७९ ॥ और या लोकमें

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

संपूर्ण कामनाओंको भोगिके अंतमें शिवपुरको जाय है और वहां चिरकाललों स्थित हो बहुतसों सुख भोग करके ॥ १८० ॥ पुण्यके शेषसों यहां आयके राजा होय है और जो चातुर्मास्यमें आलस छोडिके फलनको दान करै है ॥ ८१ ॥ और व्रतकी समाप्तिमें ब्राह्मणके अर्थ चांदीको दान करै है वह सब मनोरथनको और अनपायिनी संततिको पायके ॥ ८२ ॥ फलदानके माहात्म्यसों नंदनवनमें आनंद करै है पुष्पदानके व्रतमेंहू

पुण्यशेषादिहागत्य जायते धरणीपतिः ॥ फलदानं तु यः कुर्याच्चातुर्मास्यमतंद्रितः ॥ ८१ ॥ समाप्तौ कलधौतानि तानि दद्याद्द्विजातये ॥ सर्वान्मनोरथान्प्राप्य संततिं चानपायिनीम् ॥८२॥ फलदानस्य माहात्म्यान्मोदते नंदने वने ॥ पुष्पदानव्रतेनापि स्वर्णपुष्पादि दापयेत् ॥८३॥ स सौभाग्य परं प्राप्य गंधर्वपदमाप्नुयात् ॥ वासुदेवे प्रसुप्ते तु चातुर्मास्यमतंद्रितः ॥ ८४ ॥ नित्यं वामनमुद्दिश्य दध्यन्नं स्वादु षड्रसम् ॥ भोजयेदथवा दद्यादेकादश्यां न भोजयेत् ॥ ८५ ॥

सुवर्णके पुष्प आदिको दान करै ॥ ८३ ॥ वह परम सौभाग्यको प्राप्त हो गंधर्वपदको प्राप्त होय है वासुदेवके सोवनेपै चातुर्मास्यमें आलसको छोडिके ॥ ८४ ॥ वामनजीके नामपै दही भात और स्वादयुक्त छहूँ रस भोजन करावै अथवा दान करै परंतु एकादशीको भोजन न करावै ॥ ८५ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

या प्रकारसों दान करै और ग्रहणआदि पर्वनहूमें ऐसोही करै जो नित्य दान देवेकी सामर्थ्य न हो तो पांच पर्वनमें दान करै ॥ ८६ ॥ चतुर्दशीमें अष्टमीमें अमावास्यामें और पूर्णिमामें अथवा प्रत्येक रविवारको वा प्रत्येक शुक्रवारको ॥८७॥ और दोनों पाखनमें द्वादशीकैं दिन दान करै या प्रकार करिके समाप्त होनेपै शक्तिके

दानमेवं प्रकुर्वीत ग्रहणादौ तथैव च ॥ अशक्तौ नित्यदाने तु कुर्यात्पंचसु पर्वसु ॥८६॥ भूताष्टम्याममायां च पूर्णिमायां तथापि च ॥ प्रत्यर्कवारमथवा प्रतिभार्गववासरम् ॥ ८७॥ पक्षद्वयेऽपि द्वादश्यामवश्यं दानमेव च ॥ एवं कृत्वा समाप्तौ तु यथाशक्ति महीं ददेत् ॥ ८८ ॥ अशक्तौ भूमिदाने तु धेनुं दद्यादलंकृताम् ॥ तथाप्यशक्तौ वासश्च सरुक्मं पादुके तथा ॥ ८९ ॥ छत्रोपानद्वस्त्रयुतं दानं सर्वं प्रशस्यते ॥ द्विजानां भोजनं चैव क्षत्रियस्य यथासुखम् ॥ १९० ॥

अनुसार भूमिको दान करै ॥ ८८ ॥ और जो भूमिदान देवेकी सामर्थ्य न होय तो अलंकारनसों शोभित गौको दान करै यामेंहू असमर्थ होय तो वस्त्र सुवर्ण और पादुकानको दान करै ॥ ८९ ॥ तैसेही वस्त्रन समेत छाते और जूतेको दान सब दाननमें उत्तम है ब्राह्मणको तो भोजन और क्षत्रियको यथासुख भूमि ॥ १९० ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे मुनिश्रेष्ठ ! वैश्यको भूमि दान छोडिकै सब दानकहे हैं समर्थ ब्राह्मणहू तथा शूद्रहूको कह्यो है पहले शंकरजीके उपदेशते कुबेरने यह व्रत कियो ॥ ९१ ॥ और पहले जह्नु राजाने गौतमऋषिने और इन्द्रने यह व्रत कियो या व्रतको करनहारो मनुष्य अन्न और पुत्र पौत्र आदि संपत्तिको प्राप्त होय है ॥ ९२ ॥ वाको अंग दृढ होजाय

भूम्यादि मुनिशार्दूल वैश्यस्य वसुधां विना ॥ ब्राह्मणस्यापि शक्तस्य शूद्रस्यापि तथा मतम् ॥ कुबेरेण पुरा चीर्णं शंकरस्योपदेशतः ॥ ९१ ॥ जह्नुना गौतमेनापि शक्रेणापि कृतं पुरा ॥ अक्षय्यमन्नमाप्नोति पुत्रपौत्रादिसंपदम् ॥९२ ॥ दृढांगः पूर्णमायुष्यं लभते वैरिनाशनम् ॥ स स्थिरां विष्णुभक्तिं च प्रयाति हरिमंदिरम् ॥ ९३ ॥ आरोग्यं सौख्यमतुलं रूपं संपत्तिमेव च ॥ न वंध्या जायते चेदमनंतफलदायकम् ॥ ९४ ॥ नित्यं पयस्विनीं दद्यात्सालंकारां शुभावहाम् ॥ दत्त्वा तु दक्षिणां शक्त्या स सर्वज्ञानवान् भवेत् ॥ ९५ ॥

है और पूरी आयु तथा शत्रु नाशको प्राप्त होय है और अति स्थिर विष्णुभक्तिको प्राप्त होयहै तथा हरिके मंदिरको जाय है ॥ ९३ ॥ आरोग्य और अतुल सुखरूप तथा संपत्तिको प्राप्त होयहै और या व्रतके करनेसे स्त्री कबहू वांझ न होय। यह व्रत अनंत फलको देनहारो है ॥९४॥ अलंकारसहित कल्याणकी देनहारी पयस्विनी गौको

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दान करै और शक्तिके अनुसार दक्षिणा देनहारो मनुष्य सर्वज्ञानी होय है ॥ ९५ ॥ और परायो प्रेष्य नहीं होयहै और ब्रह्मलोकको जाय है और वह मनुष्य पितरन समेत अक्षय सुखको प्राप्त होयहै ॥ ९६ ॥ वर्षाके चारि महानिमें मनुष्य प्राजापत्य व्रत करै और समाप्तिमें दो गौको दान करै और ब्राह्मणको भोजन करावै

न परप्रेष्यतां याति ब्रह्मलोकं च गच्छति ॥ अक्षय्यं सुखमाप्नोति पितृभिः सहितो नरः ॥९६॥
वार्षिकांश्चतुरो मासान् प्राजापत्यं चरेन्नरः ॥ समाप्तौ गोयुगं दद्यात्कृत्वा ब्राह्मणभोजनम् ॥९७॥
सर्वपापविशुद्धात्मा याति ब्रह्म सनातनम् ॥ एकांतरोपवासे तु दीपानष्टौ प्रदापयेत् ॥९८॥ वस्त्र-
कांचनयुक्तांश्च शय्यया सह भामिनि ॥ अनडुद्द्वयसंयुक्तं लांगलं कर्षणक्षमम् ॥९९॥ सर्वोपस्क-
रसंयुक्तं ददामि प्रीयतां हरिः ॥ शाकमूलफलैर्वापि चातुर्मास्यं नयेन्नरः ॥ २०० ॥

॥ ९७ ॥ तो सब पापनसों शुद्ध होके सनातन ब्रह्मको प्राप्त होयहै और जो एक दिन बीचमें देके व्रत करै और आठ दीपनको दान करै ॥९८॥ वस्त्र तथा सुवर्ण करिके युक्त शय्यासमेत बैलनकी जोडी करिके युक्त जोतनेके योग्य हल ॥ ९९ ॥ सब सामग्री करिके युक्त मैं दान करों हौं या दानसों हरि प्रसन्न होंय अथवा शाक मूल

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वा फलन करिके चातुर्मास्य व्यतीत करै ॥ २०० ॥ और समाप्तिमें गौको दान करै तो विष्णुके मंदिरको जाय और दूधको आहार करै है वह सनातन ब्रह्मलोकको प्राप्त होय है ॥ १ ॥ और व्रतनके अंतमें एक ब्याई भई गौको दान करै और जो दोनों ऋतुनमें केलाके पत्रमें भोजन करै है ॥ २ ॥ और जो वस्त्रके जोडाको और

समाप्तौ गोप्रदानेन स गच्छेद्विष्णुमंदिरम् ॥ पयोव्रती तथाऽप्नोति ब्रह्मलोकं सनातनम् ॥ १ ॥
व्रतांते च तथा दद्याद्गामेकां च पयस्विनीम् ॥ रंभाफलपलाशेषु यो भुंक्ते च ऋतुद्वये ॥ २ ॥
वस्त्रयुग्मं च कांस्यं च शक्त्या दद्यात्सुखी भवेत् ॥ कांस्ये ब्रह्मा शिवो लक्ष्मीः कांस्यमेव विभा-
वसुः ॥ ३ ॥ कांस्यं विष्णुमयं यस्मादतः शांतिं प्रयच्छ मे ॥ नित्यं पलाशभोजी च तैलाभ्यंगविव-
र्जितः ॥ ४ ॥ स निहंत्यतिपापानि तूलराशिमिवानलः ॥ ब्रह्मघ्नश्च सुरापश्च बालघातकरश्च यः ॥ ५ ॥

कांसेके पात्रको दान यथाशक्ति करैहै वह सुखी रहैहैं कांसेमें ब्रह्मा है शिव है लक्ष्मी है और कांसोही अग्नि है ॥ ३ ॥ कासो जाते विष्णुमय है याते मोको शांति देय नित्यही पत्रनमें भोजन करै और तेल न लगावे ॥ ४ ॥ वह अपने पापनको ऐसे भस्म करिदेय जैसे रुईके ढेरको अग्नि जरायदेयहै ब्रह्महत्यारो मद्यप और बालकनको हत्यारो ॥ ५ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

और जे असत्यवादी हैं और जे स्त्री तथा व्रतके घाती हैं और जे अगम्यगामी हैं और जे विधवागामी हैं ॥ ६ ॥ चांडालीमें गमन करनहारे हैं हे केशव ! थे सब था व्रत करिके पापनते छूटिजायँ ह ॥ ७ ॥ और व्रतकी समाप्तिमें चौसठि पलको भारी कांसेके पात्रको और अलंकारयुक्त पयस्विनी बछडेवाली गौको दान करे ॥ ८ ॥ अलंकृत

असत्यवादिनो ये च स्त्रीघाती व्रतघातकः ॥ अगम्यागामिनश्चैव विधवागामिनस्तथा ॥ ६ ॥
चांडालीगामिनश्चैव विप्रस्त्रीगामिनस्तथा ॥ ते सर्वे पापनिर्मुक्ता व्रतेनानेन केशव ॥ ७ ॥ समा-
प्तौ कांस्यपात्रं तु चतुःषष्टिपलैर्युतम् ॥ सवत्सां गां च वै दद्यात्सालंकारां पयस्विनीम् ॥८॥ अलं-
कृताय विदुषे सुवस्त्राय सुवेषिणे ॥ भूमौ विलिप्य यो भुंक्ते देवं नारायणं स्मरन् ॥९॥ दद्याद्भूमिं
यथाशक्ति कृष्यां बहुजलांतिके ॥ आरोग्यपुत्रसंपन्नो राजा भवति धार्मिकः ॥ २१० ॥

और विद्वान् सुन्दर वस्त्रधारी और सुन्दर है वेष जाको ऐसे ब्राह्मणके अर्थ वह दान देय और जो भूमि लीपिकै देव नारायणको स्मरण करतोभयो भोजन करै है ॥ ९ ॥ वाको खेतीके योग्य बहुतसे जलके समीपकी भूमिको यथाशक्ति दान करै तो वह देनहारो आरोग्य और पुत्रन करिके संपन्न धर्मात्मा राजा होय ॥ २१० ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वह शत्रुके भयको नहीं प्राप्त होय है और विष्णुलोकको गमन करै है और जो अयाचितमें सुवर्ण और चन्दन समेत ॥ ११ ॥ षड्रस भोजन देय है वह परम गतिको प्राप्त होय है और जो हृषीकेश भगवान्के सोवनेके समय नक्त व्रतको करै है ॥ १२ ॥ और जो पीछे व्रतकी समाप्तिमें ब्राह्मणनको भोजन करावे है वह शिवलोकमें आनंद भोगै मनुष्य एकभक्त व्रत करिके थोरोसो भोजन करै और व्रतमें दृढ रहै ॥ १३ ॥ जो चारि महीने वासुदेवको

शत्रोर्भयं न लभते विष्णुलोकं स गच्छति ॥ अयाचिते त्वनड्वाहं सहिरण्यं सचंदनम् ॥ ११ ॥ षड्रसं भोजनं दद्यात्स याति परमां गतिम् ॥ यस्तु सुप्ते हृषीकेशे नक्तं च कुरुते व्रतम् ॥ १२ ॥ ब्राह्मणान् भोजयेत्पश्चाच्छिवलोके महीयते ॥ एकभक्तं नरः कृत्वा मिताशी च दृढव्रतः ॥ १३ ॥ योऽर्चयेच्चतुरो मासान् वासुदेवं स नाकभाक् ॥ समाप्तौ भोजयेद्विप्राञ्छक्त्या दद्याच्च दक्षिणाम् ॥ १४ ॥ यस्तु सुप्ते हृषीकेशे क्षितिशायी भवेन्नरः ॥ शय्यां सोपस्करां दद्याच्छिवलोके महीयते ॥ १५ ॥

पूजन करै है वह स्वर्गको भागी होय है और समाप्तिमें ब्राह्मणनको भोजन करावै और शक्तिके अनुसार दक्षिणा दे ॥ १४ ॥ और हृषीकेशके सोनेपै जो मनुष्य भूमिमें सोवत है और सामग्री समेत शय्याको दान करै है वह शिवलोकमें आनन्दसों भोगै है ॥ १५ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

और जो मनुष्य दो ऋतुन भरि पाँयनमें तेलको नहीं लगावै है वह मनुष्य ब्राह्मणनके पांव धोवै और उनको भोजन करावै ॥ १६ ॥ और यथाशक्ति दक्षिणा दे वो वह विष्णुलोकको जाय आषाढ आदि चारि महीनोंमें नख न कटवावै ॥ १७ ॥ तो वह आरोग्य और पुत्रन करिकै युक्त धर्मात्मा राजा होय और खीर, नोन, सहद, घी और

पादाभ्यंगं नरो यस्तु वर्जयेच्च ऋतुद्वये ॥ पादाभ्यंगं नरः कुर्याद्ब्राह्मणानां च भोजनम् ॥ १६ ॥
दक्षिणां च यथाशक्त्या स गच्छेद्विष्णुमंदिरम् ॥ आषाढाच्चतुरो मासान्वर्जयेन्नखकृंतनम् ॥ १७ ॥
आरोग्यपुत्रसंपन्नो राजा भवति धार्मिकः ॥ पायसं लवणं चैव मधुः सर्पिः फलानि च ॥ १८ ॥
चातुर्मास्ये वर्जयति गौरीशंकरतुष्टये ॥ कार्तिक्यां च पुनस्तानि ब्राह्मणाय निवेदयेत् ॥ १९ ॥
स रुद्रलोकमाप्नोति रुद्रव्रतनिषेवणात् ॥ यवान्नं भक्षयेद्यस्तु अथवा शालयः शुभाः ॥ २२० ॥
पुत्रपौत्रादिभिः सार्द्धं शिवलोके महीयते ॥ तैलाभ्यंगपरित्यागी विष्णुभक्तः सदा व्रती ॥ २१ ॥

फलनको जो ॥ १८ ॥ चातुर्मासमें गौरीशंकरकी प्रसन्नताके लिये छोडै वह फिरि उन्हीं वस्तुनको कार्तिकीके दिन ब्राह्मणनके अर्थ निवेदन करै ॥ १९ ॥ वह रुद्रके व्रतके सेवनेसों रुद्रलोकको प्राप्त होय है और जो चार महीने जवको अथवा सुन्दर चावलनको भोजन करै है ॥ २२० ॥ वह पुरुष पुत्र पौत्रादिकन समेत शिवलोकमें

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आनंद करै है तेल लगानेको त्यागि सदाव्रती विष्णुभक्त ॥ २१ ॥ वर्षाऋतुमें विष्णुको पूजन करिके विष्णुकी गतिको प्राप्त होय है और समाप्तिमें सुवर्ण करिके युक्त कांसेके पात्रको ॥ २२ ॥ तेलसों भरिके ब्राह्मणके अर्थ दान करै और वर्षाके चारि महीने शाक आदिको वर्जित करै ॥ २३ ॥ वह विष्णुके लोकमें प्राप्त होय है और

वर्षासु विष्णुमभ्यर्च्य वैष्णवीं लभते गतिम् ॥ समाप्तौ कांस्यपात्रं च सुवर्णेन समन्वितम् ॥२२॥ तैलेन पूरितं कृत्वा ब्राह्मणाय निवेदयेत् ॥ वार्षिकांश्चतुरो मासाञ्छाकादि परिवर्जयेत् ॥ २३ ॥ विष्णुलोकमवाप्नोति पितृतृप्तिः प्रजायते ॥ व्रतांते हरिमुद्दिश्य पात्रं राजतमेव हि ॥२४॥ वस्त्रेण वेष्टयेद्गंधपत्रपुष्पैः समर्चयेत् ॥ मूलपत्रकरीराग्रफलकांडाधिरूढकम् ॥ २५ ॥ त्वक्पुष्पं कवचं चेति शाकमष्टविधं स्मृतम् ॥ समभ्यर्च्य यथाशक्त्या ब्राह्मणान्वेदपारगान् ॥ २६ ॥ दद्याद्दक्षिणया सार्धं व्रतसंपूर्णहेतवे ॥ शिवसायुज्यमाप्नोति प्रसादाच्छूलपाणिनः ॥ २७ ॥

पितरोंकी तृप्ति हो जाय है व्रतके अन्तमें हरिके निमित्त चांदीके पात्रको दान करै ॥ २४ ॥ वा पात्रको वस्त्रसों लपेटै और गंध पत्र पुष्पन करिके पूजन करै मूल पत्र करीरको अग्र फल ॥२५॥ त्वचा पुष्प और कवच यह आठ प्रकारके शाक कह्यो है ताको यथाशक्ति पूजन करिके वेदके पारगामी ब्राह्मणनको ॥ २६ ॥ व्रतकी पूर्णताके लिये

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दक्षिणा समेत दान करै तो वह शूलपाणि जे शिव हैं तिनके प्रसादसों शिवकी सायुज्यताको प्राप्त होय है ॥२७॥ पुआनको छोडिके व्रतको भोजन करै और कार्तिकमें सुवर्ण गेहूं और वस्त्रनको दान करिके अश्वमेधके फलको प्राप्त होय है ॥२८॥ गेहूं सब जीवनके बल और पुष्टिके बढावनहारे हैं और हव्य कव्यमें मुख्य हैं ताते मोको

अपूपवर्जनं कृत्वा भोजनं व्रतमाचरेत् ॥ कार्तिके स्वर्णगोधूमान्वस्त्रं दत्त्वाऽश्वमेधकृत् ॥ २८ ॥
गोधूमाः सर्वजंतूनां बलपुष्टिविवर्धनाः ॥ मुख्याश्च हव्यकव्येषु तस्मान्मे ददतु श्रियम् ॥ २९ ॥
आषाढादिचतुर्मासान्वृन्ताकं वर्जयेन्नरः ॥ कारवल्लीफलं वापि अलाबुं पडवलं तथा ॥ २३० ॥
यद्वा तद्वा फलं वापि यच्च प्रियतमं भवेत् ॥ चातुर्मास्ये ततो वृत्ते रौप्याण्येतानि कारयेत् ॥३१॥
मध्ये विद्रुमयुक्तानि ह्यर्चयित्वा तु शक्तितः ॥ दद्याद्दक्षिणया सार्द्धं ब्राह्मणायातिभक्तितः ॥३२॥

लक्ष्मी देयँ ॥२९॥ आषाढ आदि चार महीनेमें मनुष्य बैंगननको न खाय और करेला न खाय तूंबी और परवर न खाय ॥२३०॥ और जो कोई यद्वा तद्वा फल प्यारो होय ताहि न खाय ता पीछे चातुर्मास्यके पूरे होनेपर इन सबनको चांदीके बनवावै ॥ ३१ ॥ और बीचमें मूँगे लगावै फिरि यथाशक्ति पूजन करिके दक्षिणासहित

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ब्राह्मणके अर्थ अतिभक्तिसों दान करै ॥ ३२ ॥ अभीष्ट देवताको नाम लेके कि, अमुक देव मेरे ऊपर प्रसन्न होय वह मनुष्य दीर्घ आयु और आरोग्यको प्राप्त होय और सुन्दर रूपवान् पुत्र पौत्रनको प्राप्त होय है ॥ ३३ ॥ और अक्षय संततिको और कीर्तिको प्राप्त होके स्वर्गमें आनन्द करै है और जो चातुर्मास्यमें फलनका त्याग करै है वह विष्णुलोकमें पूजित होय है ॥ ३४ ॥ और व्रतकी समाप्तिमें उन फलनको चांदीके बनवायके ब्राह्मणनको

अभीष्टं देवमुद्दिश्य देवो मे प्रीयतामिति ॥ स दीर्घमायुरारोग्यं पुत्रपौत्रान्सुरूपताम् ॥ ३३ ॥
अक्षय्यां संततिं कीर्तिं लब्ध्वा स्वर्गे महीयते॥ फलत्यागी भवेद्यस्तु विष्णुलोके स पूज्यते॥ ३४॥
समाप्तौ कलधौतानि तानि दद्याद्द्विजातये ॥ श्रावणे वर्जयेच्छाकं दधि भाद्रपदे तथा ॥ ३५ ॥
दुग्धमाश्वयुजे मासि कार्तिके द्विदलं त्यजेत् ॥ चत्वार्येतानि नित्यानि चतुराश्रमवर्तिनाम् ॥ ३६॥
प्रथमे मासि कर्त्तव्यं नित्यं शाकव्रतं नरैः ॥ द्वितीये मासि कर्तव्यं दधिव्रतमनुत्तमम् ॥ ३७ ॥

दान करै सावनमें शाक न खाय और भादोंमें दही न खाय ॥ ३५ ॥ क्वारके महीनेमें दूधको और कार्तिकमें दालिको त्याग करै ये चारि बातें चारों आश्रमनको नित्य हैं ॥ ३६ ॥ कि, प्रथम मास कहिये श्रावणमें मनुष्यनको शाकव्रत करचो चाहिये और दूसरे अर्थात् भादोंके महीनेमें उत्तम दधिको व्रत करने योग्य है ॥ ३७ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

और तीसरे कहिये क्वारमें दूधको और चौथे कहिये कार्तिकमें दालिको व्रत करै अर्थात् इन चारों महीनेमें चारों वस्तु न खाय और कुम्हडा, माष, मूली, गाजर इनकोहू न खाय ॥ ३८ ॥ और चातुर्मास्यमें मनुष्य करौंदा और ईख न खाय और मसूर तथा बहुत बीज जामें होयँ ऐसो फल और वैंगनको न खाय ॥ ३९ ॥ हे

पयोव्रतं तृतीये तु चतुर्थे द्विदलं तथा ॥ कूष्मांडं राजमाषाश्च मूलकं गृंजनं तथा ॥३८॥ करमर्दं चेक्षुदंडं चातुर्मास्ये त्यजेन्नरः ॥ मसूरं बहुबीजं च वृंताकं चैव वर्जयेत् ॥३९॥ नित्यान्येतानि विप्रेंद्र व्रतान्याहुर्मनीषिणः ॥ विशेषाद्बदरीं धात्रीमलाबुं चिंचिणीं त्यजेत् ॥२४०॥ जीर्णं धात्रीफलं ग्राह्यं जीर्णा ग्राह्या च चिंचणी ॥ वार्षिकांश्चतुरो मासान्प्रसुप्ते च जनार्दने ॥ ४१ ॥ मंचखट्वादिशयनं वर्जयेद्भक्तिमान्नरः ॥ अनृतौ वर्जयेद्भार्यामृतौ गच्छन्न दुष्यति ॥ ४२ ॥

विप्रेंद्र! पण्डितोंने ये नित्यव्रत कहे हैं और विशेष करिके बेर आँवले लौकी और अमिलीको त्याग करै ॥२४०॥ पुराने आमले तथा पुरानी अमिली वर्षाके चार महीने ताईं भगवान् जनार्दनके सोनेके समय लेने योग्य है ॥४१॥ और बुद्धिमान् मनुष्य मंचान तथा खाटके सोवनेको त्याग करै और विना ऋतुके स्त्रीगमन न करै और

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ऋतुसमय जो गमन करै तो दोष नहीं है ॥ ४२ ॥ मधुवेलि और सहिंजनेको नर चातुर्मास्यमें त्याग करै और बैंगन कालिंदा बेल गूलर तथा भिस्सटा अर्थात् शाकविशेषको त्याग करै ॥ ४३ ॥ ये जाके उदरमें जीर्ण होय हैं ताते हारि अतिदूर रहैं हैं उपवास तथा नक्तव्रत और एकभक्त तथा अयाचित ॥ ४४ ॥ जो इनके करनेको असमर्थ होय तो प्रातःकाल और संध्याको स्नान पूजन आदिको करै तो विष्णुलो-

मधुवेलीं च शिग्रुं च चातुर्मास्ये त्यजेन्नरः ॥ वृंताकं च कलिंगं च बिल्वोदुंबरभिस्सटाः ॥ ४३ ॥
उदरे यस्य जीर्यंते तस्य दूरतरो हरिः ॥ उपवासस्तथा नक्तमेकभक्तमयाचितम् ॥ ४४ ॥
अशक्तस्तु यथा कुर्यात्सायं प्रातरखंडितम् ॥ स्नानपूजादिसंयुक्ताः स नरो हरिलोकभाक् ॥ ४५ ॥
गीतवाद्यकरो विष्णोर्गांधर्वं लोकमाप्नुयात् ॥ मधुभुक्च भवेद्राजा पुरुषो गुडवर्जनात् ॥ ४६ ॥
लभेच्च संततिं दीर्घां पुत्रपौत्रादिवर्धिनीम् ॥ तैलस्य वर्जनाद्राजन्सुन्दरांगः प्रजायते ॥ ४७ ॥

कको प्राप्त होय ॥ ४५ ॥ और जो विष्णुके आगे गावै बजावै है वह गंधर्वनके लोकको प्राप्त होय है और मनुष्य गुड़के छोडनेसों मीठेको खानहारो राजा होय है ॥ ४६ ॥ और पुत्र पौत्रनकी बढावनहारी संततिको प्राप्त होय है और हे राजन् ! तैलके छोड़नेसों सुंदर है अंग जाको ऐसो हो जाय है ॥ ४७ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कसूमको तेल छोडनेसों शत्रु नाशको प्राप्त होय है और महुआके तेलके त्यागसों सौभाग्यके फलको प्राप्त होय है ॥ ४८ ॥ कटु, तिक्त, मधुर, कषाय, लवण इन रसनके त्यागसों विरूपता और दुर्गंधको कबहू नहीं प्राप्त होय ॥ ४९ ॥ और पुष्प आदि भोगनके त्यागसों स्वर्गलोकमें विद्याधर होय और जो योगाभ्यासी होय वह

कौसुंभतैलसंत्यागाच्छत्रुनाशमवाप्नुयात् ॥ मधूकतैलत्यागाच्च सुसौभाग्यफलं लभेत् ॥ ४८ ॥
कटु तिक्तं च मधुरं कषायलवणात्रसान् ॥ वर्जयेत् स च वैरूप्यं दौर्गंध्यं नाप्नुयात्सदा ॥ ४९ ॥
पुष्पादिभोगत्यागेन स्वर्गे विद्याधरो भवेत् ॥ योगाभ्यासी भवेद्यस्तु स ब्रह्मपदवीमियात् ॥ ५० ॥
तांबूलवर्जनाद्रोगी सद्यो मुक्तामयो भवेत् ॥ पादाभ्यंगपरित्यागाच्छिरोभ्यंगस्य पार्थिव ॥ ५१ ॥
दीप्तिमान् दीप्तकरणो यक्षद्रव्यपतिर्भवेत् ॥ दधिदुग्धपरित्यागी गोलोकं लभते नरः ॥ ५२ ॥
इह लोकमवाप्नोति स्थालीपाकविवर्जनात् ॥ एकांतरोपवासेन ब्रह्मलोके महीयते ॥ ५३ ॥

ब्रह्मपदवीको प्राप्त होय ॥ ५० ॥ और तांबूलके छोडनेसों रोगी शीघ्रही रोगरहित होजाय है राजन् ! पाँयनमें और शिरमें तेल लगानेके छोडनेसों ॥ ५१ ॥ दीप्तिमान् और दीप्त इंद्रियहारो यक्षद्रव्यपति होय है और दही दूधको त्याग करनहारो मनुष्य गोलोकको प्राप्त होय है ॥ ५२ ॥ स्थालीपाकके त्यागसों या लोकमें सुख पावै है और एक दिन

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बीचमें देके व्रत करनहारो मनुष्य ब्रह्मलोकमें आनंद करै है ॥ ५३ ॥ वर्षाके चार महीनेके ताईं जो नख और बारनको धारण करै है वह नर कल्पस्थायी होय यामें संदेह नहीं है ॥ ५४ ॥ और जो " नमो नारायणाय " या मंत्रको चार महीने जपै है ताको अनंतफल मिलै है और विष्णुके चरणकमलोंके स्पर्शसों मनुष्य कृतार्थ हो जाय है ॥ ५५ ॥ और जो हरिके मंदिरमें एक लाख प्रदक्षिणा करै है वह हंसयुक्त विमानमें स्थित होके विष्णुपुरीको

चतुरो वार्षिकान्मासान् नखरोमाणि धारयेत् ॥ कल्पस्थायी भवेद्राजन्स नरो नात्र संशयः ॥५४॥
नमो नारायणायेति जपित्वाऽनंतकं फलम् ॥ विष्णुपादांबुजस्पर्शात्कृतकृत्यो भवेन्नरः ॥ ५५ ॥
लक्षप्रदक्षिणा यस्तु करोति हरिमंदिरे ॥ हंसयुक्तविमानेन स याति वैष्णवीं पुरीम् ॥ ५६ ॥
त्रिरात्रभोजनत्यागान्मोदते दिवि देववत् ॥ परान्नवर्जनाद्राजन्देवो वै मानुषो भवेत् ॥ ५७ ॥
प्राजापत्यं चरेद्यो वै चातुर्मास्यव्रतान्नरः ॥ मुच्यते पातकैः सर्वैस्त्रिविधैर्नात्र संशयः ॥ ५८ ॥

जाय है ॥ ५६ ॥ तीनि रात्रिपर्यंत भोजनके त्यागसों स्वर्गमें देवतानके समान आनंद करै है और हे राजन् ! पराये अन्नके त्यागसों मनुष्य देवता हो जाय है ॥ ५७ ॥ जो चार महीने हे राजन् ! प्राजापत्य व्रतको चातुर्मास्य करै है वह कायिक वाचिक मानसिक तीनों प्रकारके पापनते छूटिजाय है यामें संदेह नहीं है ॥ ५८ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

और जो तप्तकृच्छ्र और अतिकृच्छ्र करिके हरिके शयनको व्यतीत करै है वह पुनरावृत्ति करिके वर्जित परमस्थानको प्राप्त होय है ॥ ५९ ॥ हे राजन् ! जो चांद्रायण व्रत करिके चारि महीने व्यतीत करै है वह दिव्य देह होके शिवलोकको जाय है ॥ २६० ॥ जो मनुष्य चातुर्मास्यमें अन्न आदिको भोजन छोडि देय है वह हरिकी

तप्तकृच्छ्रातिकृच्छ्राभ्यां यः क्षिपेच्छयनं हरेः ॥ स याति परमं स्थानं पुनरावृत्तिवर्जितम् ॥ ५९ ॥ चांद्रायणेन यो राजन् क्षिपेन्मासचतुष्टयम् ॥ दिव्यदेहो भवेत्सोऽथ शिवलोकं च गच्छति ॥ २६० ॥ चातुर्मास्ये नरो यो वै त्यजेदन्नादिभक्षणम् ॥ स गच्छेद्धरिसायुज्यं न भूयस्तु प्रजायते ॥ ६१ ॥ भिक्षाभोजी नरो यो हि स भवेद्वेदपारगः ॥ पयोव्रतेन यो राजन् क्षिपेन्मासचतुष्टयम् ॥ ६२ ॥ तस्य वंशसमुच्छेदः कदाचिन्नोपपद्यते ॥ पंचगव्याशनः पार्थ चान्द्रायणफलं लभेत् ॥ ६३ ॥

सायुज्यताको प्राप्त होय है और फिरि या लोकमें नहीं जन्म लेय है ॥ ६१ ॥ जो चातुर्मास्यमें भिक्षा माँगिके भोजन करै है वह वेदनको पारगामी होय है हे राजन् ! जो मनुष्य पयोव्रत करिके चारि महीनोंको व्यतीत करै है ॥ ६२ ॥ ताके वंशको कभी नाश नहीं होय है और जो पंचगव्यको भोजन करै है हे युधिष्ठिर ! वह चांद्रायण व्रतके फलको

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्राप्त होय है ॥६३॥ और तीनि दिन ताईं जलके त्यागसों रोगन करिके नहीं दबायो जाय हे युधिष्ठिर ! इत्यादि व्रतन करिके केशव भगवान् संतुष्ट होय हैं ॥ ६४ ॥ दूधके समुद्रकी लहरीमें जा दिन भगवान् सोवैं हैं और जा दिन जागैं हैं वा दिन अनन्य मन होके व्रत करनहारे मनुष्यनको गरुडासन भगवान् गतिको देय हैं ॥ २६५ ॥

दिनत्रयं जलत्यागान्न रोगैरभिभूयते ॥ एवमादिव्रतैः पार्थ तुष्टिमायाति केशवः ॥ ६४ ॥ दुग्धाब्धिवीचिशयने भगवाननंतो यस्मिन्दिने स्वपिति चाथ विबुध्यते च ॥ तस्मिन्ननन्यमनसामुपवासभाजां पुंसां ददाति च गतिं गरुडासनोऽसौ ॥ २६५ ॥ इति श्रीभविष्योत्तरपुराणे विष्णोः शयन्येकादशीचातुर्मास्यमाहात्म्यं सम्पूर्णम् ॥ १६ ॥ अथ श्रावणकृष्णैकादशीकथा ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ आषाढशुक्लपक्षे तु यद्देवशयनव्रतम् ॥ तन्मया श्रुतपूर्वं हि पुराणे बहुविस्तरम् ॥ १ ॥

इति श्रीमत्पण्डितपरमसुखतनयपण्डितकेशवप्रसादशर्म्मद्विवेदिकृतायामेकादशीमाहात्म्यभाषाटीकायामाषाढशुक्लैकादशीदेवशयनीकथा समाप्ता ॥ १६ ॥ अथ श्रावणकृष्णैकादशीकामिकाकथा ॥ ॥ नभस्य कृष्णपक्षे या कामिकैकादशी भवेत् ॥ तन्माहात्म्यस्य भाषायां विवृतिं सन्तनोम्यहम् ॥ १ ॥ युधिष्ठिर बोले कि, आषाढके शुक्लपक्षमें जो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

देवशयन व्रत होय है सो मैंने पहिले पुराणनमें बहुत विस्तारसहित सुनो है ॥ १ ॥ श्रावणमासके कृष्णपक्षमें कौनसे नामकी एकादशी होय है हे वासुदेव ! हे गोविंद ! यह कहिये आपके लिये नमस्कार है ॥ २ ॥ श्रीकृष्ण बोले कि, हे राजन् ! सुनो पापनको नाश करनहारो व्रत मैं कहौं हौं जो व्रत पहले जो पूछनहारे नारद मुनि हैं तिनके अर्थ

श्रावणे कृष्णपक्षे तु किंनामैकादशी भवेत् ॥ एतत्कथय गोविंद वासुदेव नमोऽस्तु ते ॥ २ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ शृणु राजन्प्रवक्ष्यामि व्रतं पापप्रणाशनम् ॥ नारदाय पुरा राजन्पृच्छते च पितामहः ॥ ३ ॥ परं यदुक्तवांस्तात तदहं ते वदामि च ॥ नारद उवाच ॥ भगवञ्छ्रोतुमिच्छामि त्वत्तोऽहं कमलासन ॥ ४ ॥ श्रावणस्यासिते पक्षे किंनामैकादशी भवेत् ॥ को देवः को विधिस्तस्याः किं पुण्यं कथय प्रभो ॥ ५ ॥

पितामहने ॥ ३ ॥ जो उत्कृष्ट कथन कियो हे तात ! सो मैं तुमसों कहौं हौं नारद बोले कि, हे भगवन् ! हे कमलासन ! तुमसों मैं सुनो चाहौं हौं ॥ ४ ॥ कि, हे श्रावणके कृष्णपक्षकी एकादशीको कहा नाम है और वाको देवता कौन है और वाकी विधि कहा है और पुण्य कहा है हे प्रभो ! सो हमसों कहो ॥ ५ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ब्रह्मा बोले कि, हे नारद ! लोकनके हितकी कामनासों मैं तुमसों कहौं हौं तुम सुनो कि, श्रावणकी कृष्ण-पक्षकी एकादशीको कामिका नाम है ॥ ६ ॥ ताके श्रवणमात्रहीसों वाजपेय यज्ञको फल मिलै है और वा एका-दशीके दिन जो शंख चक्र और गदाके धारण करनहारे देवको पूजन करै ॥ ७ ॥ श्रीधर है नाम जिनको ऐसे

ब्रह्मोवाच ॥ शृणु नारद ते वच्मि लोकानां हितकाम्यया ॥ श्रावणैकादशीकृष्णा कामिकेति च नामतः ॥ ६ ॥ तस्याः श्रवणमात्रेण वाजपेयफलं लभेत् ॥ तस्यां तु पूजयेद्देवं शंखचक्र-गदाधरम् ॥ ७ ॥ श्रीधराख्यं हरिं विष्णुं माधवं मधुसूदनम् ॥ यजते ध्यायते यो वै तस्य पुण्यफलं शृणु ॥ ८ ॥ न गंगायां न काश्यां वै नैमिषे न च पुष्करे ॥ तत्फलं समवाप्नोति यत्फलं विष्णुपूजनात् ॥ ९ ॥ केदारे च कुरुक्षेत्रे राहुग्रस्ते दिवाकरे ॥ न तत्फलमवाप्नोति यत्फलं कृष्णपूजनात् ॥ १० ॥

जे हरि विष्णु माधव मधुसूदन हैं तिनको जो पूजन और ध्यान करै है ताके पुण्यको फल सुनो ॥ ८ ॥ जो फल विष्णुके पूजनसों प्राप्त होय है वह न गंगामें न काशीमें न नैमिषारण्यमें न पुष्करमें प्राप्त होय है ॥ ९ ॥ केदार-क्षेत्रमें और कुरुक्षेत्रमें सूर्यग्रहणके समय वह फल नहीं मिलै है जो फल कृष्णके पूजनसों प्राप्त होय है ॥ १० ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

समुद्र और वन करिके युक्त भूमिको जो दान करै है और जो सिंहकी बृहस्पतिमें गोदावरीमें और व्यतीपातमें गंडकी नदीके स्नानसों वह फल नहीं मिलै है ॥ ११ ॥ जो कृष्णके पूजनसों प्राप्त होय है वह फल और कामिका एकादशीके व्रत करनहारेको फल ये दोनों फल समान हैं ॥ १२ ॥ ब्याई भई गौ जो सामग्री समेत

ससागरवनोपेतां यो ददाति वसुंधराम् ॥ गोदावर्यां गुरौ सिंहे व्यतीपाते च गंडके ॥ ११ ॥
न तत्फलमवाप्नोति यत्फलं कृष्णपूजनात् ॥ कामिकाव्रतकारी च ह्युभौ समफलौ स्मृतौ ॥ १२ ॥
प्रसूयमानां यो धेनुं दद्यात्सोपस्करां नरः ॥ तत्फलं समवाप्नोति कामिकाव्रतकारकः ॥ १३ ॥
श्रावणे श्रीधरं देवं पूजयेद्यो नरोत्तमः ॥ तेनैव पूजिता देवा गंधर्वोरगपन्नगाः ॥ १४ ॥ तस्मा-
त्सर्वप्रयत्नेन कामिकादिवसे हरिः ॥ पूजनीयो यथाशक्त्या मनुष्यैः पापभीरुभिः ॥ १५ ॥

दान करै है वह जा फलको प्राप्त होय है वाहि फलको एकादशीके व्रतको करनहारो नर प्राप्त होय है ॥ १३ ॥ जो उत्तम नर श्रावणमें श्रीधर देव भगवान्को पूजन करै है वा करिके देवता गंधर्व उरग और पन्नग ये सब पूजे गये ॥ १४ ॥ ताते सब यत्ननसों कामिका एकादशीके दिन पापनसों डरे भये मनुष्य करिके यथाशक्ति हरिको

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पूजन करनो योग्य है ॥ १५ ॥ संसाररूपी समुद्रमें डूबे भये और पापरूपी कीचसों व्याकुल मनुष्य हैं तिनके उद्धारके लिये कामिकाको व्रत उत्तम है ॥ १६ ॥ याते परे पवित्र और कोई पापकी नाश करनहारी नहीं है हे नारद ! ऐसो जानो यह भगवान्‌ने पहले आप कही है ॥ १७ ॥ अध्यात्मविद्यामें लगे मनुष्यनको जो फल मिलै है ताते

संसारार्णवमग्ना ये पापपंकसमाकुलाः ॥ तेषामुद्धरणार्थाय कामिकाव्रतमुत्तमम् ॥ १६ ॥ नातः परतरा काचित्पवित्रा पापहारिणी ॥ एवं नारद जानीहि स्वयमाह पुरा हरिः ॥ १७ ॥ अध्यात्मविद्यानिरतैर्यत्फलं प्राप्यते नरैः ॥ ततो बहुतरं विद्धि कामिकाव्रतसेवनात् ॥ १८ ॥ रात्रौ जागरणं कुर्यात्कामिकाव्रतकृन्नरः ॥ न पश्यति यमं रौद्रं नैव पश्यति दुर्गतिम् ॥ १९ ॥ न पश्यति कुयोनिं च कामिकाव्रतसेवनात् ॥ कामिकाया व्रतेनैव कैवल्यं योगिनो गताः ॥ सर्वैः सर्वप्रयत्नेन कर्तव्या नियतात्मभिः ॥ २० ॥

बहुत अधिक कामिका एकादशीके व्रत करनहारेको जानो ॥ १८ ॥ कामिकाको व्रत करनहारो जो मनुष्य रात्रिमें जागरण करै है वह भयानक यमको और दुर्गतिको नहीं देखै है ॥ १९ ॥ और कामिकाके व्रतके सेवनसों बुरी योनिको नहीं देखै है कामिकाहीके व्रत करिकै योगी कैवल्यमुक्तिको प्राप्त भये हैं ॥ २० ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तुलसीते उत्पन्न पत्रन कारिके जो मनुष्य हरिको पूजन करै है निश्चय कारिके वह पापनसों ऐसे लिप्त नहीं होय है जैसे जल कारिके कमलको पत्र लिप्त नहीं होय है ॥ २१ ॥ एक भार सुवर्ण ताते चौगुनी चांदीको दान कारिके जा फलको प्राप्त होय है ता फलको तुलसीदलमें प्राप्त होय है ॥ २२ ॥ रत्न मोती वैडूर्य मणि और मूंगा

तुलसीप्रभवैः पत्रैर्यो नरः पूजयेद्धरिम् ॥ न वै स लिप्यते पापैः पद्मपत्रमिवांभसा ॥ २१ ॥ सुवर्ण-भारमेकं तु रजतं च चतुर्गुणम् ॥ दत्त्वा यत्फलमाप्नोति तत्फलं तुलसीदले ॥ २२ ॥ रत्नमौक्तिक-वैडूर्यप्रवालादिभिरर्चितः ॥ न तुष्यति तथा विष्णुस्तुलसीपूजनाद्यथा ॥ २३ ॥ तुलसीमंजरी-भिस्तु पूजितो येन केशवः ॥ आजन्मकृतपापस्य तेन संमार्जिता लिपिः ॥२४॥ या दृष्टा निखि-लाघसंघशमनी स्पृष्टा वपुःपावनी रोगाणामभिवंदिता निरसनी सिक्तांतकत्रासिनी ॥ प्रत्यासत्ति-विधायिनी भगवतः कृष्णस्य संरोपिता न्यस्ता तच्चरणे विमुक्तिफलदा तस्यै तुलस्यै नमः ॥२५॥

आदिसों पूजन किये गये भगवान् ऐसे प्रसन्न नहीं होय हैं जैसे कि, तुलसीदलके पूजनसों प्रसन्न होय हैं ॥ २३ ॥ जा मनुष्यने तुलसीकी मंजरीनसों केशव भगवान्को पूजन कियो वाने जन्मते करे भये पापनको लेख मेटि दियो ॥२४॥ जो दर्शनसों संपूर्ण पापनके समूहको शांति कारि देती है और स्पर्श करनेसों शरीरको पवित्र कारि देती है और नम-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्कार करनेसों रोगनको दूरि करदेती है और सींचनेसों यमको त्रास दूर कर देती है और लगानेसों भगवान्‌की निकटताको करती है और उनके चरणनमें चढानेसों जो मुक्तिको देती है वा तुलसीके अर्थ नमस्कार है ॥ २५ ॥ जो मनुष्य हरिके दिनमें रात्रिदिन दीपदान करै है वाके पुण्यकी संख्याको चित्रगुप्तहू नहीं जानै है ॥ २६ ॥ एकादशीके दिन कृष्णके आगे जाको दीपक जलै है स्वर्गमें स्थित ताके पितर अमृतसों तृप्त होय हैं ॥ २७ ॥ घृतसों वा तिलके तेलसों

दीपं ददाति यो मर्त्यो दिवारात्रौ हरेर्दिने ॥ तस्य पुण्यस्य संख्यानं चित्रगुप्तोऽपि वेत्ति न ॥२६॥ कृष्णाग्रे दीपको यस्य ज्वलेदेकादशीदिने ॥ पितरस्तस्य तृप्यंति अमृतेन दिवि स्थिताः ॥२७॥ घृतेन दीपं प्रज्वाल्य तिलतैलेन वा पुनः ॥ प्रयाति सूर्यलोकेऽसौ दीपकोटिशतैर्वृतः ॥२८॥ अयं तवाग्रे कथितः कामिकामहिमा मया ॥ अतो नरैः प्रकर्तव्या सर्वपातकहारिणी ॥ २९ ॥ ब्रह्महत्याऽपहरणी भ्रूणहत्याविनाशिनी ॥ त्रिदिवस्थानदात्री च महापुण्यफलप्रदा ॥ ३० ॥

दीपक प्रज्वलित करिके मनुष्य सैकडों करोडों दीपकों करिके युक्त हो सूर्यके लोकमें जाय है ॥ २८ ॥ मैंने तुम्हारे आगे इसकी महिमा कही याते सब पापनकी हरनवाली यह एकादशी मनुष्यनको करनी योग्य है ॥ २९ ॥ यह ब्रह्महत्याकी हरनेवाली और भ्रूणहत्याकी नाश करनेवाली है और महापुण्यफलकी देनहारी यह स्वर्गमें स्थान देती है ॥ ३० ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मनुष्य श्रद्धासमेत याको माहात्म्य सुनिके विष्णुलोकको प्राप्त होय है और सब पापनसों छूटि जाय है ॥ ३१ ॥ इति श्रीमत्पण्डितपरमसुखतनयपण्डितकेशवप्रसादशर्म्मद्विवेदिकृतायामेकादशीमाहात्म्यभाषाटीकायां दीपिकासमाख्यायां श्रावणकृष्णैकादशीकामिकाकथा समाप्ता ॥ १७ ॥ अथ श्रावणशुक्लैकादशीपुत्रदाकथा ॥ श्रावणस्य

श्रुत्वा माहात्म्यमेतस्या नरः श्रद्धासमन्वितः ॥ विष्णुलोकमवाप्नोति सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ ३१ ॥ इति श्रीब्रह्मवैवर्तपुराणे श्रावणकृष्णैकादशीकामिकामाहात्म्यं समाप्तम् ॥ १७ ॥ अथ श्रावणशुक्लैकादशीकथा ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ श्रावणस्य सिते पक्षे किंनामैकादशी भवेत् ॥ कथयस्व प्रसादेन ममाग्रे मधुसूदन ॥ १ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ शृणुष्वावहितो राजन् कथां पापहरां पराम् ॥ यस्याः श्रवणमात्रेण वाजपेयफलं लभेत् ॥ २ ॥

सिते पक्षे पुत्रदैकादशी स्मृता ॥ तन्माहात्म्यस्य भाषायां दीपिकां संतनोम्यहम् ॥ १ ॥ युधिष्ठिर बोले कि, श्रावणके शुक्लपक्षमें जो एकादशी होय है वाको कहा नाम है हे मधुसूदन ! सो प्रसन्नतासों मेरे आगे कहिये ॥ १ ॥ श्रीकृष्ण बोले कि, हे राजन् ! पापनकी हरनेवाली या कथाको मैं कहौं हौं तुम सावधान होके सुनो जाके श्रवणमात्रहीसों

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वाजपेययज्ञको फल प्राप्त होय है ॥ २ ॥ द्वापरयुगकी आदिमें पाहिले माहिष्मतीपुरीमें महीजित् नामसा प्रसिद्ध राजा आप राज्य करै हौ ॥ ३ ॥ पुत्रहीन उस राजाको वह राज्य सुखकारी नहीं हो काहेसों कि, पुत्ररहित मनुष्यकूं या लोकमें तथा परलोकमें सुख नहीं है ॥ ४ ॥ पुत्रकी प्राप्तिमें यत्न करते भये या राजाको बहुतसो काल

द्वापरस्य युगस्यादौ पुरा माहिष्मतीपुरे ॥ राजा महीजिदाख्यातो राज्यं पालयति स्वयम् ॥३॥ पुत्रहीनस्य तस्यैव न तद्राज्यं सुखप्रदम् ॥ अपुत्रस्य सुखं नास्ति इह लोके परत्र च ॥४॥ यततोऽस्य सुखप्राप्तौ कालो बहुतरो गतः ॥ न प्राप्तश्च सुतो राज्ञा सर्वसौख्यप्रदो नृणाम् ॥ ५ ॥ दृष्ट्वाऽऽत्मानं प्रवयसं राजा चिंतापरोऽभवत् ॥ सदोगतः प्रजामध्य इदं वचनमब्रवीत् ॥ ६॥ इह जन्मनि भो लोका न मया पातकं कृतम् ॥ अन्यायोपार्जितं वित्तं क्षिप्तं कोशे मया नहि ॥ ७ ॥

बीतिगयो परंतु मनुष्यनको संपूर्ण सुख देनहारो पुत्र वा राजाने नहीं पायो ॥ ५ ॥ और अपनी अधिक अवस्था देखिकै राजा चिंतामें तत्पर होत भयो और सभामें बैठि प्रजानके मध्यमें यह वचन बोलत भयो ॥ ६ ॥ कि, हे लोगो ! या जन्ममें तो मैंने पापनको न कियो है और न मैंने अन्यायसों उपार्जित धन भंडारमें डारो है ॥७॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

 और न मैंने कबहूं ब्राह्मणनको तथा देवतानको धन ग्रहण कियो है और बहुतसे पापकी देनहारी काहूकी
धरोहरिहू नहीं दबाई है ॥ ८ ॥ और पुत्रकी भाँति प्रजानको पालन कियो है तथा धर्मसों पृथिवी जीती है और
 भाई वा पुत्रके समानहू दुष्ट मनुष्यनको दंड दियो है और द्वेष करने योग्यहू शिष्ट मनुष्यनको मैंने सत्कार

ब्रह्मस्वं देवद्रविणं न गृहीतं मया क्वचित् ॥ न्यासापहारो न कृतः परस्य बहुपापदः ॥८॥ सुत-
वत्पालिता लोका धर्मेण विजिता मही ॥ दुष्टेषु पातितो दंडो बंधुपुत्रोपमेष्वपि ॥ शिष्टाः सुपू-
जिता लोका द्वेष्याश्चापि महाजनाः ॥ ९ ॥ इत्येवं व्रजतो मार्गे धर्मयुक्ते द्विजोत्तमाः ॥ कस्मा-
न्मम गृहे पुत्रो न जातस्ताद्विचार्यताम् ॥ १० ॥ इति वाक्यं द्विजाः श्रुत्वा सप्रजाः सपुरोहिताः ॥
मंत्रयित्वा नृपहितं जग्मुस्ते गहनं वनम् ॥ ११ ॥ इतस्ततश्च पश्यंतश्चाश्रमानृषिसेवितान् ॥
नृपतेर्हितमिच्छंतो ददृशुर्मुनिसत्तमम् ॥ १२ ॥

कियो है ॥ ९ ॥ हे श्रेष्ठब्राह्मणो ! या प्रकार धर्मयुक्त मार्गमें चलतो जो मैं हौं ताके घरमें पुत्र काहेते नहीं भयो है
सो विचार करिये ॥ १० ॥ प्रजा और पुरोहितन सहित सब ब्राह्मण राजाको यह वचन सुनिकै राजाके हितकी
सलाह करिके वे ब्राह्मण घने वनको जात भये ॥ ११ ॥ राजाके हितकी इच्छासों जहाँ तहाँ ऋषिन करि सेवित आश्र-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मनको देखते २ अतिश्रेष्ठ मुनिको देखत भये ॥ १२ ॥ घोर तपको करिरहे हैं चित् आनंदरूप और निरामय हैं निराहार हैं और जितात्मा हैं जितक्रोध हैं और सनातन हैं ॥ १३ ॥ धर्मतत्त्वके ज्ञाता और सब शास्त्रनमें प्रवीण और बडी है आयु जिनकी अनेक ब्रह्मके तुल्य ऐसे महात्मा लोमशऋषिको देखत भये ॥ १४ ॥ कल्पके बीत-

तप्यमानं तपो घोरं चिदानंदं निरामयम् ॥ निराहारं जितात्मानं जितक्रोधं सनातनम् ॥ १३ ॥ लोमशं धर्मतत्त्वज्ञं सर्वशास्त्रविशारदम् ॥ दीर्घायुषं महात्मानमनेकब्रह्मसंमितम् ॥ १४ ॥ कल्पे गते यस्य एकमेकं लोम विशीर्यते ॥ अतो लोमशनामानं त्रिकालज्ञं महामुनिम् ॥ १५ ॥ तं दृष्ट्वा हर्षिताः सर्वे ह्याजग्मुस्तस्य सन्निधिम् ॥ यथान्यायं यथार्हं ते नमश्चक्रुर्यथोदितम् ॥ १६ ॥ विन-याऽवनताः सर्वे ह्यूचुश्चैव परस्परम् ॥ अस्मद्भाग्यवशादेव प्राप्तोऽयं मुनिसत्तमः ॥ १७ ॥

नेपै जिनको एक रोम उखडे है याते उनको लोमश नाम है वे महामुनि त्रिकालके ज्ञाता हैं ॥ १५ ॥ उनको देखि सब प्रसन्न होके उनके समीप जात भये यथान्याय और यथायोग्य वे सब उनको नमस्कार करत भये ॥ १६ ॥ और विनयसों नम्र होके वे सब आपसमें बोलत भये कि, हमारेही सबके भाग्यके वशसों ये मुनिसत्तम

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मिले हैं ॥ १७ ॥ उन सबको या प्रकार प्रणत देखिके वे मुनिश्रेष्ठ बोलत भये । लोमश बोले कि, तुम सब यहां काहेको आये हो सो कारणसमेत कहो ॥ १८ ॥ मेरे दर्शनसों आनंदयुक्त वाणीनसे मेरी स्तुतिहीसी करिरहे हो याते जामें तुम्हारा हित होय सो मैं अवश्य करौंगो ॥ १९ ॥ हम सरीखे मनुष्यनको जन्म परोपकारहीके लिये

तांस्तथा प्रणतान्दृष्ट्वा ह्युवाच मुनिसत्तमः ॥ लोमश उवाच ॥ किमर्थमिह संप्राप्ताः कथयध्वं सकारणम् ॥ १८ ॥ मद्दर्शनाह्लादगिरः स्तुवंत इव मां किमु ॥ असंशयं करिष्यामि भवतां यद्धितं भवेच्च ॥ १९ ॥ परोपकृतये जन्म मादृशानां न संशयः ॥ जना ऊचुः ॥ श्रूयतामभिधास्यामो वयमागमकारणम् ॥ २० ॥ संशयच्छेदनार्थाय तव सन्निधिमागताः ॥ पद्मयोनेः परतरस्त्वत्तः श्रेष्ठो न विद्यते ॥ २१ ॥ अतः कार्यवशात्प्राप्ताः समीपं भवतो वयम् ॥ महीजिन्नाम राजाऽसौ पुत्रहीनोऽस्ति सांप्रतम् ॥ २२ ॥

है यामें संदेह नहीं है जन बोले कि, सुनिये हम अपने आवनेको कारण कहैंगे ॥ २० ॥ संदेहके दूर करनेके लिये हम आपके समीप आये हैं ब्रह्माते परतर तुमते श्रेष्ठ और कोई नहीं ह ॥ २१ ॥ याहि कारणते कार्यके वशसों हम सब आपके समीप आये हैं कि, यह महीजित् नाम राजा या समय पुत्र करिके रहित है ॥ २२ ॥ १०६

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे ब्रह्मन् ! हम वाकी प्रजा हैं वा करिके पुत्रके समान पालन किये हैं वाहि पुत्ररहित देखि वाके दुःखसों दुःखी हैं ॥ २३ ॥ नैष्ठिकी मति करिके यहां तप करनेको आये हैं हे द्विजोत्तम ! वा राजाके भाग्यसों आपके दर्शन हमको भये हैं ॥ २४ ॥ बडोंके दर्शनहीसे मनुष्यनकी कार्यसिद्धि होती है हे मुने ! ऐसो उपदेश कीजिये

वयं तस्य प्रजा ब्रह्मन्पुत्रवत्तेन पालिताः ॥ तं पुत्ररहितं दृष्ट्वा तस्य दुःखेन दुःखिनः ॥२३॥ तपः कर्तुमिहायाता मतिं कृत्वा तु नैष्ठिकीम् ॥ तस्य भाग्यवशाद्दृष्टस्त्वमस्माभिर्द्विजोत्तम ॥२४॥ महतां दर्शनेनैव कार्यसिद्धिर्भवेन्नृणाम् ॥ उपदेशं वद मुने राज्ञः पुत्रो यथा भवेत् ॥२५॥ इति तेषां वचः श्रुत्वा मुहूर्तं ध्यानमास्थितः ॥ प्रत्युवाच मुनिर्ज्ञात्वा तस्य जन्म पुरातनम् ॥२६॥ लोमश उवाच ॥ पूर्वजन्मनि वैश्योऽयं धनहीनो नृशंसकृत् ॥ वाणिज्यकर्मनिरतो ग्रामाद्ग्रामांतरं भृशम् ॥ २७ ॥ ज्येष्ठमासि सिते पक्षे द्वादशीदिवसे तथा ॥ मध्याह्ने द्युमणौ प्राप्ते ग्रामसीम्नि जलाशयम् ॥ २८ ॥

जाते वाके पुत्र होय ॥ २५ ॥ उनको यह वचन सुनिके मुनि क्षणभर ध्यानमें स्थित होत भये और वा राजाको पहलो जन्म जानिके बोलत भये ॥ २६ ॥ लोमश बोले कि, यह राजा पूर्वजन्ममें धन करिके हीन क्रूर कर्म करनहारो वैश्य हो और एक ग्रामतें दूसरे ग्राममें जाके व्यापारमें लगो रहतो हो ॥ २७ ॥ एक समय ज्येष्ठ महीनेके

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ए. मा. शुक्लपक्षमें द्वादशीके दिन मध्याह्नमें सूर्यके प्राप्त होनेके समय ग्रामकी सीमामें जलाशय हो ॥ २८ ॥ जलसमेत भा. टी.
कूपिकाको देखि जलके पीवनेकी इच्छा करत भयो वा समय हालकी ब्याई भई गौ बछरा समेत वहीं आवत
१०७ भई ॥ २९ ॥ प्याससों घबराई भई घामसों दुःखी वह गौ वामें जल पीवती भई तब वह वैश्य पीवती भई श्रा. शु.
वा गौको हटायके आप जलको पीवत भयो ॥ ३० ॥ वा कर्मके पापसों वह पुत्ररहित राजा भयो पूर्वजन्ममें

कूपिकां सजलां दृष्ट्वा जलपाने मनो दधौ ॥ सद्यः सूता सवत्सा च धेनुस्तत्र समागता ॥२९॥ तृषा-
तुरा निदाघार्ता तस्यामपः पपौ तु सा ॥ पिबंतीं वारयित्वा तामसौ तोयं स्वयं पपौ ॥३०॥ कर्म-
णस्तस्य पापेन स पुत्ररहितो नृपः ॥ पूर्वजन्मकृतात्पुण्यात्प्राप्तं राज्यमकंटकम् ॥३१॥ जना ऊचुः ॥
पुण्यात्पापं क्षयं याति पुराणे श्रूयते मुने ॥ पुण्योपदेशं कथय येन पापक्षयो भवेत् ॥३२॥ यथा भ-
वत्प्रसादेन पुत्रोऽस्य भविता तथा ॥ लोमश उवाच ॥ श्रावणे शुक्लपक्षे तु पुत्रदा नाम विश्रुता ॥३३॥

करे भये पुण्यसों वाने अकंटक राज्य पायो ॥ ३१ ॥ जन बोले कि, हे मुने ! पुण्यसों पापको क्षय होय है १०७
यह पुराणनमें सुनो जाय है ताते आप पुण्यको उपदेश करिये जाते पापको क्षय होय ॥ ३२ ॥ जैसे आपके
प्रसादसों याके पुत्र होय सो कहिये लोमश बोले कि, श्रावणके शुक्लपक्षमें पुत्रदा नामसों प्रसिद्ध ॥ ३३ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

एकादशी तिथि होय है हे जनो ! तुम सब यथाविधि न्यायसों जागरण समेत वाको व्रत करो ॥ ३४ ॥ और वाको विमल फल राजाको देउ ऐसो करनेपै निश्चय करिके राजाके पुत्र होयगो ॥ ३५ ॥ यह लोमशऋषिको वचन सुनिके आनंदसों प्रफुल्लित हैं नेत्र जिनके ऐसे वे सब अपने घरको जात भये ॥ ३६ ॥ और श्रावणको

एकादशी तिथिश्चास्ति कुरुध्वं तद्व्रतं जनाः ॥ यथाविधि यथान्यायं यथोक्तं जागरान्वितम्
॥ ३४ ॥ तस्याः पुण्यं सुविमलं ददतां नृपतेर्जनाः ॥ एवं कृते सुनियतं राज्ञः पुत्रो भविष्यति
॥ ३५ ॥ श्रुत्वैतल्लोमशवचस्तं प्रणम्य द्विजोत्तमम् ॥ प्रजग्मुः स्वगृहान्सर्वे हर्षोत्फुल्लविलोचनाः
॥३६॥ श्रावणं तु समासाद्य स्मृत्वा लोमशभाषितम् ॥ राज्ञा सह व्रतं चक्रुः सर्वे श्रद्धासमन्विताः
॥३७॥ द्वादशीदिवसे पुण्ये ददुर्नृपतये जनाः ॥ दत्ते पुण्ये यथा राज्ञी गर्भमाधत्त शोभनम् ॥३८॥
प्राप्ते प्रसवकाले सा सुषुवे पुत्रमूर्जितम् ॥ एवमेषा नृपश्रेष्ठ पुत्रदा नाम विश्रुता ॥ ३९ ॥

प्राप्त हो लोमश ऋषिके वचनको स्मरण करिके सब श्रद्धासमेत राजा सहित व्रतको करत भये ॥ ३७ ॥ और वे जन द्वादशीके दिन वह पुण्य राजाको दै देत भये पुण्यके देनेपै वह रानी सुंदर गर्भको धारण करत भई ॥ ३८ ॥ और प्रसवकालके आवनेपै तेजस्वी पुत्रको उत्पन्न करत भई हे राजानमें श्रेष्ठ ! या प्रकार वह पुत्रदा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नामसों विख्यात भई ॥ ३९ ॥ या लोकमें और परलोकमें सुखकी इच्छा करनहारे मनुष्यनको यह व्रत करनो उचित है ॥ ४० ॥ याको माहात्म्य सुनिके मनुष्य सब पापनते छूटि जाय है और या लोकमें पुत्रके सुखको प्राप्त हो परलोकमें स्वर्गकी गतिको प्राप्त होय है ॥ ४१ ॥ इति श्रीमत्पण्डितपरमसुखतनयपण्डितकेशवप्रसादशर्म-द्विवेदिकृतयामेकादशीमाहात्म्यभाषाटीकायां दीपिकासमाख्यायां श्रावणशुक्लैकादशीपुत्रदाकथा सम्पूर्णा ॥ १८ ॥

कर्तव्या सुखमिच्छद्भिरिह लोके परत्र च ॥४०॥ श्रुत्वा माहात्म्यमेतस्याः सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ इह पुत्रसुखं प्राप्य परत्र स्वर्गतिर्भवेत् ॥४१॥ इति श्रीभविष्योत्तरपुराणे श्रावणशुक्लैकादशीपुत्रदामा-हात्म्यं समाप्तम् ॥ १८ ॥ अथ भाद्रपदकृष्णैकादशीकथा ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ भाद्रस्य कृष्णपक्षे तु किंनामैकादशी भवेत् ॥ एतदिच्छाम्यहं श्रोतुं कथयस्व जनार्दन ॥ १ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ शृणुष्वैकमना राजन्कथयिष्यामि विस्तरात् ॥ अजानाम्नीति विख्याता सर्वपापप्रणाशिनी ॥ २ ॥

अथ भाद्रपदकृष्णैकादश्यजाकथा ॥ भाद्रस्य कृष्णपक्षे या अजाख्यैकादशी स्मृता ॥ तन्माहात्म्यस्य भाषायां टीकां कुर्वे प्रदीपिकाम् ॥ १ ॥ युधिष्ठिर बोले कि, भादोंके कृष्णपक्षकी एकादशीको कहा नाम है हे जनार्दन ! यह सुनिवेकी मेरी इच्छा है सो आप कहिये ॥ १ ॥ श्रीकृष्ण बोले कि, हे राजन् एकाग्रमन होके

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सुनिये मैं विस्तारपूर्वक कहाँगो अजा नामसों विख्यात वह सब पापनको नाश करै है ॥ २ ॥ जो मनुष्य हृषी-केश भगवान्‌को पूजन करिके वाको व्रत करै है ताके पाप व्रतके श्रवणहीते नाशको प्राप्त होय हैं ॥ ३ ॥ हे राजन् ! दोनों लोकनमें हितकी करनहारी याते परे और कोई नहीं है मैंने यह सत्य कही मेरो वचन झूठो नहीं है ॥ ४ ॥

पूजयित्वा हृषीकेशं व्रतं तस्याः करोति यः ॥ पापानि तस्य नश्यंति व्रतस्य श्रवणादपि ॥३॥ नातः परतरा राजँल्लोकद्वयहितावहा ॥ सत्यमुक्तं मया ह्येतन्नासत्यं भाषितं मम ॥ ४ ॥ हरिश्चंद्र इति ख्यातो बभूव नृपतिः पुरा ॥ चक्रवर्ती सत्यसंधः समस्ताया भुवः पतिः ॥ ५ ॥ कस्यापि कर्मणो योगाद्राज्यभ्रष्टो बभूव सः ॥ विक्रीय वनितां पुत्रान्स चकारात्मविक्रयम् ॥ ६ ॥ पुक्क-सस्य च दासत्वं गतो राजा स पुण्यकृत् ॥ सत्यमालंब्य राजेंद्र मृतचैलापहारकः ॥ ७ ॥

पहले हरिश्चन्द्र नाम एक राजा होत भयो वह चक्रवर्ती हो और सत्यप्रतिज्ञावालो हो और सब भूमिको स्वामी हो ॥ ५ ॥ काहू कर्मके योगसों वह राज्यते भ्रष्ट हो जात भयो और स्त्री तथा पुत्रको बेचिके अपनोहू विक्रय करत भयो ॥ ६ ॥ वह पुण्यात्मा राजा चांडालको दास होजात भयो, हे राजेन्द्र ! सत्यको ग्रहण करिके

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मृतकनके वस्त्रनको हरण करै हो ॥ ७ ॥ और वह श्रेष्ठ राजा अपने सत्यते चलायमान नहीं होतभयो, या विधिसों राजाको बहुतसे वर्ष व्यतीत होत भये ॥ ८ ॥ ता पीछे चितामें पर वह राजा अत्यंत दुःखित होत भयो कहा करौं और कहाँ जाऊं मेरो कैसे उद्धार होय ॥ ९ ॥ पापरूप समुद्रमें डूबो भयो वह राजा या प्रकार

सोमवन्नृपतिश्रेष्ठो न सत्याच्चलितस्तथा ॥ एवं गतस्य नृपतेर्बहवो वत्सरा गताः ॥८॥ ततश्चिन्तापरो राजा बभूवात्यन्तदुःखितः ॥ किं करोमि क्व गच्छामि निष्कृतिर्मे कथं भवेत् ॥ ९ ॥ इति चिंतयतस्तस्य मग्नस्य वृजिनार्णवे ॥ आजगाम मुनिः कश्चिज्ज्ञात्वा राजानमातुरम् ॥१०॥ परोपकरणार्थाय निर्मितो ब्रह्मणा द्विजः ॥ स तं दृष्ट्वा द्विजवरं ननाम नृपसत्तमः ॥ ११ ॥ कृतांजलिपुटो भूत्वा गौतमस्याग्रतः स्थितः ॥ कथयामास वृत्तांतमात्मनो दुःखसंयुतम् ॥१२॥ श्रुत्वा नृपतिवाक्यानि गौतमो विस्मयान्वितः ॥ उपदेशं नृपतये व्रतस्यास्य मुनिर्ददौ ॥ १३ ॥

चिंतवन कर रहो हो ता समय राजाको आतुर जानि कोई मुनि आवत भयो ॥ १० ॥ पराये उपकार करनके निमित्त ब्रह्मा करिके ब्राह्मण बनायो है वह श्रेष्ठ राजा वा ब्राह्मणको देखिके नमस्कार करत भयो ॥ ११ ॥ वह राजा हाथ जोरिके गौतमके आगे ठाढो होत भयो और दुःखसंयुक्त अपने वृत्तांतको कहत भयो ॥ १२ ॥ राजाके

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वचन सुनिकै गौतम विस्मय करिकै युक्त होत भये फिरि मुनिने राजाके अर्थ या व्रतको उपदेश कियो ॥ १३ ॥ हे राजन् ! भादोंके महीनेके कृष्णपक्षमें सुंदर अतिपुण्यकी देनहारी अजा नाम एकादशी आई है ॥ १४ ॥ हे राजन् ! ताको तुम व्रत करो पापको नाश हो जायगो तुम्हारे भाग्यके वशसों सातवें दिन आई है ॥ १५ ॥

मासि भाद्रपदे राजन् कृष्णपक्षे तु शोभना ॥ एकादशी समायाता अजानाम्न्यतिपुण्यदा ॥१४॥ तस्याः कुरु व्रतं राजन् पापनाशो भविष्यति ॥ तव भाग्यवशादेषा सप्तमेऽह्नि समागता ॥१५॥ उपवासपरो भूत्वा रात्रौ जागरणं कुरु ॥ एवं तस्या व्रते चीर्णे सर्वपापक्षयो भवेत् ॥ १६ ॥ तव पुण्यप्रभावेण चागतोऽहं नृपोत्तम ॥ इत्येवं कथयित्वा तु मुनिरंतरधीयत ॥ १७ ॥ मुनिवाक्यं नृपः श्रुत्वा चकार व्रतमुत्तमम् ॥ कृते तस्मिन् व्रते राज्ञः पापस्यांतोऽभवत्क्षणात् ॥ १८ ॥ श्रूयतां राजशार्दूल प्रभावोऽस्य व्रतस्य च ॥ यद्दुःखं बहुभिर्वर्षैर्भोक्तव्यं तत्क्षयोऽभवत् ॥ १९ ॥

उपवासमें तत्पर होके रात्रिमें जागरण करो या प्रकार वाके करनेसों संपूर्ण पापनको क्षय हो जायगो ॥ १६ ॥ हे नृपोत्तम ! मैं तुम्हारे पुण्यके प्रभावसों आयो हौं या प्रकार कहिके मुनि अंतर्धान हो जात भये ॥ १७॥ मुनिको वाक्य सुनिके राजाने उत्तम व्रत कियो वा करनेपै राजाके पापको अंत क्षणमात्रहीमें हो जात भयो ॥१८॥ हे राजशार्दूल !

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

या व्रतको प्रभाव सुनिये जो दुःख बहुत वर्षनकरिके भोगने योग्य है ताको क्षय हो गयो ॥ १९ ॥ या व्रतके प्रभावसों राजा दुःखके पार होगयो और स्त्रीके साथ योगको तथा पुत्रके जीवनको प्राप्त होतभयो ॥ २० ॥ देवतानके नगारे बजे और अकाशते फूलनकी वर्षा होत भई और एकादशीके प्रभावते वाने अकंटक राज्य पायो ॥ २१ ॥ राजा हरिश्चंद्र पुरवासिनसमेत और अपने सब परिवारसमेत स्वर्गको प्राप्त होत भयो हे राजन् ! या

निस्तीर्णदुःखो राजासीद्व्रतस्यास्य प्रभावतः ॥ पत्न्या सह समायोगं पुत्रजीवनमाप सः ॥ २० ॥ देवदुंदुभयो नेदुः पुष्पवर्षमभूद्दिवः ॥ एकादश्याः प्रभावेण प्राप्तं राज्यमकंटकम् ॥ २१ ॥ स्वर्गं लेभे हरिश्चंद्रः सपुरः सपरिच्छदः ॥ ईदृग्विधं व्रतं राजन्ये कुर्वंति द्विजोत्तमाः ॥ २२ ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तास्त्रिदिवं यांति ते ध्रुवम् ॥ पठनाच्छ्रवणाद्राजन्नश्वमेधफलं लभेत् ॥ २३ ॥ इति श्रीब्रह्मवैवर्तपुराणे भाद्रपदकृष्णे अजानामैकादशीमाहात्म्यं समाप्तम् ॥ १९ ॥

प्रकारके व्रतको जे द्विजोत्तम करै हैं ॥ २२ ॥ वे सब पापनसों मुक्त होके निश्चय स्वर्गको जाय हैं । हे राजन् ! याके पढने और सुननेसों वाजपेययज्ञको फल मिलै है ॥ २३ ॥ इति श्रीमत्पंडितपरमसुखतनयपंडितकेशवप्रसादशर्म्मद्विवेदिकृतायामेकादशीमाहात्म्यभाषाटीकायां दीपिकासमाख्यायां भाद्रपदकृष्णैकादश्यजाकथा समाप्ता ॥ १९ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ भाद्रपदशुक्लैकादशीजयन्तीकथा ॥ भाद्रस्य शुक्लपक्षे या जयन्त्येकादशी भवेत् ॥ तन्माहात्म्यमहं सम्यग्विवृणोमि स्वभाषया ॥ १ ॥ युधिष्ठिर बोले कि, भादों शुक्लपक्षकी एकादशीको कहा नाम है और वाकी विधि कैसी है और पुण्य कहा है सो मोसों कहो ॥ १ ॥ श्रीकृष्ण बोले कि, हे राजन् ! बडो है पुण्य जाको और

अथ भाद्रपदशुक्लैकादशीकथा ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ नभस्य सितपक्षे तु किंनामैकादशी भवेत् ॥ को देवः को विधिस्तस्याः किं पुण्यं च वदस्व नः ॥ १ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ कथयामि महापुण्यां स्वर्गमोक्षप्रदायिनीम् ॥ वामनैकादशीं राजन्सर्वपापहरां पराम् ॥ २ ॥ इमामेव जयंत्याख्यां प्राहुरेकादशीं नृप ॥ तस्याः श्रवणमात्रेण सर्वपापक्षयो भवेत् ॥ ३ ॥ वाजपेयफलं प्रोक्तं नातः परतरं नृणाम् ॥ पापिनां पापशमनं जयंतीव्रतमुत्तमम् ॥ ४ ॥

स्वर्ग तथा मोक्षकी देनहारी और सब पापनकी हरनहारी उत्कृष्ट जो वामनएकादशी ताहि कहौं हौं ॥ २ ॥ हे नृप ! याहीको जयंती एकादशी कहैं हैं ताके श्रवणमात्रहीते सब पापनको क्षय हो जाय है ॥ ३ ॥ मनुष्यनको याके पुण्यते अधिक वाजपेय यज्ञको फल नहीं कह्यो है यह उत्तम जयंतीको व्रत पापी मनुष्यनके पापनको शांत करनहारो है ॥ ४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

और याते परे और कोई मोक्षकी देनहारी नहीं है, हे राजन् ! या कारणते गतिके चाहनहारे मनुष्यनको याको व्रत करनो योग्य है ॥ ५ ॥ मेरे भक्तसों मैं परायण जिनको ऐसे जिन वैष्णव मनुष्यन कारिके भादोंमें वामनको पूजन कियो गयो तिन कारिके तीनों लोक पूजे गये ॥ ६ ॥ वा पूजा करिके वे मनुष्य हरिके निकट जाय हैं

नातः परतरा राजन्न वै मोक्षप्रदायिनी ॥ एतस्मात्कारणाद्राजन् कर्तव्या गतिमिच्छता ॥ ५ ॥ वैष्णवैर्मम भक्तैस्तु मनुजैर्मत्परायणैः ॥ नभस्ये वामनो यैस्तु पूजितस्तैर्जगत्त्रयम् ॥६॥ पूजितं नात्र संदेहस्ते यांति हरिसन्निधिम् ॥ वामनः पूजितो येन कमलैः कमलेक्षणः ॥ ७ ॥ नभस्यसित पक्षे तु जयंत्यैकादशीदिनम् ॥ तेनार्चितं जगत्सर्वं त्रयो देवाः सनातनाः ॥ ८ ॥ एतस्मात्कारणाद्राजन्कर्तव्यो हरिवासरः ॥ अस्मिन्कृते न कर्त्तव्यं किंचिदस्ति जगत्त्रये ॥ ९ ॥

यामें संदेह नहीं है कमलके समान नेत्र हैं जिनके ऐसे वामन जिन कारिके कमलके फूलनसों पूजे गये ॥ ७ ॥ भादोंके शुक्लपक्षमें जाने जयन्ती एकादशीको व्रत कियो ताने सब जगत्को पूजन कियो और तीनों सनातन देवता अर्थात् ब्रह्मा विष्णु महेशकोहू पूजो ॥ ८ ॥ हे राजन् ! या कारणते हरिवासर करना चाहिये याके करनेपै

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तीनों लोकनमें और कुछ नहीं कर्तव्य है ॥ ९ ॥ सोये भये भगवान् या एकादशीके दिन करवट लेते हैं याते याको नाम सब लोक परिवर्तिनी कहैं हैं ॥ १० ॥ युधिष्ठिर बोले कि, हे जनार्दन ! मोको बडो संदेह है ताहि आप सुनिये हे देवेश ! आप कैसे सोये हैं और कैसे अंगपरिवर्तन करते हो अर्थात् करवट लेते हो ॥ ११ ॥ हे

अस्यां प्रसुप्तो भगवानेत्यंगपरिवर्त्तनम् ॥ तस्मादेनां जनाः सर्वे वदंति परिवर्तिनीम् ॥ १० ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ संशयोऽस्ति महान्मह्यं श्रूयतां च जनार्दन ॥ कथं सुप्तोऽसि देवेश कथं यास्यंगवर्तनम् ॥ ११ ॥ किमर्थं देवदेवेश बलिर्बद्धस्त्वयाऽसुरः ॥ संतुष्टाः पृथिवीदेवा किमकुर्वञ्जनार्दन ॥ १२ ॥ को विधिः किं व्रत चैव चातुर्मास्यमुपासताम् ॥ त्वयि सुप्ते जगन्नाथ किं कुर्वंति जनाः प्रभो ॥१३॥ एतद्विस्तरतो ब्रूहि संशयं हर मे प्रभो ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ श्रूयतां राजशार्दूल कथां पापहरां पराम् ॥ १४ ॥

देवदेवेश ! आपने बलि नाम असुरको काहेके लिये बांधो हे जनार्दन ! संतुष्ट होके ब्राह्मणनने कहा कियो ॥१२॥ चातुर्मास्य व्रत करनहारे मनुष्यनके लिये कौनसी विधि है और कहा व्रत है हे प्रभो ! हे जगन्नाथ ! तुम्हारे सोनेपै मनुष्य कहा करैं हैं ॥१३॥ यह विस्तारसों कहो और मेरे संदेहको दूरि करो कृष्ण बोले कि, हे राजशार्दूल !

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पापनको उत्कृष्ट नाश करनहारी कथाको सुनो ॥ १४ ॥ हे नृप ! पहले त्रेतायुगमें बलि नाम दानव होतभयो मोमें परायण और मेरो भक्त वह बलि नित्यही मेरो पूजन करत भयो ॥ १५ ॥ नानाप्रकारके जप और सूक्तन करिके वह नित्य मेरो पूजन करै है और नित्य ब्राह्मणनको पूजन तथा यज्ञकर्म करै हो ॥ १६ ॥ परंतु वह

बलिर्वै दानवः पूर्वमासीत्त्रेतायुगे नृप ॥ अपूजयच्च मां नित्यं मद्भक्तो मत्परायणः ॥ १५ ॥ जपैस्तु विविधैः सूक्तैर्यजते मां स नित्यशः ॥ द्विजानां पूजको नित्यं यज्ञकर्मकृताशयः ॥ १६ ॥ परंत्विन्द्रकृतद्वेषी देवलोकमजीजयत् ॥ मद्दत्तमिन्द्रलोकं वै जितं तेन महात्मना ॥ १७ ॥ विलोक्य च ततः सर्वे देवाः संहृत्य मंत्रयन् ॥ सर्वैर्मिलित्वा गंतव्यं देवं विज्ञापितुं प्रभुम् ॥ १८ ॥ ततश्च देवऋषिभिः साकमिन्द्रो गतः प्रभुम् ॥ शिरसा ह्यवनिं गत्वा स्तुत इंद्रेण सूक्तिभिः ॥ १९ ॥

इन्द्रसों द्वेष करिके देवलोकको जीतिलेत भयो वा महात्मा करिके मेरो दियो भयो देवलोक जीतिगयो ॥ १७ ॥ ११२
या बातको देखि सब देवता इकट्ठे होके मंत्र करत भये कि, सब मिलिके देव जे प्रभु हैं तिनसों विज्ञापन करनेको चलनो चाहिये ॥ १८ ॥ ता पीछे देवर्षिनके साथमें इन्द्र प्रभुके समीप जातो भयो और मस्तक

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भूमिमें लगाके इन्द्रकारि सूक्तनसों मैं स्तुति कियो गयो ॥ १९ ॥ देवताओं समेत बृहस्पति कारिके म बहुधा पूजन कियो गयो ता पीछे वामनरूप होके मैंने पांचवों अवतार लियो ॥ २० ॥ तब सब ब्रह्माण्डमें व्याप्त ऐसो उग्ररूप धारण करनहारो जो मैं बालक हौं ता कारिके सत्यमें स्थित वह बलि जीतो गयो ॥ २१ ॥

गुरुणा दैवतैः सार्द्धं बहुधा पूजितो ह्यहम् ॥ ततो वामनरूपेण ह्यवतीर्णश्च पंचमे ॥ २० ॥ अत्युग्ररूपेण तदा सर्वब्रह्मांडरूपिणा ॥ बालकेन जितः सो वै सत्यमालंब्य तस्थिवान् ॥ २१ ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ त्वया वामनरूपेण सोऽसुरश्च जितः कथम् ॥ एतत्कथय देवेश मह्यं भक्ताय विस्तरात् ॥ २२ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ मया बालेन स बलिः प्रार्थितो बटुरूपिणा ॥ पदत्रयमितां भूमिं देहि मे भुवनत्रयम् ॥ २३ ॥ दत्तं भवति ते राजन्नात्र कार्या विचारणा ॥ इत्युक्तश्च मया राजा दत्तवांस्त्रिपदां भुवम् ॥ २४ ॥

युधिष्ठिर बोले कि, हे देवेश ! वामनरूप जो तुम हो तिन कारिके यह असुर कैसे जीतो गयो वह भक्त जो मैं हौं तासों विस्तारपूर्वक कहो ॥ २२ ॥ श्रीकृष्ण बोले कि, ब्रह्मचारी रूप जो मैं बालक हौं ता कारिके बलि प्रार्थना किये गये कि, तीनि पैग प्रमाण भूमि देउ वह मोकौ त्रिभुवन है ॥ २३ ॥ हे राजन् ! यह देनो है

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यामें विचार न करनो चाहिये मुझ कारिके ऐसो कहो गयो वह राजा बलि तीनि पैग भूमि देत भयो ॥ २४ ॥ संकल्पमात्रहीसों वह त्रिविक्रमको देह बहुतही बढत भयो भूर्लोकमें तो पांय किये और भुवर्लोकमें जंघा किये ॥ २५ ॥ और स्वर्गलोकमें कटिको स्थापित कारिके तैसेही महर्लोकमें पेटको राखि और जनलोकमें हृदय और

संकल्पमात्राद्ववृधे देहस्त्रैविक्रमः परम् ॥ भूर्लोके तु कृतौ पादौ भुवर्लोके तु जानुनी ॥ २५ ॥ स्व-
र्लोके तु कटिं न्यस्य महर्लोके तथोदरम् ॥ जनलोके तु हृदयं तपोलोके च कंठकम् ॥ २६ ॥
सत्यलोके मुखं स्थाप्य उत्तमांगं तथोर्ध्वतः ॥ चंद्रसूर्यग्रहाश्चैव भगणो योगसंयुतः ॥ २७ ॥
सेंद्राश्चैव तदा देवा नागाः शेषादयः परे ॥ स्तुवंतो वेदसंभूतैः सूक्तैश्च विविधैस्तु माम् ॥ २८ ॥
करे गृहीत्वा तु बलिमब्रुवं वचनं तदा ॥ एकेन पूरिता पृथ्वी द्वितीयेन त्रिविष्टपम् ॥ २९ ॥

तपोलोकमें कंठको ॥ २६ ॥ और सत्यलोकमें मुखको स्थापित कारि वाके ऊपर शिर स्थापित कियो तथा चंद्र सूर्य आदि ग्रह और योगन कारि युक्त नक्षत्रगण ॥ २७ ॥ और इन्द्र समेत देवता तथा शेष और नाग वेदते उत्पन्न भये नाना प्रकारके सूक्तन कारिके मेरी स्तुति करत भये ॥ २८ ॥ तब मैंने बलिको हाथ पकरिके ऐसो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कह्यो कि, एक पैगमें तो मैंने पृथिवी पूर्ण करी और दूसरे करिके स्वर्ग पूरो कियो ॥ २९ ॥ हे निष्पाप ! तीसरे पादको स्थान दीजिये मेरे ऐसे कहनेपै बलिने अपनो मस्तक दियो ॥ ३० ॥ ता पीछे मैंने वाके मस्तकपै तीसरो पाँव दियो और मेरो पूजनहारो दानव पातालको पठायो गयो ॥ ३१ ॥ वा बलिको विनयसों नम्र देखि

तृतीयस्य तु पादस्य स्थानं देहि ममानघ ॥ एवमुक्ते मया सोऽपि मस्तकं दत्तवान्बलिः ॥ ३० ॥
ततो वै मस्तके ह्येकं पदं दत्तं मया तदा ॥ क्षिप्तो रसातले राजन्दानवो मम पूजकः ॥ ३१ ॥
विनयावनतं दृष्ट्वा प्रसन्नोऽस्मि जनार्दनः ॥ बले वसामि सततं सन्निधौ तव मानद ॥ ३२ ॥
इत्यवोचं महाभागं बलिं वैरोचनं तदा ॥ नभस्य शुक्लपक्षे तु परिवर्तिनि वासरे ॥ ३३ ॥
ममैका तत्र मूर्तिश्च बलिमाश्रित्य तिष्ठति ॥ द्वितीया शेषपृष्ठे वै क्षीराब्धौ सागरोत्तमे ॥ ३४ ॥

जनार्दन मैं प्रसन्न भयो हे बले ! हे मानद ! निरंतर मैं तेरे समीप वास करौं हौं ॥ ३२ ॥ और वा समय मैं विरोचनके पुत्र बलिसों ऐसे कहत भयो कि, भादोंके शुक्लपक्षमें परिवर्तिनी एकादशीको व्रत कर ॥ ३३ ॥ वहां पातालमें एक मेरी मूर्ति बलिको आश्रय लेके स्थित है और दूसरी समुद्रोंमें उत्तम क्षीरसागरमें शेषनागकी पीठिपर ॥ ३४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जबताईं कार्तिक आवै तब ताईं हृषीकेश शयन करैं हैं उनके शयनसमयमें जो पुण्य होय है सो सब पुण्यनमें उत्तम होय है ॥ ३५ ॥ हे राजन् ! या कारणते महापुण्य पवित्र और पापकी हरनहारी यह एकादशी करनी चाहिये ॥ ३६ ॥ या एकादशीके दिन सोये भये भगवान् करवट लेय हैं यामें तीनों लोकमें पितामह जे देव

सुप्यते च हृषीकेशो यावन्नायाति कार्तिकी ॥ तावद्भवति तत्पुण्यं सर्वपुण्योत्तमोत्तमम् ॥ ३५ ॥
एतस्मात्कारणाद्राजन्कर्तव्या च प्रयत्नतः ॥ एकादशी महापुण्या पवित्रा पापहारिणी ॥ ३६ ॥
अस्यां प्रसुप्तो भगवानेत्यंगपरिवर्त्तनम् ॥ एतस्यां पूजयेद्देवं त्रैलोक्यस्य पितामहम् ॥ ३७ ॥
दधिदानं प्रकर्तव्यं रौप्यतंडुलसंयुतम् ॥ रात्रौ जागरणं कृत्वा मुक्तो भवति मानवः ॥ ३८ ॥
एवं यः कुरुते राजन्नेकादश्यां व्रतं शुभम् ॥ सर्वपापहरं चैव भुक्तिमुक्तिप्रदायकम् ॥ ३९ ॥

हैं तिनको पूजन करनो चाहिये ॥ ३७ ॥ दहीको दान करनो चाहिये और चावलोंके साथमें चांदीको दान करै और रात्रिमें जागरण करिके मनुष्य मुक्त हो जाय है ॥ ३८ ॥ हे राजन् ! या प्रकार जो शुभ एकादशीको व्रत करै हैं यह व्रत सब पापनको हरनहारो और भुक्ति मुक्तिको देनहारो है ॥ ३९ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वह देवलोकमें प्राप्त होके चंद्रमाके समान शोभित होय है और जो मनुष्य पापनकी हरनहारी या कथाको सुनै है वह मनुष्य एक हजार अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्त होय है ॥ ४० ॥ इति श्रीमत्पंडितपरमसुखतनयपंडितकेशव-प्रसादशर्म्मद्विवेदिकृतायामेकादशीमाहात्म्यभाषाटीकायां दीपिकासमाख्यायां भाद्रपदशुक्लैकादशीपरिवर्तिनीकथा समाप्ता ॥२०॥ अथाश्विनकृष्णपक्षे इंदिरैकादशी कथा ॥ आश्विनस्यासिते पक्षे इंदिरैकादशी स्मृता ॥ तन्माहा-

स देवलोकं संप्राप्य भ्राजते चंद्रमा यथा ॥ शृणुयाच्चैव यो मर्त्यः कथां पापहरां पराम् ॥ अश्व-मेधसहस्रस्य फलं प्राप्नोति मानवः ॥ ४० ॥ इति श्रीस्कंदपुराणे भाद्रपदशुक्लपरिवर्तिनीनामै-कादशीमाहात्म्यं समाप्तम् ॥ २० ॥ अथाश्विनकृष्णैकादशीकथा ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ कथयस्व प्रसादेन ममाग्रे मधुसूदन ॥ आश्विने कृष्णपक्षे तु किन्नामैकादशी भवेत् ॥ १ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ आश्विनस्यासिते पक्षे इंदिरा नाम नामतः ॥ तस्या व्रतप्रभावेण महापापं प्रणश्यति ॥ २ ॥

त्म्यस्य भाषायां विवृतिं रचयाम्यहम् ॥ १ ॥ युधिष्ठिर बोले कि हे मधुसूदन ! आश्विनके कृष्णपक्षमें कौनसे नामकी एकादशी होय है सो आप मेरे आगे प्रसन्नतासों कहिये ॥ १ ॥ श्रीकृष्ण बोले कि, आश्विनके कृष्णपक्षमें इंदिरा नाम एकादशी होय है वाके व्रतके प्रभावते महापातक नाश हो जायँ हैं ॥ २ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नरकमें प्राप्त जे पितर हैं तिनको मोक्ष देनहारी और पापनकी नाश करनहारी जो कथा है ताहि सावधान मन होके सुनिये ॥ ३ ॥ जाके श्रवणमात्रहीसों वाजपेययज्ञको फल प्राप्त होय है, पहिले सत्ययुगमें रिपुसूदन अर्थात् शत्रुको दंड देनहारो राजा होत भयो ॥ ४ ॥ वह इंद्रसेन नामसों प्रसिद्ध माहिष्मती पुरिको राजा

अधोयोनिगतानां च पितॄणां गतिदायिनीम् ॥ शृणुष्वावहितो राजन् कथां पापहरां पराम् ॥ ३ ॥ यस्याः श्रवणमात्रेण वाजपेयफलं लभेत् ॥ पुरा कृतयुगे राजा बभूव रिपुसूदनः ॥ ४ ॥ इन्द्रसेन इति ख्यातः पुरीं माहिष्मतीं प्रति ॥ स राज्यं पालयामास धर्मेण यशसाऽन्वितः ॥ ५ ॥ पुत्रपौत्रसमायुक्तो धनधान्यसमन्वितः ॥ माहिष्मत्यधिपो राजा विष्णुभक्तिपरायणः ॥ ६ ॥ जपन् गोविन्दनामानि मुक्तिदानि नराधिपः ॥ कालं नयति विधिवदध्यात्मस्य विचिंतकः ॥ ७ ॥

होत भयो यश करिके युक्त वह राजा धर्म करिके प्रजानको पालन करत भयो ॥ ५ ॥ पुत्र पौत्रन करिके युक्त और धनधान्य समायुक्त माहिष्मतीको स्वामी वह राजा विष्णुभक्तिमें परायण हो ॥ ६ ॥ मुक्तिके देनहारे गोविंदके नामनको जप करतो वह राजा विधिवत् अध्यात्मविद्याको चिंतवन करतो जप तपमें कालको व्यतीत करतो भयो ॥ ७ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

एक दिन वह राजा सुखसों सभामें बैठो हो तब बुद्धिमान् नारद मुनि आकाशते उतरिके वाके समीप आवत भये ॥ ८ ॥ उनको आये भये देखि राजा उठिके हाथ जोरि अर्घकी विधिसों पूजन करत भयो और आसनपर बैठावत भयो ॥ ९ ॥ सुखसों बैठे भये नारद मुनि वा राजासों बोलत भये कि, हे राजेंद्र! तुम्हारे राज्यके सातों

एकस्मिन्दिवसे राज्ञी सुखासीने सदोगते ॥ अवतीर्यागमद्धीमानंबरान्नारदो मुनिः ॥ ८ ॥ तमागतमभिप्रेक्ष्य प्रत्युत्थाय कृतांजलिः ॥ पूजयित्वार्घविधिना चासने संन्यवेशयत् ॥ ९ ॥ सुखोपविष्टः स मुनिः प्रत्युवाच नृपोत्तमम् ॥ कुशलं तव राजेंद्र सप्तस्वंगेषु वर्तते ॥ १० ॥ धर्मे मतिर्वर्तते ते विष्णुभक्तिरतिस्तथा ॥ इति वाक्यं तु देवर्षेः श्रुत्वा राजा तमब्रवीत् ॥ ११ ॥ राजोवाच ॥ त्वत्प्रसादान्मुनिश्रेष्ठ सर्वत्र कुशलं मम ॥ अद्य क्रतुक्रियाः सर्वाः सफलास्तव दर्शनात् ॥ १२ ॥ प्रसादं कुरु विप्रर्षे ब्रह्मागमनकारणम् ॥ इति राज्ञो वचः श्रुत्वा देवर्षिर्वाक्यमब्रवीत् ॥ १३ ॥

अंगनमें कुशल है ॥ १० ॥ तुम्हारी मति धर्ममें है और तुम विष्णुकी भक्तिमें रत हो यह देवर्षिके वचन सुनि राजा उनसों बोलत भयो ॥ ११ ॥ राजा बोले कि, हे मुनिश्रेष्ठ! आपके प्रसादसे मेरे सर्वत्र कुशल है आज सब यज्ञकी क्रिया आपके दर्शनते सफल भई ॥ १२ ॥ हे विप्रेंद्र! प्रसन्न होवो और अपने आवनेको कारण कहो राजाको यह

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वचन सुनिके देवर्षि वचन बोलत भये ॥ १३ ॥ नारद बोले कि हे राजशार्दूल ! विस्मयको देनहारो मेरो वचन सुनिये हे नृपोत्तम ! मैं ब्रह्मलोकते यमलोकमें आयो ॥ १४ ॥ यमराजकरि भक्तिसों पूजन कियो भयो मैं श्रेष्ठ आसनपै बैठि वहाँ धर्मशील और सत्यवान् यमकी उपासना करैं हैं ॥ १५ ॥ बहुतसे पुण्यको करनहारो तुम्हारो

नारद उवाच ॥ श्रूयतां राजशार्दूल मद्वचो विस्मयप्रदम् ॥ ब्रह्मलोकादहं प्राप्तो यमलोकं नृपोत्तम ॥ १४ ॥ शमनेनार्चितो भक्त्या उपविष्टो वरासने ॥ धर्मशीलः सत्यवांस्तु भास्करिं समुपासते ॥ १५ ॥ बहुपुण्यप्रकर्ता च व्रतवैकल्यदोषतः ॥ सभायां श्राद्धदेवस्य मया दृष्टः पिता तव ॥ १६ ॥ कथितस्तेन संदेशस्तं निबोध जनेश्वर ॥ इंद्रसेन इति ख्यातो राजा माहिष्मतीप्रभुः ॥ १७ ॥ तस्याग्रे कथय ब्रह्मन् स्थितं मां यमसन्निधौ ॥ केनापि चांतरायेण पूर्वजन्मोद्भवेन वै ॥ १८ ॥

पिता व्रतके बिगरि जानेके दोषते यमकी सभामें मैंने देख्यो ॥ १६ ॥ वाने जो संदेशा कह्यो है हे जनेश्वर ! ताहि सुनिये कि, माहिष्मतीपुरीको स्वामी इंद्रसेन नाम राजा है ॥ १७ ॥ हे ब्रह्मन् ! पूर्वजन्ममें भयो जो कोई विघ्न है तासों यमराजके समीप स्थित मोकों वाके आगे कहो ॥ १८ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कि, हे पुत्र ! इंदिरा नाम एकादशीको जो व्रत है ताके दानसा स्वर्गमें मोको पठावो हे राजन् ! तुम्हारे पिता-
करि ऐसो कहो गयो मैं तुम्हारे समीप आयो हौं ॥ १९ ॥ हे राजन् ! पिताकी स्वर्गगतिके लिये तुम इंदिराको
व्रत करो वा व्रतके प्रभावसों तुम्हारो पिता स्वर्गको जायगो ॥ २० ॥ राजा बोले कि, हे भगवन् ! आप प्रसन्न

स्वर्गं प्रेशय मां पुत्र इंदिराव्रतदानतः ॥ इत्युक्तोऽहं समायातः समीपं तव पार्थिव ॥ १९॥ पितुः
स्वर्गतये राजन्निंदिराव्रतमाचर ॥ तेन व्रतप्रभावेण स्वर्गं यास्यति ते पिता ॥ २० ॥ राजो-
वाच ॥ कथयस्व प्रसादेन भगवन्निंदिराव्रतम् ॥ विधिना केन कर्तव्यं कस्मिन्पक्षे तिथौ तथा
॥ २१ ॥ नारद उवाच ॥ शृणु राजन् हितं वच्मि व्रतस्यास्य विधिं शुभम् ॥ आश्विनस्या-
सिते पक्षे दशमीदिवसे शुभे ॥ २२ ॥ प्रातःस्नानं प्रकुर्वीत श्रद्धायुक्तेन चेतसा ॥ ततो मध्याह्न-
समये स्नानं कृत्वा बहिर्जले ॥ २३ ॥

होके मोसे इन्दिराको व्रत कहिये कि, वह व्रत कौनसी विधिसों करनो चाहिये और कौनसे दिन तथा कौनसे
पक्षमें सो कहिये ॥ २१ ॥ नारद बोले कि, हे राजन् ! सुनिये या व्रतकी शुभ विधिको मैं कहौं हौं आश्विनके
कृष्णपक्षमें सुंदर दशमीके दिन ॥ २२ ॥ श्रद्धायुक्त चित्त होके प्रातःकाल स्नान करै ता पीछे मध्याह्नमें स्नान

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

करि जलके बाहर आवै ॥ २३ ॥ फिर श्रद्धायुक्त होके पितरोंकी प्रीतिके लिये श्राद्ध करै ता पीछे एक बार भोजन करिके भूमिमें सोवै ॥ २४ ॥ फिर निर्मल प्रभात होनेपै जब एकादशीको दिन प्राप्त हो तब दंतधावन करिके मुखको धोवै ॥ २५ ॥ फिरि भक्ति भावते व्रतके नियमनको ग्रहण करै कि, आज निराहार रहिके सब

पितॄणां प्रीतये श्राद्धं कुर्याच्छ्रद्धासमन्वितः ॥ एकभक्तं ततः कृत्वा रात्रौ भूमौ शयीत च ॥२४॥ प्रभाते विमले जाते प्राप्ते चैकादशीदिने ॥ मुखप्रक्षालनं कुर्याद्दंतधावनपूर्वकम् ॥२५॥ उपवासस्य नियमं गृह्णीयाद्भक्तिभावतः ॥ अद्य स्थित्वा निराहारः सर्वभोगविवर्जितः ॥ २६ ॥ श्वो भोक्ष्ये पुंडरीकाक्ष शरणं मे भवाच्युत ॥ इत्येवं नियमं कृत्वा मध्याह्नसमये तथा ॥२७॥ शालग्रामशिलाग्रे तु श्राद्धं कृत्वा यथाविधि ॥ भोजयित्वा द्विजाञ्छुद्धान्दक्षिणाभिः सुपूजितान् ॥२८॥ पितृशेषं समाघ्राय गवे दद्याद्विचक्षणः ॥ पूजयित्वा हृषीकेशं धूपगंधादिभिस्तथा ॥ २९ ॥

भोगनको वर्जित करौंगो ॥ २६ ॥ कल्हके दिन भोजन करौंगो, हे पुंडरीकाक्ष ! हे अच्युत ! तुम मेरे रक्षक हो या प्रकार नियम करिके मध्याह्नके समय ॥ २७ ॥ शालग्राम शिलाके आगे विधिपूर्वक श्राद्ध करिके शुद्ध ब्राह्मणको भोजन कराय दक्षिणासों पूजै ॥ २८ ॥ पितरनसों जो शेष रहै ताहि सूँघिके विचक्षण पुरुष गौके

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अर्थ देवे और धूप गंध आदिसों हृषीकेश भगवान्को पूजन करि ॥ २९ ॥ रात्रिमें केशव भगवान्के समीप जागरण करै ता पीछे प्रभात समय द्वादशीके दिन ॥ ३० ॥ भक्तिसों हरिको पूजन करि और ब्राह्मणनको भोजन कराय दौहित्र बंधु और पुत्रआदि समेत मौन होके आप भोजन करै ॥ ३१ ॥ हे राजन् ! या विधिसों आलस्यरहित होके

रात्रौ जागरणं कुर्यात्केशवस्य समीपतः ॥ ततः प्रभातसमये संप्राप्ते द्वादशीदिने ॥ ३० ॥ अर्च-यित्वा हरिं भक्त्या भोजयित्वा द्विजानथ ॥ बंधुदौहित्रपुत्राद्यैः स्वयं भुंजीत वाग्यतः ॥ ३१ ॥ अनेन विधिना राजन्कुरु व्रतमतंद्रितः ॥ विष्णुलोकं प्रयास्यंति पितरस्तव भूपते ॥ ३२ ॥ इत्युक्त्वा नृपतिं राजन्मुनिरंतरधीयत ॥ यथोक्तविधिना राजा चकार व्रतमुत्तमम् ॥ ३३ ॥ अंतःपुरेण सहितः पुत्रभृत्यसमन्वितः ॥ कृते व्रते तु कौंतेय पुष्पवृष्टिरभूद्दिवः ॥ ३४ ॥ तत्पिता गरुडारूढो जगाम हरिमंदिरम् ॥ इंद्रसेनोऽपि राजर्षिः कृत्वा राज्यमकंटकम् ॥ ३५ ॥

व्रतको करो हे राजन् ! तो तुम्हारे पितर विष्णुलोकको जायँगे ॥ ३२ ॥ हे राजन् ! या प्रकार वा नृपतिसों कहिके नारद मुनि अंतर्धान होजात भये और वह राजा कही भई विधिके अनुसार उत्तम व्रतको करत भयो ॥ ३३ ॥ रनवास तथा पुत्रन और भृत्यन समेत राजाके व्रत करनेपर हे कुंतीपुत्र ! आकाशतें फूलनकी वर्षा होत भई ॥ ३४ ॥ और वा राजाको

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पिता गरुडपर चढिके विष्णुलोकमें जातभयो और इन्द्रसेन राजर्षिंहू अकंटक राज्य कारिके ॥ ३५ ॥ पुत्रकी राज्यमें स्थापित कारि आप स्वर्गको जातभयो यह इंदिराव्रतको माहात्म्य मैंने तुम्हारे आगे कह्यो ॥ ३६ ॥ याके पढने और श्रवण करनेसों मनुष्य सब पापनते छूटिजाय है और विष्णुलोकमें वास करै ॥ ३७ ॥ इति श्रीमत्पण्डित-

राज्ये निवेश्य तनयं जगाम त्रिदिवं स्वयम् ॥ इंदिराव्रतमाहात्म्यं तवाग्रे कथितं मया ॥ ३६ ॥ पठनाच्छ्रवणाच्चास्य सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ भुक्त्वेह निखिलान् भोगान् विष्णुलोके वसेच्चिरम् ॥ ३७ ॥ इति श्रीब्रह्मवैवर्ते० आश्विनकृष्णैकादशींदिरामाहात्म्यं समाप्तम् ॥२१॥ अथ आश्विनशुक्लैकादशीकथा ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ कथयस्व प्रसादेन भगवन्मधुसूदन ॥ इषस्य शुक्लपक्षे तु किंनामैकादशी भवेत् ॥ १ ॥

परमसुखतनयपण्डितकेशवप्रसादशर्म्मद्विवेदिकृतायामेकादशीमाहात्म्यभाषाटीकायां दीपिकासमाख्यायामिंदिरै-कादशीकथा समाप्ता ॥ २१ ॥ ॥ अथ आश्विनशुक्लैकादशीकथा ॥ ॥ आश्विनस्यासिते पक्षे यास्ति पाशांकुशा-भिधा ॥ तन्माहात्म्यस्य भाषायां टीकां वच्मि प्रदीपिकाम् ॥ १ ॥ युधिष्ठिर बोले कि हे भगवन् ! हे मधुसूदन !

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

क्वारके शुक्लपक्षमें कानेसै नामकी एकादशी होय है सो आप मोसों प्रसन्न होके कहो ॥ १ ॥ श्रीकृष्ण बोले कि, हे राजेंद्र ! क्वारके शुक्लपक्षमें जो एकादशी होय है ताको पापनको नाश करनहारो माहात्म्य मैं कहौं हौं सो तुम सुनौ ॥ २ ॥ पाशांकुशा वाको नाम है वह सब पापनकी नाश करनहारी है वामें मनुष्य पद्मनाभ नाम भगवान्‌को

श्रीकृष्ण उवाच ॥ शृणु राजेन्द्र वक्ष्यामि माहात्म्यं पापनाशनम् ॥ शुक्लपक्षे चाश्वयुजे भवेदेकादशी तु या ॥ २ ॥ पाशांकुशेति विख्याता सर्वपापहरा परा ॥ पद्मनाभाभिधानं तु पूजयेत्तत्र मानवः ॥ ३ ॥ सर्वाभीष्टफलप्राप्त्यै स्वर्गमोक्षप्रदं नृणाम् ॥ तपस्तप्त्वा नरस्तीव्रं चिरं सुनियतेंद्रियः ॥ ४ ॥ यत्फलं समवाप्नोति तन्नत्वा गरुडध्वजम् ॥ कृत्वापि बहुशः पापं नरो मोहसमान्वितः ॥ ५ ॥

पूजन करै ॥ ३ ॥ संपूर्ण वांछित फलनकी प्राप्तिके लिये मनुष्यनको स्वर्ग और मोक्षको देनहारो यह व्रत करै मनुष्य बहुत कालपर्यंत जितेंद्रिय हो अतितीव्र तपको करिके ॥ ४ ॥ जा फलको प्राप्त होय है ताहि फलको गरुडध्वज भगवान्‌के नमस्कार करनेसों प्राप्त होय है, मनुष्य अज्ञानसों युक्त बहुतसे पापनको करिकेहू ॥ ५ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

 पापनके हरनहारे हरिको नमस्कार करिके घोर नरकमें नहीं जाय है पृथ्वीमें जे तीर्थ हैं और पवित्र स्थान हैं
॥ ६ ॥ उन सबनको विष्णुको नामकीर्तनते प्राप्त होय है शार्ङ्गधनुषके धारण करनहारे जनार्दन देव जे विष्णु
 हैं तिनकी शरणमें जे जायँ हैं ॥ ७ ॥ उन मनुष्यनको निश्चय करिके कबहू यमलोक नहीं होय है मनुष्य प्रसंग

न याति नरकं घोरं नत्वा पापहरं हरिम् ॥ पृथिव्यां यानि तीर्थानि पुण्यान्यायतनानि च ॥ ६ ॥
तानि सर्वाण्यवाप्नोति विष्णोर्नामानुकीर्तनात् ॥ देवं शार्ङ्गधरं विष्णुं ये प्रपन्ना जनार्दनम् ॥ ७ ॥
न तेषां यमलोकश्च नृणां वै जायते क्वचित् ॥ उपोष्यैकादशीमेकां प्रसंगेनापि मानवाः ॥८॥ न
यांति यातनां याम्यां पापं कृत्वा तु दारुणम् ॥ वैष्णवः पुरुषो भूत्वा शिवनिंदां करोति यः ॥९॥
यो निंदेद्वैष्णवं लोकं स याति नरकं ध्रुवम् ॥ अश्वमेधसहस्राणि राजसूयशतानि च ॥१०॥ एका-
दश्युपवासस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम् ॥ एकादशीसमं पुण्यं किंचिल्लोके न विद्यते ॥ ११ ॥

हूते एक एकादशीको व्रत करिके ॥ ८ ॥ अतिदारुण पाप करनेहूपर यमकी यातनाको नहीं प्राप्त होय है जो मनुष्य
वैष्णव होके शिवकी निंदाको करै है ॥९॥ और जो वैष्णवलोककी निंदा करै है वह निश्चय नरकमें जाय ह हजारों
अश्वमेध और सैकरों राजसूय यज्ञनको फल ॥१०॥ एकादशीके व्रतको जो फल है ताकी सोलहवीं कलाको भी नहीं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्राप्त होय है एकादशीके समान पुण्य लोकमें कोई नहीं है ॥ ११ ॥ ऐसो पवित्र तीनों लोकनमें कुछ नहीं है जैसो यह पद्मनाभदिन पापनको नाश करनहारो है ॥ १२ ॥ जबताईं मनुष्य या शुभ पद्मनाभके दिनको व्रत नहीं करै हे मनुजाधिप ! तबही ताईं मनुष्यके या देहमें पाप वास करैं हैं ॥ १३ ॥ एकादशीके समान तीनों

नेदृशं पावनं किंचित्त्रिषु लोकेषु विद्यते ॥ यादृशं पद्मनाभस्य दिनं पातकहानिदम् ॥१२॥ यावन्नोपोष्यते जंतुः पद्मनाभदिनं शुभम् ॥ तावत्पापानि देहेऽस्मिंतिष्ठंति मनुजाधिप ॥ १३ ॥ नैकादशीसमं किंचित्त्रिषु लोकेषु विद्यते ॥ व्याजेनापि कृता राजन्न दर्शयति भास्करिम् ॥१४॥ स्वर्गमोक्षप्रदा ह्येषा शरीरारोग्यदायिनी ॥ सुकलत्रप्रदा ह्येषा धनधान्यप्रदायिनी ॥ १५ ॥ न गङ्गा न गया राजन्न काशी न च पुष्करम् ॥ न चापि कौरवं क्षेत्रं पुण्यं भूप हरेर्दिनात् ॥ १६ ॥

लोकनमें कुछ नहीं है हे राजन् ! काहू बहानेहूसों जो याको व्रत कियोजाय तो यमके दर्शन नहीं होयँ ॥ १४ ॥ यह स्वर्ग और मोक्षकी देनहारी है और शरीरको आरोग्य करनहारी है यह सुन्दर स्त्रीकी देनहारी है और धन धान्यकी बढावनहारी है ॥ १५ ॥ हे राजन् ! न गंगा न गया न काशी न पुष्कर और न कुरुक्षेत्र हरिके

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दिनते पवित्र है अर्थात् वह हरिवासर सबसे श्रेष्ठ है ॥ १६ ॥ हरिवासरको व्रत करि रात्रिमें जागरण करिके हे राजन्! विना परिश्रमके विष्णुपद प्राप्त होय है ॥ १७ ॥ या एकादशीको व्रत करनहारो मनुष्य दश पीढी माताके पक्षकी और दशही पिताके पक्षकी और दश स्त्रीके पक्षकी तारिदेय है ॥१८॥ वे सब चतुर्भुज दिव्यरूप

रात्रौ जागरणं कृत्वा समुपोष्य हरेर्दिनम् ॥ अनायासेन भूपाल प्राप्यते वैष्णवं पदम् ॥१७॥ दश वै मातृपक्षे च दश राजेंद्र पैतृके ॥ प्रियाया दश पक्षे तु पुरुषानुद्धरेन्नरः ॥१८॥ चतुर्भुजा दिव्यरूपा नागारिकृतकेतनाः ॥ स्रग्विणः पीतवस्त्राश्च प्रयांति हरिमंदिरम् ॥१९॥ बालत्वे यौवनत्वे च वृद्धत्वेऽपि नृपोत्तम ॥ उपोष्य द्वादशीं नूनं नैति पापोऽपि दुर्गतिम् ॥२०॥ पाशांकुशासमुपोष्यैव आश्विने चासितेतरे ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तो हरिलोकं स गच्छति ॥ २१ ॥

और गरुड जिनकी ध्वजामें है मालाको धारण किये भये और पीताम्बरको धारण किये भये हरिके लोकको जायँ हैं ॥ १९ ॥ बालकपनमें जवानीमें यों बुढापे हे राजन्! एकादशीको व्रत करिके पापीहू दुर्गतिको नहीं प्राप्त होय है ॥ २० ॥ क्वारके शुक्लपक्षमें पाशांकुशाको व्रत करिके पापनते मुक्त हो वह मनुष्य हरिके लोकको जाय है ॥ २१ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सुवर्ण, तिल, भूमि, गौ, अन्न, जल, जूता और छत्र आदिको दान करिके मनुष्य यमको नहीं देखै है ॥ २२ ॥ जाको दिन पुण्यहीन व्यतीत होय है वह लोहारकी धौकनिके समान श्वासको लेता है परंतु जीवता नहीं है हे नरोत्तम ! चाहे दरिद्रीही होय परंतु शक्तिके अनुसार स्नान दान आदि क्रियानको करतो भयो दिननको सफल बितावै

दत्त्वा हेमतिलान्भूमिं गामन्नमुदकं तथा ॥ उपानद्वस्त्रच्छत्रादि न पश्यति यमं नरः ॥२२॥ अवंध्यं दिवसं कुर्याद्दरिद्रोऽपि नृपोत्तम ॥ समाचरन्यथाशक्ति स्नानदानादिकाः क्रियाः ॥२३॥ तडागारामसौधानां सत्राणां पुण्यकर्मणाम् ॥ कर्तारो नैव पश्यंति धीरास्तां यमयातनाम् ॥ २४ ॥ दीर्घायुषो धनाढ्याश्च कुलीना रोगवर्जिताः ॥ दृश्यंते मानवा लोके पुण्यकर्तार ईदृशाः ॥२५॥ किमत्र बहुनोक्तेन यांत्यधर्मेण दुर्गतिम् ॥ आरोहंति दिवं धर्मैर्नात्र कार्या विचारणा ॥ २६ ॥

॥ २३ ॥ तालाव, वाग, महल, यज्ञ तथा और पुण्यनको करनहारो धीर मनुष्य वा यमकी यातनाको नहीं देखै है ॥ २४ ॥ पुण्य करनहारे मनुष्य लोकमें वडी आयुके धनाढय कुलीन और रोगरहित दिखाई देय हैं ॥ २५ ॥ यहां बहुत कहनेसों कहाहै अधर्मते दुर्गतिको प्राप्त होयहैं और धर्मते स्वर्गको जायँहैं यामें कुछ विचार नहीं है ॥२६॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे अनघ ! हे राजन् ! जो तुमने पूँछो सो मैंने तुमसों कह्यो ॥ २७ ॥ इति श्रीमत्पण्डितपरमसुखतनयपंडित-केशवप्रसादशर्म्मद्विवेदिकृतायामेकादशीमाहात्म्यभाषाटीकायां दीपिकासमाख्यायामाश्विनशुक्लपाशांकुशानाम्न्ये-कादशीकथा समाप्ता ॥ २२ ॥ अथ कार्तिककृष्णैकादशीरमाकथा ॥ ऊर्ज्जस्य कृष्णपक्षे तु रमाख्यैकादशी

इति ते कथितं राजन्यत् पृष्टोऽहं त्वयानघ ॥२७॥ इति श्रीब्रह्मवैवर्तपुराणे आश्विनशुक्लैकादशी-पाशांकुशामाहात्म्यं समाप्तम् ॥ २२ ॥ अथ कार्त्तिककृष्णैकादशीकथा ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ कथयस्व प्रसादेन मम स्नेहाज्जनार्दन ॥ कार्त्तिकस्यासिते पक्षे किंनामैकादशी भवेत् ॥ १ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ श्रूयतां राजशार्दूल कथयामि तवाग्रतः ॥ कार्तिके कृष्णपक्षे तु रमानाम्नी सुशोभना ॥ २ ॥

स्मृता ॥ तन्माहात्म्यस्य भाषायां टीकां रम्यां करोम्यहम् ॥ १ ॥ युधिष्ठिर बोले कि, हे जनार्दन ! कार्तिकके कृष्णपक्षमें जो एकादशी होय है ताको कहा नाम हैं सो आप मेरेपर स्नेहसों प्रसन्न होके कहो ॥ १ ॥ श्रीकृष्ण बोले कि, हे राजशार्दूल ! सुनिये मैं तुम्हारे आगे कहौं हौं कि, कार्तिकके कृष्णपक्षमें रमानाम सुंदर शोभायमान एकादशी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

होय है ॥ २ ॥ यह एकादशी महापातककी हरनेवाली उत्कृष्ट कही गई है हे राजन् ! प्रसंगसों अब याको माहात्म्य तुमसों कहौं हौं ॥ ३ ॥ पहले मुचुकुंद या नामसों प्रसिद्ध राजा होतभयो हे नृप ! इन्द्रके साथ जाकी मित्रता ही ॥ ४ ॥ तैसे ही यम वरुण और कुवेरहूके साथ और विभीषणहूके साथ वाकी मित्रता ही ॥ ५ ॥

एकादशी समाख्याता महापापहरा परा ॥ अस्याः प्रसंगतो राजन्माहात्म्यं प्रवदामि ते ॥ ३ ॥ मुचुकुंद इति ख्यातो बभूव नृपतिः पुरा ॥ देवेंद्रेण समं यस्य मित्रत्वमभवन्नृप ॥ ४ ॥ यमेन वरुणेनैव कुबेरेण समं तथा ॥ विभीषणेन चैतस्य सखित्वमभवत्सह ॥ ५ ॥ विष्णुभक्तः सत्यसंधो बभूव नृपतिः सदा ॥ तस्यैवं शासतो राजन् राज्यं निहतकंटकम् ॥ ६ ॥ बभूव दुहिता गेहे चन्द्रभागा सरिद्वरा ॥ शोभनाय च सा दत्ता चंद्रसेनसुताय वै ॥ ७ ॥ स कदाचित्समायातः श्वशुरस्य गृहे नृप ॥ एकादशीव्रतमिदं समायातं सुपुण्यदम् ॥ ८ ॥

वह राजा सदा विष्णुभक्त और सत्यप्रतिज्ञावालो हो हे राजन् ! या प्रकार निष्कंटक राज्य करतो जो वह राजा है ॥ ६ ॥ ताके घर नदीनमें श्रेष्ठ चन्द्रभागा नाम पुत्री उत्पन्न होतभई वह शोभन नाम चंद्रसेनके पुत्रको दीगई ॥ ७ ॥ हे नृप ! वह शोभन कबहूं श्वशुरके घर आयो वा समय सुन्दर पुण्यको देनहारो एकादशीको व्रत आयो ॥ ८ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

व्रतदिनके आनेपै चंद्रभागा चिंतवन करत भई कि, हे देवेश ! कहा होयगो मेरो पतिहू दुर्बल है ॥ ९ ॥ वह
क्षुधाको नहीं सहै और मेरे पिताको शासन उग्र है दशमीको दिन जब आवै है तब वाको ढोल बजे है ॥ १० ॥
कि, हरिके दिन भोजन न करनो चाहिये न करनो चाहिये न करनो चाहिये या प्रकारको वा ढोलको शब्द

समागते व्रतदिने चन्द्रभागा त्वचिंतयत् ॥ किं भविष्यति देवेश मम भर्तातिदुर्बलः ॥९॥ क्षुधां
न सहते सोऽपि पिता चैवोग्रशासनः ॥ पटहस्ताड्यते यस्य संप्राप्ते दशमीदिने ॥ १० ॥ न
भोक्तव्यं न भोक्तव्यं न भोक्तव्यं हरेर्दिने ॥ श्रुत्वा पटहनिर्घोषं शोभनस्त्वब्रवीत्प्रियाम् ॥११॥ किं
कर्त्तव्यं मया कांते देहि शिक्षां सुशोभने ॥ कृतेन येन मे सम्यग्जीवितं न विनश्यति ॥ १२ ॥
चंद्रभागोवाच ॥ मत्पितुर्वेश्मनि विभो भोक्तव्यं नैव केनचित् ॥ गजैरश्वैस्तथा चान्यैरन्यैः
पशुभिरेव च ॥ १३ ॥

सुनि शोभन अपनी प्रियासों बोलत भयो ॥ ११ ॥ कि, हे कान्ते ! मोको अब कहा कर्त्तव्य है हे सुशोभने !
तू मोको शिक्षा दे जाके करनेसों मेरे जीवितको नाश न होय ॥ १२ ॥ चंद्रभागा बोली कि, हे प्रभो !
मेरे पिताके घरमें आज कोई नहीं भोजन करैगो हाथी, घोडे और ऊंट तथा अन्य पशुभी नहीं भोजन

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

करैंगे ॥ १३ ॥ घासको अन्नको तैसेही जलको हरिके दिनमें कोई नहीं खायगो हे पति ! मनुष्य तो हरिवासरके दिन कैसे खायँगे ॥ १४ ॥ हे पति ! जो तुम भोजन करोगे तो घरते जाइये, मनमें ऐसे विचारिकै अपने मनको दृढ कीजिये ॥ १५ ॥ शोभन बोले तैंने सत्य कही मैं व्रत करोंगो दैवने जो जैसी रची है वह वैसीही

तृणमन्नं तथा वारि न भोक्तव्यं हरेर्दिने ॥ मानवैश्च कुतः कांत भुज्यते हरिवासरे ॥१४॥ यदि त्वं भोक्ष्यसे कांत ततो गेहात्प्रयास्यताम् ॥ एवं विचार्य मनसा सुदृढं मानसं कुरु ॥१५॥ शोभन उवाच ॥ सत्यमेतत्त्वयैवोक्तं करिष्येऽहमुपोषणम् ॥ दैवेन विहितं यद्वै तत्तथैव भविष्यति ॥१६॥ इति दिष्टे मतिं कृत्वा चकार व्रतमुत्तमम् ॥ क्षुत्तृषापीडिततनुः स बभूवातिदुःखितः॥१७॥ इति चिंतयतस्तस्य ह्यादित्योऽस्तमयाद्गिरिम् ॥ वैष्णवानां नराणां सा निशा हर्षविवर्द्धिनी ॥ १८ ॥ हरिपूजारतानां च जागरासक्तचेतसाम् ॥ बभूव नृपशार्दूल शोभनस्यातिदुःसहा ॥ १९ ॥

होयगी ॥ १६ ॥ ऐसे भाग्यमें मति करिके वह उत्तम व्रतको करत भयो भूख प्याससों पीडित है शरीर जाको ऐसो वह शोभन अतिदुःखित होत भयो ॥ १७ ॥ वाको ऐसे चिंतवन करते २ सूर्य अस्ताचलको प्राप्त होतभये वैष्णव मनुष्यनको वह राति हर्षकी बढावनहारी भई ॥ १८ ॥ तैसेही हरिकी पूजामें लगे भये जे वैष्णव हैं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तिनकेहू हर्षकी बढावनहारी भई हे नृपशार्दूल ! वह शोभनको अतिदुस्सह होत भई ॥ १९ ॥ सूर्यके उदय-
समयमें शोभन मृत्युको प्राप्त होत भये तब राजाने उनको राजाके योग्य चन्दनआदि काष्ठन करिके दाह करायो
॥ २० ॥ और पिताकरि मना कीगई चंद्रभागा अपने देहको नहीं जरावत भई फिरि वाको प्रेतकृत्य करिकें
पिताहीके घरमें स्थित होती भई ॥ २१ ॥ हे नृपश्रेष्ठ ! रमाको जो व्रत कियो ताके प्रभावते शोभित मंदराचलके

रवेरुदयवेलायां शोभनः पंचतां गतः ॥ दाहयामास राजा तं राजयोग्यैश्च दारुभिः ॥ २० ॥ चंद्र-
भागा नात्मदेहं ददाह पितृवारिता ॥ कृत्वौर्ध्वदैहिकं तस्य तस्थौ जनकवेश्मनि ॥२१॥ शोभ-
नेन नृपश्रेष्ठ रमाव्रतप्रभावतः ॥ प्राप्तं देवपुरं रम्यं मंदराचलसानुनि ॥ २२ ॥ अनुत्तममनाधृ-
ष्यमसंख्येयगुणान्वितम् ॥ हेमस्तंभमयैः सौधै रत्नवैडूर्यमंडितैः ॥ २३ ॥ स्फाटिकैर्विविधाकारै-
र्विचित्रैरुपशोभितम् ॥ सिंहासनसमारूढः सुश्वेतच्छत्रचामरः ॥ २४ ॥

शिखरपर मनोहर देवपुर पायो ॥ २२ ॥ वह देवपुर कैसो है कि, सबते उत्तम है और जाको कोई दबाय नहीं
सकै है और असंख्य गुणन करिके युक्त है रत्न और वैडूर्य मणिनसों जडे भये हैं सुवर्णके खंभ जिनमें ऐसे
महलनसों शोभित है ॥ २३ ॥ नानाप्रकारके हैं आकार जिनके ऐसे विचित्र स्फाटिकमणिन करिके शोभित है ऐसे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मंदिरमें शोभन सिंहासनपर बैठे हैं उनके ऊपर श्वेत छत्र लगो है और चमर दुर रहे हैं ॥ २४ ॥ किरीट माथे-पर है कुंडल धारण किये हैं हार और केयूर जे बाजू हैं तिन करिके भूषित गंधर्व स्तुति कर रहे हैं और अप्सरा-नके गण सेवन करि रहे हैं ॥ २५ ॥ वहां शोभन ऐसो शोभित है मानो कि, दूसरो इंद्र है सोमशर्म्मा नामसों

किरीटकुंडलयुतो हारकेयूरभूषितः ॥ स्तूयमानश्च गंधर्वैरप्सरोगणसेवितः ॥ २५ ॥ शोभनः शोभते तत्र देवराडपरो यथा ॥ सोमशर्मेति विख्यातो मुचुकुंदपुरे वसन् ॥ तीर्थयात्राप्रसंगेन भ्रमन्विप्रो ददर्श तम् ॥२६॥ नृपजामातरं ज्ञात्वा तत्समीपं जगाम सः ॥ आसनादुत्थितः शीघ्रं नमश्चक्रे द्विजोत्तमम् ॥ २७ ॥ चकार कुशलप्रश्नं श्वशुरस्य नृपस्य च ॥ कांतायाश्चंद्रभागाया-स्तथैव नगरस्य च ॥ २८ ॥

विख्यात मुचुकुंदके पुरको वसनहारो एक ब्राह्मण तीर्थयात्राके प्रसंगसों भ्रमतो भयो शोभनको देखत भयो ॥२६॥ वह राजाको जमाई जानि उनके समीप जात भयो तब शोभन शीघ्रही आसनते उठिके वा उत्तम द्विजको नमस्कार करत भयो ॥ २७ ॥ और ससुरा जो राजा हो ताकी कुशल पूँछत भयो और स्त्री जो चंद्रभागा है ताकी तथा नगरकी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कुशल पूछत भयो ॥ २८ ॥ सोमशर्म्मा बोलो कि, हे राजन् ! तुम्हारे ससुरेके घरमें कुशल है और चंद्रभागाहू कुशलिनी है और सब पुरमें कुशल है ॥ २९ ॥ हे राजन् ! अपनो वृत्तांत कहिये मोको बडो आश्चर्य है ऐसो विचित्र सुन्दर पुर है कि, जैसो कबहूं काहूने कहूँ न देखो होय ॥ ३० ॥ हे राजन् ! यह कहिये कि, तुमने

सोमशर्मोवाच ॥ कुशलं वर्तते राजञ्छ्वशुरस्य गृहे तव ॥ चंद्रभागा कुशलिनी सर्वतः कुशलं पुरे ॥ २९ ॥ स्ववृत्तं कथ्यतां राजन्नाश्चर्यं परमं मम ॥ पुरं विचित्रं रुचिरं न दृष्टं केनाचित्क-चित् ॥ ३० ॥ एतदाचक्ष्व नृपते कुतः प्राप्तमिदं त्वया ॥ शोभन उवाच ॥ कार्तिकस्यासिते पक्षे नाम्ना चैकादशी रमा ॥ ३१ ॥ तामुपोष्य मया प्राप्तं द्विजेंद्र पुरमध्रुवम् ॥ ध्रुवं भवति ये-नैव तत्कुरुष्व द्विजोत्तम ॥ ३२ ॥ द्विजेंद्र उवाच ॥ कथमध्रुवमेतद्धि कथं हि भवति ध्रुवम् ॥ तत्त्वं कथय राजेंद्र तत्करिष्यामि नान्यथा ॥ ३३ ॥

याहि कैसे पायो शोभन बोले कि, कार्तिकके कृष्णपक्षमें रमा नाम एकादशी होय है ॥ ३१ ॥ हे द्विजेंद्र ! वाको व्रत कारिके मैंने यह अध्रुवपुर पायो है हे द्विजेंद्र ! जाते यह ध्रुव होजाय सो उपाय करिये ॥ ३२ ॥ द्विजेंद्र बोले कि, यह कैसे अध्रुव है और ध्रुव कैसे होय हे राजेंद्र ! सो आप कहिये वाको मैं वैसोही करौं यामें अन्यथा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नहीं है ॥ ३३ ॥ शोभन बोले कि, हे द्विजोत्तम ! मैंने या उत्तम व्रतको श्रद्धाहीन कियो है ताते मैं याको अध्रुव मानौं हौं और जाते ध्रुव होय सो सुनिये ॥ ३४ ॥ सुंदर शोभायमान चन्द्रभागा नाम मुचुकुंदकी पुत्री है तासों तुम यह वृत्तांत कहो तो यह ध्रुव होजायगो ॥ ३५ ॥ सो सुनिके वह ब्राह्मण वा चंद्रभागासों सब वृत्तांत

शोभन उवाच ॥ मयैतद्विहितं विप्र श्रद्धाहीनं व्रतोत्तमम् ॥ तेनाहमध्रुवं मन्ये ध्रुवं भवति तच्छृणु ॥ ३४ ॥ मुचुकुंदस्य दुहिता चंद्रभागा सुशोभना ॥ तस्यै कथय वृत्तांतं ध्रुवमेतद्भविष्यति ॥ ३५ ॥ तच्छ्रुत्वाथ द्विजवरस्तस्यै सर्वं न्यवेदयत् ॥ श्रुत्वाऽथ सा द्विजवचो विस्मयोत्फुल्ल-लोचना ॥ ३६ ॥ प्रत्यक्षमथवा स्वप्नस्त्वयैतत्कथ्यते द्विज ॥ सोमशर्मोवाच ॥ प्रत्यक्षं पुत्रि ते कांतो मया दृष्टो महावने ॥ ३७ ॥ देवतुल्यमनाधृष्यं दृष्टं तस्य पुरं मया ॥ अध्रुवं तेन तत्प्रोक्तं ध्रुवं भवति तत्कुरु ॥ ३८ ॥

कहिदेत भयो या पीछे वह वा ब्राह्मणको वचन सुनिके विस्मयसों उत्फुल्ल हैं नेत्र जाके ऐसी होत भई ॥ ३६ ॥ हे द्विज ! तुम यह प्रत्यक्ष कहते हो अथवा स्वप्न कहते हो सोमशर्मा बोले कि, हे पुत्रि ! मैंने तुम्हारो पति महावनमें प्रत्यक्ष देख्यो है ॥ ३७ ॥ देवपुरके तुल्य जाहि कोऊ दबाय न सकै ऐसो मैंने उनको पुर देख्यो है वाने कही अध्रुव

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कहो जाते वह ध्रुव होय सो करो ॥ ३८ ॥ चंद्रभागा बोली कि, हे विप्रर्षे ! मोको तुम वहां ले चलो पतिके दर्शनकी मेरी बडी लालसा है मैं अपने व्रतके पुण्यसों वा पुरको ध्रुव करि देऊँगी ॥ ३९ ॥ हे द्विज ! जैसे हम दोनोंको संयोग होय सो करो यह निश्चय है कि, वियोगीको योग कराके बडो पुण्य प्राप्त होय है ॥ ४० ॥

चंद्रभागोवाच ॥ तत्र मां नय विप्रर्षे पतिदर्शनलालसाम् ॥ आत्मनो व्रतपुण्येन करिष्यामि पुरं ध्रुवम् ॥ ३९ ॥ आवयोर्द्विज संयोगो यथा भवति तत्कुरु ॥ प्राप्यते हि महत्पुण्यं कृत्वा योगं वियुक्तयोः ॥ ४० ॥ इति श्रुत्वा सह तया सोमशर्मा जगाम ह ॥ आश्रमं वामदेवस्य मंदराचलसन्निधौ ॥ ४१ ॥ वामदेवोऽशृणोत्सर्वं वृत्तांतं कथितं तयोः ॥ अभ्यषिंचच्चंद्रभागां वेदमंत्रैरथोज्ज्वलाम् ॥ ४२ ॥ ऋषिमंत्रप्रभावेण विष्णुवासरसेवनात् ॥ दिव्यदेहो बभूवासौ दिव्यां गतिमवाप ह ॥ ४३ ॥

यह सुनिके सोमशर्म्मा वाहि साथ लेके वहां जात भयो जहां मन्दराचल नाम पर्वतके समीप वामदेव ऋषिको आश्रम हो ॥ ४१ ॥ वामदेव उन दोनोंको कहो भयो सब वृत्तांत सुनत भये ता पीछे वामदेव वेदके मंत्रनसों उज्ज्वल वा चंद्रभागाको अभिषेक करावत भये ॥ ४२ ॥ ऋषिको जो मंत्र है ताके प्रभावते और हरि- १२५

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वासरके सेवनते वह चंद्रभागा दिव्यदेह होजात भई और दिव्यही गतिको प्राप्त होत भई ॥ ४३ ॥ और आनंदसों प्रफुल्लित नेत्र होके पतिके समीप जाती भई और शोभनहू कांताको आई भई देखि बहुतही हर्षित होत भयो ॥ ४४ ॥ और वा चंद्रभागाको बुलायके अपनी बाईं ओर बैठाय लेत भयो वह चंद्रभागा बडे हर्षते

पत्युः समीपमगमत्प्रहर्षोत्फुल्ललोचना ॥ सहर्षः शोभनोऽतीव दृष्ट्वा कांतां समागताम् ॥ ४४ ॥
समाहूय स्वके वामे पार्श्वे तां संन्यवेशयत् ॥ सा चोवाच प्रियं हर्षाच्चंद्रभागा शुभं वचः ॥४५॥
शृणु कांत हितं वाक्यं यत्पुण्यं विद्यते मयि ॥ अष्टवर्षाधिका जाता यदाहं पितृवेश्मनि ॥४६॥
मया ततःप्रभृति च कृतमेकादशीव्रतम् ॥ यथोक्तविधिसंयुक्तं श्रद्धायुक्तेन चेतसा ॥ ४७ ॥ तेन
पुण्यप्रभावेण भविष्याति पुरं ध्रुवम् ॥ सर्वकामसमृद्धं च यावदाभूतसंप्लवम् ॥ ४८ ॥

पतिसों शुभ वचन बोलत भई ॥ ४५ ॥ हे कांत ! हितवचन सुनिये जो पुण्य मोमें विद्यमान है जब मैं पिताके घरमें आठ वर्षते अधिक भई ॥ ४६ ॥ मैंने तबसों लगाके एकादशीको व्रत श्रद्धायुक्त मनते यथोक्त विधिपूर्वक कियो है ॥ ४७ ॥ ता पुण्यके प्रभावसों तुम्हारो पुर ध्रुव होजायगो और कल्पके क्षयपर्यंत सब कामनासों भरो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पूरो रहैगो ॥ ४८ ॥ हे नृपशार्दूल ! या प्रकार वह पतिके साथ रमण करती दिव्य वाको भोग हो और दिव्यही रूप हो और दिव्यही आभूषण करिके भूषित ही ॥ ४९ ॥ और दिव्य है विग्रह जाको ऐसो शोभन रमाके व्रतके प्रभाव करिके मन्दराचलके शिखर पर वाके साथ विहार करत भयो ॥५०॥ यह रमानाम चिंतामणिके समान

एवं सा नृपशार्दूल रमते पतिना सह ॥ दिव्यभोगा दिव्यरूपा दिव्याभरणभूषिता ॥४९॥ शोभ-
नोऽपि तया सार्द्धं रमते दिव्यविग्रहः ॥ रमाव्रतप्रभावेण मंदराचलसानुनि ॥ ५० ॥ चिंतामणि-
समा ह्येषा कामधेनुसमाथवा ॥ रमाभिधाना नृपते तवाग्रे कथिता मया ॥ ५१ ॥ ईदृशं च व्रतं
राजन्ये कुर्वंति नरोत्तमाः ॥ ब्रह्महत्यादिपापानि नाशं यांति न संशयः ॥५२॥ एकादशीव्रतानां
च पक्षयोरुभयोरपि ॥ यथा शुक्ला तथा कृष्णा तिथिभेदं न कारयेत् ॥ ५३ ॥ सेवितैकादशी
नृणां भुक्तिमुक्तिप्रदायिनी ॥ धेनुः कृष्णा तथा श्वेता उभयोः सदृशं पयः ॥ ५४ ॥

है अथवा कामधेनुके तुल्य है हे नृप ! मैंने तुम्हारे आगे कही ॥ ५१ ॥ जे उत्तम मनुष्य या प्रकारको व्रत करै हैं तिनके ब्रह्महत्याआदि सब पाप नाशको प्राप्त होय हैं यामें सन्देह नहीं है ॥ ५२ ॥ दोनों पक्षकी एका-दशीनके व्रतनमें जैसी कृष्णपक्षकी है वैसीही शुक्लपक्षकी है तिथिनको भेद नहीं करै ॥ ५३ ॥ सेवन करी गई

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

एकादशी मनुष्यको भुक्ति मुक्तिकी देनहारी है काली गौ तथा सपेद गौ दोनोंको दूध एकसो होय है ॥ ५४ ॥ तैसेही दोनों एकादशी तुल्य फलकी देनहारी हैं एकादशीनके जे माहात्म्य हैं तिनको जो सुनै है ॥ ५५ ॥ वह सब पापनते छूटिके विष्णुलोकमें आनंद करै है ॥ ५६ ॥ इति श्रीमत्पण्डितपरमसुखतनयपण्डितकेशवप्रसादशर्म्म-द्विवेदिकृतायामेकादशीमाहात्म्यभाषाटीकायां दीपिकासमाख्यायां कार्तिककृष्णैकादशीरमाकथा समाप्ता ॥ २३ ॥

तथैव तुल्यफलदं स्मृतमेकादशीव्रतम् ॥ एकादशीव्रतानां च माहात्म्यं शृणुयान्नरः ॥ ५५ ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तो विष्णुलोके महीयते ॥ ५६ ॥ इति श्रीब्रह्मवैवर्त्तपुराणे कार्तिककृष्णैकादशी-रमामाहात्म्यं समाप्तम् ॥ २३ ॥ अथ कार्त्तिकशुक्लैकादशीकथा ॥ ब्रह्मोवाच ॥ प्रबोधिन्याश्च माहात्म्यं पापघ्नं पुण्यवर्धनम् ॥ मुक्तिप्रदं सुबुद्धीनां शृणुष्व मुनिसत्तम ॥ १ ॥

अथ कार्तिकशुक्लैकादशीप्रबोधिनीकथा ॥ ऊर्जाऽपरदले या तु बोधिन्येकादशी स्मृता ॥ तन्माहात्म्यस्य भाषायां टीकां वच्मि मनोहराम् ॥ १ ॥ ब्रह्मा बोले कि, प्रबोधिनी जो एकादशी है ताको माहात्म्य पापनको नाश करनहारो और पुण्यको बढावनहारो है और सुबुद्धि मनुष्यनको मुक्तिको देनहारो है हे मुनिश्रेष्ठ ! ताहि

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सुनिये ॥ १ ॥ हे विप्रेंद्र ! पृथ्वीमें तबहीलों गंगा भागीरथी गर्जै हैं जबलों कार्त्तिकमें पापनकी नाश करनहारी हरिबोधिनी नहीं आवै है ॥ २ ॥ और तबहीलों समुद्रपर्यंत तीर्थ और सर गर्जैं हैं जबताईं कार्तिकमें विष्णुकी प्रबोधिनी तिथि नहीं आवे ॥ ३ ॥ हजार अश्वमेधको और सौ राजसूय यज्ञनको फल मनुष्य एकही प्रबोधिनीके

तावद्गर्जंति विप्रेंद्र गंगा भागीरथी क्षितौ ॥ यावन्नायाति पापघ्नी कार्त्तिके हरिबोधिनी ॥ २ ॥
तावद्गर्जंति तीर्थानि ह्यासमुद्रं सरांसि च ॥ यावत्प्रबोधिनी विष्णोस्तिथिर्नायाति कार्तिकी
॥ ३ ॥ अश्वमेधसहस्राणि राजसूयशतानि च ॥ एकेनैवोपवासेन प्रबोधिन्यां लभेन्नरः
॥ ४ ॥ नारद उवाच ॥ एकभुक्तेन किं पुण्यं किं पुण्यं नक्तभोजने ॥ उपवासेन किं पुण्यं तन्मे
ब्रूहि पितामह ॥ ५ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ एकभुक्तेन जन्मोत्थं नक्तेन द्विजनुर्भवम् ॥ सप्तजन्मभवं
पापमुपवासेन नश्यति ॥ ६ ॥

व्रतसों प्राप्त होय है ॥ ४ ॥ नारद, बोले कि एकवार भोजन करनेसों और रात्रिमें भोजन करनेसों तथा उपवास करनेसों कहा पुण्य होय है हे पितामह ! सो मोसों कहिये ॥ ५ ॥ ब्रह्मा बोले कि, एकवार भोजन करनेसों एक जन्मको और रात्रिके भोजनसों दो जन्मको और उपवास करनेसों सात जन्मको पाप दूरि होजाय है ॥६॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

और जो दुर्लभ है और जो अप्राप्य है और जो त्रिलोकीमें नहीं दृष्टिगोचर है और हे पुत्र! जो अप्रार्थित है ताको हे पुत्र ! हरिबोधिनी देय है ॥ ७ ॥ मेरु तथा मंदराचलके प्रमाणते पाप है उन सबको यह पापहारिणी भस्म करि देय है ॥ ८ ॥ हजार पूर्वले जन्मन करिके जो दुष्कर्म इकट्ठो कियो है वह प्रबोधिनीके रात्रि जागर-

यद्दुर्लभं यदप्राप्यं त्रैलोक्ये न तु गोचरम् ॥ यदप्यप्रार्थितं पुत्र ददाति हरिबोधिनी ॥७॥ मेरु-मंदरमात्राणि पापान्युग्राणि यानि तु ॥ एकेनैवोपवासेन दहते पापहारिणी ॥८॥ पूर्वजन्मसहस्रैस्तु यद्दुष्कर्म उपार्जितम् ॥ जागरेण प्रबोधिन्यां दहते तूलराशिवत् ॥ ९ ॥ उपवासं प्रबोधिन्यां यः करोति स्वभावतः ॥ विधिवन्मुनिशार्दूल यथोक्तं लभते फलम् ॥ १० ॥ यथोक्तं सुकृतं यस्तु विधिवत्कुरुते नरः ॥ स्वल्पं मुनिवरश्रेष्ठ मेरुतुल्यं भवेत्फलम् ॥ ११ ॥ विधिहीनं तु यः कुर्यात्सुकृतं मेरुमात्रकम् ॥ अणुमात्रं न चाप्नोति फलं धर्मस्य नारद ॥ १२ ॥

णसों रुईके ढेरके समान भस्म होजाय है ॥ ९ ॥ हे मुनिशार्दूल ! जो मनुष्य स्वभावहीसों विधिपूर्वक प्रबोधिनीको व्रत करै है वह यथोक्त फलको प्राप्त होय है ॥ १० ॥ जो मनुष्य यथोक्त सुकृतको विधिपूर्वक करै है हे मुनिश्रेष्ठ ! वह थोरोहू मेरुके तुल्य फल होय है ॥ ११ ॥ और जो विधिहीन कियो जाय है वह मेरुके

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रमाणहू हे नारद! वह अणुमात्रहू धर्मको फल नहीं मिलै है ॥ १२ ॥ संध्याहीनमें व्रतभ्रष्टमें नास्तिकमें वेदनके निंदकमें और धर्मशास्त्रके दूषण देनहारेमें ॥ १३ ॥ पराई स्त्रीसों भोग करनहारेमें मूर्ख कृतघ्नीमें वंचकमें इन देहियोंके देहमें धर्म नहीं स्थित होय है ॥ १४ ॥ ब्राह्मण हो अथवा शूद्र हो जो पराई स्त्रीको सेवन करै है और

संध्याहीने व्रतभ्रष्टे नास्तिके वेदनिंदके ॥ नैतेषां तिष्ठते देहे धर्मशास्त्रविदूषके ॥ १३ ॥ परदाररते मूर्खे कृतघ्ने बंधके तथा ॥ धर्मो न तिष्ठते देहे एतेषामपि देहिनाम् ॥ १४ ॥ ब्राह्मणो वापि शूद्रो वा सेवते परयोषितम् ॥ ब्राह्मणीं च विशेषेण चांडालसदृशावुभौ ॥ १५ ॥ सभर्तृकां वा विधवां ब्राह्मणो ब्राह्मणीं यदि ॥ सेवते मुनिशार्दूल सान्वयो याति संक्षयम् ॥ १६ ॥ परदाराभिगमनं कुरुते यो द्विजाधमः ॥ संततिर्न भवेत्तस्य फलं जन्मार्जितं नहि ॥ १७ ॥

विशेष करि ब्राह्मणीको तो वे दोनों चांडालके समान हैं ॥ १५ ॥ पतियुक्त होय वा विधवा हो ऐसी ब्राह्मणीको जो ब्राह्मण सेवन करै हे मुनिशार्दूल ! वंशसमेत क्षयको प्राप्त होय है ॥ १६ ॥ जो अधम ब्राह्मण पराई स्त्रीसों गमन करै है वाके संताति नहीं होय है और जन्मनको इकट्ठो कियो भयो पुण्य नष्ट हो जाय है ॥ १७ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जो गुरुके और ब्राह्मणनके साथ अहंकारसों वर्तै ताको सुकृत शीघ्रही नष्ट हो और वह धन तथा संततिको नहीं प्राप्त होय है ॥ १८ ॥ जिनके देह आचारते भ्रष्ट है और जे चांडालीमें गमन करै हैं और जे दुष्टनकी सेवा करैं इन सबनको धर्म नष्ट होजायहै ॥ १९ ॥ जे पतित मनुष्यनको संग करैं हैं और उनके घरमें जायँ हैं वे

गुरुणा सह विप्रैश्च योऽहंकारेण वर्तते ॥ सुकृतं नश्यते शीघ्रं धनं नाप्नोति संततिम् ॥ १८ ॥
आचारभ्रष्टदेहानां वृषलीगामिनां तथा ॥ दुर्जनं सेवमानानां धर्मस्तेषां पराङ्मुखः ॥ १९ ॥
पतितैः सह संगं च तद्गृहे गमनं तथा ॥ ये कुर्वंति नृपश्रेष्ठ ते गच्छन्ति यमालये ॥ २० ॥ धर्मो नष्टो नृणां येषां स्वागतासनभोजनैः ॥ तेषां वै नश्यते वत्स कीर्तिरायुः प्रजासुखम् ॥ २१ ॥
साधूनामपमानं तु ये कुर्वन्ति नराधमाः ॥ त्रिवर्गफलहीनास्ते दह्यन्ते नरकाग्निना ॥२२॥ कृत्वा-वमानं साधूनां ये हृष्यंति नराधमाः ॥ वारयंति न ये मूढास्ते पश्यंति कुलक्षयम् ॥ २३ ॥

यमलोकमें जायँ हैं ॥ २० ॥ स्वागत आसन और भोजन करिके जिन मनुष्यनको धर्म नष्ट होगयो है हे वत्स ! उनकी कीर्ति आयु संतति और सुख नाशको प्राप्त होयहैं ॥ २१ ॥ जे अधम नर साधुनको अपमान करै हैं वे त्रिवर्ग अर्थात् धर्म, अर्थ, कामसों रहित हो नरकरूप अग्नि करिके जराये जात हैं ॥ २२ ॥ जे अधम मनुष्य

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

साधुनको अपमान करिके प्रसन्न होय है और जे मूर्ख उनको मने नहीं करैं हैं वे कुलक्षयको देखैं हैं ॥२३॥ जाको देह आचारते भ्रष्ट है और जो चुगल है शठ है वह दान करै तथा होम करै ताहूपै वाकी गति नहीं होय है ॥२४॥ ताते किञ्चित् भी लोकमें निंदित अशुभ कर्म न करै सदाचारवान् होय जाते धर्मको नाश न होय ॥ २५ ॥

आचारभ्रष्टदेहस्य पिशुनस्य शठस्य च ॥ ददतो जुह्वतो वापि गतिस्तस्य न विद्यते ॥ २४ ॥
तस्मान्न त्वाचरेत्किंचिदशुभं लोकगर्हितम् ॥ सदाचारवता भाव्यं यथा धर्मो न पश्यति ॥ २५॥
ये ध्यायंति मनोवृत्त्या करिष्यामः प्रबोधिनीम् ॥ तेषां विलीयते पापं पूर्वजन्मशतोद्भवम्॥२६॥
समतीतं भविष्यं च वर्तमानं कुलायुतम् ॥ विष्णुलोकं नयत्याशु प्रबोधिन्यां तु जागरे ॥२७॥
वसंति पितरो हृष्टा विष्णुलोकेऽत्यलंकृताः ॥ विमुक्ता नारकैर्दुःखैः पूर्वकर्मसमुद्भवैः ॥ २८ ॥

जो अपने मनमें ऐसो शोचै है कि, हम प्रबोधिनीको व्रत करैं उनको पहले सौ जन्मनको पाप नाशको प्राप्त होय है ॥ २६ ॥ प्रबोधिनीकी रात्रिमें जो जागरण करै है वह पिछले अगले और वर्तमान दश हजार कुलनको विष्णुलोकमें पहुँचाय देय है ॥ २७ ॥ वाके पितर कर्मसों उतपन्न भये नरकके दुःखनते छूटिकै प्रसन्न और अति

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अलंकृत हो विष्णुके लोकमें वास करैं हैं ॥ २८ ॥ मनुष्य ब्रह्महत्या आदि घोरपापनको करिके जो प्रबोधिनीकी रात्रिमें जागरण करै है वाके सब पाप छूटि जायँ हैं ॥ २९ ॥ जो फल सुन्दर अश्वमेध आदि यज्ञनसों बडी कठिनाईते मिलै है वह फल प्रबोधिनीरात्रिमें जागरण करनेसों सहजहीमें प्राप्त होय है ॥ ३० ॥ सब तीर्थनमें स्नान करिके और गौ, सुवर्ण करिके तथा भूमि देकै वा फलको नहीं प्राप्त होय है जो हरिको जागरण करनेसों

कृत्वा तु पातकं घोरं ब्रह्महत्यादिकं नरः ॥ कृत्वा तु जागरं विष्णोर्धौतपापो भवेन्मुने ॥ २९ ॥
दुष्प्राप्यं यत्फलं रम्यैरश्वमेधादिभिर्मखैः ॥ प्राप्यते तत्सुखेनैव प्रबोधिन्यां तु जागरे ॥ ३० ॥
आप्लुत्य सर्वतीर्थेषु दत्त्वा गाः कांचनं महीम् ॥ न तत्फलमवाप्नोति यत्कृत्वा जागरं हरेः ॥ ३१ ॥
जातः स एव सुकृती कुलं तेनैव पावितम् ॥ कार्त्तिके मुनिशार्दूल कृता येन प्रबोधिनी ॥ ३२ ॥
यथा ध्रुवं नृणां मृत्युर्धननाशस्तथा ध्रुवम् ॥ इति ज्ञात्वा मुनिश्रेष्ठ कर्तव्यं वैष्णवं दिनम् ॥ ३३ ॥

मिलै है ॥ ३१ ॥ वही सुकृती उत्पन्न हुआ और वाहिने अपनो कुल तारो हे मुनिशार्दूल ! जाने कार्तिकमें प्रबोधिनी एकादशीको व्रत कियो ॥ ३२ ॥ जैसे मनुष्यनको नाश ध्रुव कहिये निश्चित है तैसेही धनको नाश निश्चित है हे मुनिश्रेष्ठ ! या बातको जानिके वैष्णवदिनको व्रत करनो योग्य है ॥ ३३ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

तीनों लोकनमें जे कोई तीर्थ हैं वे सब प्रबोधिनी करनहारेके घरमें वास करैं हैं ॥ ३४ ॥ सब कर्मनको छोडि चक्रपाणिकी प्रसन्नताके अर्थ कार्तिकमें हरिकी बोधिनी एकादशीको व्रत करनो योग्य है ॥ ३५ ॥ वही ज्ञानी है, वही योगी है, वही तपस्वी है और वही जितेंद्रिय है और वाहीको भोग तथा मोक्ष है जो हरिबोधिनीको व्रत

यानि कानि च तीर्थानि त्रैलोक्ये सम्भवन्ति च ॥ तानि तस्य गृहे सम्यग्यः करोति प्रबोधिनीम् ॥ ३४ ॥ सर्वकृत्यं परित्यज्य तुष्ट्यर्थं चक्रपाणिनः ॥ उपोष्यैकादशी रम्या कार्त्तिके हरिबोधिनी ॥ ३५ ॥ स ज्ञानी स च योगी च स तपस्वी जितेंद्रियः ॥ भोगो मोक्षश्च तस्यास्ति ह्युपास्ते हरिबोधिनीम् ॥ ३६ ॥ विष्णुप्रियतरा ह्येषा धर्मसारस्य दायिनी ॥ सकृदेनामुपोष्यैव मुक्तिभाक् च भवेन्नरः ॥ ३७ ॥ प्रबोधिनीमुपोषित्वा न गर्भे विशते नरः ॥ सर्वधर्मान्परित्यज्य तस्मात्कुर्वीत नारद ॥ ३८ ॥

करै है ॥ ३६ ॥ धर्मनके सारकी देनहारी यह एकादशी विष्णुकी अत्यंत प्यारी है एकबार याको व्रत कारिकै मनुष्य मुक्तिको भागी होय है ॥ ३७ ॥ प्रबोधिनीको व्रत कारिकै मनुष्य गर्भमें नहीं प्रवेश करै है हे नारद ! ताते सब धर्मनको त्याग कारिकै याको व्रत करै ॥ ३८ ॥

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.
CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कर्म करिके मन करिके वचन करिके जो पाप संचित कियो है वाको प्रबोधिनीको जागरणसों हरि धोयदेय हैं ॥ ३९ ॥
स्नान, दान, जप, तप, होम जनार्दनके नामपैं प्रबोधिनीके दिन मनुष्यन करिके कियोजाय है सो अक्षय होय
है ॥ ४० ॥ जे मनुष्य वा एकादशीके दिन भक्तिसों माधवदेवको पूजन करैं हैं वे व्रतको करिके सौ जन्मके

कर्मणा मनसा वाचा पापं यत्समुपार्जितम् ॥ तत्क्षालयाति गोविंदः प्रबोधिन्यां तु जागरे ॥३९॥
स्नानं दानं जपो होमः समुद्दिश्य जनार्दनम् ॥ नरैर्यत्क्रियते वत्स प्रबोधिन्यां तदक्षयम् ॥४०॥
येऽर्चयंति नरास्तस्यां भक्त्या देवं च माधवम् ॥ समुपोष्य प्रमुच्यंते पापैस्ते शतजन्मभिः
॥४१॥ महाव्रतमिदं पुत्र महापापौघनाशनम् ॥ प्रबोधवासरं विष्णोर्विधिवत्समुपोषयेत् ॥४२॥
व्रतेनानेन देवेशं परितोष्य जनार्दनम् ॥ विराजयन्दिशः सर्वाः प्रयाति भवनं हरेः ॥४३॥ कर्त-
व्यैषा प्रयत्नेन नरैः कांतिमभीप्सुभिः ॥ द्वादशी द्विपदां श्रेष्ठ कार्तिके तु प्रबोधिनी ॥ ४४ ॥

पापनते छूटि जायँ हैं ॥ ४१ ॥ हे पुत्र ! यह बडो व्रत पापनके समूहको नाश करनहारो है यह जो विष्णुके
प्रबोधको दिन है ताको व्रत विधिवत् करै ॥ ४२ ॥ या व्रत करिके देवेश जो जनार्दन हैं तिनको संतुष्ट करिके सब
दिशानको प्रकाशित करतो भयो हरिके धामको जाय है ॥ ४३ ॥ हे द्विपदोंमें श्रेष्ठ ! द्वादशीयुक्त यह कार्तिकमें

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रबोधिनी एकादशी कार्तिकके चाहनेहारे पुरुषन कारि यत्नसों करनी चाहिये ॥ ४४ ॥ हे वत्स ! बालकपनमें जवानीमें और बुढापेमें जे पाप सौ जन्ममें इकठे किये गये हैं थोडे होयँ वा बहु ॥ ४५ ॥ हे मुनिश्रेष्ठ ! हे नारद ! सूखा गीला और अपने छिपाने योग्य जो पाप है ताको या एकादशीके दिन गोविंदको भक्तिसों पूजिके मनुष्य धोय देयहै ॥ ४६ ॥ धन धान्यकी देनहारी पवित्र और सब पापनकी उत्कृष्ट हरनहारी है

बाल्ये यच्चार्जितं वत्स यौवने वार्धके तथा ॥ शतजन्मकृतं पापं स्वल्पं वा यदि वा बहु ॥ ४५ ॥
शुष्कमार्द्रं मुनिश्रेष्ठ स्वगुह्यमपि नारद ॥ तत्क्षालयति गोविंदमस्यामभ्यर्च्य भक्तितः ॥ ४६ ॥
धनधान्यवहा पुण्या सर्वपापहरा परा ॥ तामुपोष्य हरेर्भक्त्या दुर्लभं न भवेत्कचित् ॥४७॥ चंद्र-
सूर्योपरागे च यत्फलं परिकीर्तितम् ॥ तत्सहस्रगुणं प्रोक्तं प्रबोधिन्यां तु जागरात् ॥४८॥ स्नानं
दानं जपो होमः स्वाध्यायोऽभ्यर्चनं हरेः ॥ तत्सर्वं कोटितुल्यं तु प्रबोधिन्यां तु यत्कृतम् ॥४९॥

है ताको भक्तिसों व्रत करिके कुछ दुर्लभ नहीं ॥ ४७ ॥ चन्द्रमा और सूर्यके ग्रहणमें जो फल कह्यो है ताते हजार गुनो प्रबोधिनीके जागरणको फल है ॥ ४८ ॥ स्नान, दान, जप, होम, स्वाध्याय और हरिको पूजन प्रबोधिनीके दिन करनेते इन सबनको पुण्यफलकारि दुगुनो अधिक होय है ॥ ४९ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जन्मसों लगाके मनुष्यन कारि जो पुण्य इकट्ठो कियो गयो है वह सब कार्तिककी एकादशीको व्रत न करनेसों वृथा होजाय है ॥ ५० ॥ विष्णुको नियम विना किये जो मनुष्य कार्तिकको व्यतीत करै हैं हे नारद! वह जन्म-भरिके जोरे भये पुण्यके फलको नहीं प्राप्त होय है ॥ ५१ ॥ हे विप्रेन्द्र! ताते तुम कारिके यत्नसों सब कामना-

जन्मप्रभृति यत्पुण्यं नरेणाभ्यर्जितं भवेत् ॥ वृथा भवाति तत्सर्वमकृत्वा कार्तिकव्रतम् ॥ ५० ॥
अकृत्वा नियमं विष्णोः कार्तिकं यः क्षिपेन्नरः॥ जन्मार्जितस्य पुण्यस्य फलं नाप्नोति नारद ॥ ५१ ॥
तस्मात्त्वया प्रयत्नेन देवदेवो जनार्दनः ॥ उपासनीयो विप्रेन्द्र सर्वकामफलप्रदः ॥ ५२ ॥ परान्नं
वर्जयेद्यस्तु कार्त्तिके विष्णुतत्परः ॥ परान्नवर्जनाद्वत्स चांद्रायणफलं लभेत् ॥ ५३ ॥ न तथा
तुष्यते यज्ञैर्न दानैर्वा गजादिभिः ॥ यथा शास्त्रकथालापैः कार्त्तिके मधुसूदनः ॥ ५४ ॥

ओंके फलके देनहारे देवदेव जनार्दनकी उपासना करने योग्य हौ ॥ ५२ ॥ जो विष्णुतत्पर मनुष्य कार्तिकमें पराये अन्नको त्याग करै है तो वह पराये अन्नके त्यागसों चांद्रायणव्रतके फलको प्राप्त होय है ॥ ५३ ॥ कार्तिकमें जैसे भगवान् मधुसूदन शास्त्रकी कथाओंके कहनेसों होय हैं तैसे यज्ञनसों घोडे और हाथिनके दानसों

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नहीं प्रसन्न होय हैं ॥ ५४ ॥ जे कार्तिकमें विष्णुकी कथाको एक श्लोक वा आधा श्लोक कहै हैं और सावधान होके सुनै हैं वे सौ गोदानके फलको प्राप्त होय हैं ॥ ५५ ॥ कार्तिकके महीनेमें सब धर्मोंको छोडिके मेरे आगे सदा मनुष्यन करि शास्त्रको अवधारण और श्रवण करनो चाहिये ॥ ५६ ॥ हे मुनिशार्दूल ! कल्याणोंके लोभकी

ये कुर्वंति कथां विष्णोर्ये शृण्वंति समाहिताः ॥ श्लोकं वा श्लोकपादं वा कार्तिके गोशतं फलम् ॥ ५५ ॥ सर्वधर्मान्परित्यज्य ममाग्रे कार्त्तिके नरैः ॥ शास्त्रावधारणं कार्यं श्रोतव्यं च सदा मुने ॥ ५६ ॥ श्रेयसां लोभबुद्ध्या वा यः करोति हरेः कथाम् ॥ कार्तिके मुनिशार्दूल कुलानां तारयेच्छतम् ॥ ५७ ॥ नित्यं शास्त्रविनोदेन कार्त्तिकं यः क्षिपेन्नरः ॥ निर्दहेत्सर्वपापानि यज्ञायुतफलं लभेत् ॥ ५८ ॥ नियमेन नरो यस्तु शृणुते वैष्णवीं कथाम् ॥ कार्त्तिके तु विशेषेण गोसहस्रफलं लभेत् ॥ ५९ ॥

बुद्धिसों जो मनुष्य कार्तिकमें हरिकथाको कहै है वह अपने सौ कुल तारै है ॥ ५७ ॥ जो मनुष्य नित्य शास्त्रके विनोदसों कार्तिकमासको व्यतीत करै है वह सब पापनको जलाय देय है और दशहजार यज्ञनके फलनको प्राप्त होय है ॥ ५८ ॥ जो मनुष्य नियम करिके हरिकी कथाको सुनै है सो विशेष करिके कार्तिकमें सहस्र

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गोदानके फलनको प्राप्त होय है ॥ ५९ ॥ विष्णुके प्रबोधदिनमें जो हरिकी कथा कहै है हे मुने ! वह सात द्वीपन करि युक्त भूमिके दानको फल पावै है ॥ ६० ॥ जे मनुष्य दिव्य विष्णुकी कथाको सुनिके कथा बाँचनेवालेको अपनी शक्तिके अनुसार पूजन करैं हैं हे मुनिशार्दूल ! उनको सनातन लोक प्राप्त होय है ॥ ६१ ॥

प्रबोधवासरे विष्णोः कुरुते यो हरेः कथाम् ॥ सप्तद्वीपवतीदाने तत्फलं लभते मुने ॥ ६० ॥ श्रुत्वा विष्णुकथां दिव्यां येऽर्चयंति कथाविदम् ॥ स्वशक्त्या मुनिशार्दूल तेषां लोकाः सनातनाः ॥६१॥ ब्रह्मणो वचनं श्रुत्वा नारदः पुनरब्रवीत् ॥ नारद उवाच ॥ विधानं ब्रूहि मे स्वामिन्नेकादश्याः सुरोत्तम ॥ ६२ ॥ चीर्णेन येन भगवन्याहशं फलमाप्नुयात् ॥ नारदस्य वचः श्रुत्वा ब्रह्मा वचनमब्रवीत् ॥ ६३ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय ह्येकादश्यां द्विजोत्तम ॥ स्नानं चैव प्रकर्त्तव्यं दंतधावनपूर्वकम् ॥ ६४ ॥

ब्रह्माको वचन सुनिके नारद फिर बोलत भये नारद बोले कि, हे स्वामिन् ! हे सुरोत्तम ! मोसों एकादशीको विधान कहो ॥ ६२ ॥ हे भगवन् ! जाके करनेसों जैसो फल प्राप्त होय है नारदको वह वचन सुनिके ब्रह्मा वचन बोलत भये ॥ ६३ ॥ ब्रह्मा बोले कि, हे द्विजोत्तम ! एकादशीको ब्राह्म मुहूर्त कहिये दो घडी रात्रि रहे उठि

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दंतधावन करिके स्नान करनो चाहिये ॥ ६४ ॥ नदीमें वा तालावमें वा कूपमें अथवा बावडीमें तथा घरमें फिरि केशवको पूजन और कथाको श्रवण करै ॥ ६५ ॥ और हे महाभाग ! नियमके अर्थ यह श्लोक पढै मैं एकादशीके दिन निराहार रहिके द्वादशीके दिन ॥ ६६ ॥ भोजन करौंगो, हे पुंडरीकाक्ष ! हे अच्युत ! मेरे रक्षक

नद्यां तडागे कूपे वा वाप्यां गेहे तथैव च ॥ केशवश्चैव संपूज्यः कथायाः श्रवणं तथा ॥६५॥ नियमार्थे महाभाग इमं मंत्रमुदीरयेत् ॥ एकादश्यां निराहारः स्थित्वाऽहनि परे ह्यहम् ॥ ६६ ॥ भोक्ष्यामि पुंडरीकाक्ष शरणं मे भवाच्युत ॥ अमुं मंत्रं समुच्चार्य देवदेवस्य चक्रिणः ॥६७॥ भक्तिभावेन तुष्टात्मा ह्युपवासं समर्पयेत् ॥ रात्रौ जागरणं कार्यं देवदेवस्य सन्निधौ ॥ ६८ ॥ गीतं नृत्यं च वाद्यं च तथा कृष्णकथां मुने ॥ यः करोति स पुण्यात्मा त्रैलोक्योपरि संस्थितः ॥६९॥ बहुपुष्पैर्बहुफलैः कर्पूरागुरुकुङ्कुमैः ॥ हरेः पूजा विधातव्या कार्त्तिक्यां बोधवासरे ॥ ७० ॥

होउ, देवदेव जे चक्री भगवान् हैं तिनके आगे या मंत्रको उच्चारण करै ॥ ६७ ॥ फिरि भक्तिभावसों तुष्टात्मा होके उपवासको समर्पण करै फिरि देवदेवके समीप रात्रिमें जागरण करै ॥ ६८ ॥ हे मुने ! जो गीत नृत्य वाद्य और कृष्णकी कथाको करै है वह पुण्यात्मा त्रिलोकीके ऊपर स्थित है ॥ ६९ ॥ बहुतसे फूलों और फलन करिके

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

और कपूर अगर कुंकुम करिके कार्तिकमें बोधिनीके दिन हरिकी पूजा करनी चाहिये ॥ ७० ॥ हरिवासरके प्राप्त होनेपै धनको लोभ न करै हे मुनिसत्तम ! जाते असंख्य पुण्य प्राप्त होयँ हैं ॥ ७१ ॥ प्रबोधिनीमें जागरणके समय नानाप्रकारके दिव्य फलनसों पूजन करै और शंखमें जल लेके जनार्दनको अर्घ देनो चाहिये ॥ ७२ ॥ जो फल सब तीर्थनमें और जो फल सब दाननमें है वाते करोड गुणो फल बोधके दिनमें अर्घ देनेसों प्राप्त होय

वित्तशाठ्यं न कर्त्तव्यं संप्राप्ते हरिवासरे ॥ यस्मात्पुण्यमसंख्यातं प्राप्यते मुनिसत्तम ॥ ७१ ॥
फलैर्नानाविधैर्दिव्यैः प्रबोधिन्यां तु जागरे ॥ शंखे तोयं समादाय ह्यर्घो देयो जनार्दने ॥ ७२ ॥
यत्फलं सर्वतीर्थेषु सर्वदानेषु यत्फलम् ॥ तत्फलं कोटिगुणितं दत्त्वार्घं बोधवासरे ॥ ७३ ॥
अगस्त्यकुसुमैर्दिव्यैः पूजयेद्यो जनार्दनम् ॥ देवेंद्रोऽपि मुनिश्रेष्ठ करोति करसंपुटम् ॥ ७४ ॥ न
तत्करोति विप्रेंद्र तपसा तोषितो हरिः ॥ यत्करोति हृषीकेशो मुनिपुष्पैरलंकृतः ॥ ७५ ॥

है ॥ ७३ ॥ जो दिव्य अगस्त्यके फूलनसों पूजन जनार्दनको करै है तो वाके आगे हे मुनिश्रेष्ठ ! देवेंद्रहू हाथ जोरै है ॥ ७४ ॥ हे विप्रेंद्र ! तप करिके संतुष्ट किये गये हरि वह नहीं करते हैं जो अगस्त्यके पुष्पनसों शोभित हृषीकेश भगवान् करैं हैं ॥ ७५ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

हे कलिवर्द्धन ! जे कार्तिकमें बडी भक्तिसों बिल्वपत्रन करिके कृष्णको पूजन करैं हैं उनको मेरी कही भई मुक्ति मिले है ॥ ७६ ॥ जे कार्तिकमें तुलसीदलन करिके और पुष्पन करिके जनार्दनको पूजन करै हैं हे वत्स ! वे दशहजार जन्मको सब पाप जलाय देय हैं ॥ ७७ ॥ देखी गई स्पर्श करी गई अथवा ध्यान करी गई नमस्कार

बिल्वपत्रैश्च ये कृष्णं कार्त्तिके कलिवर्धन ॥ पूजयंति महाभक्त्या मुक्तिस्तेषां मयोदिता ॥७६॥ तुलसीदलपुष्पैश्च पूजयंति जनार्दनम् ॥ कार्तिके सकलं वत्स पापं जन्मायुतं दहेत् ॥ ७७ ॥ दृष्टा स्पृष्टाऽथवा ध्याता कीर्तिता नमिता स्तुता ॥ रोपिता सेचिता नित्यं पूजिता तुलसी शुभा ॥७८॥ नवधा तुलसीभक्तिं ये कुर्वंति दिनेदिने ॥ युगकोटिसहस्राणि ते वसंति हरेर्गृहे ॥७९॥ रोपिता तुलसी यावत्कुरुते मूलविस्तरम् ॥ तावद्युगसहस्राणि तनोति सुकृतं मुने ॥ ८० ॥ यावच्छाखाप्रशाखाभिर्बीजपुष्पदलैर्मुने ॥ रोपिता तुलसी पुंभिर्वर्धते वसुधातले ॥ ८१ ॥

करी गई स्तुति करी गई तुलसी शुभकी देनहारी है ॥ ७८ ॥ जे नवप्रकारकी तुलसीकी भक्ति दिन दिन करैं हैं वे कोटि हजार युगों ताईं हरिके मंदिरमें वास करैं हैं ॥ ७९ ॥ लगाई भई तुलसी जितनी जरनको विस्तार करै है हे मुने ! उतने हजार युगलों सुकृतको विस्तारित करै है ॥ ८० ॥ हे मुने ! पुरुषों कारि लगाई भई तुलसी जबताईं

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शाखा और प्रशाखा और बीज पुष्प और दलन करिके पृथ्वीमें बढे है ॥ ८१ ॥ उन लगावनहारे. मनुष्यनके कुलमें जे उत्पन्न हैं और होयँगे और जे होगये हैं उनको दो हजार कल्पताईं हरिके घरमें वास होय है ॥ ८२ ॥ जे नर कदंबके फूलनसों जनार्दनदेवको पूजन करैं हैं उनको चक्रपाणिके प्रसादसों यमको घर नहीं मिलै है ॥ ८३ ॥ कदंबके फूलनको देखिके केशव भगवान् प्रसन्न होयँ हैं हे विप्र ! पूजा करनेसे सब कामनाओंके देनहारे

कुले तेषां तु ये जाता ये भविष्यंति ये गताः ॥ आकल्पयुगसाहस्रं तेषां वासो हरेर्गृहे ॥ ८२ ॥ कदंबकुसुमैर्देवं येऽर्चयंति जनार्दनम् ॥ तेषां यमालयो नैव प्रसादाच्चक्रपाणिनः ॥ ८३ ॥ दृष्ट्वा कदंबकुसुमं प्रीतो भवति केशवः ॥ किं पुनः पूजितो विप्र सर्वकामप्रदो हरिः ॥ ८४ ॥ यः पुनः पाटलापुष्पैर्वसंते गरुडध्वजम् ॥ अर्चयेत्परया भक्त्या मुक्तिभागी भवेद्धि सः ॥ ८५ ॥ बकुलाशोककुसुमैर्येऽर्चयंति जगत्पतिम् ॥ विशोकास्ते भविष्यंति यावच्चन्द्रदिवाकरौ ॥ ८६ ॥

हरि प्रसन्न होयँ तो फिरि क्या करनो है ॥ ८४ ॥ जो फिरि वसंतऋतुमें पाटलाके फूलन करिके परम भक्तिसों गरुडध्वजको पूजन करै है वह निश्चय मुक्तिको भागी होय है ॥ ८५ ॥ बकुल और अशोकके फूलनसों जे जगतपतिको पूजन करैं हैं वे जबलों सूर्य चद्रमा रहैंगे तबताईं शोकरहित होयँगे ॥ ८६ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जे श्वेत अथवा लाल कनेरके फूलनसों जगन्नाथको पूजन करैं हैं हे विप्रेंद्र ! उनपै चारि युगनलों भगवान् केशव प्रसन्न रहैं हैं ॥ ८७ ॥ जे मनुष्य केशवके ऊपर आमकी मंजरी चढावैं हैं वे महाभाग पुरुष कोटि गोदानके फलनको प्राप्त होयँ हैं ॥ ८८ ॥ जे दूबके अंकुरोंकरिके समयमें हरिको पूजन करैं हैं वा पूजाको फल मनुष्यनको

येऽर्चयंति जगन्नाथं करवीरैः सितासितैः ॥ चतुर्युगानि विप्रेंद्र प्रीतो भवति केशवः ॥ ८७ ॥
मंजरीं सहकारस्य केशवोपरि ये नराः ॥ यच्छंति ते महाभागा गोकोटिफलभागिनः ॥ ८८ ॥
दूर्वांकुरैर्हरेर्यस्तु पूजाकाले प्रयच्छति ॥ पूजाफलं शतगुणं सम्यगाप्नोति मानवः ॥८९॥ शमीप-
त्रैस्तु ये देवं पूजयंति सुखप्रदम् ॥ यममार्गो महाघोरो निस्तीर्णस्तैस्तु नारद ॥ ९० ॥ वर्षा-
काले तु देवेशं कुसुमैश्चंपकोद्भवैः ॥ येऽर्चयंति न ते मर्त्याः संसरेयुः पुनर्भवे ॥ ९१ ॥ कुंभीपुष्पं
तु विप्रर्षे ये यच्छंति जनार्दनम् ॥ सुवर्णपलमात्रं ते लभंते वै फलं मुने ॥ ९२ ॥

भली भांति सौगुनो प्राप्त होय है ॥ ८९ ॥ जे सुख देनहारे भगवान्को शमीपत्रसों पूजें हैं हे नारद ! उन कारिके महाघोर यमको मार्ग निस्तीर्ण कियो गयो ॥ ९० ॥ जे मनुष्य वर्षाऋतुमें देवेश भगवान्को चंपाके फूलनसों पूजें हैं वे संसारमें फिरि नहीं आवैं हैं ॥ ९१ ॥ हे विप्रर्षे ! कुंभी जो पाटला ताके फूल जे जनार्दनपर चढावैं हैं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे मुने ! वे सुवर्णके पलमात्र चढानेके फलको पावैं हैं ॥ ९२ ॥ जो पीली केतकीके फूल जनार्दनपर चढावैं हैं उनके कोटि जन्मके जोरे भये पापनको गरुडध्वज जलाय देवैं हैं ॥ ९३ ॥ कुंकुमके समान है अरुण वर्ण जाको ऐसी शतपत्रिका गंधयुक्त जो जगन्नाथको अर्पण करै है वह श्वेतद्वीपमें वास करै है ॥ ९४ ॥ या प्रकार भुक्ति मुक्तिके

सुवर्णकेतकीपुष्पं यो ददाति जनार्दने ॥ कोटिजन्मार्जितं पापं दहते गरुडध्वजः ॥९३॥ कुंकुमारुणवर्णां च गंधाढ्यां शतपत्रिकाम् ॥ यो ददाति जगन्नाथे श्वेतद्वीपालये वसेत् ॥ ९४ ॥ एवं संपूज्य रात्रौ च केशवं भुक्तिमुक्तिदम् ॥ प्रातरुत्थाय च ब्रह्मन् गत्वा तु सजलां नदीम् ॥ ९५ ॥ तत्र स्नात्वा जपित्वा च कृत्वा पूर्वाह्निकीः क्रियाः ॥ गृहे गत्वा च संपूज्यः केशवो विधिवन्नरैः ॥ ९६॥ व्रतस्य पूरणार्थाय ब्राह्मणान् भोजयेत्सुधीः ॥ क्षमापयेच्च शिरसा भक्तियुक्तेन चेतसा ॥ ९७ ॥

देनहारे केशव भगवान्की रात्रिमें पूजा करि हे ब्रह्मन् ! प्रातःकाल उठि सजल नदीको जाय ॥ ९५ ॥ वहां स्नान जप और प्रातःकालकी क्रियानको करि घरमें जायके विधिवत् केशव भगवान्को पूजन करैं ॥ ९६ ॥ और व्रतके पूर्ण होनेके अर्थ सुधी नर ब्राह्मणको भोजन करावै फिरि भक्तियुक्त चित्त होके शिर करिके क्षमा-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पन करावै ॥ ९७ ॥ ता पीछे भोजन वस्त्र आदिसों गुरुकी पूजा करै और इन करिके चक्रपाणिकी प्रसन्नताके अर्थ दक्षिणा देनी चाहिये ॥ ९८ ॥ ब्राह्मणनके अर्थ यत्नसों बहुतसी दक्षिणा देनी चाहिये और ब्राह्मणके आगे पहले करे भये नियमनको यत्नसों त्याग करै ॥ ९९ ॥ ब्राह्मणनके अर्थ काहिके शक्तिके अनुसार दक्षिणा

गुरुपूजा ततः कार्या भोजनाच्छादनादिभिः ॥ दक्षिणा तैश्च दातव्या तुष्ट्यर्थं चक्रपाणिनः ॥ ९८ ॥ भूयसी चैव दातव्या ब्राह्मणेभ्यः प्रयत्नतः ॥ नियमश्चैव संत्याज्यो ब्राह्मणाग्रे प्रयत्नतः ॥ ९९ ॥ कथयित्वा द्विजेभ्यस्तद्दद्याच्छक्त्या च दक्षिणाम् ॥ नक्तभोजी नरो राजन्ब्राह्मणान् भोजयेच्छुभान् ॥ १०० ॥ अयाचिते बलीवर्दं सहिरण्यं प्रदापयेत् ॥ अमांसाशी नरो यस्तु प्रदद्यद्गां सदक्षिणाम् ॥ १ ॥ धात्रीस्नायी नरो दद्याद्दधिमाक्षिकमेव च ॥ फलानां नियमे राजन् फलदानं समाचरेत् ॥ २ ॥

देय हे राजन् ! नक्तभोजी मनुष्य शुभ ब्राह्मणनको भोजन करावै ॥ १०० ॥ अयाचित व्रतमें सुवर्णसहित बलवान् बैलको दान करै और जो नर चार महीने मांसको नहीं खाय है वह दक्षिणासमेत गौका दान करै ॥ १ ॥ और आमलेनसों स्नान करनहारो मनुष्य दही और शहदको दान करै हे राजन् ! फलनके नियममें फलनकोही दान

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

करै ॥ २ ॥ और तैलके स्थानमें घीको दान करै और घींके स्थानमें दूध कह्यो है हे राजन् ! धान्यनके नियममें धानके चावल दिये जाते हैं ॥ ३ ॥ और भूमिके सोवनेमें तूला और सामग्रीसमेत शय्या दान करै हे राजन् ! पत्तानमें भोजन करनहारो मनुष्य घीसमेत पात्रको दान करै ॥ ४ ॥ और मौनव्रतमें तिल और सुवर्णयुक्त

तैलस्थाने घृतं देयं घृतस्थाने पयः स्मृतम् ॥ धान्यानां नियमे राजन् दीयंते शालितंडुलाः ॥ ३ ॥
दद्याद्भूशयने शय्यां सतूलां सपरिच्छदाम् ॥ पत्रभोजी नरो राजन् भोजनं घृतसंयुतम् ॥ ४ ॥
मौने घण्टां तिलांश्चैव सहिरण्यं प्रदापयेत् ॥ दंपत्योर्भोजनं देयं निःस्नेहं सर्पिषा युतम् ॥ ५ ॥
धारणेन स्वकेशानामादर्शं दापयेद्बुधः ॥ उपानहौ प्रदातव्ये उपानत्परिवर्जनात् ॥६॥ लवणस्य
च संत्यागे शर्करां च प्रदापयेत् ॥ नित्यं दीपः प्रदेयस्तु विष्णोर्वा विबुधालये ॥ ७ ॥

घंटाको दान करै और घींके नियममें स्त्री पुरुषको घृतयुक्त भोजन करावै ॥ ५ ॥ केशनके रखानेमें बुध दर्पणको दान करै और जूता छोडनेमें जूतोंके जोडाको दान करै ॥ ६ ॥ और नोनके छोडनेमें शर्कराको दान करै और नित्य विष्णुके मन्दिरमें वा देवालयमें दीपक प्रज्वलित करनो चाहिये ॥ ७ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दीपक और घी समेत बाती धरिके तांबेको वा सोनेको दीपक व्रतकी पूर्णताके लिये विष्णु भक्त ब्राह्मणके अर्थ दान करै ॥ ८ ॥ एकांतरव्रतमें आठ कुंभनको दान करै उन सब कुंभनको वस्त्र तथा सुवर्णसों युक्त करि अलंकृत करै ॥ ९ ॥ सबनके अलाभमें जो यथोक्त न होसकै तो हे राजन्! ब्राह्मणको वाक्य संपूर्ण व्रतनकी सिद्धिको

सदीपं सघृतं ताम्रं कांचनं वा दशायुतम् ॥ प्रदद्याद्विष्णुभक्ताय संपूर्णव्रतहेतवे ॥ ८ ॥ एकान्तरोपवासे तु कुंभानष्टौ प्रदापयेत् ॥ सवस्त्रान् कांचनोपेतान्सर्वान्सालंकृताञ्छुभान् ॥ ९ ॥ सर्वेषामप्यलाभे तु यथोक्तकरणं विना ॥ द्विजवाक्यं स्मृतं राजन्संपूर्णव्रतसिद्धिदम् ॥ ११० ॥ नत्वा विसर्जयेद्विप्रांस्ततो भुंजीत च स्वयम् ॥ यत्त्यक्तं चतुरो मासान्समाप्तिं तस्य चाचरेत् ॥ ११ ॥ एवं य आचरेत्प्राज्ञः सोऽनंतफलमाप्नुयात् ॥ अवसाने तु राजेंद्र वासुदेवपुरं व्रजेत् ॥ १२ ॥ यश्चाविघ्नं समाप्यैवं चातुर्मास्यव्रतं नृप ॥ स भवेत् कृतकृत्यस्तु न पुनर्मानुषो भवेत् ॥ १३ ॥

देनहारो कह्यो है ॥११०॥ नमस्कार करिके ब्राह्मणनको विसर्जन करै ता पीछे आप भोजन करै जो चार महीने छोडो है ताकी समाप्ति करै ॥११॥ जो प्राज्ञ मनुष्य या प्रकार करै है वह अनंत फलको प्राप्त होय है हे राजेंद्र! अन्तमें विष्णुपुरको जाय है ॥१२॥ हे नृप! जो या प्रकार चातुर्मास्य व्रतको निर्विघ्न समाप्त करै है वह कृतार्थ हो जाय

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

है और फिरि मनुष्यको जन्म नहीं पावै है ॥१३॥ हे राजन् ! यह करनेसों व्रत पूर्ण हो जाय है और जो व्रत बिगरि जाय तो अंधा अथवा कोढी होय ॥१४॥ जो तुमने मोसों पूँछो सो वह सब मैंने तुमसों कह्यो याके पढने और सुननेसे गोदानके फलको प्राप्त होय है ॥ ११५ ॥ इति श्रीमत्पण्डितपरमसुखतनयपण्डितकेशवप्रसादशर्म्मद्विवेदिकृतायामेकादशीमाहात्म्यभाषाटीकायां दीपिकासमाख्यायां कार्त्तिकशुक्लैकादशीप्रबोधिनीकथा समाप्ता ॥ २४ ॥

एतत्कृत्वा महीपाल परिपूर्णं व्रतं भवेत् ॥ व्रतवैकल्यमासाद्य ह्यंधः कुष्ठी प्रजायते ॥ १४ ॥ एतत्ते सर्वमाख्यातं यत्पृष्टोऽहमिह त्वया ॥ पठनाच्छ्रवणाद्वापि लभेद्गोदानजं फलम् ॥ ११५ ॥ इति श्रीस्कंदपुराणे कार्तिकशुक्लैकादशीप्रबोधिनीमाहात्म्यं समाप्तम् ॥ २४ ॥ अथाधिकमासशुक्लैकादशीकथा ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ मलिम्लुचस्य मासस्य का वा एकादशी भवेत् ॥ किं नाम को विधिस्तस्याः कथयस्व जनार्दन ॥ १ ॥

अथ पुरुषोत्तममासशुक्लैकादशीपद्मिनीकथा ॥ पुरुषोत्तममासे या शुक्ला चैकादशी स्मृता ॥ पद्मिनी नाम तस्यास्तु माहात्म्यं विवृणोम्यहम् ॥ १ ॥ युधिष्ठिर बोले कि, मलमासके शुक्लपक्षमें कौनसी एकादशी होय है वाको कहा नाम है और कहा विधि है हे जनार्दन ! सो मोसों कहो ॥ १ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्रीकृष्ण बोले कि, मेरे मासकी जो पवित्र एकादशी होय है ताको नाम पद्मिनी है वह जो यत्नसों उपवास की जाय तो पद्मनाभके पुरको ले जाय ॥ २ ॥ मेरे मासमें अतिपवित्र और पापनकी नाश करनहारी कही गई ताके फलके कहनेको ब्रह्माहू समर्थ नहीं हैं ॥ ३ ॥ पहले ब्रह्मा कारिके नारदके अर्थ पापसमूको नाश करनहारो और

श्रीकृष्ण उवाच ॥ मम मासस्य या पुण्या प्रोक्ता नाम्ना च पद्मिनी ॥ सोपोषिता प्रयत्नेन पद्मनापुरं नयेत् ॥ २ ॥ मम मासे महापुण्या कीर्तिता कलमशापहा ॥ तस्याः फलं कथयितुं न शक्तश्चतुराननः ॥ ३ ॥ नारदाय पुरा प्रोक्तं विधिना व्रतमुत्तमम् ॥ पद्मिन्याः पापराशिघ्नं भुक्तिमुक्तिफलप्रदम् ॥ ४ ॥ श्रुत्वा वाक्यं मुरारेस्तु प्रोवाचातिमुदान्वितः ॥ युधिष्ठिरो जगन्नाथं विधिं पप्रच्छ धर्मवित् ॥ ५ ॥ श्रुत्वा राज्ञस्तु वचनं प्रीत्युत्फुल्लांबुजेक्षणः ॥ शृणु राजन्प्रवक्ष्यामि मुनीनामप्यगोचरम् ॥ ६ ॥

भुक्ति तथा मुक्तिरूप फलको देनहारो यह उत्तम पद्मिनीको व्रत कह्यो गयो ॥ ४ ॥ मुरारिको वचन सुनिके अति आनन्द करिकै युक्त धर्मज्ञ राजा युधिष्ठिर महाराज श्रीकृष्णसों याकी विधि पूँछत भये ॥ ५ ॥ राजाको वचन सुनिके प्रीतिसों विकसित हैं नेत्र जिनके ऐसे श्रीकृष्णजी बोले कि हे राजन् ! सुनो जो मुनीश्वरनहूको दुर्लभ है

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सो व्रत मैं तुमसों कहौंगो ॥६॥ दशमीके दिनसों व्रतको आरंभ कियोजाय है कांसेके पात्रमें भोजन, मांस, मसूर अन्न, चने तथा कोदों ॥७॥ साग शहद और पराया अन्न इन दश वस्तुनको दशमीके दिन त्याग करै हविष्य अन्न अर्थात् जव चावल आदिको भोजन करै और खारी तथा नोनको भोजन न करै ॥८॥ दशमीके दिन पृथ्वीमें सोवै और ब्रह्म-

दशमीदिवसे प्राप्ते व्रतारम्भो विधीयते ॥ कांस्यं मांसं मसूरांश्च चणकान् कोद्रवांस्तथा ॥ ७ ॥
शाकं मधु परान्नं च दशम्यां दश वर्जयेत् ॥ ॥ हविष्यान्नं च भुंजीत अक्षारलवणं तथा ॥ ८ ॥
भूमिशायी ब्रह्मचारी भवेच्च दशमीदिने ॥ ९ ॥ एकादशीदिने प्राप्ते प्रातरुत्थाय सादरम् ॥
विधाय च मलोत्सर्गं न कुर्याद्दंतधावनम् ॥१०॥ कृत्वा द्वादश गंडूषाञ्छुचिर्भूत्वा समाहितः ॥
सूर्योदये शुभे तीर्थे स्नानार्थं प्रव्रजेत्सुधीः ॥ ११ ॥ गोमयं मृत्तिकां गृह्य तिलान् दर्भाञ्छुचि-
स्तथा ॥ चूर्णैरामलकीभूतैर्विधिना स्नानमाचरेत् ॥ १२ ॥

चर्य होके रहै ॥९॥ एकादशीको जो दिन है ताके आवनेपै आदरपूर्वक प्रातःकाल उठिकै मलको त्याग करै दंतधावन न करै ॥१०॥ सुधी पुरुष बारह कुल्ले करिके शुद्ध तथा सावधान होके सूर्य उदय होनेके समय शुभ तीर्थमें स्नानके लिये जाय ॥ ११ ॥ गोबर, मट्टी, तिल और दर्भनको लैकै शुद्ध हो आमलेके चूर्णको लगायके विधिपूर्वक स्नान

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

करै ॥१२॥ सौ हैं बाहु जिनके ऐसे जो वराहरूप कृष्ण हैं तिन करिके तू उठाई गई है और परशुराम करिके ब्राह्म-
णनके अर्थ दी गई है और कश्यप करिके अभिमंत्रित ॥१३॥ और नेत्रोंमें तथा बालोंमें लगी भई तू मेरे अंगनको
पवित्र कर और मोको हरिपूजनके योग्य कर हे मृत्तिके! तेरे अर्थ नमस्कार है ॥१४॥ सब औषधिनसों उत्पन्न और

उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना ॥ मृत्तिके ब्रह्मदत्तासि कश्यपेनाभिमंत्रिता ॥ १३ ॥ त्वं मे
कुरु पवित्रांगं लग्ना नेत्रे शिरोरुहे ॥ हरिपूजनयोग्यं मां मृत्तिके कुरु ते नमः ॥ १४ ॥ सर्वौषधि-
समुत्पन्नं गवोदरमधिष्ठितम् ॥ पवित्रकरणं भूमेर्मां पावयतु गोमयम् ॥ १५ ॥ ब्रह्मष्ठीवनसंभूता
धात्री भुवनपावनी ॥ संस्पृष्टा पावयांगं मे निर्मलं कुरु ते नमः ॥ १६ ॥ देवदेव जगन्नाथ शंख-
चक्रगदाधर ॥ देहि विष्णो ममानुज्ञां तव तीर्थावगाहने ॥ १७ ॥ वारुणांश्च जपेन्मंत्रान्स्नानं
कुर्याद्विधानतः ॥ गंगादितीर्थं संस्मृत्य यत्र कुत्र जलाशये ॥ १८ ॥

गौके पेटमें स्थित भूमिको पवित्र करनहारो गोबर मोको पवित्र करै ॥ १५ ॥ ब्रह्माके थूकते उत्पन्न भुवनको पवित्र
करनहारी स्पर्श करी भई तू धात्री मेरे अंगको पवित्र तथा निर्मल कर तेरे अर्थ नमस्कार है ॥ १६ ॥ हे देवदेव !
हे जगन्नाथ ! हे शंखचक्रगदाधर ! हे विष्णो ! अपने तीर्थनमें स्नान करनेकी आज्ञा दीजिये ॥१७॥ वरुणके मंत्रनको

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जप करै गंगा आदि तीर्थनको स्मरण करके जा काहू जलाशयमें विधिसों स्नान करै ॥१८॥ हे नृपश्रेष्ठ! मुखमें पी-
ठिमें हृदयमें वाहोंमें शिरमें और नीचे विधि करिके शरीरको संमार्जन करै ॥ १९ ॥ फिरि सुखकारी सपेद शुद्ध
और अखंडित्त वस्त्र पहरिके पीछे हरिको पूजन करै तो महापाप नाशको प्राप्त होयँ ॥२०॥ विधिपूर्वक संध्योपासन

पश्चात्संमार्जयेद्गात्रं विधिना नृपसत्तम ॥ मुखे पृष्ठे च हृदये बाह्वोः शिरसि चाप्यधः ॥ १९ ॥
परिधाय सुखं वासः शुक्लं शुचि ह्यखंडितम् ॥ ततः कुर्याद्धरेः पूजां महापापं विनश्यति ॥ २० ॥
संध्यामुपास्य विधिना तर्पयेच्च पितॄन्सुरान ॥ हरेर्मंदिरमागत्य पूजयेत्कमलापतिम् ॥ २१ ॥
स्वर्णमात्रं कृतं देवं राधिकासहितं हरिम् ॥ पार्वत्या सहितं देवं पूजयेद्विधिपूर्वकम् ॥ २२ ॥
कुंभोपरि न्यसेद्देवं ताम्रपात्रेऽथ मृन्मये ॥ दिव्यवस्त्रसमायुक्ते दिव्यगंधानुवासिते ॥ २३ ॥
तस्योपरि न्यसेत्पात्रं ताम्रं रौप्यं हिरण्मयम् ॥ तस्मिन्संस्थापयेद्देवं विधिना पूजयेत्ततः ॥ २४ ॥

करि पितृ और देवतानको तर्पण करै फिरि हरिके मंदिरमें आयके कमलापति भगवान्को पूजन करै ॥२१॥ सुव-
र्णके बने भये राधिकासहित कृष्णको और पार्वतीसहित शिवको विधिपूर्वक पूजन करै ॥२२॥ घटके ऊपर तांबेके
वा मट्टीके पात्रमें दिव्य वस्त्रन करिके युक्त और दिव्य गंधनसों सुगंधित करिके देवको स्थापित करै ॥२३॥ वा घटके

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ऊपर तांबेके रूपेके अथवा सोनेके पात्रको धरै वामें देवको स्थापित करिके ईश्वर देवको पूजन करै ॥२४॥२५॥ नाना प्रकारके फूल कस्तूरी केसर और श्वेत कमलन करिके और वा समयमें उत्पन्न भये फूलन करिके परमेश्वरको पूजन करै ॥ २६ ॥ और यथाशक्ति नाना प्रकारके नैवेद्यन करिके तथा नीराजन आदि करिके और कर्पूरसहित

संस्थाप्य सलिलैः श्रेष्ठैर्गंधधूपादिवासितैः ॥ चन्दनागुरुकर्पूरैः पूजयेद्देवमीश्वरम् ॥ २५ ॥
नानाकुसुमकस्तूरीकुंकुमेन सिताम्बुजैः ॥ तत्कालजातैः कुसुमैः पूजयेत्परमेश्वरम् ॥ २६ ॥
नैवेद्यैर्विविधैः शक्त्या तथा नीराजनादिभिः ॥ धूपैर्दीपैः सकर्पूरैः पूजयेत्केशवं शिवम् ॥ २७ ॥
नृत्यं गीतं तदग्रे तु कुर्याद्भक्तिपुरःसरम् ॥ नालपेत्पतितान्पापांस्तस्मिन्नहनि न स्पृशेत् ॥ २८ ॥
नानृतं हि वदेद्वाक्यं सत्यपूतं वचो वदेत् ॥ रजस्वलां न स्पृशेच्च च निंदेद्ब्राह्मणं गुरुम् ॥ २९ ॥
पुराणं पुरतो विष्णोः शृणुयात्सह वैष्णवैः ॥ निर्जला सा प्रकर्तव्या या च शुक्ले मालिम्लुचे ॥ ३० ॥

धूपदीपन करिके केशव और शिवको पूजन करै ॥ २७ ॥ और भक्तिपूर्वक उनके आगे नृत्य तथा गीत करै पतितन और पापीनसों बात न करै और न उनका स्पर्श करै ॥२८॥ झूंठ बचननको न बोलै सत्यसों पवित्र वचन बोलै रजस्वला स्त्रीको स्पर्श न करै और ब्राह्मण तथा गुरुकी निंदा न करै ॥ २९ ॥ और विष्णुके आगे वैष्णवनके

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

साथ पुराण सुनै और जो मलमासके शुक्लपक्षमें एकादशी होती है वाको व्रत निर्जल करनो चाहिये ॥ ३० ॥
जलपान करिके अथवा दूधको आहार करिके व्रत करै अन्यथा नहीं और गाने बजाने समेत रात्रिमें जागरण
करै ॥ ३१ ॥ पहले पहरमें नारियलफलन करिके अर्घ कारि पूजन करनो उत्तम है और दूसरेमें श्रीफल जे बेलके
फल हैं तिनसों और तीसरेमें बिजौराके फलन करिके ॥ ३२ ॥ और चौथे पहरमें पूग जो सुपारी हैं तिन करिके

जलपानेन वा कुर्यादुग्धाहारेण नान्यथा ॥ रात्रौ जागरणं कुर्याद्गीतवादित्रसंयुतम् ॥ ३१ ॥
प्रथमे प्रहरे पूजा नारिकेलार्घमुत्तमम् ॥ द्वितीये श्रीफलैश्चैव तृतीये बीजपूरकैः ॥ ३२ ॥
चतुर्थे पूजयेत्पूगैर्नारंगैश्च विशेषतः ॥ प्रथमे प्रहरे पुण्यमग्निष्टोमस्य जायते ॥ ३३ ॥
द्वितीये वाजपेयस्य तृतीये हयमेधजम् ॥ चतुर्थे राजसूयस्य जाग्रतो जायते फलम् ॥ ३४ ॥
नातः परतरं पुण्यं नातः परतरा मखाः ॥ नातः परतरा विद्या नातः परतरं तपः ॥ ३५ ॥

और विशेष करिके नारंगीसों पूजन करै । प्रथम प्रहरमें अग्निष्टोम यज्ञको फल प्राप्त होय ॥ ३३ ॥ दूसरेमें
वाजपेयको तीसरेमें अश्वमेधको और चौथे पहरके जागरणमें राजसूयज्ञको फल मिलै है ॥ ३४ ॥ याते परतर
कोई पुण्य नहीं है और न याते परे कोई यज्ञ है और न याते परे कोई विद्या है न याते परे कोई तप है ॥ ३५ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ऊपर तांबेके रूपेके अथवा सोनेके पात्रको धरै वामें देवको स्थापित करिके ईश्वर देवको पूजन करै ॥२४॥२५॥
नाना प्रकारके फूल कस्तूरी केसर और श्वेत कमलन करिके और वा समयमें उत्पन्न भये फूलन करिके परमेश्वरको
पूजन करै ॥ २६ ॥ और यथाशक्ति नाना प्रकारके नैवेद्यन करिके तथा नीराजन आदि करिके और कर्पूरसहित

संस्थाप्य सलिलैः श्रेष्ठैर्गंधधूपादिवासितैः ॥ चन्दनागुरुकर्पूरैः पूजयेद्देवमीश्वरम् ॥ २५ ॥
नानाकुसुमकस्तूरीकुंकुमेन सिताम्बुजैः ॥ तत्कालजातैः कुसुमैः पूजयेत्परमेश्वरम् ॥ २६ ॥
नैवेद्यैर्विविधैः शक्त्या तथा नीराजनादिभिः ॥ धूपैर्दीपैः सकर्पूरैः पूजयेत्केशवं शिवम् ॥ २७ ॥
नृत्यं गीतं तदग्रे तु कुर्याद्भक्तिपुरःसरम् ॥ नालपेत्पतितान्पापांस्तस्मिन्नहनि न स्पृशेत् ॥ २८ ॥
नानृतं हि वदेद्वाक्यं सत्यपूतं वचो वदेत् ॥ रजस्वलां न स्पृशेच्च च निंदेद्ब्राह्मणं गुरुम् ॥ २९ ॥
पुराणं पुरतो विष्णोः शृणुयात्सह वैष्णवैः ॥ निर्जला सा प्रकर्तव्या या च शुक्ले मलिम्लुचे ॥ ३० ॥

धूपदीपन करिके केशव और शिवको पूजन करै ॥ २७ ॥ और भक्तिपूर्वक उनके आगे नृत्य तथा गीत करै
पतितन और पापीनसों बात न करै और न उनका स्पर्श करै ॥२८॥ झूंठ वचननको न बोलै सत्यसों पवित्र वचन
बोलै रजस्वला स्त्रीको स्पर्श न करै और ब्राह्मण तथा गुरुकी निंदा न करै ॥ २९ ॥ और विष्णुके आगे वैष्णवनके

१४०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

साथ पुराण सुनै और जो मलमासके शुक्लपक्षमें एकादशी होती है वाको व्रत निर्जल करनो चाहिये ॥ ३० ॥ जलपान करिके अथवा दूधको आहार करिके व्रत करै अन्यथा नहीं और गाने बजाने समेत रात्रिमें जागरण करै ॥ ३१ ॥ पहले पहरमें नारियलफलन करिके अर्घ कारि पूजन करनो उत्तम है और दूसरेमें श्रीफल जे बेलके फल हैं तिनसों और तसिरेमें बिजौराके फलन करिके ॥ ३२ ॥ और चौथे पहरमें पूग जो सुपारी हैं तिन करिके

जलपानेन वा कुर्याद्दुग्धाहारेण नान्यथा ॥ रात्रौ जागरणं कुर्याद्गीतवादित्रसंयुतम् ॥ ३१ ॥
प्रथमे प्रहरे पूजा नारिकेलार्घमुत्तमम् ॥ द्वितीये श्रीफलैश्चैव तृतीये बीजपूरकैः ॥ ३२ ॥
चतुर्थे पूजयेत्पूगैर्नारंगैश्च विशेषतः ॥ प्रथमे प्रहरे पुण्यमग्निष्टोमस्य जायते ॥ ३३ ॥
द्वितीये वाजपेयस्य तृतीये हयमेधजम् ॥ चतुर्थे राजसूयस्य जाग्रतो जायते फलम् ॥ ३४ ॥
नातः परतरं पुण्यं नातः परतरा मखाः ॥ नातः परतरा विद्या नातः परतरं तपः ॥ ३५ ॥

और विशेष करिके नारंगीसों पूजन करै । प्रथम प्रहरमें अग्निष्टोम यज्ञको फल प्राप्त होय ॥ ३३ ॥ दूसरेमें वाजपेयको तीसरेमें अश्वमेधको और चौथे पहरके जागरणमें राजसूयज्ञको फल मिलै है ॥ ३४ ॥ याते परतर कोई पुण्य नहीं है और न याते परे कोई यज्ञ है और न याते परे कोई विद्या है न यात्ते परे कोई तप है ॥ ३५ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पृथ्वीमें जे तीर्थ हैं क्षेत्र हैं और स्थान हैं ते सब वा मनुष्य करिके देखे गये जा करिके हरिको व्रत कियो गयो ॥ ३६ ॥ या प्रकार सूर्योदयपर्यंत जागरण करै और सूर्योदय होनेपर शुभतीर्थमें जाके स्नान करै ॥ ३७ ॥ स्नान करि आयके भक्तिसों देव ईश्वरको पूजन पहले कही भई विधिसों और सुंदर ब्राह्मणनको भोजन करावै ॥३८॥

पृथिव्यां यानि तीर्थानि क्षेत्राण्यायतनानि च॥ तानि स्नातानि दृष्टानि येनाकारि हरेर्व्रतम्॥३६॥
एवं जागरणं कुर्याद्यावत्सूर्योदये भवेत् ॥ सूर्योदये शुभे तीर्थे गत्वा स्नानं समाचरेत् ॥ ३७ ॥
स्नात्वैवागत्य भावेन पूजयेद्देवमीश्वरम् ॥ पूर्वोदितेन विधिना भोजयेद्ब्राह्मणाञ्छुभान् ॥ ३८ ॥
कुंभादिकं च यत्सर्वं प्रतिमां केशवस्य च ॥ पूजयित्वा विधानेन ब्राह्मणाय समर्पयेत् ॥ ३९ ॥
एवंविधं व्रतं यो वै कुरुते भुवि मानवः ॥ सफलं जायते तस्य व्रतं मुक्तिफलप्रदम् ॥ ४० ॥
एतत्ते सर्वमाख्यातं यत्पृष्टोऽहं त्वयाऽनघ ॥ मलिम्लुचस्य मासस्य शुक्लाया विधिमुत्तमम् ॥ ४१ ॥

कुंभ आदि जे सब वस्तु हैं और केशवकी प्रतिमा है ताहि विधिपूर्वक पूजन करिके ब्राह्मणनके अर्थ दान करै ॥ ३९ ॥ जो मनुष्य पृथ्वीमें या प्रकारके व्रतको करै ताको भुक्ति और मुक्ति देनहारो यह व्रत सफल होय है ॥४०॥ हे अनघ! जो तुमने मोसे पूंछो सो यह सब मैंने मलमासके शुक्लपक्षकी एकादशीकी विधि तुमसों कही ॥ ४१ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे नृपनन्दन ! प्रीतियुक्त हो जो मनुष्य पद्मिनी एकादशीको व्रत करै है तानें मानो संपूर्ण व्रत करि लिये ॥४२॥
मलमासके कृष्णपक्षहूकी एकादशीकी यही विधि है वा सब पापनकी नाश करनहारीको नाम परमा है ॥४३॥
यामें मैं तुमसों एक मनोहर कथा कहौंगो जाहि पुलस्त्य मुनिने नारदके अर्थ विस्तारसों कही ही ॥ ४४ ॥

व्रतानि तेन चीर्णानि सर्वाणि नृपनन्दन ॥ पद्मिन्याः प्रीतियुक्तो यः कुरुते व्रतमुत्तमम् ॥ ४२ ॥
कृष्णाया मलमासस्य विधिस्तस्यापि तादृशः ॥ परमा सा तु विज्ञेया सर्वपापक्षयंकरी ॥ ४३ ॥
अत्र ते कथयिष्यामि कथामेकां मनोरमाम् ॥ नारदाय पुलस्त्येन विस्तरेण निवेदिताम् ॥ ४४ ॥
कार्तवीर्येण कारायां निक्षिप्तं वीक्ष्य रावणम् ॥ विमोचितः पुलस्त्येन याचयित्वा महीपतिम् ॥ ४५ ॥
तदाश्चर्यं तदा श्रुत्वा नारदो दिव्यदर्शनः ॥ पप्रच्छ च यथा भक्त्या पुलस्त्यं मुनिपुंगवम् ॥ ४६ ॥
दशाननेन विजिताः सर्वे देवाः सवासवाः ॥ कार्तवीर्येण विजितः कथं रणविशारदः ॥ ४७ ॥

कार्तवीर्य करि कारागृहमें डारे भये रावणको देखि पुलस्त्य मुनिने वा राजासों याचना करिके वाहि छुडायो ॥४५॥ वा समय यह आश्चर्य सुनिकै दिव्य है दर्शन जिनको ऐसे नारदमुनि भक्ति करिके पुलस्त्यसों पूँछत भये ॥४६॥ इन्द्रसमेत सब देवता दशानन करिके जीते गये तो रण करनेमें चतुर वह रावण कार्तवीर्य करि कैसे जीतो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गयो सो कहिये ॥ ४७ ॥ नारद मुनिको यह वचन सुनिके पुलस्त्य मुनी बोलत भये हे वत्स ! सुनो मैं कार्त-वीर्यकी उत्पत्ति तुमसों कहौंगो ॥ ४८ ॥ पहले त्रेतायुगमें माहिष्मती नाम पुरीमें हैहय नाम राजानके कुलमें उत्पन्न कृतवीर्य राजा होत भयो ॥ ४९ ॥ वा राजाके प्राण समान प्यारी एक हजार स्त्री होत भईं उन स्त्रीनमें काहूते राज्यके भारको धारण करनहारो राजा पुत्रको नहीं प्राप्त होत भयो ॥ ५० ॥ देवतानको

नारदस्य वचः श्रुत्वा पुलस्त्यो मुनिमब्रवीत् ॥ शृणु वत्स प्रवक्ष्यामि कार्तवीर्यसमुद्भवम् ॥ ४८ ॥
पुरा त्रेतायुगे राजन्माहिष्मत्यां बृहत्तरः ॥ हैहयानां कुले जातः कृतवीर्यो महीपतिः ॥ ४९ ॥
सहस्रं प्रमदास्तस्य नृपस्य प्राणवल्लभाः ॥ न तासां तनयं कंचल्लेभे राजधुरंधरः ॥ ५० ॥
यजन्देवान्पितॄन्सिद्धान्प्रचिकित्सान्बृहत्तरान् ॥ तेषां वाक्याद्व्रतं कुर्वन्न लब्धस्तनयस्तदा ॥ ५१ ॥
सुतं विना तदा राज्यं न सुखाय महीपतेः ॥ क्षुधितस्य यथा भोगा न भवंति सुखप्रदाः ॥ ५२ ॥

पितृनको सिद्धनको और बहुत बडे चिकित्सकनको पूजन करतो और उनके वचननसों व्रतनको करतो वह राजा वा समय पुत्रको न प्राप्त होत भयो ॥ ५१ ॥ तब पुत्रके विना वह राज्य राजाके सुखके लिये ऐसे नहीं होत भयो जैसे भूखे मनुष्यको भोग सुखके देनहारे नहीं होय हैं ॥ ५२ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

राजा अपने मनमें विचारिके तप करनेमें मनको लगावत भयो कि, तपहीसों मनकी चाही भई सिद्धि होय है ॥ ९३ ॥ ऐसे कहिकै स्त्रीसमेत चीर वस्त्रको पहिरि जटानको धारण कारि उत्तम मंत्रीको घर सौंपिकै तप करिबेके अर्थ यात्रा करत भयो ॥ ९४ ॥ वा समय हरिश्चन्द्र राजाकी पुत्री इक्ष्वाकुवंशमें उत्पन्न और सब स्त्रीनमें

विचार्य चित्ते नृपतिस्तपस्तप्तुं मनो दधे ॥ तपसैव सदा सिद्धिर्जायते मनसेप्सिता ॥ ९३ ॥
इत्युक्त्वा सहभार्यश्च चीरवासा जटाधरः ॥ तपस्तप्तुं गृहं न्यस्य सुविचार्य सुमंत्रिणे ॥ ९४ ॥
निर्गतं नृपतिं वीक्ष्य पद्मिनी प्रमदोत्तमा ॥ हरिश्चन्द्रस्य तनया इक्ष्वाकुकुलसंभवा ॥ ९५ ॥
पतिव्रता प्रियं दृष्ट्वा तपस्तप्तुं कृतोद्यमम् ॥ भूषणानि परित्यज्य चीरमेकं समाश्रयत् ॥ ९६ ॥
जगाम पतिना सार्द्धं पर्वते गंधमादने ॥ गत्वा तत्र तपस्तेपे वर्षाणामयुतं नृपः ॥ ९७ ॥

उत्तम पद्मिनी राजाको निकरो भयो देखिकै ॥ ९५ ॥ वह पतिव्रता तपके लिये किये है उद्योग जाने ऐसे पतिको देखि गहने उतारिके एक चीरको धारण करत भई ॥ ९६ ॥ और पतिके साथ गंधमादन नाम पर्वतको जात भई वहां जायके राजा दश हजार वर्षलों तपको करत भयो ॥ ९७ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गदाधर देवको ध्यान करते रहै परंतु राज्यमें पुत्रको नहीं प्राप्त होत भयो तब वह स्त्री हाड और नसें हैं शेष जामें ऐसे पतिको देखि ॥५८॥ विनयसे युक्त वह रानी बडी साध्वी जो अनसूया तिनसों पूंछत भई कि, हे साध्वि ! मेरे पतिको तप करते दशहजार वर्ष व्यतीत होगये ॥५९॥ परंतु क्लेशके नाश करनहारे केशव भगवान् प्रसन्न नहीं

न लेभे तनयं राज्ये ध्यायन्देवं गदाधरम् ॥ अस्थिस्नायुमयं कांतं दृष्ट्वा सा प्रमदोत्तमा ॥ ५८ ॥
अनसूयां महासाध्वीं पप्रच्छ विनयान्विता ॥ भर्तुः प्रतपतः साध्वि वर्षाणामयुतं गतम् ॥ ५९ ॥
तथापि न प्रसन्नोऽभूत्केशवः कष्टनाशनः ॥ व्रतं मम महाभागे कथयस्व यथातथम् ॥ ६० ॥
येन प्रसन्नो भगवान् मम भक्त्या प्रजायते ॥ येन मे जायते पुत्रश्चक्रवर्ती बृहत्तरः ॥ ६१ ॥
श्रुत्वा तस्यास्तु वचनं पतिव्रतपरायणा ॥ यं प्रव्रजंतं नृपतिं स्वयं प्रव्राज दीक्षितम् ॥ ६२ ॥
तदा प्रोवाच संहृष्टा पद्मिनीं पद्मलोचनाम् ॥ स्नात्वा मलिम्लुचे सुभ्रु मासद्वादशसंमते ॥ ६३ ॥

भये हे महाभागे ! मोसों यथार्थ व्रत कहो ॥ ६० ॥ जा व्रतसों मेरी भक्ति करिके भगवान् प्रसन्न होयँ जासों मेरे चक्रवर्ती और बहुत बडो पुत्र होय ॥६१॥ पतिव्रतमें परायण जो तपकी दीक्षायुक्त पतिको तपके लिये जाते देखि आपहू पतिके साथ चलती भई ऐसी पद्मलोचना पद्मिनीसों ॥ ६२ ॥ अनसूया प्रसन्न होके बोली कि, हे सुभ्रु !

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वारह मासके संमत जो मलमास है तामें तू स्नान कर ॥६३॥ हे शुभानने! तीस दिननकरिके एक मास पूरो होय है ताके मध्यमें दो द्वादशीयुक्त दो एकादशी होय हैं एक पद्मिनी और दूसरी परमा ॥६४॥ विधिपूर्वक जागरणके साथ उनको व्रत करनो योग्य है या व्रतसों पुत्रके देनहारे भगवान् शीघ्रही प्रसन्न होयगे ॥ ६५ ॥ हे नृप ! ऐसे

त्रिंशद्दिनैश्च भवति मासः पूर्णः शुभानने ॥ तन्मध्ये द्वादशीयुग्मं पद्मिनी परमा तथा ॥ ६४ ॥
उपोष्य तत्प्रकर्तव्यं विधिना जागरैः समम् ॥ शीघ्रं प्रसन्नो भगवान्भविष्यति सुतप्रदः ॥ ६५ ॥
इत्युक्त्वाकथयत्सर्वं मया पूर्वोदितं नृप ॥ विधिं व्रतस्य विधिवत्प्रसन्ना कर्दमांगजा ॥ ६६ ॥
श्रुत्वा व्रतविधिं सर्वं यथोक्तमनसूयया ॥ चक्रे चार्वंगी तत्सर्वं पुत्रप्राप्तिमभीप्सती ॥ ६७ ॥
एकादश्यां निराहारा सदा जाता च निर्मला ॥ जागरेण युता रात्रौ गीतनृत्यसमान्विता ॥ ६८ ॥

कहिके कर्दमऋषिकी पुत्री अनसूया प्रसन्न होके पहले मेरी कही भई विधिको विधिपूर्वक कहती भई ॥ ६६ ॥ अनसूयाने जैसी कही ता विधिको सुनिके सुन्दर अंगवाली पद्मिनी पुत्रप्राप्तिकी इच्छासों वा सबको करत भई ॥ ६७ ॥ एकादशीको सदा वह निर्मल निराहार रहती और रात्रिमें गीत नृत्य समेत जागरण करती ॥ ६८ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

और व्रत पूर्ण होनेपै शीघ्रही प्रसन्न गरुडपै चढे भये केशव भगवान् आप बोले कि, हे शोभने! तू वरको मांग ॥६९॥ जगद्धाता जे श्रीभगवान् हैं तिनको वचन सुनिकै वह शुद्ध मंदहास्यवाली प्रीतिसों भगवान्की स्तुति करिके मांगती भई कि, मेरे पतिको अब बहुत बडो वर दीजिये ॥७०॥ पद्मिनीको यह वचन सुनिके कृष्ण प्रिय वचन

पूर्णे व्रते च वै शीघ्रं प्रसन्नः केशवः स्वयम् ॥ बभाषे गरुडारूढो वरं वरय शोभने ॥ ६९ ॥ श्रुत्वा वाक्यं जगद्धातुः स्तुत्वा प्रीत्या शुचिस्मिता ॥ ययाचेऽद्य वरं देहि मम भर्तुर्बृहत्त-रम् ॥ ७० ॥ पद्मिन्यास्तद्वचः श्रुत्वा कृष्णः प्रीतः प्रियंवदः ॥ त्वयाऽहं तोषितो भद्रे प्रत्युवाच जनार्दनः ॥ ७१ ॥ मलिम्लुचश्च मासोऽसौ नान्यो मे प्रीतिदायकः ॥ तन्मध्यैका-दशी रम्या मम प्रीतिविवर्धिनी ॥ ७२ ॥ सा त्वयोपोषिता सुभ्रु यथोक्तविधिनामुना ॥ तेन त्वया प्रसन्नोऽहं कृतोऽस्मि सुभगानने ॥ ७३ ॥

बोले, हे भद्रे! मैं तो करिके प्रसन्न कियो हौं यह जनार्दन बोलत भये ॥७१॥ यह मलमासको महीनो जैसो मोको प्यारो है तैसो और नहीं है ताके मध्यमें मेरी प्रीतिकी बढावनहारी सुन्दर एकादशी होय है ॥ ७२ ॥ हे शुभे! हे सुभ्रू! तैंने वा एकादशीको व्रत यथोक्त विधिसों कियो है हे सुभगानने! ताते मैं तेरे ऊपर प्रसन्न हौं ॥७३॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तेरे पतिके मनको चाहो भयो वर देऊंगो ऐसे कहिके विश्वके दुःख दूरि करनहारे विष्णु राजासों बोलत भये ॥७४॥ हे राजेंद्र! तुमने जो वर मनसों चाहो है ताहि मांगो तुम्हारी सिद्धिके करनेकी इच्छासों मैं तुम्हारी प्रिया करि संतुष्ट कियो गयो हौं ॥७५॥ विष्णुके या वचनको सुनिके प्रसन्न वह राजा सब लोकन करिकें नमस्कार कियो गयो ऐसो

तव भर्तुः प्रदास्यामि वरं यन्मनसेप्सितम् ॥ इत्युक्त्वा नृपतिं प्राह विष्णुर्विश्वार्तिनाशनः ॥७४॥
वरं वरय राजेन्द्र यत्ते मनसि कांक्षितम् ॥ संतोषितोऽहं प्रियया तव सिद्धिचिकीर्षया ॥ ७५ ॥
श्रुत्वा तद्वचनं विष्णोः प्रसन्नो नृपसत्तमः ॥ वव्रे सुतं महाबाहुं सर्वलोकनमस्कृतम् ॥ ७६ ॥
न देवैर्मानुषैर्नागैर्दैत्यदानवराक्षसैः ॥ जेतुं शक्यो जगन्नाथ विना त्वां मधुसूदन ॥ ७७ ॥
इत्युक्तो बाढमित्युक्त्वा तत्रैवांतरधीयत ॥ नृपोऽपि सुप्रसन्नात्मा हृष्टः पुष्टः प्रियायुतः ॥७८॥
समायात्स्वपुरं रम्यं नरनारीमनोरमम् ॥ स पद्मिन्यां सुतं लेभे कार्तवीर्यं महाबलम् ॥ ७९ ॥

जो महाबाहु पुत्र है ताहि मांगत भयो ॥ ७६ ॥ हे मधुसूदन! वह पुत्र ऐसो होय जो देवता मनुष्य नाग दैत्य दानव राक्षस इनमेंते तुम्हारे विना काहूते न जीतो जाय ॥ ७७ ॥ ऐसे कहे गये भगवान् बहुत अच्छा ऐसे कहिकें वहीं अंतर्धान हो जात भये प्रसन्न है आत्मा जाको ऐसो राजाहू प्रियासमेत हृष्ट पुष्ट होकें ॥ ७८ ॥ नर और नारी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कारिके मनोहर जो आपको नगर है तामें आवत भयो और वह राजा पद्मिनी रानीमें कार्त्तवीर्य नाम महावली पुत्रको प्राप्त होत भयो ॥ ७९ ॥ तीनों लोकनमें वाके समान कोई मनुष्य न होत भयो ताते दशकंधर रावण युद्धमें तासों हारिजात भयो ॥ ८० ॥ चक्रपाणि गदाधर नारायण देवके विना तीनों लोकनमें वाहि जीतवेको

न तेन सदृशः कश्चित्त्रिषु लोकेषु मानवः ॥ तस्मात्पराजितः संख्ये रावणो दशकंधरः ॥ ८० ॥
न तं जेतुं समर्थोऽस्ति त्रिषु लोकेषु कश्चन ॥ विना नारायणं देवं चक्रपाणिं गदाधरम् ॥ ८१ ॥
न त्वया विस्मयः कार्यो रावणस्य पराजये ॥ मलिम्लुचप्रसादेन पद्मिन्याश्चाप्युपोषणात्
॥ ८२ ॥ दत्तो देवाधिदेवेन कार्तवीर्यो महाबलः ॥ इत्युक्त्वा प्रययौ विप्रः प्रसन्नेनांतरात्मना
॥ ८३ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ एतत्ते सर्वमाख्यातं यत्पृष्टोऽहं त्वयानघ ॥ मलिम्लुचस्य मासस्य
शुक्लायाः संभवो महान् ॥ ८४ ॥

कोई समर्थ नहीं है ॥ ८१ ॥ मलमासके प्रसादसों और पद्मिनी व्रतके करनेसों रावणके हारनेमें तुमको विस्मय न करनो चाहिये ॥ ८२ ॥ देवाधिदेव जे भगवान् हैं तिन कारिके कार्त्तवीर्य महावली दियो गयो है ऐसे कहिके प्रसन्नहृदय हो वह पुलस्त्य जात भयो ॥ ८३ ॥ और कृष्ण बोले कि, हे अनघ ! जो तुमने पूँछो सो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सब मैंने तुमसों मलमासके शुक्लपक्षकी एकादशीको सम्भव कह्यो ॥ ८४ ॥ जे मनुष्य याको व्रत करैंगे वे हरिके पदको प्राप्त होयँगे हे राजेंद्र! जो वांछित वस्तुको चाहते हो तो तुमहूं ऐसेही करो ॥ ८५ ॥ यह केशव भगवान्‌को वचन सुनि अतिहर्षित राजा युधिष्ठिर बंधुनकरिके युक्त हो विधानपूर्वक व्रतको करत भये

ये करिष्यंति मनुजास्ते यास्यंति हरेः पदम् ॥ त्वमेवं कुरु राजेन्द्र यदि चेष्टमभीप्ससि ॥ ८५ ॥ केशवस्य वचः श्रुत्वा धर्मराजोऽतिहर्षितः ॥ चक्रे व्रतं विधानेन बंधुभिः परिवारितः ॥ ८६ ॥ सूत उवाच ॥ एतत्ते सर्वमाख्यातं यत्पृष्टोऽहं पुरा द्विज ॥ पुण्यं पवित्रं परमं किं भूयः श्रोतुमिच्छसि ॥ ८७ ॥ एवंविधं येऽपि व्रतं मनुष्या भक्त्या करिष्यंति मलिम्लुचस्य ॥ उपोषिता यैस्तु सुखप्रदात्री या शुक्लपक्षे भुवि तेऽपि धन्याः ॥ ८८ ॥

॥ ८६ ॥ सूतजी बोले कि, हे द्विज! जो तुमने पहिले पूँछो हो सो यह मैंने तुमसों कह्यो सो कैसो पुण्य है और परम पवित्र है अब फिरि आप कहा सुनो चाहो हो ॥ ८७ ॥ जे मनुष्य या प्रकारके मलमासके व्रतको भक्तिसों करैंगे और जिन करिके सुखकी देनहारी शुक्लपक्षकी एकादशी करी गई वे पुरुषहू या पृथ्वीमें

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

धन्य हैं ॥ ८८ ॥ और याकी संपूर्ण विधिको सुनैंगे वे उत्तम मनुष्य धन्य हैं और या कथाको समग्र पढैंगे वे निश्चय करि हरिके निवासको जायँगे ॥ ८९ ॥ इति श्रीमत्पंडितपरमसुखतनयपंडितकेशवप्रसादशर्म्मद्विवेदिकृतायामेकादशीमाहात्म्यभाषाटीकायां दीपिकासमाख्यायां मलमासशुक्लपक्षैकादशीपद्मिनीकथा समाप्ता ॥ २९ ॥ अथाधिकमासकृष्णैकादशीपरमाकथा ॥ मलिम्लुचे कृष्णपक्षे परमैकादशी तु या ॥ तन्माहात्म्यस्य विवृतिं

श्रोष्यन्ति ये तस्य विधिं समग्रं तेऽप्यंशभाजो मनुजाः प्रशस्ताः ॥ ये वै पठिष्यंति कथां समग्रां ते वै गमिष्यंति हरेर्निवासम् ॥ ८९ ॥ इत्यधिकशुक्लैकादशीकथा समाप्ता ॥ २९॥ अथाधिक-कृष्णैकादशीकथा ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ मलिम्लुचस्य मासस्य कृष्णा का कथ्यते विभो ॥ किं नाम को विधिस्तस्याः कथयस्व जगत्पते ॥ १ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ परमेति समाख्याता पवित्रा पापहारिका ॥ भुक्तिमुक्तिप्रदा नृणां भोगदा च युधिष्ठिर ॥ २ ॥

नृगिरा संतनोम्यहम् ॥ १ ॥ युधिष्ठिर बोले कि, हे विभो ! मलमासके कृष्णपक्षकी एकादशी कौनसी कही जाती है और वाको कहा नाम है और वाकी विधि कैसी है हे जगत्‌के स्वामी ! सो कहिये ॥ १ ॥ श्रीकृष्ण बोले कि, परमा नामसों प्रसिद्ध वह एकादशी पवित्र और पापनकी नाश करनहारी है हे युधिष्ठिर ! मनुष्यनको

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भुक्ति और मुक्तिकी तथा भोगकी देनहारी है ॥ २ ॥ पहले जो शुक्लाकी विधि कही है वाहि सदृश याहूको व्रत करनो चाहिये और यामें परम भक्ति करिके नरोत्तम देवको पूजन करै ॥ ३ ॥ यहां मैं तुमसों एक मनोहर कथा कहौं हौं जो कांपिल्य नगरमें भई मैंने मुनिनके आगे सुनी है ॥ ४ ॥ सुमेधा नाम कोई धर्मात्मा ब्राह्मण

पूर्वोक्तविधिना कार्या शुक्लायाः सदृशेन वै ॥ पूजयेत्परया भक्त्या नाम्ना देवं नरोत्तमम् ॥ ३ ॥
अत्र ते कथयिष्यामि कथामेतां मनोरमाम् ॥ कांपिल्यनगरे जातां मुनीनामग्रतः श्रुताम् ॥ ४ ॥
आसीद्द्विजवरः कश्चित्सुमेधानाम धार्मिकः ॥ तस्य पत्नी पवित्राख्या पातिव्रत्यपरायणा ॥ ५ ॥
कर्मणा केनचिद्विप्रो धनधान्यविवर्जितः ॥ न क्वापि लभते भिक्षां याचन्नपि नरान्बहून् ॥ ६ ॥
न भोज्यं लभते तादृङ्न वस्त्रं नैव मंडनम् ॥ रूपयौवनमाधुर्यं नारी शुश्रूषते पतिम् ॥ ७ ॥

होत भयो और वाकी स्त्री पतिव्रताके धर्ममें परायण पवित्रा नाम होत भई ॥ ५ ॥ काहू कर्म करिके वह धन और धान्य करि रहित हो जात भयो वह बहुत मनुष्यनसों मांगतो हो परंतु वाहि भिक्षा कहूं नहीं मिलती ॥ ६ ॥ न कहीं भोजन पावतो वस्त्र तथा मंडन न पावतो और रूप तथा यौवनकी मधुरता करि युक्त जो वह

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पति ब्राह्मण है ताहिकी वाकी स्त्री सेवा करती ॥ ७ ॥ जो कबहूं अतिथिको पूजन करती तो वह विशालाक्षी घरमें भूखी स्थित रहती परंतु वाको मुख कबहूं म्लान नहीं होतो ॥ ८ ॥ वह जो सुन्दर दांतनवाली भार्या है ताहि अपने शरीरको कसती भई देखि और यहू देख्यो कि, वह पतिसों कबहूं नहीं कहती कि, घरमें अन्न नहीं

आतीर्थं पूजयेत्क्वापि तदा सा क्षुधिता गृहे ॥ तिष्ठत्येव विशालाक्षी नम्लानमुखपंकजा ॥ ८ ॥ विलोक्य भार्यां सुदतीं कर्षंतीं स्वकलेवरम् ॥ न भर्त्तारं क्वचिन्नैव नास्त्यन्नमिति भाषते ॥ ९ ॥ विचार्य ब्राह्मणश्चित्ते भार्यायाः प्रेमबंधनम् ॥ निंदन्भाग्यं स्वकं विप्रः प्रोचे वाक्यं प्रियंवदाम् ॥ १० ॥ कान्ते करोमि किं कार्यं न मया लभ्यते धनम् ॥ याचयामि नरान् भव्यान्न यच्छंति च मे धनम् ॥ ११ ॥ किं करोमि क्व गच्छामि त्वं मे कथय शोभने ॥ विना धनेन सुश्रोणि गृहकार्यं न सिध्यति ॥ १२ ॥

है ॥ ९ ॥ वह ब्राह्मण भार्याके दृढ प्रेमको देखि अपने भाग्यकी निंदा करतो भयो प्रियंवदासों वचन बोलत भयो ॥ १० ॥ हे कान्ते ! मैं कहा काम करौं मोको धन नहीं मिलै है उत्तम मनुष्यनसों याचनाहू करौं हौं परंतु मोको धन नहीं देय हैं ॥ ११ ॥ कहा करौं और कहां जाऊं हे शोभने ! तू मोसों कह हे सुश्रोणि !

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

धनके विना घरको काम नहीं चलै है ॥ १२ ॥ मोको परदेशकी आज्ञा देउ मैं धनकी प्राप्तिके लिये जाऊँ वा देशमें जो होनहार होयगो सो वहाँहू भाग्यहीसों मिलैगो ॥ १३ ॥ उद्यमके विना कामोंकी सिद्धि नहीं होय है ताते पंडित सर्वथा शुभ उद्यमकी प्रशंसा करैं हैं ॥ १४ ॥ पतिको वचन सुनि वह सुलोचना आँखनमें आँसू

देह्याज्ञां परदेशाय गच्छामि धनलब्धये ॥ तस्मिन्देशे च यद्भाव्यं भाग्यं तत्रैव लभ्यते ॥ १३ ॥
उद्यमेन विना सिद्धिः कर्मणां नोपलभ्यते ॥ तस्माद्बुधाः प्रशंसंति सर्वथैव शुभोद्यमम् ॥ १४ ॥
श्रुत्वा कांतस्य वचनं साश्रुनेत्रा विचक्षणा ॥ प्रोवाच प्रांजलिर्भूत्वा विनयानतकंधरा ॥ १५ ॥
त्वत्तो नास्ति सुविज्ञाता त्वयाऽऽज्ञप्ता ब्रवीम्यहम् ॥ हितैषिणो नरा ब्रूयुः शश्वदापद्गता अपि
॥ १६ ॥ पूर्वदत्तं हि लभते यत्र कुत्र महीतले ॥ विना दानं न लभ्येत मेरौ कनकपर्वते ॥ १७ ॥

भरि हाथ जोरिके नम्रतासों झुकी है ग्रीवा जाकी ऐसी हो बोलत भई ॥ १५ ॥ तुमते कोऊ अधिक ज्ञानी नहीं तुम करिके आज्ञा दी गई मैं कहौं हौं सदा आपत्तिमें स्थितहू हितके चाहनहारे मनुष्य कहैं हैं ॥ १६ ॥ जहां कहीं भूतलमें पूर्व जन्मको दियो भयो मिलै है विना दानके सुवर्णके मेरु पर्वतहूमें नहीं मिलै है ॥ १७ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पूर्वकी दी भई जो विद्या है और पूर्वको दियो भयो जो धन है और पूर्वकी दी भई जो भूमि है वह या जन्ममें मिलै है ॥ १८ ॥ विधाताने जो माथेमें लिखि दिया है वह वहाँही मिलि जाय है क्या कबहूं कुछ विना दत्तहूके मिले है ? ॥ १९ ॥ हे विप्रेंद्र ! पहले जन्ममें न मैंने और न तुमने कुछ थोरो वा बहुत धन सत्पात्रनके

पूर्वदत्ता हि या विद्या पूर्वदत्तं हि यद्धनम् ॥ पूर्वदत्ता हि या भूमिरिह जन्मनि लभ्यते ॥ १८ ॥
यद्धात्रा लिखितं भाले तत्तत्रैव हि लभ्यते ॥ विना दत्तेन किं क्वापि लभ्यते नैव किंचन॥ १९ ॥
पूर्वजन्मनि विप्रेन्द्र न मया न त्वया क्वचित् ॥ सत्पात्राणां करे दत्तं स्वल्पं भूर्योपि सद्धनम् ॥२०॥
इह देशे परे वापि दत्तं सर्वत्र लभ्यते ॥ अन्नमात्रं तु विश्वेशो विना दत्तं न यच्छति ॥ २१ ॥
तस्मादत्रैव भो विप्र स्थातव्यं भवता मया ॥ भवद्विना न तिष्ठामि क्षणमात्रं महामुने ॥ २२ ॥
न माता न पिता भ्राता न श्वश्रूः श्वशुरो जनाः ॥ न सत्कुर्वंति तं केऽपि स्वजनाश्च पुरोगताः॥२३॥

हाथमें दियो है ॥ २० ॥ या देशमें अथवा परदेशमें दियो भयो सर्वत्र मिलै है और विश्वेश अन्न मात्र तो विना दत्तके दे देय हैं ॥ २१ ॥ हे विप्रेंद्र ! ताते तुमको मोको यहाँही रहनो चाहिये हे महामुने ! तुम्हारे विना मैं क्षणमात्रहू नहीं रहिसकौं हौं ॥ २२ ॥ न माता न पिता न भाई न सास न ससुर न जन और न भाई बंधु

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जो आगे स्थित हैं वाको कोई नहीं आदर करैं हैं ॥ २३ ॥ पति करके हीन स्त्रीकी निंदा करैं हैं और वाको दुर्भगा कहैं हैं ताते यहां स्थित होके यथासुख विहार करो ॥ २४ ॥ तुम्हारे भाग्यके योग्य यहाँही प्राप्ति होयगी यह वाको वचन सुनिके यह विचक्षण वहांही स्थित होत भयो ॥ २५ ॥ तवहीं वहां मुनिनमें श्रेष्ठ कौंडिन्य ऋषि

भर्तृहीना विनिंदंति दुर्भगेति वदंति ताम् ॥ तस्मादत्र स्थिरो भूत्वा विहरस्व यथासुखम् ॥ २४ ॥
भवतो भाग्ययोगेन प्राप्तिश्चात्र भविष्यति ॥ श्रुत्वा तस्यास्तु वचनं स्थितस्तत्र विचक्षणः ॥२५॥
तावत्तत्र समायातः कौंडिन्यो मुनिसत्तमः ॥ दृष्ट्वा समागतं हृष्टः सुमेधा द्विजसत्तमः ॥ २६ ॥
सभार्यः सहसोत्थाय ननाम शिरसासकृत् ॥ धन्योऽस्म्यनुग्रहीतोऽस्मि सफलं जीवितं मम ॥२७॥
यद्दृष्टोऽसि महद्भाग्यादित्युवाच मुनीश्वरम् ॥ दत्त्वा सुविष्टरं तस्मै पूजयामास तं द्विजम् ॥ २८ ॥

आवत भये उनको आये भये देखि प्रसन्न भयो वह श्रेष्ठ ब्राह्मण सुमेधा ॥ २६ ॥ स्त्रीसमेत शीघ्रही उठिके शिर करिके बार बार नमस्कार करत भयो और कहत भयो कि, मैं धन्य हौं कृतार्थ हौं आज मेरो जन्म सफल भयो ॥ २७ ॥ जो बडे भाग्यसों आपके दर्शन भये ऐसे मुनीश्वरसों कहत भयो और सुन्दर आसन देकै उनको

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

पूजन करत भया ॥ २८ ॥ और विधिसों भोजन करायकै वह उत्तम स्त्री पूंछत भई कि, हे विद्वन् ! किस प्रकारसों मेरे दारिद्र्यको क्षय होय ॥ २९ ॥ पूर्वजन्मके विना धनको विद्याको और स्त्रीको कैसे प्राप्त होय मेरो पति मोको छोडिकै अब जानेकी इच्छा करै है ॥ ३० ॥ दूसरे देशके रहनेवाले मनुष्यनसों पराये नगरमें मांगनेको जाय है

भोजयित्वा विधानेन प्रपच्छ प्रमदोत्तमा ॥ विद्वन्केन प्रकारेण दारिद्र्यस्य क्षयो भवेत् ॥ २९ ॥
विना दत्तं कथं लभ्येद्धनं विद्यां कुटुंबिनीम् ॥ मां मे भर्त्ता परित्यज्य गंतुकामोऽद्य वर्तते ॥ ३० ॥
अन्यदेशं पराँल्लोकान् याचितुं परपत्तने ॥ रक्षितोऽस्ति मया विद्वन् हेतुभिः कैर्महत्तरैः ॥ ३१ ॥
ना दत्तं लभ्यते किंचिदित्युक्त्वा स निवारितः ॥ मम भाग्यान्मुनींद्राद्य त्वमत्रैव समागतः ॥ ३२ ॥
त्वत्प्रसादाद्दरिद्रं मे शीघ्रं नश्यत्यसंशयम् ॥ केनोपायेन विप्रेन्द्र दरिद्रं नश्यति ध्रुवम् ॥ ३३ ॥
कथयस्व कृपासिंधो व्रतं तीर्थं तपादिकम् ॥ श्रुत्वा तस्या सुशीलाया भाषितं मुनिपुंगवः ॥ ३४ ॥

सो मैंने वाहि बहुतसे बडे २ कारणन करिकै राखो है ॥ ३१ ॥ अदत्त कुछभी नहीं मिलै है ऐसे कहिकै वाहि निवारण कियो है हे मुनींद्र ! मेरे भाग्यसों अब आप यहांही आय गये हो ॥ ३२ ॥ आपके प्रसादसों मेरो दरिद्र निस्संदेह नष्ट हो जायगो हे विप्रेंद्र ! कौनसे उपाय करिकै निश्चय मेरो दरिद्र निकरि जाय ॥ ३३ ॥ हे कृपासिंधो ! ऐसो

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.
CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

व्रत तीर्थ और तप आ॰ कहिये वे मुनिश्रेष्ठ सुशीलाको वचन सुनिकै ॥ ३४ ॥ चित्तमें श्रेष्ठ तथा उत्तम व्रत विचारिके सब पापनके समूहको शांत करनहारे और दुःख तथा दरिद्रको नाश करनहारे उत्तम व्रतको कहत भये ॥ ३५ ॥ परमा नामसों विख्यात सबते उत्तम विष्णुको तिथि जो मलमासके कृष्णपक्षमें भुक्तिमुक्तिरूप फलकी देनहारी होय है ॥ ३६ ॥ वाको व्रत करिके धनधान्यसों युक्त हो जाय है विधिपूर्वक जागरणके साथ

प्रोवाच प्रवरं चित्ते विचार्य व्रतमुत्तमम् ॥ सर्वपापौघशमनं दुःखदारिद्र्यनाशनम् ॥ ३५ ॥
परमा नाम विख्याता विष्णोस्तिथिरनुत्तमा ॥ मलिम्लुचे तु या कृष्णा भुक्तिमुक्तिफलप्रदा ॥ ३६ ॥
तस्या उपोषणं कृत्वा धनधान्ययुतो भवेत् ॥ विधिना जागरैः साकं गीतनृत्यादिकं चरेत् ॥ ३७ ॥
धनदेन पुरा चीर्णं व्रतमेतत्सुशोभनम् ॥ तदा हृष्टेन रुद्रेण धनानामधिपः कृतः ॥ ३८ ॥
हरिश्चंद्रेण च कृतं धनानामधिपः कृतः ॥ पुनः प्राप्ता प्रिया तेन राज्यं निहतकंटकम् ॥ ३९ ॥

गीत और नृत्य आदि करै ॥ ३७ ॥ यह सुशोभन व्रत पहले कुबेर करिके कियो गयो तब शिवजीने प्रसन्न होके धनको स्वामी करि दियो ॥ ३८ ॥ हरिश्चंद्रने कियो तो बहुत धनको स्वामी कियो गयो और वाने फिर स्त्री पाई और अकंटक राज्य पायो ॥ ३९ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे विशालाक्षि ! तात तू या उत्तम व्रतको विधिपूर्वक कर और विधि करिके युक्त जो यह व्रत है ताके साथ जागरण कर ॥ ४० ॥ हे पांडव ! ऐसे कहिकै वाकी सब विधि प्रीतिसों परम संतुष्ट होकै भक्तिसों प्रसन्नतापूर्वक कहत भये ॥ ४१ ॥ फिरि वा ब्राह्मणसों शुभ पंचरात्रिव्रत कहत भये जाके करनेही मात्रसों भुक्ति और मुक्ति

तस्मात्कुरु विशालाक्षि व्रतमेतत्सुशोभनम् ॥ विधिना विधियुक्तेन समं जागरणेन च ॥ ४० ॥
इत्युक्त्वा तद्विधिं सर्वं कथयामास पांडव ॥ प्रीत्या परमसंतुष्टस्ततो भक्त्या प्रसादतः ॥ ४१ ॥
पुनः प्रोवाच तं विप्रं पंचरात्रिव्रतं शुभम् ॥ यस्यानुष्ठानमात्रेण भुक्तिर्मुक्तिश्च प्राप्यते ॥ ४२ ॥
परमादिवसे प्रातः कृत्वा पौर्वाह्णिकं विधिम् ॥ कुर्यात्सुनियमाञ्छक्त्या पंचरात्रिव्रतादरात् ॥ ४३ ॥
प्रातः स्नात्वा निराहारो यस्तिष्ठेद्दिनपंचकम् ॥ स गच्छेद्वैष्णवं स्थानं पितृमातृप्रियासमम् ॥ ४४ ॥
एकाशनस्तु यो भूयाद्दिनानां पंचकं नरः ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तः स्वर्गलोके महीयते ॥ ४५ ॥

प्राप्त होती है ॥ ४२ ॥ परमाके दिन प्रातःकाल पूर्वाह्णिक विधिको करिके पंचरात्रिव्रतके आदरसों शक्तिके अनुसार सुन्दर नियमनको करै ॥ ४३ ॥ प्रातःकाल स्नान करिके जो पुरुष पांच दिननलों निराहार रहै है वह पिता माता और स्त्री समेत विष्णुके स्थानको जाय है ॥ ४४ ॥ फिर जो मनुष्य पांच दिन एक बार भोजन करिकै रहै है वह सब

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पापपते छूटिके स्वर्गलोकमें आनंद करै है ॥ ४५ ॥ और पांच दिननलों स्नान करिके ब्राह्मणनको भोजन करायो वाने विधिपूर्वक देवता असुर और मनुष्यनसमेत सब त्रिलोकीको भोजन करायो ॥ ४६ ॥ जो मनुष्य जल भरे कुंभको ब्राह्मणके अर्थ दान करै वाने मानो चराचरसहित ब्रह्मांडको दान कियो ॥ ४७ ॥ जो नर पांच

स्नात्वा यो भोजयेद्विप्रं दिनानां पंचकं नरः ॥ भोजितं तेन विधिना सदेवासुरमानुषम् ॥ ४६ ॥
पूर्णकुंभं सुतोयेन यो ददाति द्विजातये ॥ दत्तं तेनैव सकलं ब्रह्मांडं सचराचरम् ॥ ४७ ॥ तिल-
पात्रं तु यो दद्यात्स्नात्वा पंचदिनं नरः ॥ स भुक्त्वा विपुलान्भोगान्सूर्यलोके महीयते ॥ ४८ ॥
ब्रह्मचर्येण यस्तिष्ठेद्दिनानां पंचकं नरः ॥ स स्वर्गे भुंजते भोगान् स्ववेश्याभिः समं मुदा ॥४९॥
एवंविधं व्रतं साध्वि कुरु त्वं पतिना शुभे ॥ धनधान्ययुता भूत्वा स्वर्गं यास्यासि सुव्रते ॥५०॥
इत्युक्त्वा सा व्रतं चक्रे कौंडिन्येन यथोदितम् ॥ भर्त्रा समं भावयुता स्नात्वा मासि मलिम्लुचे ॥५१॥

दिन स्नान करिके तिलपात्रको दान करै ह वह संपूर्ण भोगनको भोगिकै सूर्यके लोकमें आनंद करै है ॥ ४८ ॥ जो नर पांच दिन ब्रह्मचर्यसों रहै है वह स्वर्गमें अप्सरानके साथ आनंदसों भोगनको भोगै है ॥४९॥ हे शुभे ! तू पतिसमेत ऐसे व्रतको कर तो धनधान्यसों युक्त होकै हे सुव्रते ! स्वर्गको प्राप्त होयगी ॥ ५० ॥ या प्रकार वह

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पंचरात्रव्रते पूर्णे परायाः प्रियसंयुता ॥ साऽपश्यद्राजभवनादायांतं नृपनंदनम् ॥ ५२ ॥ दत्त्वा नवीनं भवनं भव्यवस्तुसमन्वितम् ॥ वासयामास विधिना विधिना प्रेरितः स्वयम् ॥ ५३ ॥ दत्त्वा ग्रामं वृत्तिकरं ब्राह्मणाय सुमेधसे ॥ प्रसन्नस्तपसा राजा तं स्तुत्वा स्वगृहं ययौ ॥ ५४ ॥ मलिम्लुचस्य मासस्य परायाः परमादरात् ॥ उपोषणात्स कृष्णायाः पंचरात्रव्रतेन च ॥ ५५ ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तः सर्वसौख्यसमन्वितः ॥ भुक्त्वा भोगान्प्रियासार्द्धमंते विष्णुपुरं ययौ ॥ ५६ ॥

कौंडिन्यके कहनेके अनुसार पतिसमेत स्नान कारिके मलमासमें व्रतको करत भई ॥ ५१ ॥ और पांच रात्रिके व्रत पूरे होनेपै पतिसमेत परमाका व्रत करत भई तब वह राजभवनते आते भये राजाके पुत्रको देखत भई ॥ ५२ ॥ सुंदर सब वस्तुनकारिके सहित नवीन घर देके विधाता करिके प्रेरित वह आप विधिपूर्वक वसावत भयो ॥ ५३ ॥ और जीविकाके निमित्त सुमेधाके अर्थ गांव देके उनके तपसों प्रसन्न वह राजा स्तुति कारिके अपने घरको जात भयो ॥ ५४ ॥ मलमासके कृष्णपक्षकी परमा नाम एकादशीको परम आदरसों जो व्रतको करनो ताते पंचरात्रिके व्रतसों शीघ्रही ॥ ५५ ॥ सब पापनते छूटिकै सब सुखन कार युक्त वह सुमेधा ब्राह्मण या लोकमें प्रियासहित भोगनको भोगि अंतमें विष्णुलोकको जात भयो ॥ ५६ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जे मनुष्य उत्तम पराके व्रतको करेंगे ताको पुण्य और पंचरात्रको पुण्य है ताहि मैं कहनेको समर्थ नहीं हौं ॥५७॥ पुष्कर आदि तीर्थ और गंगा आदि नदी और गोदान आदि दान ये सब वा मनुष्यने किये जाने पराको व्रत कियो ॥ ५८ ॥ ताकरिके गयाश्राद्ध कियो गयो और पितर संतुष्ट किये गये और वाने व्रतखंडमें कहे भये सब व्रत

ये करिष्यंति मनुजाः पराया व्रतमुत्तमम् ॥ पंचरात्रभवं पुण्यं मया वक्तुं न शक्यते ॥ ५७ ॥
पुष्कराद्यानि तीर्थानि गंगाद्याः सरितस्तथा ॥ धेनुमुख्यानि दानानि तेन चीर्णानि सर्वथा॥५८॥
गयाश्राद्धं कृतं तेन पितरः परितोषिताः ॥ व्रतानि तेन चीर्णानि व्रतखंडोदितानि वै ॥ ५९ ॥
द्विपदां ब्राह्मणं श्रेष्ठो गोर्वरिष्ठा चतुष्पदाम् ॥ देवानां वासवः श्रेष्ठस्तथा मासो मलिम्लुचः॥६०॥
मलिम्लुचे पंचरात्रं महापापहरं स्मृतम् ॥ पञ्चरात्रे च परमा पद्मिनी पापशोषणी ॥ ६१ ॥
साप्यशक्तैः प्रकर्तव्या यथाशक्त्या विचक्षणैः ॥ मानुषं जन्मुरासाद्य न स्नातो यैर्मलिम्लुचः ॥६२॥

किये ॥ ५९ ॥ द्विपदनमें ब्राह्मण और चतुष्पदनमें गौ श्रेष्ठ है तथा देवतानमें इंद्र श्रेष्ठ है तैसेही महिननमें मलमास श्रेष्ठ है ॥ ६० ॥ और मलमासमें पापनके हरनवाले पिछले पांच दिन और पंचरात्रिहूमें परमा और पापनकी सुखावनहारी पद्मिनी उत्तम है ॥ ६१ ॥ वह एकादशी पंडितन करि अशक्तिमेंहू यथाशक्ति करनी चाहिये

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

और मनुष्य जन्मको पायकै जिन करिके मलमासको व्रत नहीं कियो गयो ॥ ६२ ॥ और जिन मनुष्यनने हरिवासरको व्रत नहीं कियो वे चौरासी लाख योनिनके संकटमें भ्रमै हैं ॥ ६३ ॥ दुर्लभ यह मनुष्य देह पुण्यनके समूहसों मिलै है ताते यत्नकरिके परमाको शुभ व्रत करनो योग्य है ॥ ६४ ॥ श्रीकृष्ण बोले कि, हे पापरहित !

ते जन्मघातिनो नूनं नोपोष्य हरिवासरे ॥ चतुरशीतिलक्षाणि लभंते योनिसकट ॥ ६३ ॥
प्राप्यते मानुषं जन्म दुर्लभ पुण्यसंचयैः ॥ तस्मात्कार्यं प्रयत्नेन परमाया व्रतं शुभम् ॥६४॥
श्रीकृष्ण उवाच ॥ एतत्ते सर्वमाख्यातं यत्पृष्टोऽहं त्वयाऽनघ ॥ मलिम्लुचस्य मासस्य परमायाः
समुद्भवम् ॥ ६५ ॥ तत्सर्वं ते समाख्यातं कुरुष्वावहितो नृप ॥ ६६ ॥ माहात्म्यं यदुपतिनो-
दितं निशम्य तच्चक्रे व्रतमथ च प्रियासमेतः ॥ भुक्त्वाऽसौ दिवि भुवि दुर्लभांश्च भोगान्नीतोऽसौ
सुरवरमंदिरं सुहृष्टः ॥ ६७ ॥

मलमासको और परमाको उत्पन्न जो यह सब फल मैंने आपके पूंछनेसों कह्यो ॥ ६५ ॥ वह सब मैंने तुमसों कह्यो ताते हे नृप ! तुम सावधान होके करो ॥ ६६ ॥ यदुपति जे श्रीकृष्ण महाराज हैं तिन करिके कहे भये माहात्म्यको सुनिकै राजा युधिष्ठिर छोटे भाई भीमादिक और स्त्री जो द्रौपदी है तासमेत व्रतको करत भये

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

और स्वर्गलोकमें दुर्लभ भोगनको भोगि अंतमें प्रसन्न सुरवर जे विष्णु हैं तिनके मंदिरमें पहुँचाये गये ॥ ६७ ॥
औरहू जे मनुष्य पृथ्वीमें मलमासस्नान सुंदर विधिपूर्वक दोनों एकादशीनको और पंचरात्रिको व्रत करैं हैं वे

येऽप्येवं भुवि मनुजा मलिम्लुचस्य सुस्नाताः शुभविधिना समाचरंति ॥ ते भुक्त्वा दिवि विभवं सुरेन्द्रतुल्यं गच्छेयुस्त्रिभुवनवंदितस्य गेहम् ॥६८॥ इति श्रीमदधिकृष्णैकादशीपरमा-माहात्म्यं समाप्तम् ॥ २६ ॥

स्वर्गमें इन्द्रके समान ऐश्वर्यको भोगि त्रिभुवनवंदित जे भगवान् विष्णु हैं तिनके घरको जायँ हैं ॥ ६८ ॥

दोहा—अब्धिवेदनवचन्द्रमित, विक्रम संवत जान । चैत्रशुक्ल शुभपंचमी, भौमवार शुभ मान ॥
टीका भाषामें करी, केशवपूर्वप्रसाद । जाके सुनतहिं नरनके, नाशत सकल विषाद ॥

इति श्रीमत्पण्डितपरमसुखतनयपण्डितकेशवप्रसादशर्म्मद्विवेदिकृतायामेकादशीमाहात्म्यभाषाटीकायां दीपिकासमाख्यायामधिकमासकृष्णैकादशीपरमाकथा समाप्ता ॥ २६ ॥

इदं पुस्तकं कल्याणनगर्यां श्रीकृष्णदासात्मज-गङ्गाविष्णोः अध्यक्ष "लक्ष्मीवेंकटेश्वर" मुद्रणालये मैनेजर पं० शिवदुलारे वाजपेयी इत्यनेन स्वाम्यर्थं मुद्रयित्वा प्रकाशितम् । संवत् १९७९.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जाहि-

पुराणइतिहास ग्रन्थः ।

नाम.	की. रु. आ.
अध्यात्मरामायणसटीक चिकना कागज....	३—०
अध्यात्मरामायण मूल गुटका	०—१२
अध्यात्मरामायण भाषाटीका	४—०
अयोध्यामाहात्म्य (१)	०—१०
अनन्तकथा मूल	०—२
अनन्तकथा भाषाटीका	०—२
अद्भुतरामायण मूल	०—१२
अद्भुतरामायण भाषाटीका	१—०
उत्तरवाराणसी माहात्म्य मूल	०—३
उग्रसेनअश्वमेध खंड (१)....	१—४
ऋषिपंचमी भा० टी०	०—३

नाम.	की. रु. आ.
महालक्ष्मीव्रत कथा भाषाटीका	०—४
महालक्ष्मीपूजा भाषाटीका	०—२
कालिकापुराणशाक्तजनोंको अवश्य ग्राह्य (१).	४—०
कार्तिकमाहात्म्य पद्मपुराणका. बडा मूल.	०—८
कार्तिकमाहात्म्य भाषाटीकासह	०—१४
कोकिलामाहात्म्य अधिक आषाढका	०—१२
गर्गसंहिता उग्रसेनकी अश्वमेधादिसहित १० खण्ड और माहात्म्यसहित मूल(१).	४—०
गर्गसंहिता भाषाटीकासमेत	६—०
गरुडपुराणसटीक प्रेतकल्प १६ अध्याय.	०—१२
गरुडपुराण भाषाटीका अतिउत्तम	१—०

आ. ।. ३

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नाम.	की. रु. आ.
गरुडमहापुराण बडा–ग्रन्थ संख्या १९००० हजार संपूर्ण, यही महा-पुराण परममान्य अद्भुत ग्रन्थ है	५–०
गयामाहात्म्य मूल	०–६
गयामाहात्म्य तथा गयापद्धति भाषा-टीकासमेत	०–१२
गोवर्द्धनोद्धारण कथा भा० टी०	०–१२
चातुर्मास्यमाहात्म्य	०–८
चित्रगुप्तकथा भाषाटीका और छन्दबद्ध.	०–३
जयन्तीमाहात्म्य, (रामजयन्ती, कृष्ण-जयन्ती, वामनजयन्ती, नृसिंहजयन्ती).	०–४
जन्माष्टमी भाषाटीका	०–५

नाम.	की. रु. आ.
जगन्नाथमाहात्म्य छोटा	०–६
जगन्नाथमाहात्म्य बडा ४९ अध्यायका.	१–४
जैमिनीअश्वमेध मूल	२–०
जैमिनीयअश्वमेध भाषाटीका....	४–०
देवीभागवतसटीक संस्कृत	७–०
द्वारकामाहात्म्य	०–५
द्वारकामाहात्म्य–बडा स्कन्दमहापुराणा-न्तर्गत	१–०
नन्दमहोत्सव कथा कहनेवालोंको अवश्य लेनेयोग्य भाषा.....	०–६
नासिकेतोपाख्यान संस्कृत	०–५
नासिकेतोपाख्यान भाषाटीका	०–८

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नाम.		की. रु. आ.
नृसिंहपुराणोक्त रामचरित्र (१)	....	७–०
पतिव्रतामाहात्म्य और मातापितासेवा माहात्म्य भाषाटीका	....	०–१२
पद्मपुराणान्तर्गतरामचरित्र (१)	....	३–६
पद्मपुराण मूल संपूर्ण ५५००० ग्रंथ बहुत पुस्तकोंके द्वारा शुद्ध होकर छपा है	....	१५–०
पुरुषोत्तममाहात्म्य मूल ब्रह्मनारदीय पु०.		०–१२
,, भाषाटीका (प० पु०)	....	०–१४

नाम.			की. रु. आ.
पौषमाहात्म्य मूल	....	....	०–६
प्रयागमाहात्म्य मूल	....	....	०–८
फाल्गुनमाहात्म्य मूल	....	....	०–८
बद्रीनारायणमाहात्म्य भाषाटीका		....	१–०
बद्रीनारायणमाहात्म्य मूल	....	....	०–७
बद्रीनारायणमाहात्म्य यात्राप्रकाश भाषा.			०–४
ब्रह्मोत्तरखण्डमूल....	....	....	०–१२
ब्रह्मवैवर्त्तपुराण संपूर्ण चारों खण्ड(१)		....	७–०

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस, कल्याण–मुंबई.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जाहिरात.

नाम,	की. रु. आ.	नाम,	की. रु. आ.
कार्तिकमाहात्म्य पद्मपुराणका बडा मूल	०–८	भाद्रपदमाहात्म्य	०–६
कार्तिकमाहात्म्य भाषाटीकासह	०–१४	भागवतमाहात्म्य सटीक संस्कृत	०–१०
कोकिलामाहात्म्य अधिक आषाढका	०–१२	भागवतमाहात्म्य भाषाटीका	०–६
गयामाहात्म्य मूल	०–६	मलमासमाहात्म्य	०–६
चातुर्मास्यमाहात्म्य	०–८	मार्गशीर्षमाहात्म्य	०–६
पौषमाहात्म्य मूल	०–६	माघमाहात्म्य मूल संस्कृत	०–७
फाल्गुनमाहात्म्य मूल	०–८	माघमाहात्म्य भा० टी०	१–०

पुस्तकें मिलनेका ठिकाना–गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
“लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर” छापाखाना, कल्याण–मुंबई.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection